

वैदिकवाङ्मय

परीक्षा दृष्टि

(NTA, UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GIC-Lecturer, GDC, Higher Education

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी)

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज

www.sanskritganga.org

ISBN : 978-81-938257-1-6

☛ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☛ **वितरक**

* **युनिवर्सल बुक्स**
अल्लापुर, प्रयागराज
* **राजू पुस्तक केन्द्र**
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) मो० 9453460552

☛ संस्करण - मई-2019

☛ **मूल्य – ₹ 145 /-** (एक सौ पैंतालीस रुपये मात्र)

☛ **पृष्ठविन्यास** – कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज, प्रयागराज

☛ **मुद्रक** – एकेडमी प्रेस, दारागंज, प्रयागराज

भूमिका

प्रिय संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय!

वेद भारत की अस्मिता है। वेदों के बिना भारत का अस्तित्व नगण्य है। वेदों के पठन-पाठन पर हमारे ऋषि-मुनियों ने सदैव अत्यधिक बल दिया है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण वैदिक मार्ग का अनुसरण करने में ही है। मनु ने वेदों को सभी धर्मों का मूल बताया है - 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। वेदों में मानवमात्र के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है -

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

पतञ्जलि भी निःस्वार्थभाव से वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते हैं - 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।' वेदों को प्रमाणरूप में स्वीकार करना ही एक सच्चे आर्य का लक्षण है - 'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु।' परन्तु आज की पीढ़ी वैदिकवाङ्मय के अमूल्य ज्ञान से अनभिज्ञ प्राय है, जो कि भारत की अस्मिता के लिए अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक अपने इष्ट मित्रों के साथ विचार कर एक ऐसी पुस्तक का निर्माण करने का सङ्कल्प लिया गया, जो आज की युवा पीढ़ी को वैदिक वाङ्मय को सरलतम भाषा में परिचित करा सके। इस पुस्तक के माध्यम से छात्र वैदिक वाङ्मय के सारगर्भित स्वरूप से परिचित हो सकेगा।

चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, इतिहासवेद), छः वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) वेदों के ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक तथा उपनिषदों के ग्रन्थीय स्वरूप को क्रमशः महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं सहित सरलतम रूप में प्रस्तुत

किया गया है। वैदिक देवताओं के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए अद्यावधि लिखे गये वेदभाष्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सूची इस पुस्तक के महत्त्व को और अधिक बढ़ाती है। **यह पुस्तक UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GDC, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी - ऐसा मेरा विश्वास है।**

पङ्कजकुमार शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, सुमन सिंह, अम्बिकेश प्रताप सिंह, कविता सिंह, नीलम गुप्ता, नितीश उपाध्याय, स्नेहा पाण्डेय, महिमा यादव, कृष्णकुमार, राजेश तिवारी, श्यामकिशोर मिश्र, सन्तोष यादव 'साहब' आदि मित्रों के निरन्तर सहयोग व चिन्तन से ही यह कार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका है। इस ग्रन्थ को लिखते समय पूरी सावधानी के साथ यह प्रयत्न किया गया है कि पाठकगण वैदिकवाङ्मय के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं से अनायास परिचित हो सकें।

श्रीमान् अनन्त प्रसाद त्रिपाठी (गहनौआ, रीवा म.प्र.) एवं प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (प्रयागराज) के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए ये आशा है कि यह ग्रन्थ निश्चित ही पाठकों की जिज्ञासा को पूर्णकर वेदों के प्रति उन्हें आकृष्ट करेगा।

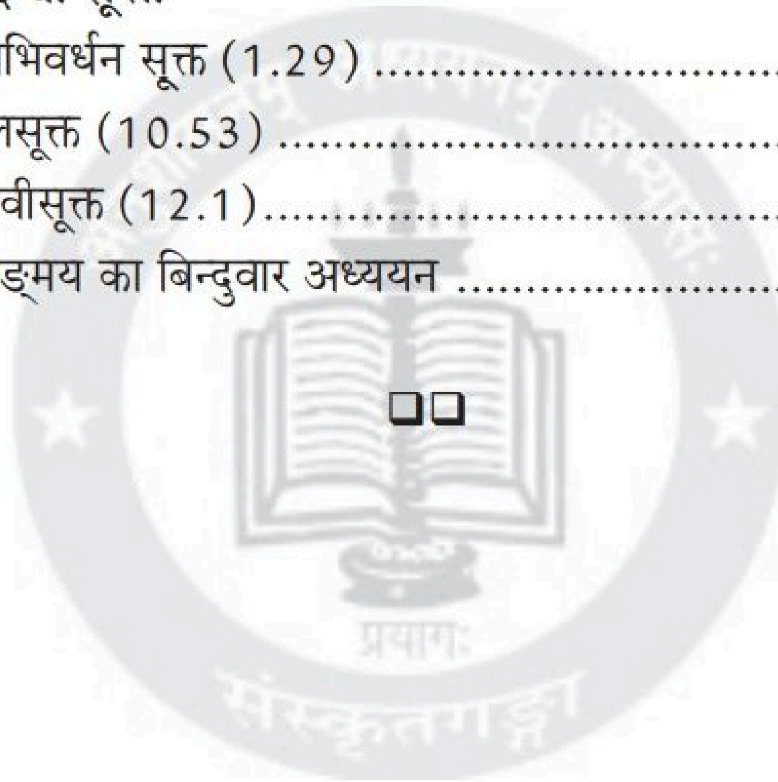
विनयावनत

सर्वज्ञभूषण



विषयसूची

❑❑


प्रयागः
संस्कृतगङ्गा

1. वेदों का रचनाकाल एवं ऋग्वेदीय संवादसूक्त

- वेदों का रचनाकाल निर्धारण वैदिक वाङ्मय की एक जटिल समस्या है। विभिन्न विद्वानों ने भाषा, रचनाशैली, धर्म एवं दर्शन, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री, अभिलेख आदि के आधार पर वेदों का रचनाकाल निर्धारित करने का प्रयास किया है, किन्तु इनसे अभी तक कोई सर्वमान्य रचनाकाल निर्धारित नहीं हो सका है।
- भारतीय षड्दर्शन- पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा (वेदान्त), सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक एवं वेदभाष्यकारों ने वेद के अपौरुषेयत्व का कथन किया है। पूर्वमीमांसा वेद को नित्य एवं अनुत्पन्न मानती है।
- पाश्चात्त्य विद्वान् भारतीय परम्परागत 'वेद के अपौरुषेयत्व सिद्धान्त' को स्वीकार नहीं करते। उनका मानना है कि वेद आर्यों की रचना है, मानवकृत (पौरुषेय) हैं; अतएव अपौरुषेय नहीं है।

प्रो. मैक्समूलर का मत-

- प्रो. मैक्समूलर ने सन् 1859 ई. में स्वरचित ग्रन्थ **"A History of Ancient Sanskrit literature"** में वेदों के काल निर्णय का सर्वप्रथम प्रयास किया।
- मैक्समूलर के अनुसार सर्वप्राचीन ऋग्वेद की रचना 1200 ई. पू. (विक्रमपूर्व) में हुई होगी, क्योंकि विक्रम से लगभग 500 वर्ष पूर्व उदित हुआ बौद्ध धर्म वैदिक वाङ्मय की सत्ता को स्वीकार करता है।
- प्रो. मैक्समूलर ने समग्र वैदिककाल को चार विभागों में बाँटा है –

  1. छन्दकाल 2. मन्त्रकाल 3. ब्राह्मणकाल 4. सूत्रकाल इसमें प्रत्येक युग की विचार धारा के उदय तथा ग्रन्थ रचना के लिए उन्होंने 200 वर्षों का काल माना है।

  1. सूत्रकाल - 600 ई. पू. से 200 ई. पू. तक

  2. ब्राह्मणकाल- 800 ई. पू. से 600 विक्रमपूर्व (ई. पू.)

  3. मन्त्रकाल - 1000 से 800 विक्रमपूर्व (ई. पू.)

  4. छन्दकाल - 1200 से 1000 विक्रमपूर्व (ई. पू.)

- सन् 1890 ई. में प्रकाशित "**Physical Religion**" (भौतिक धर्म) नामक अपनी पुस्तक में प्रो. मैक्समूलर ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए लिखा है कि- "इस भूतल पर कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है, जो कभी निश्चय कर सके कि वैदिक मन्त्रों की रचना 1000 या 1500 या 2000 या 3000 विक्रमपूर्व में की गयी हो।"

- परन्तु हम भारतीयों का दुर्भाग्य कि वेदों के काल निर्णय के विषय में मैक्समूलर के 1200 विक्रमपूर्व को ही हम सनातन सत्य मानते आ रहे हैं, परीक्षाओं में भी यह प्रश्न प्रमुखता से पूछा जा रहा है, जबकि इस मत के प्रणेता मैक्समूलर ने स्वयं इसे अपनी भूल मानते हुए, इस मत का खण्डन कर चुके हैं।

ए. वेबर का मत

- जर्मन विद्वान प्रो. ए. वेबर ने कहा है – "वेदों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता। वे उस तिथि के बने हुए हैं, जहाँ तक पहुँचने के लिए हमारे पास उपयुक्त साधन नहीं है। वर्तमान प्रमाण, हम लोगों को उस समय के उन्नत शिखर तक पहुँचाने में असमर्थ हैं।"
- प्रो. वेबर यह भी कहते हैं कि – "वेदों के समय को कम से कम 1200 ई. पू. या 1500 ई. पू. के बाद का कथमपि स्वीकार नहीं किया जा सकता।"
- प्रो. वेबर ने अपनी पुस्तक "History of Indian literature" यहाँ तक लिख दिया कि – "Any such of attempt of defining the relic antiquity is absolutely fruitless" अर्थात् वेदों का काल निर्धारण के लिए प्रयत्न करना सर्वथा बेकार है।

डॉ. जैकोबी का मत

- जर्मन विद्वान डॉ. जैकोबी का वैदिक काल विषयक सिद्धान्त ज्योतिष की आधार शिला पर अवलम्बित है; जो बालगंगाधर तिलक के मत से मिलता-जुलता है।
- डॉ. जैकोबी ने कृत्तिका और बसन्तपात के आधार पर वेदमन्त्रों का रचनाकाल 4590 ई. पू. तथा ब्राह्मण ग्रन्थों का रचनाकाल 2500 ई. पू. के पश्चात् स्वीकार किया है।
- इसप्रकार संक्षेप में याकोबी के अनुसार 4500 ई. पू. से 3000 ई. पू. ऋग्वेद का रचनाकाल है तथा 3000 ई. पू. से. 2000 ई. पू. ब्राह्मणों का रचनाकाल है।

बालगंगाधर तिलक का मत

- लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद में उपलब्ध ज्योतिष विषयक साक्ष्यों के आधार पर वेदों का काल 4000 से 6000 विक्रमपूर्व स्वीकार किया है।
- तिलक जी ने वैदिक काल को चार विभागों में रखा है-

1. अदितिकाल - 6000 ई. पू. से 4000 विक्रम पूर्व तक
2. मृगशिरा काल - 4000 ई. पू. से. 2500 विक्रमपूर्व तक (ऋग्वेदसंहिता का मन्त्रकाल)
3. कृत्तिका काल - 2500 से 1400 ई. पू. विक्रमपूर्व तक (तैत्तिरीय संहिता व ब्राह्मणकाल)
4. अन्तिम काल - 1400 से 500 विक्रमपूर्व तक (सूत्रग्रन्थों का रचनाकाल)

- लोकमान्य तिलक जी ने **"Orion" (ओरायन)** के पश्चात् लिखे गये अपने ग्रन्थ "Arctic Home in the Vedas" में वेदकाल को 10000 (दस हजार) ई. पू. बतलाया। उन्होंने विज्ञान तथा ज्योतिष के आधार पर यह सिद्ध किया कि भारत में आने से पूर्व आर्य लोग उत्तरी ध्रुव में रहते थे, और वहाँ पर भी वे वैदिक धर्म को ही मानते थे।

एम. विण्टरनित्स का मत

- विण्टरनित्स ने ब्राह्मणग्रन्थों, पाणिनि व्याकरण की संस्कृत भाषा तथा अशोक के शिलालेखों की भाषा – इन सबका वैदिक भाषा से साम्य को ध्यान में रखते हुए, ऋग्वेद का काल जैकोबी तथा तिलक द्वारा निर्धारत तिथि (4500 से 6000 ई. पू.) के बीच में स्वीकार किया है।

भारतीय परम्परागत विचार

- भारतीय परम्परावादी विद्वानों के मतानुसार वेदों का काल निर्धारण करना मूर्खता ही नहीं बल्कि असम्भव है।
- भारतीय परम्परागत विद्वानों का विचार है कि – 'वेद नित्य हैं, और सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेदों का आविर्भाव हुआ है, ऋग्वेद का पुरुष सूक्त वेदों की उत्पत्ति के लिए स्वयं प्रमाण हैं-

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्मादजायत॥

- भारतीय मत में जिस परमात्मा ने सृष्टि की उत्पत्ति की उसी ने सृष्टि के पूर्व वेदों की रचना की होगी, इसीलिए वेद अपौरुषेय हैं।
- भारतीय परम्परावादी विद्वानों का कहना है कि सृष्टिकर्ता विधाता ने सृष्ट्युत्पत्ति के पूर्व जिस विचारधारा की सर्वप्रथम कल्पना अपनी बुद्धि में की, वही आम्नाय या वेद हैं।
- ऋग्वेद का ही कथन है- "**तस्मादृचो पातक्षन् यजुस्तस्मादपाकयन्। सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखम्॥**"
- आदि शङ्कराचार्य ने वेदों का सर्वज्ञानमयत्व मानते हुए कहते हैं- **महतः ऋग्वेदादेः शास्त्रस्य अनेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः...** अर्थात् ऋग्वेदादि महान् शास्त्र अनेक विद्यास्थानों से विकसित हुआ है, और यह प्रदीपवत् समस्त विषयों को प्रकाशित करता है। इसप्रकार के सर्वज्ञान सम्पन्न शास्त्र का उत्पत्ति स्थान ब्रह्म ही हो सकता है, क्योंकि सर्वज्ञ परब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी से ऋग्वेदादि सर्वज्ञानसम्पन्न शास्त्र की उत्पत्ति नहीं हो सकती।
- "**ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।**" के अनुसार सर्वज्ञानमय पूर्णवेद की उत्पत्ति पूर्णब्रह्म से ही सम्भव है।

- भगवान् बादरायण व्यास ने भी ब्रह्मसूत्रस्थ **''विप्रतिषेधाच्च''** के द्वारा इसी मत को सूचित किया है।
- भगवान् जैमिनि ने पूर्वमीमांसादर्शन में **''नित्यस्तु स्याद् दर्शनस्य परार्थत्वात्''** इत्यादि छः सूत्रों द्वारा अनित्यवादी पक्षों के तर्कों का खण्डन करते हुए, वेदों का नित्यत्व प्रतिपादित करते हैं।
- उत्तरमीमांसा में महर्षि बादरायण व्यास जी ने **''शास्त्रयोनित्वात्''** इस सूत्र के द्वारा वेदों का उद्गम परब्रह्म से ही हुआ है। इस सिद्धान्त को स्थापित किया है।
- नैयायिकों का मानना है कि- ''सृष्टि के आदि में ईश्वर की निःश्वासवायु से वेदों की उत्पत्ति हुई-

''अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः॥''

- इसप्रकार भारतीय परम्परावादी विद्वान् वेदों को नित्य स्वीकार करते हुए अपौरुषेय मानते हैं।

ऋग्वेद के संवाद सूक्त

1. पुरूरवा-उर्वशी संवाद सूक्त (ऋग्वेद 10/95)

मण्डल- 10, **सूक्त** - 95, **कुल मन्त्र** - 18		
ऋषि	-	पुरूरवा ऐळ और उर्वशी।
देवता	-	उर्वशी और पुरूरवा ऐळ।
छन्द	-	त्रिष्टुप्।
स्वर	-	धैवत।

पुरूरवा उर्वशी की कथा को समझने के लिए प्रारम्भ के ये छह श्लोक बृहद्देवता के आधार पर दिये जा रहे हैं।

पुरूरवसि राजवर्षावप्सरास्तूर्वशी पुरा।
न्यवसत्संविदं कृत्वा तस्मिन् धर्मं चचार च॥147॥

प्राचीनकाल में उर्वशी नाम की अप्सरा, पुरूरवा नाम के राजर्षि के साथ रही। नियमपूर्वक वह उसके साथ लोक-धर्म में प्रवृत्त हुई।

तया तस्य च संवासमसूयन् पाकशासनः।
पैतामहं चानुरागमिन्द्रवच्चापि तस्य तु॥148॥

इन्द्र ने उर्वशी के साथ पुरूरवा के सहवास तथा पुरूरवा पर इन्द्र तुल्य ब्रह्मा के प्रेम की ईर्ष्या करते हुए (अपने बगल में बैठे हुए) वज्र से कहा।)

स तयोस्तु तु वियोगार्थं पार्श्वस्थं वज्रमब्रवीत्।
प्रीतिं भिन्द्धि तयोर्वज्र मम चेदिच्छसि प्रियम् ॥149॥

(उस इन्द्र ने उन दोनों अर्थात् पुरूरवा और उर्वशी का वियोग कराने के लिए पार्श्वस्थ वज्र से कहा, हे वज्र! यदि मेरा प्रिय चाहो, तो उन दोनों का प्रेम तोड़ दो।

तथेत्युक्त्वा तयोः प्रीतिं वज्रोऽभिनत् स्वमायया।
ततस्तया विहीनस्तु चचारोन्मत्तवन्नृपः॥150॥

वज्र ने कहा – वैसा ही होगा (तथा) उसने अपनी माया से उनका प्रेम तोड़ दिया; तब उर्वशी से वियुक्त होकर पुरूरवा पागल की भाँति इधर-उधर घूमने लगा।

चरन् सरसि सोऽपश्यदभिरूपामिवोर्वशीम् ।
सखीभिरभिरूपाभिः पञ्चभिः पार्श्वतो वृताम् ॥151॥

इधर-उधर भटकते हुए उस पुरूरवा ने एक सरोवर में पाँच अपने समान रूपवती सखियों के साथ सुन्दरी उर्वशी को देखा।

तामाह पुनरेहीति दुःखात्सा त्वब्रवीन्नृपम् ।
अप्राप्याहं त्वयाद्येहस्वर्गे प्राप्स्यसि मां पुनः॥152॥

(पुरूरवा ने उससे कहा-पुनः मेरे पास आओ; परन्तु उस उर्वशी ने दुःख के साथ राजा को उत्तर दिया – अब मैं तुम्हारे लिए अप्राप्य हूँ। तुम मुझे पुनः स्वर्ग में प्राप्त करोगे।)

नोट – उपर्युक्त श्लोक क्रमाङ्क 147 से 152 तक; ऋग्वेद में उल्लिखित न होने के कारण कथाक्रम को ध्यान में रखते हुए, बृहद्देवता /7/147-152 (पुरूरवा-उर्वशी-वृत्तान्त) के आधार पर दिया गया है। ऋग्वेदस्थ मूल संवाद-सूक्त निम्नलिखित है।

हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु।
न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन् परतरे चनाहन् ॥1॥

(पुरूरवा ने उर्वशी से कहा) – हे निर्दय नारी! तुम अपने मन को अनुरागी बनाओ। हम शीघ्र ही परस्पर वार्तालाप करें। यदि हम इस समय मौन रहेंगे तो आने वाले दिनों में सुखी नहीं होंगे।।1।।

किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव।
पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वातइवाहमस्मि॥2॥

(उर्वशी ने उत्तर दिया) – हे पुरूरवा! वार्तालाप से कोई लाभ नहीं। मैं वायु के समान ही दुष्प्राप्य नारी हूँ। उषा के समान तुम्हारे पास से मैं चली जा रही हूँ। तुम अपने गृह को लौट जाओ।।2।।

इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः॥3॥

(पुरूरवा ने कहा)- हे उर्वशी! मैं तुम्हारे वियोग में इतना सन्तप्त हूँ कि, अपने तूणीर से बाण निकालने में भी असमर्थ हो रहा हूँ। इस कारण मैं युद्ध जीतकर असीमित गायों को नहीं ला सकता। मैं राजकार्यों से विमुख हो गया हूँ। अतः मेरे सैनिक भी कार्यहीन हो गए हैं।।3।।

सा वसु दधती श्वसुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात् ।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन॥4॥

हे उषा! उर्वशी यदि श्वसुर को भोजन कराना चाहती तो निकटस्थ घर से पति के पास जाती और दिन रात स्वामी के पास रमणसुख भोगती।।4।।

त्रिः स्म माह्नः श्नथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि।
पुरूरवोऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्वस्तदासीः॥5॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! मुझे किसी सपत्नी से प्रतिस्पर्द्धा नहीं थी, क्योंकि मैं तुमसे हर प्रकार से सन्तुष्ट थी। जब से मैं तुम्हारे घर से आई तभी से तुमने सुखों का विधान किया।।5।।

या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिह्रेदेचक्षुर्न ग्रन्थिनी चरण्युः।
ता अञ्जयोऽरुणयो न सस्रुः श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त॥6॥

सुजूर्णि, श्रेणि, सुम्न आदि अप्सराएँ मलिन वेश में यहाँ आती थीं। गोष्ठ में जाती हुई गायें जैसे शब्द करती हैं, वैसे ही शब्द करने वाली वे महिलाएँ मेरे घर में नहीं आती थीं।।6।।

समस्मिञ्जायमान आसत ग्ना उतेमवर्धन्नद्यः स्वगूर्ताः।
महे यत्त्वा पुरूरवो रणायावर्धयन् दस्युहत्याय देवाः॥7॥

जब पुरूरवा उत्पन्न हुआ, तब सभी देवाङ्गनाएँ उसे देखने आयीं। नदियों ने भी उसकी प्रशंसा की। तब हे पुरूरवा! देवताओं ने घोर संग्राम में जाने तथा दस्यु के विनाश हेतु तुम्हारी स्तुति की।।7।।

सचा यदासु जहतीष्वत्कममानुषीषु मानुषो निषेवे।
अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्रथस्पृशो नाश्वाः॥8॥

जब पुरूरवा मनुष्य होकर अप्सराओं की ओर गए, तब अप्सराएँ अन्तर्धान हो गई। वह उसी प्रकार वहाँ से चली गई, जैसे भयभीत हरिणी भागती है या रथ में योजित अश्व द्रुतगति से चले जाते हैं।।8।।

यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक्सं क्षोणीभिः क्रतुभिर्न पृङ्क्ते।
ता आतयो न तन्वः शुम्भत स्वा अश्वासो न क्रीळयो दन्दशानाः॥9॥

मनुष्य योनि को प्राप्त हुए पुरूरवा जब दिव्यलोकवासिनी अप्सराओं की ओर बढ़े, तो वे अप्सराएँ वैसे ही भाग गई, जैसा क्रीडाकारी अश्व भाग जाता है।।9।।

विद्युन्न या पतन्ती दविद्योद्भरन्ती मे अप्या काम्यानि।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशी तिरत दीर्घमायुः॥10॥

जो उर्वशी अंतरिक्ष की विद्युत् के समान आभामयी है, उसने मेरी सभी अभिलाषाओं को पूर्ण किया था। वह उर्वशी अपने द्वारा उत्पन्न मेरे पुत्र को दीर्घजीवी करें।।10।।

जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः।
अशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नहन्न म आशृणोः किमभुग्वदासि॥11॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! तुमने पृथिवी की रक्षा के लिए पुत्र उत्पन्न किया है। मैं तुमसे अनेक बार कह चुकी हूँ, मैं तुम्हारे पास नहीं रहूँगी। तुम इस समय प्रजा-पालन के कार्य से विमुख होकर व्यर्थ-वार्तालाप क्यों करते हो?।।11।।

कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन् ।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत् ॥12॥

(पुरूरवा ने कहा) – हे उर्वशी! तुम्हारा पुत्र मेरे पास किस प्रकार रहेगा? वह मेरे पास आकर रोवेगा। पारस्परिक प्रेम के बन्धन को कौन सद्गृहस्थ तोड़ना स्वीकार करेगा? तुम्हारे श्वशुर के घर में श्रेष्ठ आलोक जगमगा उठा है।।12।।

प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्ये शिवायै।
प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे परेह्यस्तं नहि मूर मापः॥13॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा मेरा उत्तर सुनो। मेरा पुत्र तुम्हारे पास आकर नहीं रोयेगा। मैं सदैव उसकी मंगल-कामना करूँगी। तुम अब मुझे नहीं पा सकोगे। अतः अपने घर को लौट जाओं। मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे पास भेज दूँगी।।13।।

सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ।
अधा शयीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः॥14॥

(पुरूरवा ने कहा) – हे उर्वशी! मैं तुम्हारा पति आज पृथिवी पर गिर पड़ा हूँ। वह (मैं) फिर कभी न उठ सका। वह दुर्गति के बन्धन में फँसकर मृत्यु को प्राप्त हो, और वृक (भेड़िया) आदि उसके शरीर का भक्षण करें।।14।।

पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन् ।
न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता॥15॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! तुम गिरो मत। तुम अपनी मृत्यु की इच्छा मत करो। तुम्हारे शरीर को वृक आदि भक्षण न करें। स्त्रियों का और वृकों का हृदय एक समान होता है, उनकी मित्रता कभी अटूट (स्थायी) नहीं रहती।।15।।

यद्विरूपाचरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्रः।
घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्नां तादेवेदं तातृपाणा चरामि॥16॥

(उर्वशी ने कहा) – मैंने विविध रूप धारण करके मनुष्यों में विचरण किया। चार वर्षों तक मैं मनुष्यों में ही वास करती रही। नित्यप्रति एक बार घृतपान करती हुई घूमती रही।।16।।

अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशीं वशिष्ठः।
उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे॥17॥

(पुरूरवा ने कहा) – उर्वशी जल को प्रकट करने वाली तथा अंतरिक्ष को पूर्ण करने वाली है। वशिष्ठ ही उसे अपने वश में कर सके हैं। तुम्हारे पास उत्तमकर्मा पुरूरवा रहे (मैं रहूँ)। हे उर्वशी! मेरा हृदय जल रहा है, अतः लौट आओ।।17।।

इति त्वा देवा इम आहुरैळ यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः।
प्रजा ते देवान् हविषा यजाति स्वर्ग उ त्वमपि मादयासे॥18॥

(उर्वशी ने कहा) – हे पुरूरवा! सभी देवताओं का कथन है कि, तुम मृत्यु को जीतने वाले होओगे और हव्य द्वारा देवताओं का यज्ञ करोगे, फिर स्वर्ग में आनन्दपूर्वक वास करोगे।।18।।

2. यम-यमी संवाद सूक्त (ऋग्वेद 10/10)

मण्डल–10, **सूक्त** – 10, **कुल मन्त्र** – 14
ऋषि– यम वैवस्वत, यमी
देवता – यम वैवस्वत, यमी वैवस्वती **छन्द**– त्रिष्टुप्

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान् ।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः॥1॥

(यमी अपने सहोदर भाई यम से कहती है) – विस्तृत समुद्र के मध्य द्वीप में आकर, इस निर्जन प्रदेश में मैं तुम्हारा सहवास (मिलन) चाहती हूँ, क्योंकि माता की गर्भावस्था से ही तुम मेरे साथी हो। विधाता ने मन ही मन समझा है कि तुम्हारे द्वारा मेरे गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होगा; वह हमारे पिता का एक श्रेष्ठ नाती होगा।

न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत् सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परिख्यन्॥2॥

(यम ने कहा) – यमी, तुम्हारा साथी यम, तुम्हारे साथ ऐसा सम्पर्क नहीं चाहता; क्योंकि तुम भी सहोदरा भगिनी हो, अतः अगन्तव्या हो। यह निर्जन प्रदेश नहीं है; क्योंकि द्युलोक को धारण करने वाले महान् बलशाली प्रजापति के पुत्रगण (देवताओं के चर) सब कुछ देखते हैं।

उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित्त्यजसं मर्त्यस्य।
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः॥3॥

(यमी ने कहा) – यद्यपि मनुष्य के लिए ऐसा संसर्ग निषिद्ध है, तो भी देवता लोग इच्छा पूर्वक ऐसा संसर्ग करते हैं। अतः मेरी इच्छानुकूल तुम भी करो। पुत्र-जन्मदाता पति के समान मेरे शरीर में बैठो (मेरा सम्भोग करो।)।

न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृता वदन्तो अनृतं रपेम।
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ॥4॥

(यम ने उत्तर दिया) – हमने ऐसा कर्म कभी नहीं किया। हम सत्यवक्ता हैं। कभी

मिथ्या कथन नहीं किया है। अन्तरिक्ष में स्थित गन्धर्व या जल के धारक आदित्य तथा अन्तरिक्ष में रहने वाली योषा (सूर्यस्त्री-सरण्यू) हमारे माता-पिता हैं। अतः, हम सहोदर बन्धु हैं। ऐसा सम्बन्ध उचित नहीं है।

गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथ्वी उत द्यौः॥5॥

(यमी ने कहा) - रूपकर्ता, शुभाशुभ प्रेरक, सर्वात्मक, दिव्य और जनक प्रजापति ने तो हमें गर्भावस्था में ही दम्पति बना दिया। प्रजापति का कर्म कोई लुप्त नहीं कर सकता। हमारे इससे सम्बन्ध को द्यावा-पृथ्वी भी जानते हैं।

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत् ।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नॄन् ॥6॥

(यमी ने पुनः कहा) - प्रथम दिन (संगमन) की बात कौन जानता है? किसने उसे देखा है? किसने उसका प्रकाश किया है? मित्र और वरुण का यह जो महान् धाम (अहोरात्र) है, उसके बारे में हे मोक्ष, बन्धनकर्ता यम! तुम क्या कहते हो?

यमस्य मा यम्यं काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् वृहेव रथ्येव चक्रा॥7॥

(यमी ने कहा) – जैसे एक शैया पर पत्नी, पति के साथ अपनी देह का उद्घाटन करती है, वैसे ही तुम्हारे पास मैं अपने शरीर को प्रकाशित कर देती हूँ। तुम मेरी अभिलाषा करो। आओ दोनों एक स्थान पर शयन करें। रथ के दोनों चक्कों के समान एक कार्य में प्रवृत्त हों।

न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा॥8॥

(यम ने उत्तर दिया) – देवों में जो गुप्तचर हैं, वे रात-दिन विचरण करते हैं। उनकी आँखे कभी बन्द नहीं होती। दुःखदायिनी यमी! शीघ्र दूसरे के पास जाओ, और रथ के चक्कों के समान उसके साथ एक कार्य करो।

रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि॥9॥

(यम ने पुनः कहा) – दिन-रात में यम के लिए जो कल्पित भाग हैं, उसे यजमान दें। सूर्य का तेज यम के लिए उदित हो। परस्पर सम्बद्ध दिन, द्युलोक और भूलोक यम के बन्धु हैं। यमी, यम भ्राता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को धारण करें।

आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्॥10॥

(यम ने पुनः कहा) – भविष्य में ऐसा युग आयेगा, जिसमें भगिनियाँ अपने बन्धुत्व विहीन भ्राता को पति बनावेंगी। सुन्दरी! मेरे अतिरिक्त किसी दूसरे को पति बनाओ।

वह वीर्य सिंचन करेगा; उस समय उसे बाहुओं में आलिङ्गन करना।

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता बह्वे तद्रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि॥11।

(यमी ने कहा) – वह कैसा भ्राता है, जिसके रहते भगिनी अनाथा हो जाय, और भगिनी ही क्या है, जिसके रहते भ्राता का दुःख दूर न हो? मैं काम मूर्च्छिता होकर नाना प्रकार से बोल रही हूँ; यह विचार करके भली-भाँति मेरा सम्भोग करो।

न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् ॥12॥

(यम ने उत्तर दिया) – हे यमी! मैं तुम्हारे शरीर से अपना शरीर मिलाना नहीं चाहता। जो भ्राता, भगिनी का सम्भोग करता है, उसे लोग पापी कहते हैं। सुन्दरी! मुझे छोड़कर अन्य के साथ आमोद-प्रमोद करो। तुम्हारा भ्राता तुम्हारे साथ मैथुन करना नहीं चाहता।

बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम।
अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ॥13॥

(यमी ने कहा) – हाय यम; तुम दुर्बल हो। तुम्हारे मन और हृदय को मैं कुछ नहीं समझ सकती। जैसे-रस्सी घोड़े को बाँधती है, तथा लता जैसे वृक्ष का आलिङ्गन करती है, वैसे ही अन्य स्त्री तुम्हें अनायास ही आलिङ्गन करती है; परन्तु तुम मुझे नहीं चाहते हो।

अन्यमूषु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्।
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाऽधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम् ॥14॥

(यम ने यमी से कहा) – तुम भी अन्य पुरुष का ही भली-भाँति आलिङ्गन करो। जैसे-लता, वृक्ष का आलिङ्गन करती है, वैसे ही अन्य पुरुष तुम्हें आलिङ्गित करें। तुम उसी का मन हरण करो। अपने सहवास का प्रबन्ध उसी के साथ करो। इसी में मङ्गल होगा।

3. सरमा-पणि संवाद सूक्त (ऋग्वेद, 10/108)

मण्डल - 10	**सूक्त**-108	**कुल मन्त्र** - 11
ऋषि– पणि एवं सरमा	**देवता-** सरमा एवं पणि	
छन्द- त्रिष्टुप्	**स्वर-**धैवत	

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि॥1॥

(सरमा क्या इच्छा करती हुई इस स्थान पर पहुँची है, क्योंकि मार्ग बहुत दूर उभरा हुआ तथा गमनागमन से रहित है। हममें तुम्हारा कौन-सा अभिप्रेत अर्थ निहित है?

तुम्हारी यात्रा कैसी थी? रसा (नदी) के जल को तुमने कैसे पार किया?)

इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि मह इच्छन्ती पणयो निधीन्वः।

अतिष्कदो भियसा तन्न आवत्तथा रसाया अतरं पयांसि॥2॥

(हे पणियों! इन्द्र के द्वारा भेजी गई, मैं उसकी दूती हूँ। तुम लोगों के प्रभूत धन की इच्छा करती हुई घूम रही हूँ। मेरे कूदने के भय से उस रसा के जल ने मेरी सहायता की। इस प्रकार रसा के जल को मैंने पार किया।)

कीदृङ्ङिन्द्रः सरमे का दृशीका यस्येदं दूतीरसरः पराकात् ।

आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति॥3॥

(हे सरमा! इन्द्र कैसा है? उसकी दृष्टि कैसी है? जिसकी दूती (तुम) दूर से यहाँ आई हो। अगर वह आवे, तो हम उसे मित्र बनावेंगे। तब वह हमारी गायों का संरक्षक (गोपति) होगा।)

नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।

न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे॥4॥

(सरमा ने कहा) – मैं उसको कष्ट पहुँचाया जाने वाला नहीं समझती हूँ, अपितु वह (शत्रुओं को) कष्ट देता है। जिसकी मैं दूती बनकर दूर से यहाँ आई हूँ। बहती हुई गहरे जल वाली नदियाँ उसको छिपा नहीं सकतीं। हे पणियों! इन्द्र द्वारा मारे जाकर तुम लोग (पृथ्वी पर) पड़ जाओगे।

इमा गावः सरमे या ऐच्छः परि दिवो अन्तान्त्सुभगे पतन्ती।

कस्त एना अव सृजादयुध्व्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा॥5॥

(पणियों ने कहा) – हे सरमा! आकाश की छोर तक चारों तरफ घूमती हुई इन गायों को, जिनकी तुमने इच्छा की है। हे सौभाग्यवती! तुममें से कौन मुक्त कर सकता है? और हमारे शस्त्र भी अत्यन्त तीक्ष्ण हैं।

असेन्या वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः।

अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृळात्॥6॥

(सरमा ने पूछा) – हे पणियों! तुम्हारे वचन शस्त्र के आघात से सुरक्षित हैं, तथा पापी शरीर बाणों के निशाने से बचने वाले हो सकते हैं। तुम्हारे पास पहुँचने के लिए मार्ग भी अगम्य हो सकता है, किन्तु किसी भी प्रकार से बृहस्पति दया नहीं करेंगे।

अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः।

रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकु पदमलकमा जगन्थ॥7॥

(पणियों ने कहा) – हे सरमा! गायों, अश्वों तथा रत्नों से भरा हुआ यह खजाना पर्वतों से ढका हुआ है। कुशल रक्षक पणि, इसकी रक्षा करते हैं। तुम व्यर्थ में इस खाली स्थान पर आई हो।

एह गमन्नृषयः सोमशिता अयास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः।
त एतमूर्वं वि भजन्त गोनामथैतद्वचः पणयो वमन्नित्॥8॥

(सरमा ने कहा) – सोमपान से उत्तेजित, अयास्य, अङ्गिरस, नवग्वा आदि ऋषि यहाँ पर आयेंगे। वे गायों के इस विशाल समूह को बाँट लेंगे। तब पणियों को अपने इस वचन को उगलना पड़ेगा।

एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम॥9॥

(पणियों के कहा) – हे सरमा! इस प्रकार यदि तुम देवताओं की शक्ति से पीड़ित की गई हो, तो हम तुम्हें बहन बनाते हैं। फिर मत जाओं। हे सौभाग्यवती! हम तुम्हें गायों का अलग हिस्सा देंगे।

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः॥10॥

(सरमा ने कहा) - मैं न तो भ्रातृत्व को जानती हूँ न स्वसृत्व को, इन्द्र तथा भयानक अङ्गिरस इसको जानते हैं। जब मैं आई (तत्व) वे गायों की इच्छा करने वाले मालूम पड़े। अतः हे पणियों किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ

दूरमित पणयो वरीय उद्
गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूळहाः
सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः॥11॥

(सरमा ने कहा) – हे पणियों! किसी विस्तृत स्थान पर चले जाओ। छिपी हुई गायें, चट्टानों के आवरण को तोड़ती हुई सत्य नियम के अनुकूल बाहर निकलें, जिनको बृहस्पति ने ढूँढ़ निकाला है तथा जिनका, सोम ने, पत्थरों ने तथा बुद्धिमान् ऋषियों ने (पता लगाया है।)।

4. विश्वामित्र—नदी संवाद (ऋग्वेद 3/33)

मण्डल—3 **सूक्त**-33 **कुल मन्त्र**-13 **ऋषि**-विश्वामित्र
देवता-नदियाँ विपाट् शुतुद्री। **छन्द**-पंक्ति, त्रिष्टुप्

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेइव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥1॥

पर्वतों की गोद से निकलकर समुद्र की ओर जाने की इच्छा करती हुई (परस्पर) स्पर्द्धा से दौड़ती हुई, खुले बाग वाली दो घोड़ियों की तरह (बछड़े) को चाटती हुई दो सफेद माता गायों की तरह विपाट् और शुतुद्री (अपने) प्रवाह से तेजी से बह रही हैं।

इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे॥2॥

इन्द्र द्वारा भेजी गई, बहने के लिए प्रार्थना करती हुई, दो रथियों की तरह समुद्र की ओर जा रही हो। हे शुभ्रे! एक साथ जाती हुई, लहरों से उमड़ती हुई, तुममें से प्रत्येक एक दूसरे की ओर जा रही हो।

अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म।
वत्समिव मातरासंरिहाणे समानं योनिमनु सञ्चरन्ती॥3॥

श्रेष्ठ नदी माता (शुतुद्री) के पास आया हूँ। चौड़ी तथा सुन्दर विपाट् के पास आया हूँ। बछड़े को चाटती हुई दो माताओं की तरह, एक ही स्थान (समुद्र) को लक्ष्य करके बहती हुई (शुतुद्री और विपाट्) के पास आया हूँ।

एना वयं पयसा पिन्वमाना अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति॥4॥

ऐसी हम लोग अपनी धारा से उमड़ रही हैं तथा देव (इन्द्र) द्वारा निर्मित स्थान पर चल रही हैं। स्वाभाविक रूप से प्रवाहित हम लोगों की गति रुकने के लिए नहीं है। किस इच्छा से ऋषि (विश्वामित्र) नदियों की बार-बार स्तुति कर रहा है।

रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः॥5॥

हे पवित्र जलवाली (नदियों)! सोमाप्लावित मेरे वचनों के प्रति अपनी यात्रा से क्षणभर के लिए रुक जाओ। अपनी सहायता का इच्छुक, कुशिकपुत्र मैंने ऊँची स्थिति से नदी (शुतुद्री) का आह्वाहन किया है।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः॥6॥

वज्रधारी इन्द्र ने हमें खोदकर बाहर किया। उसने नदियों को घेरने वाले वृत्र को मारा। सुन्दर हाथों वाले सवितृ देव ने हम लोगों को लाया। हम जितनी चौड़ी हैं, उसकी आज्ञा में निरन्तर बहती हैं।

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तद् इन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत्।
वि वज्रेण परिषदो जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः॥7॥

इन्द्र का वह पराक्रमयुक्त कार्य, जो उसने अहि को मारा, अवश्य कहने योग्य है। उसने वज्र से (जल के) प्रतिबन्धकों को काट डाला। जल अपना मार्ग खोजता हुआ प्रवाहित हुआ।

एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते॥8॥

हे स्तुतिगायक! इस वचन को कभी भी मत भूलो, ताकि भावियुगों के लोग तुम्हारे इस वचन को सुन सकें। हे कवि! अपनी स्तुतियों में हमारा आदर रखो। हम लोगों को मनुष्यकोटि में नीचा मत लावो। (हमारा) तुम्हें नमस्कार है।

ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन।

नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्त्रोत्याभिः॥9॥

हे सुन्दर बहनों! (मुझ) कवि की बात सुनों, (क्योंकि मैं) तुम्हारे पास बहुत दूर से गाड़ी तथा रथ से आया हूँ। अच्छी तरह झुक जाओ। हे नदियों अपनी जलधारा से अक्ष के नीचे होकर (बहती हुई) आसानी से पार करने योग्य हो जाओ।

आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।

नि ते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते॥10॥

हे कवि! हम तुम्हारी बातें सुनती हैं, (क्योंकि तुम) बहुत दूर से गाड़ी तथा रथ से साथ आये हो। तुम्हारे लिये मैं नीचे झुकती हूँ, जैसे दूध से भरे स्तन वाली औरत (अपने पुत्र के लिए) तथा जैसे युवती अपने प्रेमी का आलिङ्गन करने के लिए (झुकती है)।

यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयुर्गव्यन्ग्राम इषित इन्द्रजूतः।

अर्षादह प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्॥11॥

(हे नदियों) चूँकि (तुम्हारी अनुमति मिल गई है, इसलिये) भरतवंशी (हम लोग) तुम्हें पार करें, पार जाने की इच्छा वाला (तुम्हारे द्वारा) अनुज्ञात एवं इन्द्र द्वारा भेजा गया (भरतवंशियों का) झुंड (पार करें) (तुम्हारा) प्रवाह अपनी स्वाभाविक गति में प्रवाहित होता हुआ बहे। मैं पवित्र नदियों का समर्थन चाहता हूँ।

अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।

प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम् ॥12॥

पार जाने की इच्छावाले भरतवंशियों ने पार कर लिया। ब्राह्मण ने नदियों का समर्थन प्राप्त कर लिया। सुन्दर धनवाली (तुम लोग) धन लाती हुई अपनी जगह पर प्रवाहित होओ; भर जाओ; शीघ्रता से बहो।

उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत।

मादुष्कृतौ व्येनसाघ्न्यौ शूनमारताम्॥13॥

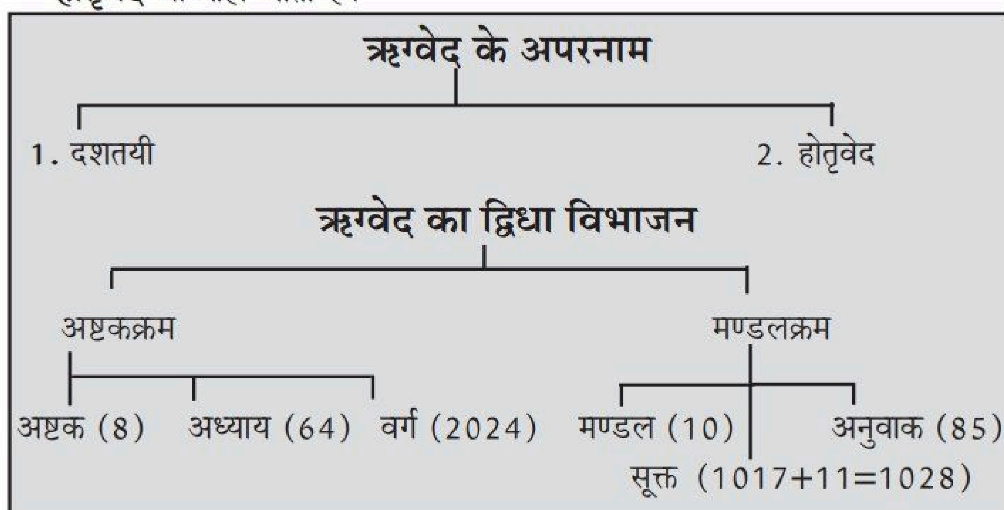
तुम्हारी धारा जुवा की कील के नीचे से बहे। जल रस्सी को छोड़ दे। दृष्कृतों से रहित, पापरहित तथा तिरस्कार न करने योग्य (ये नदियाँ) वृद्धि न प्राप्त करें।

❑❑

2. ऋग्वेद

ऋग्वेद संहिता का परिचय

- वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रन्थ का नाम ऋग्वेद है। इसका कारण यह है कि यह सभी वेदों में अभ्यर्हित (पूजित) है। ऋग्वेद शब्द में ऋच् या ऋक् का अर्थ है- स्तुतिपरक मन्त्र, '**ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्।**' जिन मन्त्रों के द्वारा देवों की स्तुति की जाती है,उन्हें **ऋक् या ऋचा** कहते हैं। ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं, अतः इसे ऋग्वेद कहते हैं। भाषा, शैली, व्याकरण एवं मन्त्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह किसी एक समय की रचना नहीं, किन्तु विभिन्न काल में विभिन्न ऋषियों द्वारा हुई रचनाओं का संग्रह-ग्रन्थ है। ऐसी ऋचाओं के संग्रह के कारण इसे **ऋग्वेद-संहिता** भी कहते हैं। यहाँ पर 'संहिता' शब्द का प्रयोग संकलन या संग्रह अर्थ में होता है।
- **ऋग्वेद का महत्त्व**–ऋग्वेद को चारों वेदों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण, अक्षुण्ण तथा आदरणीय माना जाता है। परिमाण की दृष्टि से भी यह चारों वेदों में विशालकाय ग्रन्थ है। इसमें अधिकांश देव इन्द्र, अग्नि, सोम, विष्णु, मरुत् आदि प्राकृतिक तत्वों के प्रतिनिधि हैं।
- ऋग्वेद के **आचार्य पैल** हैं जो व्यास के शिष्य थे।
- **ऋत्विक्** - चारों वेदों के अनुसार यज्ञ में चार ऋत्विक् (ऋत्विज्) होते हैं- होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा। ऋग्वेद का ऋत्विक् '**होता**' माना जाता है।
- ऋग्वेद में **होता, ऋत्विक्** या ऋचाओं का पाठ करता है। अतएव ऋग्वेद को **होतृवेद** भी कहा जाता है।



- आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद की उत्पत्ति **अग्नि** से बतायी गयी है।
- ऋग्वेद वाक्तत्त्व का संकलन है।

ऋग्वेद का विभाजन

- ऋग्वेद में ऋचाओं का दो प्रकार से विभाजन है – 1. अष्टकक्रम 2. मण्डलक्रम
- प्रत्येक अष्टक में 8 अध्याय होते हैं, इसप्रकार ऋग्वेद में कुल 64 अध्याय हैं।
- प्रत्येक अध्याय के अवान्तर विभागों का नाम 'वर्ग'है।
- वर्गों में ऋचाओं की संख्या निश्चित नहीं है, किन्तु लगभग पाँच ऋचाओं का एक वर्ग होता है। किन्तु एक मन्त्र से लेकर नव मन्त्रों तक के भी वर्ग मिलते हैं।
- ऋग्वेद में समस्त वर्गों की संख्या 2024 है।
- मण्डलक्रम के अनुसार सम्पूर्ण ऋग्वेद दस मण्डलों में विभक्त है। अतः इसे **'दशतयी'** नाम से भी जाना जाता है।

अष्टक के अनुसार ऋग्वेद

अष्टक	-	8
अध्याय	-	64
वर्ग	-	2024
मन्त्र	-	10552

- प्रत्येक मण्डल में अनुवाक, सूक्त और मन्त्र हैं।
- ऋग्वेद के दश मण्डलों में 85 अनुवाक हैं ।
- ऋग्वेद में कुल सूक्तों की संख्या 1028 है, जिसमें 11 बालखिल्य सूक्त माने जाते हैं।
- मन्त्रों की संख्या 10580-1/4 है। कहीं कहीं मन्त्रों की संख्या 10552 भी मानी गयी है।

मण्डलक्रमानुसार ऋग्वेद का विभाजन

मण्डल	अनुवाक	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या	ऋषि नाम
प्रथम	24	191	2006	मधुच्छन्दा, मेधातिथि, दीर्घतमा
द्वितीय	4	43	429	गृत्समद
तृतीय	5	62	617	विश्वामित्र
चतुर्थ	5	58	589	वामदेव
पञ्चम	6	87	727	अत्रि
षष्ठ	6	75	765	भरद्वाज
सप्तम	6	104	841	वशिष्ठ
अष्टम	10	92+11 बालखिल्य सूक्त	1716	कण्व, भृगु,अंगिरस
नवम	7	114	1108	सोम, पवमान
दशम	12	191	1754	त्रित, विमद, श्रद्धा, कामायनी
योग	85	1028	10552	

➢ **ऋग्वेद में छन्दोवर्णन- 'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** अर्थात् जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित हो, उसे छन्द कहते हैं। आचार्य पिङ्गल को छन्दशास्त्र का प्रणेता कहा जाता है, ऋग्वेद में मुख्यरूपेण सात छन्दों का प्रयोग हुआ है -

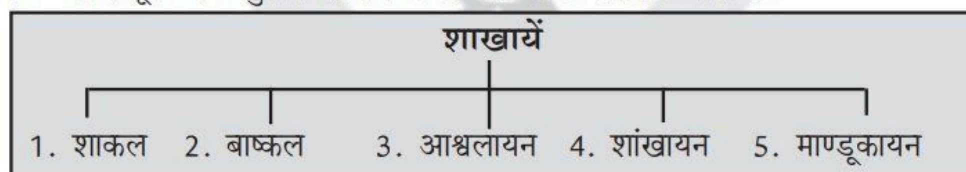
छन्द	अक्षर
गायत्री	24
उष्णिक्	28
अनुष्टुप्	32
बृहती	36
पंक्ति	40
त्रिष्टुप्	44
जगती	48

"गा उ अ बृ पं त्रि ज" यह प्रत्येक छन्द का प्रथम अक्षर है। प्रत्येक छन्द में अक्षरों की संख्या 4-4 बढ़ती जाएगी। जैसे - गायत्री में 24 तो उष्णिक् में 28, अनुष्टुप् में 32 आदि।

ऋग्वेद की शाखायें-

➢ पतञ्जलि के अनुसार, **'एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्'** अर्थात् महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख है।

➢ 'चरणव्यूह' के अनुसार वर्तमान में ऋग्वेद की 5 शाखायें प्राप्त हैं-



➢ वर्तमान समय में ऋग्वेद की केवल शाकल शाखा प्राप्त होती है।

ऋग्वेदीय ब्राह्मण-

➢ ऋग्वेद से सम्बद्ध दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं-
1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण

➢ ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं।

➢ प्रत्येक पाँच अध्यायों की एक पञ्चिका और प्रत्येक अध्यायों में कण्डिकाएं हैं, जिसे खण्ड भी कहते हैं। 8 पञ्चिकाएँ और 285 खण्ड हैं।

➢ कौषीतकि ब्राह्मण शांखायन शाखा का ब्राह्मण है, इसलिए इसे 'शांखायन ब्राह्मण' भी कहते हैं।

➢ कौषीतकि ब्राह्मण में 30 अध्याय एवं 226 खण्ड हैं।

➢ प्रत्येक अध्याय में पाँच से लेकर सत्रह तक खण्ड हैं, कुल खण्डों की संख्या 226 है।

ऋग्वेदीय आरण्यक-

- ऋग्वेद से सम्बद्ध दो आरण्यक ग्रन्थ हैं-

  1. ऐतरेय आरण्यक 2. शांखायन आरण्यक

- ऐतरेय आरण्यक में 5 भाग हैं। इन भागों को आरण्यक या प्रपाठक कहते हैं।
- शांखायन आरण्यक में 15 अध्याय हैं।

उपनिषद् -

- ऋग्वेद के दो उपनिषद् प्राप्त होते हैं-

  1. ऐतरेय उपनिषद् 2. कौषीतकि उपनिषद्

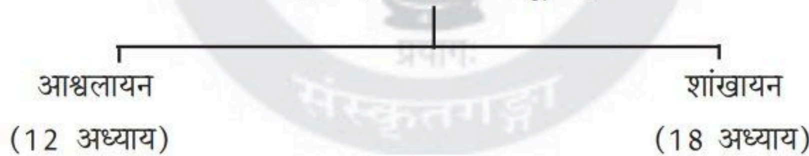
- ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है।
- ऐतरेय उपनिषद् में तीन अध्याय हैं।
- कौषीतकि उपनिषद् में चार अध्याय हैं।

कल्पसूत्र-

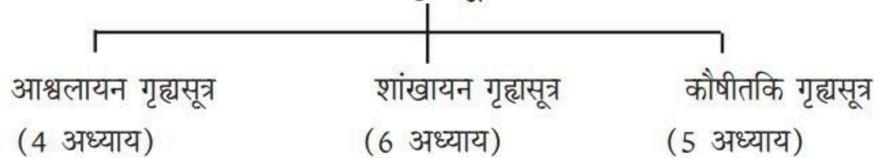
- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है, उन्हें **'कल्प'** कहते हैं। इसके चार भेद हैं-

  1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र

ऋग्वेद के दो श्रौतसूत्र हैं-



ऋग्वेदीय तीन गृह्यसूत्र प्राप्त होते हैं-



- एकमात्र ऋग्वेदीय धर्मसूत्र है- वासिष्ठ (वसिष्ठ) धर्मसूत्र, इसमें 4 अध्याय हैं।
- ऋग्वेद का कोई शुल्बसूत्र नहीं प्राप्त होता है।

प्रातिशाख्य-

- 'ऋक्-प्रातिशाख्य' ऋग्वेद का एकमात्र उपलब्ध प्रातिशाख्य है।
- इसके रचयिता शौनक हैं।
- ऋग्वेद प्रातिशाख्य तीन अध्यायों में विभक्त है, प्रत्येक अध्याय में 6पटल हैं, कुल 18 पटल हैं।

ऋग्वेदीय शिक्षा

ऋग्वेद के दो शिक्षा ग्रन्थ

पाणिनीय शिक्षा   वसिष्ठ शिक्षा

ऋग्वेद का वर्ण्य-विषय

➢ 'यास्क' के अनुसार-ऋग्वेद की विषय वस्तु

1. धर्म निरपेक्ष   2. धार्मिक   3. दार्शनिक सूक्त

➢ डॉ. विण्टरनित्स के अनुसार-

1. काव्यात्मक गीत   2. यज्ञीय स्तुति   3. दार्शनिक सूक्त

4. संवाद सूक्त   5. धर्मनिरपेक्ष सूक्त   6. ऐन्द्रजालिक यन्त्र

इसप्रकार ऋग्वेद प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

➢ विभिन्न देवों के स्तुतिपरक मन्त्रों का संकलन ऋग्वेद में किया गया है। इस दृष्टि से ऋग्वेद का प्रतिपाद्य देवस्तुति है।

➢ ऋग्वेद के सम्पूर्ण विषयवस्तु को अनेक विद्वानों ने कई रूपों में विभाजित किया है, कुछ विद्वानों ने प्रतिपाद्य की दृष्टि से ऋग्वेद के सूक्तों को चार श्रेणियों में विभाजित किया है-

1. धार्मिक सूक्त 2. दार्शनिक सूक्त 3. लौकिक सूक्त 4. संवाद सूक्त

धार्मिक सूक्त

➢ ऋग्वेद का अधिकांश भाग धार्मिक सूक्तों की श्रेणी में आता है।

➢ धार्मिक सूक्तों में विभिन्न देवों को सम्बोधित करते हुए उनकी स्तुति की गई है-

इन्द्र सूक्त (1/32)   विष्णु सूक्त (1/154)

अग्नि सूक्त (1/1)   सवितृ सूक्त (1/35)

वरुण सूक्त (1/25)   पर्जन्य सूक्त (5/83)

उषा सूक्त (1/48)   उषस् सूक्त (4/51)

मरुत् सूक्त (1/85)   अश्विनौ सूक्त (7/71)

➢ इसके अतिरिक्त अन्य सूक्त भी ऋग्वेद के धार्मिक सूक्तों के अन्तर्गत प्राप्त होते हैं।

दार्शनिक सूक्त-

➢ ऋग्वेद के लगभग 12 सूक्त ऐसे हैं, जिनमें उच्चकोटि के दार्शनिक विचारों के बीज मिलते हैं।

➢ दार्शनिक सूक्त अपेक्षाकृत अर्वाचीन दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं।

➢ दशम मण्डल मे आये हुये नासदीय सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, पुरुष सूक्त तथा वाक् सूक्त का दार्शनिक दृष्टिकोण से विशेष महत्त्व है।

(i) पुरुष सूक्त — 10/90

(ii) हिरण्यगर्भ सूक्त — 10/121

(iii) वाक् सूक्त — 10/125

(iv) नासदीय सूक्त — 10/129

➢ इनमें 'नासदीय', 'पुरुष' तथा 'हिरण्यगर्भ सूक्त' **सृष्टि उत्पत्ति सूक्त** माने जाते हैं।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण सूक्त

दानस्तुति सूक्त (10/107,117)
संज्ञान सूक्त (10/191)
श्रद्धा सूक्त (10/151)
अस्यवामीय सूक्त (1/164)
मण्डूक सूक्त (7/103)
ज्ञान सूक्त (10/71)

लौकिक सूक्त

➢ जो सूक्त लौकिक जीवन तथा दैनन्दिन व्यवहार से सम्बद्ध विषयों का रोचक वर्णन करते हैं उन सूक्तों को 'लौकिक सूक्त' की संज्ञा प्रदान की गई है।

➢ लौकिक सूक्त भी अधिकांशतया दशम मण्डल में ही हैं।

1. विवाह सूक्त (10/85)
2. अक्षसूक्त (10/34)
3. सपत्नघ्न सूक्त (10/166)
4. ओषधिसूक्त (10/97)
5. आवर्तन सूक्त (10/97)

संवाद सूक्त

➢ ऋग्वेद में कुछ ऐसे सूक्त हैं जिनमें प्राचीनतम कथा-साहित्य की प्रधानता है, उन्हें संवाद सूक्त का नाम दिया गया है।

➢ डॉ. ओल्डेनवर्ग ने संवाद सूक्तों को 'आख्यान सूक्त' कहा है।

➢ डॉ. सिल्वाँ लेवी, वॉन श्रोदर तथा हर्टल का मत है कि ये संवाद सूक्त नाटक के अवशिष्ट अंश हैं।

➢ ये सूक्त संख्या में लगभग 20 माने गये हैं, जिनमें अधिकांशतः दशम मण्डल में उपलब्ध होते हैं-

➢ मुख्य संवाद सूक्त

1. पुरुरवा उर्वशी संवाद (10.95)
2. यम-यमी संवाद (10.10)
3. सरमा-पणि संवाद (10.108)
4. इन्द्र मरुत् संवाद (1/165)
5. अगस्त्य लोपामुद्रा संवाद (1/179)
6. विश्वामित्र नदी संवाद (3/33)

ऋग्वेद के देवता

➢ 'तिस्र एव देवताः' अर्थात् यास्क ने निरुक्त में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन किया

है, जो हैं-

1. पृथिवीस्थानीय (अग्नि, बृहस्पति, सोम आदि)
2. अन्तरिक्ष स्थानीय (इन्द्र, रुद्र आदि)
3. द्युस्थानीय (सूर्य, विष्णु आदि)

मन्त्र-द्रष्टा ऋषिकाएँ

- ऋग्वेद में लगभग 24 मन्त्र द्रष्टा ऋषिकाओं का उल्लेख है।
- ऋग्वेद में इन 24 ऋषिकाओं द्वारा दृष्ट मन्त्र 224 हैं।

ऋग्वेद में 24 ऋषिकायें		
1. सूर्य सावित्री	2. घोषा काक्षीवती	3. सिकता निवावरी
4. इन्द्राणी	5. यमी वैवस्वती	6. दक्षिणा प्राजापत्या
7. अदिति	8. वाक् आम्भृणी	9. अपाला आत्रेयी
10. विश्ववारा आत्रेयी	11. अगस्त्यस्वसा	12. जुहू ब्रह्मजाया
13. उर्वशी	14. सरमा देवशुनी	15. शिखण्डिन्यौ अप्सरसौ
16. पैलोमी शची	17. देवजामयः	18. श्रद्धा कामायनी
19. नदी	20. सार्पराज्ञी	21. गोधा
22. शश्वती आंगिरसी	23. वसुक्रपत्नी	24. रोमशा ब्रह्मवादिनी

ऋग्वेद का रचना विन्यासक्रम

- ऋग्वेद को पौरुषेय मानने वाले, भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद के विभिन्न मण्डलों की रचना में शताब्दियों का अन्तर रहा है।
- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन अंश द्वितीय से सप्तम मण्डल तक माना जाता है।
- 2 से 7 तक के मण्डल को 'वंश मण्डल ' अथवा 'परिवार मण्डल' कहते हैं।
- 8 वें मण्डल में अधिकांश सूक्त कण्व-परिवार के हैं।
- 9 वें मण्डल में समस्त मन्त्र सोम विषयक हैं। इसे 'पवमान सोम-मण्डल' भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद का दशम मण्डल अर्वाचीन है।
- दशम मण्डल में देवताओं की स्तुति से सम्बद्ध सूक्त अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।

ऋग्वेद के भाष्यकर्ता

- ऋग्वेद संहिता के भाष्यकर्ताओं में स्कन्दस्वामी, आनन्दतीर्थ, वेङ्कटमाधव, सायण आदि प्रमुख हैं।

1. स्कन्दस्वामी- ऋग्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य स्कन्दस्वामी का ही उपलब्ध है।

- स्कन्दस्वामी ने 600-625 के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा।
- स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के प्रथम पाँच अष्टक तक प्राप्त होता है।

2. नारायण तथा उद्गीथ- ऋग्वेद के मध्यभाग पर नारायण एवं अन्तिम भाग पर उद्गीथ ने भाष्य लिखा है।

- उद्गीथ ने अपने भाष्य में प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है। 'वनवासीविनिर्गताचार्यस्य उद्गीथस्य कृता ऋग्वेदभाष्ये.....'

3. वेङ्कटमाधव- इनका समय 1050 से 1150 ई. के मध्य माना जाता है। इन्होंने प्रथम अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है।

4. धानुष्क यज्वा-

- इन्हें 'त्रिवेदी भाष्यकार' कहा गया है।
- ये वैष्णव आचार्य थे। इनका समय लगभग 1300 विक्रम पूर्व माना जाता है।

5. आनन्दतीर्थ - इनका समय 1255 से 1335 विक्रम संवत् तक माना जाता है।

- इनका अपरनाम 'मध्व' है।
- इन्होंने ऋग्वेद के कुछ प्रमुख 40 सूक्तों पर पद्यात्मक भाष्य लिखा।

6. आत्मानन्द- आत्मानन्द ऋग्वेद के 'अस्यवामीय सूक्त' पर भाष्य लिखा है।

- इनका भाष्य 'अध्यात्म-परक' है।

7. सायण-

- सायण का समय 1315-1387 ई. तक (72 वर्ष तक जीवित रहे)
- वेदों के भाष्यकर्त्ताओं में आचार्य सायण का नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- उन्होंने अपने बड़े भाई माधव के आदेशानुसार वेदभाष्य किया।
- सायण ने अपने भाई के नाम पर भाष्य का नाम **'माधवीय वेदार्थप्रकाश'** रखा।
- सायण ने **'ऋग्वेद-भाष्य-भूमिका'** नामक ग्रन्थ भी लिखा।

ऋग्वेद के पाश्चात्त्य विद्वान् एवं अनुवादक-

1. **फ्रीड्रिश रोजेन** (Friedrich Rosen)- इन्होंने ऋग्वेद के केवल प्रथम अष्टक मूलपाठ लैटिन अनुवाद के साथ 1838 ई. में प्रकाशित किया।
2. **मैक्समूलर** इन्होंने सायण-भाष्य-सहित ऋग्वेद का सम्पादन किया। इनका समय 1849 से लेकर 1875 ई. तक है।
3. **थियोडोर आउफ्रेख्त-** इन्होंने रोमनलिपि में ऋग्वेद संहिता 1861-63 ई. में प्रकाशित की।
4. **विल्सन-विल्सन** ने सर्वप्रथम पूरे ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद 1850 ई. में प्रकाशित किया।
5. **लुडविग -** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का छः भागों में जर्मन भाषा में अनुवाद किया।
6. **प्रो. ग्रिफिथ-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया।
7. **प्रो. ओल्डेनबर्ग -** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का भाष्य जर्मन भाषा में दो भागों में प्रकाशित किया।
8. **लांग्ल्वा-** इन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद का चार भागों में फ्रेंच भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया।

ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण मन्त्र

1. **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्, बाहू राजन्यः कृतः।**
   अर्थ- इनका मुख ब्राह्मण हुआ, दोनों बाहुओं से क्षत्रिय बनाया गया, दोनों उरुओं (जघनों) से वैश्य हुआ और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।
2. **सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषा हार्षमेनम् ।** (ऋग्वेद 10.161.3)
   शतं यथेनं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥
   अर्थ- मैंने जो आहुति दी है, उसके एक सहस्र नेत्र सौ वर्ष की परमायु और आयु देते हैं।
3. **अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।**
   होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋ. 1.1.1)
   अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।
4. **तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।**
   छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत ॥ (ऋ. 10.9.9)
   अर्थ- सर्वात्मक पुरुष के होम से युक्त उस यज्ञ से ऋक् और साम उत्पन्न हुए। उससे गायत्री आदि छन्द उत्पन्न हुए और उसी से यजुः की भी उत्पत्ति हुई।
5. **य आत्मदा बलदा...यस्यच्छायाऽमृतं मृत्युः।** (ऋ. 10.121.2)
   अर्थ- जिन प्रजापति ने जीवात्मा को प्राण दिया है, बल दिया है, जिनकी आज्ञा सारे देवता मानते हैं, जिनकी छाया अमृत-रूपिणी है और जिनके वश में मृत्यु है, उन 'क' नामवाले प्रजापति की स्तुति करता हूँ।
6. **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्-** (ऋ. 10.125.3)
   अर्थ- मैं राज्य की अधीश्वरी हूँ और धन देने वाली हूँ।
7. **हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।** (ऋ. 10.121.1)
   अर्थ- सबसे पहले केवल परमात्मा या हिरण्यगर्भ थे। उत्पन्न होने पर वे सारे प्राणियों के अद्वितीय अधीश्वर थे।
8. **न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति।**
   अर्थ- स्त्रियों का प्रेम व मैत्री स्थायी नहीं होती ।
9. **पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं, यच्च भव्यम् ।** (ऋ. 10.90.2)
   अर्थ- जो कुछ हुआ है और जो कुछ होने वाला है, सो सब ईश्वर (पुरुष) ही है।
10. **सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।** (ऋ. 10.90.1)
    अर्थ- विराट् पुरुष (ईश्वर) सहस्र (अनन्त) शिरों, अनन्त चक्षुओं और अनन्त चरणों वाले हैं।
11. **ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्।** (ऋ. 10.71.11)
    अर्थ- एक जन अनेक ऋचाओं का स्तव करते हुए, यज्ञानुष्ठान में सहायता करते हैं।

12. **सं गच्छध्वं सं वदध्वं,सं वो मनांसि जानताम्।** (10.191.2)

अर्थ- स्तोताओं, तुम मिलित होओ, एक साथ होकर स्तोत्र पढ़ो और तुम लोगों का मन एक सा हो।

13. **समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः।**

अर्थ- पुरोहितों की स्तुति एक सी हो,इनका आगमन एक साथ हो, और इनके मन तथा चित्त एक समान हों।

14. **द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते।** (ऋ. 2.12.13)

अर्थ- इन्द्र के लिये द्युलोक और पृथिवी लोक भी प्रणाम करने के लिये स्वयं झुक जाते हैं।

15. **पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।** (ऋग् -10.10.12)

अर्थ- जो भ्राता भगिनी का सम्भोग करता है, उसे लोग पापी कहते हैं।

16. **बृहस्पतिर्या अविन्दन् निगूढाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः।** (ऋग् - 10.108.11)

अर्थ- बृहस्पति, सोम, सोमाभिषव कर्त्ता पत्थर, ऋषि और मेधावी लोग इस गुप्त स्थान में स्थित गायों की बात जान गये हैं।

ऋग्वेद संहिता-एक दृष्टि में

आचार्य	-	पैल
ऋत्विक्	-	होता
उपवेद	-	आयुर्वेद
अपरनाम	-	दशतयी, होतृवेद
विभाजन	-	1. अष्टकक्रम 2. मण्डलक्रम
अष्टक	-	8
मण्डल	-	10
अध्याय	-	64
वर्ग	-	2024
मन्त्र	-	10580-1/4 (10552)
अनुवाक	-	85
सूक्त	-	1028 (11 बालखिल्य सूक्त)
उत्पत्ति देवता	-	अग्नि
शाखा	-	1. शाकल 2. बाष्कल 3. आश्वलायन 4. शांखायन 5. माण्डूकायन
ब्राह्मण	-	* ऐतरेय ब्राह्मण * कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण
आरण्यक	-	* ऐतरेय आरण्यक * शांखायन आरण्यक
उपनिषद्	-	* ऐतरेय * कौषीतकि

श्रौतसूत्र	-	1. आश्वलायन श्रौतसूत्र 2. शांखायन श्रौतसूत्र
गृह्यसूत्र	-	1.आश्वलायन 2. शांखायन 3. कौषीतकि (शाम्बव्य)
धर्मसूत्र	-	1.वसिष्ठ (वासिष्ठ) 2. विष्णु धर्मसूत्र
शुल्बसूत्र	-	उपलब्ध नहीं
शिक्षा	-	1. पाणिनीय शिक्षा 2. वसिष्ठ शिक्षा
प्रातिशाख्य	-	ऋक्-प्रातिशाख्य
भाष्यकार	-	स्कन्दस्वामी, नारायण, उद्गीथ , माधवभट्ट, वेङ्कटमाधव, धानुष्क यज्वा, आनन्दतीर्थ, आत्मानन्द, सायण।

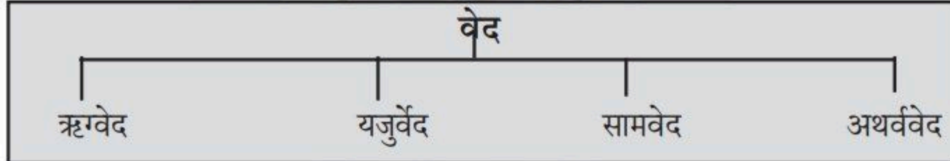
वेद	भाष्यकार	भाष्य	सन् (वर्ष)
ऋग्वेद			
	स्कन्दस्वामी	प्रथम पाँच अष्टक पर	625 ई.
	नारायण	षष्ठ तथा सप्तम अष्टक पर	
	उद्गीथ	अष्टम अष्टक पर	
	वेङ्कटमाधव	सम्पूर्ण ऋग्वेद पर	1030-1150
	आनन्दतीर्थ	ऋग्वेद प्रथम 40 सूक्तों पर	**1198-1278 ई.**
	आत्मानन्द	अस्यवामीय सूक्त पर भाष्य	1100 ई.
	सायणाचार्य	'वेदार्थप्रकाश' नामक भाष्य	1315-1387 ई. (11वीं शती)
यजुर्वेद (शुक्लयजुर्वेद)			
	उव्वट (उवट)	शुक्लयजुर्वेदीय उव्वट भाष्य	11वीं शती
	महीधर	वेददीप (वाजसनेयि संहिता)	16वीं शती
	हलायुध	काण्व संहिता पर ब्राह्मणसर्वस्व	12वीं शती ई.
	सायण	काण्वसंहिता पर	
	अनन्ताचार्य	काण्वसंहिता के उत्तरार्ध पर	16वीं शती ई.
	आनन्दबोध		
	भट्टोपाध्याय	काण्वसंहिता पर	
	शौनक	माध्यान्दिनसंहिता 31वें अध्याय पर	
कृष्ण यजुर्वेद			
	कुण्डिन	तैत्तिरीय संहिता की वृत्ति	
	भवस्वामी	तैत्तिरीय संहिता भवस्वाम्यादिभाष्य	विक्र  .पू

वेद	भाष्यकार	भाष्य	सन् (वर्ष)
	गुहदेव	तैत्तिरीय संहिता	8-9वीं वि.शती
	क्षुर	तैत्तिरीय संहिता	
	भट्टभास्कर मिश्र	ज्ञानयज्ञ तैत्तिरीय संहिता	11वीं शती ई.
	सायण	तैत्तिरीय संहिता	
सामवेद			
	माधव	विवरण (सामवेद संहिता)	600 ई. लगभग
	गुणविष्णु	छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य	12वीं शती ई. उत्तरार्ध
	भरत स्वामी	सम्पूर्ण सामवेद पर	13-14वीं शती ई.
	भास्कर मिश्र	आर्षेय ब्राह्मण पर	
	सायण	सामवेदीय ब्राह्मणों पर	
अथर्ववेद			
	सायण	सम्पूर्ण अथर्ववेद पर	

चारों वेदों की शाखायें

शाकल, बाष्कल, माध्यन्दिन (वाजसनेयि), काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल, कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय, शौनक, पैप्पलाद आदि

वैदिक वाङ्मय-एक दृष्टि में



वेद	-	आचार्य
ऋग्वेद	-	पैल
यजुर्वेद	-	वैशम्पायन
सामवेद	-	जैमिनि
अथर्ववेद	-	सुमन्तु

वेद	-	देवता
ऋग्वेद	-	अग्नि
यजुर्वेद	-	वायु
सामवेद	-	आदित्य (सूर्य)
अथर्ववेद	-	सोम

वेद	-	ऋत्विक्
ऋग्वेद	-	होता
यजुर्वेद	-	अध्वर्यु
सामवेद	-	उद्गाता
अथर्ववेद	-	ब्रह्मा

वेद	-	उपवेद
ऋग्वेद	-	आयुर्वेद
यजुर्वेद	-	धनुर्वेद
सामवेद	-	गान्धर्ववेद
अथर्ववेद	-	सर्पवेद आदि

वेद	–	शाखा
ऋग्वेद	-	शाकल, बाष्कल
यजुर्वेद	-	माध्यन्दिन (वाजसनेयि),
	-	काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल
सामवेद	-	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय
अथर्ववेद	-	शौनक, पैप्पलाद

वेद	-	ब्राह्मण
ऋग्वेद	-	ऐतरेय, कौषीतकि (शांखायन)
* शुक्लयजुर्वेद	-	शतपथ ब्राह्मण
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	-	तांड्य (पंचविंश), षड्विंश, सामविधान, आर्षेय देवताध्याय, उपनिषद्, (मन्त्रब्राह्मण), संहितोपनिषद् वंश ब्राह्मण
अथर्ववेद	-	गोपथ ब्राह्मण

वेद	-	आरण्यक
ऋग्वेद	-	ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)
* शुक्लयजुर्वेद	-	बृहदारण्यक
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय
सामवेद	-	कोई आरण्यक प्राप्त नहीं होता
अथर्ववेद	-	कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं

वेद	-	उपनिषद्
ऋग्वेद	-	ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)
यजुर्वेद		
* शुक्लयजुर्वेद	-	ईशोपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद् ,
* कृष्णयजुर्वेद	-	तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी, महानारायण
सामवेद	-	छान्दोग्य, केनोपनिषद्
अथर्ववेद	-	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य

वेद	-	शिक्षाग्रन्थ
ऋग्वेद	-	पाणिनीय शिक्षा, स्वराङ्कुशा, षोडशश्लोकी, शैशिरीय, आपिशलि शिक्षा

यजुर्वेद

* शुक्लयजुर्वेद	-	याज्ञवल्क्यशिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी पाराशरी, माध्यन्दिनी शिक्षा आदि।
* कृष्णयजुर्वेद	-	भारद्वाज शिक्षा, व्यास शिक्षा, शम्भु शिक्षा, कौहलीय, सर्वसम्मत, आरण्य, सिद्धान्त शिक्षा आदि।
सामवेद	-	गौतमी शिक्षा, लोमशी शिक्षा, नारदीय शिक्षा।
अथर्ववेद	-	माण्डूकी शिक्षा।

वेद	**–**	**श्रौतसूत्र**
ऋग्वेद	-	शांखायन, आश्वलायन श्रौतसूत्र
यजुर्वेद		* शुक्लयजुर्वेद का कात्यायन श्रौतसूत्र
	-	* कृष्णयजुर्वेद का बौधायन, वाधूल, मानक, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ (हिरण्यकेशी), वैखानस, वाराह श्रौतसूत्र
सामवेद	-	आर्षेय, कल्प या मशक, लाट्यायन,द्राह्यायण, जैमिनीय
अथर्ववेद	-	वैतान श्रौतसूत्र

वेद	**–**	**गृह्यसूत्र**
ऋग्वेद	-	आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि
यजुर्वेद		* शुक्लयजुर्वेद पारस्कर गृह्यसूत्र, बौधायन, मानव,
	-	भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, अग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस
सामवेद	-	गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम
अथर्ववेद		कौशिक गृह्यसूत्र

वेद	**-**	**धर्मसूत्र**
ऋग्वेद	-	वासिष्ठ धर्मसूत्र
यजुर्वेद	-	बौधायन, वैखानस, आपस्तम्ब, विष्णु, हारीत, हिरण्यकेशी, शंख
सामवेद	-	गौतम धर्मसूत्र
अथर्ववद	-	कोई धर्मसूत्र प्राप्त नहीं है

वेद	**-**	**शुल्बसूत्र**
ऋग्वेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता।
* शुक्लयजुर्वेद	-	कात्यायन शुल्बसूत्र
* कृष्णयजुर्वेद	-	बौधायन, आपस्तम्ब, मानव शुल्बसूत्र
सामवेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।
अथर्ववेद	-	कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं है।

पाश्चात्त्य अनुवादक / सम्पादक

वैदिकवाङ्मय	अनुवादक	भाषा	सन् (वर्ष)
ऋग्वेद	विल्सन	अंग्रेजी	1850
	हेरमान ग्रासमान	जर्मन	1876-77
	अल्फ्रेड लुडविग	जर्मन	1876-88
	प्रो. ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्यमय)	1889-92
	प्रो. ओल्डेनबर्ग	जर्मन	1909-12
	लांग्ल्वा	फ्रेंच	1848-51
ऐतरेयब्राह्मण	प्रो. हाग	अंग्रेजी	1993
	आउफ्रेक्ट	रोमन अक्षर	1879
कौषीतकि ब्राह्मण	प्रो. लिन्डनर	-	1887
	डॉ. कीथ	अंग्रेजी	1930
शुक्लयजुर्वेद	वेबर	देवनागरी	1849-52
वाजसनेयि/माध्यान्दिनसंहिता	प्रो. ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1899
शतपथ ब्राह्मण	वेबर	-	1855
	कैलेंड	अंग्रेजी	1926
	ईग्लिंग	अंग्रेजी	-
तैत्तिरीय संहिता	वेबर	रोमन अक्षर	1871-72
मैत्रायणी संहिता	श्रेडर	-	1881-86
काठक संहिता	श्रेडर	-	1910
राणायनीय शाखा	स्टेवेन्सन	अंग्रेजी	1843
कौथुम शाखा	बेन्फे	जर्मन	1848
जैमिनीय शाखा	कैलेन्ड	रोमन अक्षर	1907
सामवेद	ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1891-99
अद्भुत ब्राह्मण	वेबर	जर्मन	1858
अथर्ववेद	ग्रिफिथ	अंग्रेजी (पद्य)	1895-98
	ह्विटनी और लानमान	अंग्रेजी	1905
पैप्पलाद संहिता	ब्लूमफील्ड	अंग्रेजी	1901

❑❑

3. यजुर्वेद

- विश्ववाङ्मय का सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद है,वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद,यजुर्वेद, सामवेद,अथर्ववेद। वेद शब्द ज्ञानार्थक **विद् धातु** से **घञ् प्रत्यय** के योग से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है – 'ज्ञान'। अतः वेद शब्द का अर्थ है- **'ज्ञान की राशि'** या **'ज्ञान का संग्रह ग्रन्थ'**। संस्कृत व्याकरण के अनुसार वेद शब्द चार धातुओं से विभिन्न अर्थों में बनता है-

सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे ।
विन्दति विन्दते प्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शेष्विदं क्रमात्।।

- अर्थात् विद् सत्तायाम्, विद् ज्ञाने,विद् विचारणे, विद्लृँ लाभे इन चार अर्थों में विद् धातु का प्रयोग होता है यहाँ पर विद् ज्ञाने धातु का ग्रहण किया गया है।
- आचार्य विष्णुमित्र ऋक्प्रातिशाख्य में इन्हीं (उपर्युक्त) अर्थों को समन्वित करते हुए कहते हैं- **'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि-पुरुषार्था इति वेदाः।'** अर्थात् वेद शब्द का भावार्थ है 'जिन ग्रन्थों के द्वारा धर्म,अर्थ,काम,और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय का बोध हो।
- आचार्य सायण तैत्तिरीय संहिता की भाष्य भूमिका में वेद की व्याख्या करते हुए कहते हैं- **''इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकम् उपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।''**
- यजुर्वेद कर्मकाण्ड प्रधान ग्रन्थ है जिसका संकलन अध्वर्यु नामक ऋत्विक् के उपयोग के लिए होता था। यजुष् शब्द **यज् धातु से उसि प्रत्यय** के योग से सम्पन्न होता है जिसका अर्थ है– यज्ञ के साधक मन्त्र। यजुष् गद्य पद्यात्मक हैं इसीलिए इसे **'अनियताक्षरावसानम्'** कहा गया है,अर्थात् जिसमें पद्यों के समान अक्षरों की संख्या निश्चित नहीं होती है।
- विद्वानों के द्वारा यजुर्वेद के यजुष् शब्द की अनेक व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई जो विभिन्न दृष्टिकोण के सूचक हैं यजुष् के कुछ मुख्य अर्थ इसप्रकार हैं-
- आचार्य यास्क निरुक्त के सातवें अध्याय में यजुष् की व्याख्या करते हुए कहते हैं- **'यजुर्यजतेः'** अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मन्त्रों को यजुष् कहते हैं।
  'शेषे यजुः शब्दः' अर्थात् पद्यबन्ध और गीति से रहित मन्त्रात्मक रचना को यजुष् कहते हैं।

- तैत्तिरीय संहिता की **भाष्यभूमिका** में सायण यजुर्वेद के महत्त्व का प्रतिपादन इस प्रकार करते हैं-

  'भित्तिस्थानीयो यजुर्वेदः, चित्रस्थानावितरौ। तस्मात् कर्मसु यजुर्वेदस्यैव प्राधान्यम्।' अर्थात् यजुर्वेद भित्ति है अन्य ऋग्वेद एवं सामवेद चित्र हैं इसलिए यजुर्वेद सबसे मुख्य है यज्ञ को आधार बनाकर ही ऋचाओं का पाठ और सामगान होता है।

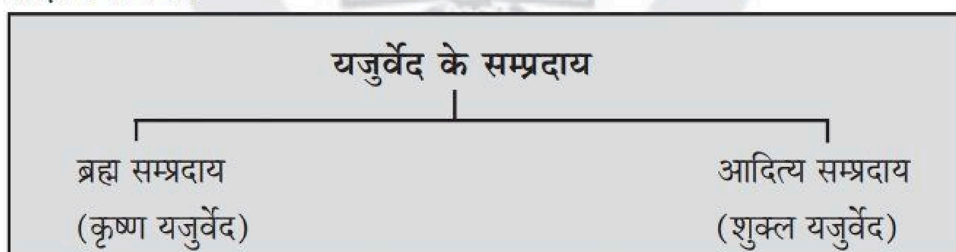
- यजुर्वेद के दो सम्प्रदाय हैं– ब्रह्म सम्प्रदाय तथा आदित्य सम्प्रदाय । ब्रह्म सम्प्रदाय के अन्तर्गत कृष्ण यजुर्वेद तथा आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्ल यजुर्वेद आता है, इस प्रकार यजुर्वेद के दो भाग हैं। यद्यपि प्राचीनकाल में, यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखा **'एकशतमध्वर्युशाखाः' 'यजुरेकशताध्वकम्', 'शाखानां तु शतेनाथ यजुर्वेदमथाकरोत्',** प्राप्त होने का विवरण प्राप्त होता है।

- शुक्लयजुर्वेद की दो संहितायें प्राप्त होती हैं वाजसनेयि संहिता या माध्यन्दिन संहिता तथा काण्व संहिता दोनों ही संहिताओं में चालीस अध्याय प्राप्त होते हैं।

- सम्प्रति कृष्ण यजुर्वेद की केवल चार शाखाएँ ही उपलब्ध होती हैं- **तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक, कपिष्ठल।**

- यज्ञादि कर्मों के प्रतिपादक गद्यात्मक मन्त्रों को यजुष् कहा जाता है।

- यजुर्वेद कर्मकाण्ड का वेद है जिसका संकलन अध्वर्यु नामक ऋत्विक् के उपयोग के लिए किया गया।



- ब्रह्मसम्प्रदाय के अन्तर्गत कृष्ण यजुर्वेद तथा आदित्य सम्प्रदाय के अन्तर्गत शुक्ल यजुर्वेद है।

- पतञ्जलि ने महाभाष्य में यजुर्वेद की सौ या एक सौ एक शाखा का उल्लेख किया है- **'एकशतमध्वर्युशाखाः'**

- चरणव्यूह में यजुर्वेद की ८६ शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

- वर्तमान समय में शुक्ल यजुर्वेद की दो तथा कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

यजुर्वेद की शाखाएँ

1. शुक्ल यजुर्वेद -	क - माध्यन्दिन शाखा (वाजसनेयिशाखा)	
	ख - काण्व शाखा	
2. कृष्ण यजुर्वेद -	क - तैत्तिरीय शाखा	ख - मैत्रायणी शाखा
	ग - कठ शाखा	घ - कपिष्ठल शाखा

- शुक्ल यजुर्वेद को 'वाजसनेयि संहिता' भी कहते हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद के **ऋषि याज्ञवल्क्य हैं** जो मिथिला के निवासी थे।
- शुक्ल यजुर्वेद में यज्ञों से सम्बद्ध विशुद्ध मन्त्रात्मक भाग है।
- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं, माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता तथा काण्व संहिता।
- माध्यन्दिन शाखा में चालीस अध्याय, 303 अनुवाक तथा 1975 मन्त्र हैं।
- काण्व शाखा का विभाजन अध्याय और अनुवाक के रूप में हुआ है।
- काण्व शाखा में 40 अध्याय 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र प्राप्त होते हैं।

शुक्ल यजुर्वेद

माध्यन्दिन या वाजसनेयि संहिता	काण्व संहिता
(40 अध्याय 303 अनुवाक और 1975 मन्त्र)	(40 अध्याय 328 अनुवाक और 2086 मन्त्र)

- वर्तमान समय में काण्वसंहिता का प्रचार महाराष्ट्र तथा माध्यन्दिन संहिता का प्रचार उत्तर भारत में है।
- प्राचीनकाल में काण्व शाखा का प्रचार उत्तर भारत में था।
- काण्वसंहिता में कुरु और पञ्चालों का उल्लेख प्राप्त होता है।

शुक्ल यजुर्वेद की विषय वस्तु

- प्रथम दो अध्यायों में दर्श एवं पौर्णमास यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- अध्याय तीन में अग्निहोत्र एवं चातुर्मास्य यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं।
- अग्निष्टोम और सोमयाग का वर्णन अध्याय चार से आठ में वर्णित है।
- वाजपेय और राजसूय याग का वर्णन अध्याय नौ और दस में वर्णित है।
- अध्याय ग्यारह से अठारह तक अग्निचयन और विविध प्रकार की वेदियों के निर्माण से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- अध्याय सोलह को 'रुद्राध्याय' कहा जाता है।
- 'सौत्रामणी याग' का निरूपण अध्याय 19 से 21 में है।
- अध्याय 22-25 तक 'अश्वमेध यज्ञ' का विधान वर्णित है।
- 26 से 29 अध्याय को 'खिल अध्याय' कहते हैं।
- 'पुरुषमेध' का वर्णन अध्याय तीस में प्राप्त होता है।
- अध्याय 31 को 'पुरुषसूक्त' और 'विष्णुसूक्त' भी कहते हैं।

- विराट् पुरुष के दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन अध्याय 32 में है।
- अध्याय 33 में 'सर्वमेध सूक्त' है।
- शिवसंकल्प उपनिषद् या 'शिवसंकल्पसूक्त' अध्याय 34 में है।
- अध्याय 35 में 'पितृमेध' का वर्णन है।
- अध्याय 36-38 में 'प्रवर्ग्यनामक यज्ञ' से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- अध्याय 39 में 'अन्त्येष्टि' से सम्बन्धित मन्त्र हैं।
- अध्याय 39 को 'प्रायश्चित्त अध्याय' भी कहा जाता है।
- अध्याय 40 को 'ईशोपनिषद्' कहा जाता है।

शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण

- शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक ब्राह्मण ग्रन्थ है - शतपथ ब्राह्मण
- शतपथ ब्राह्मण के रचयिता 'याज्ञवल्क्य' माने गए हैं।
- शतपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन तथा काण्व दोनों शाखाओं से है।
- शतपथ ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या 100 है।
- 'गणरत्न महोदधि' शतपथ ब्राह्मण को परिभाषित करते हुए कहते हैं, 'शतं पन्थानो मार्गा नामाध्याया यस्य तत् शतपथम्' अर्थात् जिसमें सौ अध्याय रूपी मार्ग हैं उसे शतपथ कहते हैं।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण का सम्पादन आचार्य **जे॰ एगलिंग** ने किया।
- काण्व शाखीय शतपथ ब्राह्मण में 104 अध्याय हैं।
- माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड ,100 अध्याय , 438ब्राह्मण तथा 7624 कंडिकाएँ हैं।
- **शतपथ ब्राह्मण के महत्त्वपूर्ण आख्यान -** मनु एवं श्रद्धा, जलप्लावन की कथा तथा मत्स्य, इन्द्र- वृत्र युद्ध, स्त्री - कामुक गन्धर्व, कद्रू - सुपर्णी, च्यवन - सुकन्या, स्वर्भानु और सूर्यग्रहण, नमुचि और वृत्र, पृथु वैन्य, पुरूरवा - उर्वशी, राजा केशिन्, वाणी का आख्यान, सृष्टि सम्बन्धी उपाख्यान।
- **शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक -** बृहदारण्यक
- शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं के अन्तिम छः अध्यायों को 'बृहदारण्यक' कहते हैं ।
- बृहदारण्यक का प्रथम प्रकाशन 1889 ई॰ **'आटो वोह्टलिङ्क'** ने किया।
- **शुक्लयजुर्वेद के उपनिषद् -** ईशावास्योपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद्।

ईशावास्योपनिषद् का सामान्य परिचय

- ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय है।
- ईशावास्योपनिषद् में कुल 18 मन्त्र हैं।
- ईशावास्योपनिषद् का प्रारम्भ 'ईशावास्यम्' से होता है।

- सबसे छोटा उपनिषद् किन्तु महत्त्व की दृष्टि से सर्वोपरि ।
- ईशावास्योपनिषद् में विद्या- अविद्या तथा सम्भूति- असम्भूति का निरूपण है।

बृहदारण्यकोपनिषद् का सामान्य परिचय

- बृहदारण्यकोपनिषद् शतपथ ब्राह्मण के 14 वें काण्ड का अन्तिम भाग है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् सबसे बड़ा एवं प्राचीनतम उपनिषद् है।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में तीन भाग हैं, प्रत्येक भाग में दो - दो अध्याय हैं।
- प्रथम भाग को मधुकाण्ड,द्वितीय भाग को याज्ञवल्क्यकाण्ड,तृतीय भाग को खिलकाण्ड कहते हैं।
- बृहदारण्यकोपनिषद् में कुल अध्यायों की संख्या छः है।
- प्रत्येक अध्याय ब्राह्मणों में विभाजित हैं, जो निम्नवत् है -

अध्याय	ब्राह्मण	मन्त्र
प्रथम अध्याय	छः ब्राह्मण	80
द्वितीय अध्याय	छः ब्राह्मण	66
तृतीय अध्याय	नौ ब्राह्मण	92
चतुर्थ अध्याय	छः ब्राह्मण	82
पञ्चम अध्याय	पन्द्रह ब्राह्मण	15
षष्ठ अध्याय	पाँच ब्राह्मण	75

- याज्ञवल्क्य - मैत्रेयी का संवाद बृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त होता है।
- जनक और याज्ञवल्क्य संवाद, याज्ञवल्क्य और वचक्नु की कन्या गार्गी का संवाद भी इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

शुक्ल यजुर्वेद - एक अध्ययन

- **ऋत्विक् –** अध्वर्यु
- **शाखा–** माध्यन्दिन या वाजसनेयि शाखा -440 अध्याय, 303 अनुवाक, 1975 मन्त्र काण्वशाखा - 40 अध्याय, 328 अनुवाक, 2086 मन्त्र,
- शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के अक्षरों की संख्या 2,88000 (दो लाख अट्ठासी हजार) दी गयी है।
- **उपनिषद्-** ईशावास्योपनिषद्- 18 मन्त्र
- बृहदारण्यकोपनिषद्- 6 अध्याय, 47 ब्राह्मण

कल्पसूत्र-

1. **श्रौतसूत्र-** कात्यायन श्रौतसूत्र- 26 अध्याय
2. **गृह्यसूत्र-** पारस्कर गृह्यसूत्र- 3 काण्ड
3. **शुल्बसूत्र-** (क) बौधायन शुल्बसूत्र- 3 परिच्छेद, 419सूत्र

(ख) मानव शुल्बसूत्र

(ग) आपस्तम्ब शुल्बसूत्र (6पटल, 21अध्याय, 498 सूत्र)

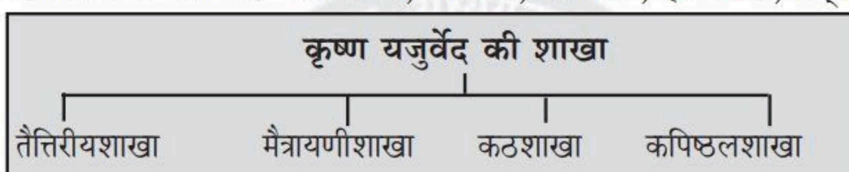
(घ) कात्यायन शुल्बसूत्र, दो भाग

(ङ) मैत्रायणीय शुल्बसूत्र
(च) हिरण्यकेशी या सत्याषाढशुल्बसूत्र
(छ) वराह शुल्बसूत्र

- **शिक्षाग्रन्थ-** याज्ञवल्क्य शिक्षा - (116 श्लोक)
- **प्रातिशाख्यग्रन्थ-** वाजसनेयि प्रातिशाख्य - रचयिता - कात्यायन अध्याय-8

कृष्णयजुर्वेद का सामान्य परिचय

- कृष्ण यजुर्वेद का सम्बन्ध 'ब्रह्म सम्प्रदाय' से है।
- इसमें मन्त्रों के साथ व्याख्या और विनियोग वाला अंश मिश्रित है।
- कृष्ण यजुर्वेद के पारायणकर्त्ता को 'मिश्र' नाम दिया गया है।
- चरणव्यूह में कृष्ण यजुर्वेद की 69 शाखा का उल्लेख मिलता है।
- कृष्ण यजुर्वेद में तैत्तिरीय शाखा के दो भेद हैं- औख्य,खांडिकेय।
- खांडिकेय के पाँच भेद - आपस्तम्ब, बौधायन, सत्याषाढ, हैरण्यकेश,काट्यायन।



- वर्तमान समय में कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीयसंहिता प्रतिनिधि संहिता है।
- इसके ऋषि तित्तिर हैं जो वैशम्पायन के शिष्य थे।
- तैत्तिरीय शाखा में 7 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631अनुवाक हैं।
- तैत्तिरीय शाखा में मन्त्र और ब्राह्मण मिश्रित है।
- तैत्तिरीय संहिता का विशेष प्रचार महाराष्ट्र, आन्ध्र, दक्षिण भारत में है।
- आचार्य सायण ने सर्वप्रथम तैत्तिरीय संहिता का विस्तृत भाष्य किया था।
- भट्टभास्कर मिश्र ने 11वीं शती में ज्ञानयज्ञ नामक भाष्य तैत्तिरीय संहिता के ऊपर लिखा।
- तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद डा. कीथ ने किया।

तैत्तिरीय संहिता की विषय वस्तु

काण्ड	विषय-वस्तु
प्रथम काण्ड	दर्शपूर्णमास, अग्निष्टोम, राजसूय।
द्वितीय काण्ड	पशुविधान, इष्टि
तृतीय काण्ड	पवमानग्रह आदि, वैकृतविधि, इष्टिहोम
चतुर्थ काण्ड	अग्निचिति,देवयजनग्रह, चितिवर्णन, वसोर्धारा,संस्कार
पञ्चम काण्ड	उख्य अग्नि, चितिनिरूपण, इष्टकात्रय,वायव्य पशु आदि
षष्ठ काण्ड	सोममन्त्रब्राह्मण
सप्तम काण्ड	अश्वमेध, षड्रात्र,सत्रकर्म आदि।

मैत्रायणी संहिता का परिचय

- मैत्रायणी संहिता की सात शाखाओं का उल्लेख चरणव्यूह में प्राप्त होता है। सात शाखाएँ हैं- मानव, दुन्दुभ, ऐकेय, वाराह, हारिद्रवेय, श्याम, श्यामायनीय।
- मैत्रायणी संहिता में 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र हैं।

मैत्रायणी संहिता की विषय वस्तु

काण्ड	विषयवस्तु
प्रथम काण्ड	संहिता, दर्शपूर्णमास, अध्वर, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, वाजपेय याग
द्वितीय काण्ड	काम्य इष्टियाँ, राजसूय और अग्निचिति
तृतीय काण्ड	अग्निचिति, अध्वर आदि की विधि, सौत्रामणी और अश्वमेध याग
चतुर्थ काण्ड	खिल नाम से प्रसिद्ध, राजसूय, अध्वर, प्रवर्ग्य आदि से सम्बन्धित सामग्री।

- मैत्रायणी संहिता में ऋग्वेद से 1701 ऋचाएँ उद्धृत की गई हैं।

काठक या कठ शाखा का सामान्य परिचय

- कठ शाखा चरकों की शाखा मानी जाती है।
- काठक शाखा पाँच खण्डों में विभक्त है।
- पाँच खण्डों के नाम हैं- इठिमिका, मध्यमिका, ओरिमिका, याज्यानुवाक्या, अश्वमेधादि अनुवचन।
- उपखण्डों को 'स्थानक' और अनुवचन नाम से सम्बोधित किया गया है।
- कठ शाखा में चालीस स्थानक, तेरह अनुवचन, 843 अनुवाक, 3091 मन्त्र। मन्त्र एवं ब्राह्मण की मिश्रित संख्या 18 हजार है।

खण्ड के नाम	स्थानक	विषय विवेचन
इठिमिका खण्ड	18	पुरोडाश, अध्वर, राजसूय वाजपेय आदि का वर्णन
मध्यमिका खण्ड	12	सावित्री, स्वर्ग,दीक्षित, आयुष्य पञ्चचूड़ आदि का वर्णन
ओरिमिका खण्ड	10	चातुर्मास्य, सौत्रामणी सत्र, प्रायश्चित्त, पुरोडाश ब्राह्मण, यजमान ब्राह्मण आदि का विवेचन याज्यानुवाक्या इसका समावेश ओरिमिका खण्ड
अश्वमेधादि अनुवचन	13	मन्त्र एवं ब्राह्मण भाग का मिश्रण।

- कठशाखा के विषय में पतञ्जलि का कथन- 'ग्रामे-ग्रामे काठकं कालापकं च प्रोच्यते'।

कठ-कपिष्ठल शाखा का सामान्य परिचय

- यह शाखा चरणव्यूह के अनुसार चरकों की 12 शाखाओं में से एक है।
- इस शाखा के प्रवर्तक कपिष्ठल ऋषि थे।
- कृष्ण यजुर्वेद की कठ कपिष्ठल शाखा अपूर्ण प्राप्त है।
- कठ-कपिष्ठल की केवल एक प्रति उपलब्ध है जो सरस्वती भवन पुस्तकालय काशी

में सुरक्षित है।

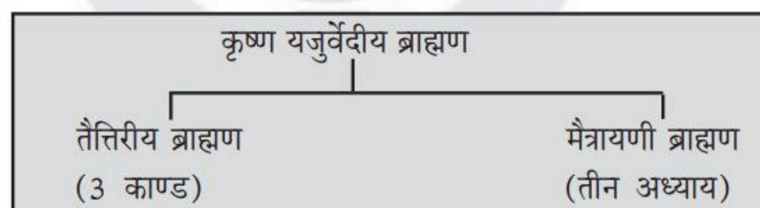
- इस शाखा का विभाजन ऋग्वेद के समान अष्टक एवं अध्यायों में हैं।
- कठ-कपिष्ठल शाखा में कुल छः अष्टक, 48 अध्याय हैं।
- **कृष्णयजुर्वेदीय ब्राह्मण-** दो ब्राह्मण- तैत्तिरीय ब्राह्मण तथा मैत्रायणी ब्राह्मण
- तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिर हैं।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का प्रथम संस्करण 1890 में कलकत्ता से प्रकाशित।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण का द्वितीय संस्करण 1899 ई. में पूना से प्रकाशित।

तैत्तिरीय ब्राह्मण की विषय वस्तु

काण्ड	विषय वस्तु
प्रथम काण्ड	अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, राजसूय सोमयाग नक्षत्रेष्टि का वर्णन
द्वितीय काण्ड	अग्निहोत्र, सौत्रामणी, बृहस्पतिसव, अनेक सूत्रों का वर्णन
तृतीय काण्ड	नक्षत्रेष्टि का वर्णन विस्तार के साथ, पुरुषमेध

मैत्रायणी ब्राह्मण का परिचय

- मैत्रायणी ब्राह्मण में तीन अध्याय हैं।
- मैत्रायणी ब्राह्मण मैत्रायणी संहिता का चतुर्थ अध्याय ही माना जाता है।
- 'रात्रि की उत्पत्ति' का आख्यान इस ब्राह्मण में प्राप्त होता है।
- 'पर्वतोपाख्यान' भी मैत्रायणी ब्राह्मण में वर्णित है।



कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यक का सामान्य परिचय

- कृष्ण यजुर्वेद के दो आरण्यक उपलब्ध हैं- तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणीय आरण्यक।
- **तैत्तिरीय आरण्यक-** राजेन्द्र लाल मिश्र ने 1782ई. में सायण भाष्य के साथ प्रकाशित किया।
- इसमें दस प्रपाठक या परिच्छेद हैं।
- प्रपाठकों का नामकरण उनके प्रथम पद के आधार पर किया गया है।
- तैत्तिरीय आरण्यक के दस प्रपाठक के नाम- भद्र, सह वै, चिति, युञ्जते, देव वै, परे, शिक्षा, ब्रह्मविद्या, भृगु, नारायणीय।
- तैत्तिरीय आरण्यक में कुल 170 अनुवाक हैं।
- सप्तम से नवम प्रपाठक को 'तैत्तिरीयोपनिषद्' कहते हैं।

➢ दशम प्रपाठक को 'महानारायणीयोपनिषद्' कहते हैं जिसे खिल कहते हैं।
➢ तैत्तिरीय आरण्यक में कुरुक्षेत्र, खाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य, काशी आदि के भौगोलिक नामों का उल्लेख है।
➢ 'श्रमण' शब्द का प्रयोग तपस्वी के अर्थ में किया गया है।
➢ तैत्तिरीय आरण्यक में जल के चार रूप बताए गये हैं- मेघ, विद्युत्, गर्जन, वृष्टि।
➢ जल के छः प्रकार बताये गए हैं- वृष्टि का जल, कूपजल, तडागजल, नद्यादि जल, पात्रजल, झरने का जल।

तैत्तिरीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक	प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	आरुण-केतुक नामक अग्नि की उपासना और इष्टका-चयन का वर्णन।
द्वितीय प्रपाठक	स्वाध्याय और पञ्च महायज्ञों का वर्णन
तृतीय प्रपाठक	चातुर्होत्र चिति से सम्बद्ध मन्त्र
चतुर्थ प्रपाठक	प्रवर्ग्य होम से सम्बद्ध मन्त्र
पञ्चम प्रपाठक	यज्ञ सम्बन्धी कतिपय संकेत
षष्ठ प्रपाठक	पितृमेध सम्बन्धी मन्त्रों का संकलन
सप्तम-नवम प्रपाठक	तैत्तिरीय उपनिषद्
दशम प्रपाठक	महानारायणीय उपनिषद् (खिलकाण्ड)

मैत्रायणीय आरण्यक का सामान्य परिचय

➢ मैत्रायणीय आरण्यक को मैत्रायणीय उपनिषद् भी कहते हैं।
➢ मैत्रायणीय आरण्यक में सात प्रपाठक हैं।
➢ इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों के अंश मिश्रित हैं।
➢ मैत्रायणीय आरण्यक में परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है।
➢ अश्वपति, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, शर्याति, ययाति, युवनाश्व आदि राजाओं का उल्लेख मैत्रायणीय आरण्यक में प्राप्त होता है।

मैत्रायणीय आरण्यक में प्रतिपादित विषय

आरण्यक	प्रतिपादित विषय
प्रथम प्रपाठक	ब्रह्मयज्ञ। राजा बृहद्रथ को वैराग्य और मुनि शाकायन्य द्वारा उसे उपदेश
द्वितीय प्रपाठक	शाकायन्य द्वारा ब्रह्मविद्या का उपदेश
तृतीय प्रपाठक	जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन, कर्मफल और पुनर्जन्म
चतुर्थ प्रपाठक	ब्रह्म-सायुज्य-प्राप्ति के उपाय
पञ्चम प्रपाठक	कौत्सायनी स्तुति, ब्रह्म की अनेक रूपों में स्थिति

षष्ठ प्रपाठक	ओम, प्रणव, उद्गीथ और गायत्री की उपासना, आत्मयज्ञ का वर्णन, षडंग योग, शब्द ब्रह्म, निर्विषय मन से मोक्षप्राप्ति।
सप्तम प्रपाठक	आत्म-स्वरूप वर्णन

कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद्

➢ तैत्तिरीयोपनिषद्, कठोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, मैत्रायणीयोपनिषद्, महानारायणोपनिषद्।

तैत्तिरीयोपनिषद् का सामान्य परिचय

➢ तैत्तिरीय आरण्यक के तीन प्रपाठकों (7,8,9) को तैत्तिरीय उपनिषद् कहते हैं।

➢ तैत्तिरीय उपनिषद् का प्रारम्भ 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' से होता है।

➢ तैत्तिरीय उपनिषद् में तीन वल्ली हैं- शीक्षा वल्ली, ब्रह्मानन्द वल्ली, भृगुवल्ली।

➢ शीक्षा वल्ली में 12 अनुवाक, ब्रह्मानन्द वल्ली में नौ अनुवाक, भृगुवल्ली में 10 अनुवाक हैं।

➢ भृगु-वरुण संवाद, पञ्चकोश निरूपण का उल्लेख तैत्तिरीयोपनिषद् में प्राप्त होता है।

तैत्तिरीयोपनिषद् का विभाजन

वल्ली	अनुवाक
शीक्षा वल्ली	12
ब्रह्मानन्द वल्ली	9
भृगु वल्ली	10

कठोपनिषद् का सामान्य परिचय

➢ कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है।

➢ कठोपनिषद् में दो अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय में तीन खण्ड हैं।

➢ यम-नचिकेता की कथा का वर्णन कठोपनिषद् में प्राप्त होता है।

➢ श्रेय-प्रेय का निरूपण कठोपनिषद् में प्राप्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् का सामान्य परिचय

➢ श्वेताश्वतरोपनिषद् में कुल छः अध्याय हैं।

➢ इस उपनिषद् में सांख्य- योग, वेदान्त दर्शन के सिद्धान्त प्रतिपादित हैं।

➢ श्वेताश्वतरोपनिषद् में जगत् के मिथ्यात्व की कल्पना नहीं है।

➢ शिव को परमेश्वर कहा गया है।

➢ कपिल ऋषि का उल्लेख इस उपनिषद् में प्राप्त होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में प्रतिपादित विषय

अध्याय	प्रतिपादित विषय
प्रथम	हंस, त्रैतवाद, माया, क्षर-अक्षर, सत्य-तप से आत्मदर्शन
द्वितीय	योग, योगविधि, ब्रह्म तत्त्व का वर्णन
तृतीय	रुद्र, विश्वरूप, जीव का स्वरूप, आत्मा का स्वरूप
चतुर्थ	एकेश्वरवाद, त्रैतवाद, प्रकृति, माया-मायी, शिव ब्रह्मरूप
पञ्चम	क्षर-अक्षर, कपिल ऋषि, जीवात्मा का स्वरूप
षष्ठ	ब्रह्म के अनेक नाम, हंस, ईश्वर प्रकृति एवं जीव का नियन्ता, गुरुभक्ति

मैत्रायणीयोपनिषद् का सामान्य परिचय

- इसे मैत्री उपनिषद् भी कहते हैं।
- इसमें सात अध्याय हैं।
- मैत्रायणीय आरण्यक को ही मैत्रायणी उपनिषद् कहते हैं।
- इसमें वेद विरोधी सम्प्रदायों का उल्लेख है।
- आत्मा का बाह्य प्रतीक सूर्य है और आभ्यन्तर प्रतीक प्राण है।
- प्रकृति के सत्त्व, रजस् , तमस् इन तीन गुणों का ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र से सम्बन्ध बताया गया है।

महानारायणोपनिषद् का सामान्य परिचय

- तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक महानारायणोपनिषद् कहा जाता है।
- इसके तीन पाठ मिलते हैं- द्रविण, आन्ध्र, कर्णाटक।
- इसे याज्ञिक्युपनिषद् भी कहते हैं।
- नारायण का परमात्म तत्त्व के रूप में उल्लेख है।

कृष्णयजुर्वेद–एक अध्ययन

ऋत्विक्- अध्वर्यु

शाखा- तैत्तिरीयशाखा- 7 काण्ड,44 प्रपाठक, 631 अनुवाक

मैत्रायणीयशाखा- 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 3144 मन्त्र

कठ(काठक)शाखा- 5खण्ड, 40स्थानक, 13अनुवचन, 843अनुवाक, 3091मन्त्र

कपिष्ठल(कठ)शाखा-6अष्टक, 48अध्याय

ब्राह्मण- * तैत्तिरीय ब्राह्मण-3 काण्ड

* मैत्रायणीय ब्राह्मण-3 अध्याय

आरण्यक- * तैत्तिरीय आरण्यक-10प्रपाठक

* मैत्रायणीय आरण्यक-सात प्रपाठक

उपनिषद्- * तैत्तिरीयोपनिषद्-3वल्ली,

* कठोपनिषद्-2अध्याय

* श्वेताश्वतरोपनिषद्-6अध्याय
* मैत्रायणीयोपनिषद्-7अध्याय
* महानारायणोपनिषद्

श्रौतसूत्र-
* बौधायन श्रौतसूत्र-रचयिता बोधायन, 30प्रश्नों में विभाजित
* वाधूल श्रौतसूत्र
* मानव श्रौतसूत्र
* भारद्वाज श्रौतसूत्र
* आपस्तम्ब श्रौतसूत्र रचयिता-आपस्तम्ब
* काठक श्रौतसूत्र
* सत्याषाढ श्रौतसूत्र-24प्रश्न
* वाराह श्रौतसूत्र
* वैखानस श्रौतसूत्र-32 अध्याय

गृह्यसूत्र-
* बौधायन गृह्यसूत्र
* मानव गृह्यसूत्र
* भारद्वाज गृह्यसूत्र
* आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
* काठक गृह्यसूत्र
* आग्निवेश्य गृह्यसूत्र
* हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र
* वाराह गृह्यसूत्र
* वैखानस गृह्यसूत्र
* चारायणीय गृह्यसूत्र
* वैजवाप गृह्यसूत्र

शुल्ब सूत्र-
* बौधायन शुल्बसूत्र
* मानव शुल्बसूत्र
* आपस्तम्ब शुल्बसूत्र
* कात्यायन शुल्बसूत्र
* मैत्रायणीय शुल्बसूत्र
* हिरण्यकेशि (सत्याषाढ) शुल्बसूत्र
* वाराह शुल्बसूत्र

शिक्षा ग्रन्थ-
* व्यास शिक्षा
* वशिष्ठ शिक्षा
* भारद्वाज शिक्षा
* माण्डव्य शिक्षा

❑❑

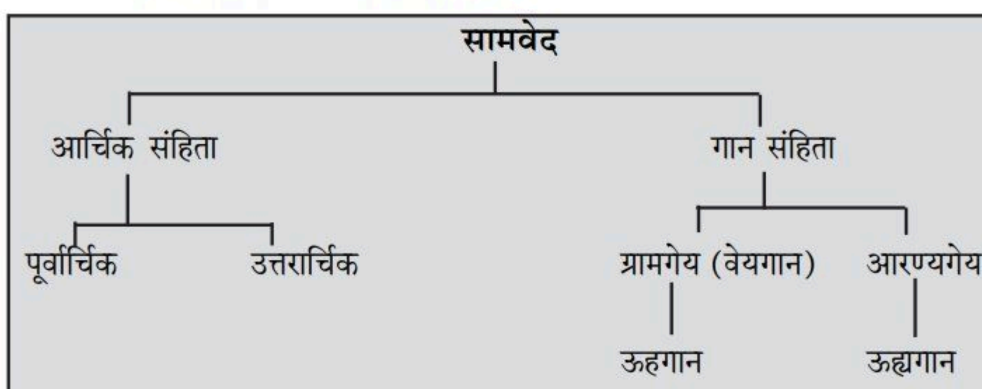
4. सामवेद

- **सामवेद का परिचय** - वैदिक वाङ्मय में सामवेद का विशिष्ट स्थान है। सामवेद वेदों का सार है। भारतीय परम्परा के अनुसार कृष्णद्वैपायन व्यास ने साममन्त्रों का भी संकलन किया जो सामवेदसंहिता के नाम से प्रसिद्ध है। बृहद्देवता ने स्पष्ट प्रतिपादित किया है कि 'जो साम को जानता है वह वेद के रहस्य को जानता है' (सामानि यो वेत्ति स वेद तत्त्वम्।
- गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने सामवेद को ही अपना स्वरूप मानकर इसकी महत्ता घोषित की है (वेदानां सामवेदोऽस्मि) ऋग्वेद कहता है कि जो व्यक्ति जागरणशील है उसी को साम की प्राप्ति होती है (यो जागार तमु सामानि यान्ति)। अथर्ववेद में साम को परब्रह्म का लोमभूत माना गया है (सामानि यस्य लोमानि) वस्तुतः साम के वैशिष्ट्य का अर्थ यही है कि वैदिक साहित्य में सामवेद का स्थान किसी भी अन्य वेद की अपेक्षा न्यून नहीं है। सामवेद उपासना का वेद है।
- **सामतात्पर्य-** साम अर्थात् स्वरों के आरोहावरोह से युक्त मन्त्रों का गान करना। साम का अर्थ है– गायन अर्थात् 'गीतियुक्त मन्त्र'। ऋचाएँ जब विशिष्ट गान पद्धति से गायी जाती हैं तो उसे 'साम' कहते हैं। **'साम'** शब्द से (ऋचाओं के) अक्षर एवं उनसे व्यक्त स्वरमालिका का ग्रहण होता है। **'स्वरलापन'** यह साम का प्रधान अंग है। जैमिनीय सूत्र में गीति को ही साम की संज्ञा प्रदान की गई है **(गीतिषु समाख्या)** बृहदारण्यकोपनिषद् में साम शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई है कि सा का अर्थ है 'ऋक्' और अम् का अर्थ है 'स्वर' अर्थात् ऋक् से सम्बद्ध स्वर प्रधान गायन को साम कहते हैं (सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्। तया सह सम्बद्धः अयो नाम स्वरः यत्र वर्तते तत्साम)
- **सामवेद संहिता का स्वरूप-**
    - सामवेद का ऋत्विक् उद्गाता है।
    - उद्गाता ऋग्वेद की ऋचाओं का शास्त्रीय तथा परम्परागत रूप में गायन करता है।
    - 'ऋक् और साम' में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है।
    - सामवेद में ऋग्वेद के लगभग सभी मण्डलों से मन्त्र संगृहीत हैं किन्तु अधिकांश मन्त्र आठवें तथा नवें मण्डल से ग्रहण किये गये हैं।

- बृहत् साम, रथन्तर साम आदि का ऋग्वेद में उल्लेख है।

सामवेद का विभाजन- प्राचीन दृष्टि से सामवेद को दो संहिताओं में विभाजित किया गया है। 1. आर्चिक संहिता 2. गान संहिता

- आर्चिक शब्द का अर्थ 'ऋक् समूह' है। आर्चिक संहिता के भी दो भेद किये गये हैं।
  1. पूर्वार्चिक 2. उत्तरार्चिक
- गान संहिता को भी दो भागों में विभाजित किया गया है –
  1. ग्रामगेय 2. आरण्यगेय



- सामवेद के दो मुख्य भाग हैं 1. पूर्वार्चिक 2. उत्तरार्चिक
- पूर्वार्चिक में चार काण्ड हैं - 1. आग्नेय 2. ऐन्द्र 3. पावमान 4. आरण्य
- परिशिष्ट के रूप में महानाम्नी आर्चिक भी है।
- इसमें 6 अध्याय या प्रपाठक हैं। अध्यायों के अनुसार कांडों को बाँटा गया है।
- अध्यायों के खण्ड किये गये हैं।
- अध्याय 1 को 'आग्नेय काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 2 से 4 को 'ऐन्द्र काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 5 को 'पावमान काण्ड' माना जाता है।
- अध्याय 6 को 'आरण्य काण्ड' और परिशिष्ट को 'महानाम्नी आर्चिक' माना जाता है।

पूर्वार्चिक विवरण

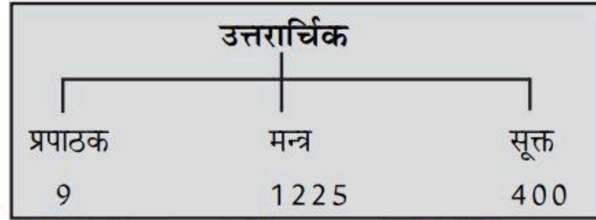
काण्ड	विषय	अध्याय (प्रपाठक)	खण्ड	मन्त्र
1. आग्नेय	अग्नि देवता	1	12	114
2. ऐन्द्र	इन्द्र देवता	2 से 4	12	352
3. पावमान	सोम देवता	5	11	119
4. आरण्यक	इन्द्र, अग्नि,सोम	6	5	55
5. महानाम्नी आर्चिक	इन्द्र	परिशिष्ट	-	10

पूर्वार्चिक मन्त्र संख्या-650

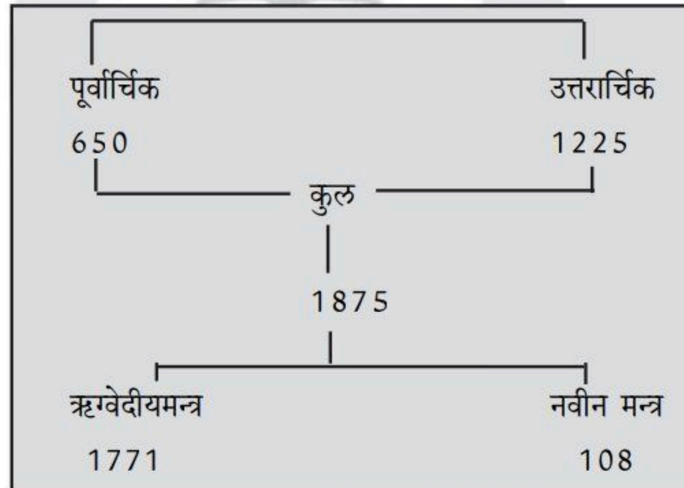
- प्रथम से पञ्चम प्रपाठक '**ग्रामगान**' कहलाता है।
- छठा प्रपाठक '**अरण्यगान**' कहलाता है।

उत्तरार्चिक

- इसमें 9 प्रपाठक (21 अध्याय) हैं, कुल मन्त्र 1225 और कुल सूक्त 400 हैं।
- 400 सूक्तों में 287 सूक्तों में प्रत्येक में 3-3 मन्त्रों का समूह है।
- 66 सूक्तों में 2-2 मन्त्रों का समूह और शेष 47 सूक्तों में 1 से 12 तक मन्त्र समूह हैं।



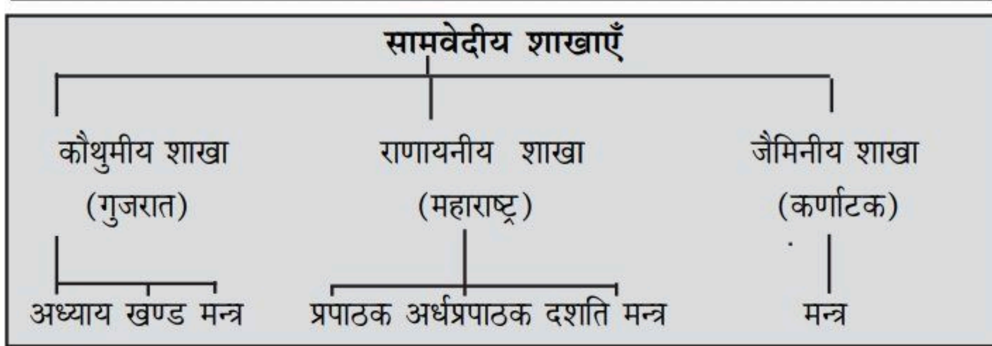
सामवेद मन्त्र संख्या वर्णन-



- सामवेद के कुल मन्त्र 1875 हैं।

सामवेदीय शाखाएँ- महाभाष्य में पतंजलि ने सामवेद की एक सहस्र शाखाओं का उल्लेख किया है, (**सहस्त्रवर्त्मा सामवेदाः**)। जैमिनिगृह्यसूत्र में 13 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।

- ➢ जैमिनि, तलवकार, सात्युग्र, राणायनीय, दुर्वासस, भागुरि, गौरुण्डि, गौर्गुलजि, औपममन्यव, कारडि, सावर्णि, गार्ग्य, वार्षगण्य और दैवन्त्य।
- ➢ उपर्युक्त 13 शाखाओं में से आजकल केवल तीन शाखाएं ही उपलब्ध हैं-



सामवेदीय ब्राह्मण

- सामवेद के उपलब्ध ब्राह्मण 8 हैं।
- सायण ने इनका उल्लेख इस प्रकार किया है-

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं ब्राह्मणमादिमम्।
षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्।
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरिताः।।

1. तांड्य ब्राह्मण-

- इसे पंचविंश, महाब्राह्मण और ब्राह्मण भी कहते हैं।
- इसमें 25 अध्याय है तथा पाँच-पाँच अध्यायों की एक पंचिका है।
- इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है।

2. षड्विंश ब्राह्मण-

- इसमें 26 अध्याय हैं।
- इसको पंचविंश (तांड्य का परिशिष्ट माना जाता है।)
- इसके अन्तिम अध्याय को 'अद्भुत ब्राह्मण' कहते हैं।

3. सामविधान ब्राह्मण-

- इसमें तीन प्रपाठक और 25 अनुवाक हैं।
- इसमें प्रतिपादित विषय अधिकांशतः धर्मशास्त्र के क्षेत्र में आते हैं।

4. आर्षेय ब्राह्मण-

- इस ब्राह्मण में 3 प्रपाठक हैं, जो 82 खण्डों में विभक्त हैं।
- इसमें सामगानों के नाम तथा उनके अन्य नामों का उल्लेख है।

5. दैवत ब्राह्मण-

- इसमें चार खण्ड हैं।
- यह सूत्र शैली में लिखा गया है।
- इसमें सामगानों के देवताओं का विशेषरूप से वर्णन है।

6. उपनिषद् ब्राह्मण-

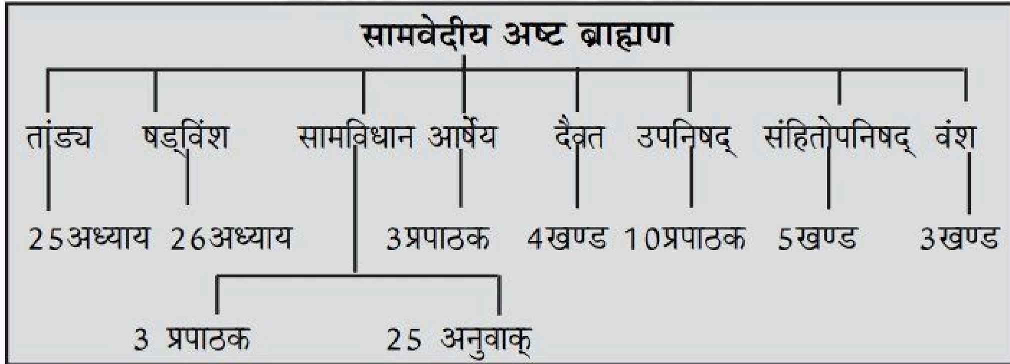
- इसे मन्त्र ब्राह्मण और छान्दोग्य ब्राह्मण भी कहा जाता है।
- इसमें 10 प्रपाठक हैं, प्रत्येक प्रपाठक में 8-8 खण्ड हैं।
- इस पर दो व्याख्याएं हैं - 1. गुणविष्णु कृत छान्दोग्य मन्त्र-भाष्य
  2. सायण कृत-वेदार्थप्रकाश।

7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण-

- संहितोपनिषद् रहस्य को बताने वाला यह ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ माना जाता है।
- इसमें 5 खण्ड हैं जो सूत्रों में विभक्त हैं।

8. वंश ब्राह्मण-

- यह ब्राह्मण बहुत छोटा है। इसमें तीन खण्ड हैं।
- इसमें स्वयंभू ब्रह्मा से सामवेद की परम्परा का प्रारम्भ माना जाता है।

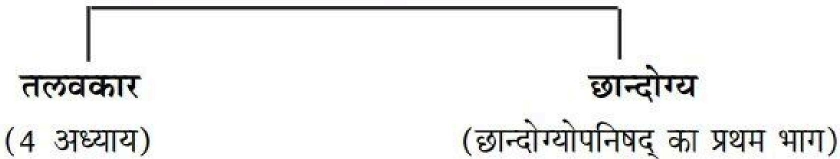


अन्य ब्राह्मण-

- आठ ब्राह्मणों के अतिरिक्त इसी वेद से सम्बद्ध जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण भी है जो 9 वाँ ब्राह्मण माना जाता है।
- जैमिनीय ब्राह्मण में 3 काण्ड हैं जो खण्डों में विभक्त हैं।

सामवेदीय आरण्यक-

- इसके दो आरण्यक प्राप्त होते हैं-



(4 अध्याय) (छान्दोग्योपनिषद् का प्रथम भाग)

सामवेदीय उपनिषद्-

- सामवेद के दो उपनिषद् प्राप्त होते हैं।

1. केन उपनिषद् 2. छान्दोग्य उपनिषद्

➢ **केन उपनिषद्-** केनोपनिषद् में 4 खण्ड हैं। प्रथम खण्ड-8 मन्त्र, द्वितीय खण्ड-5 मन्त्र, तृतीय खण्ड-12 मन्त्र, चतुर्थ खण्ड-9 मन्त्र

- इसको 'तलवकार उपनिषद्' भी कहते हैं।
- इसमें 4 खण्ड हैं।
- प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक हैं और शेष दो गद्यात्मक हैं।

छान्दोग्य उपनिषद्-

- इसमें 8 अध्याय या प्रपाठक हैं।
- इसके प्रथम एवं द्वितीय अध्याय में ॐ, उद्गीथ एवं साम के गूढ़ रहस्यों का मार्मिक विवेचन है।

छान्दोग्योपनिषद्		
अध्याय	खण्ड	मन्त्र
प्रथम	13	104
द्वितीय	24	82
तृतीय	19	94
चतुर्थ	17	78
पञ्चम	24	88
षष्ठ	16	69
सप्तम	26	51
अष्टम	15	62

सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ-

- सामवेदीय प्रातिशाख्य ग्रन्थ मुख्य तीन हैं-
  1- ऋक्तन्त्र 2- पुष्पसूत्र 3- सामतन्त्र
- ऋक्तन्त्र के प्रणेता आचार्य शाकटायन हैं।
- ऋक्तन्त्र में पाँच प्रपाठक हैं।
- पुष्पसूत्र के रचयिता गोभिल ऋषि हैं ।
- पुष्पसूत्र में 10 प्रपाठक हैं।
- सामतन्त्र के लेखक महर्षि औदव्रजि को माना जाता है।
- इसमें 13 प्रपाठक हैं।

सामवेदीय प्रातिशाख्य		
प्रातिशाख्य	रचनाकार	प्रपाठक
ऋक्तन्त्र	शाकटायन	5
पुष्पसूत्र	गोभिल	10
सामतन्त्र	औदव्रजि	13

सामवेदीय शिक्षाग्रन्थ

सामवेद में 3 शिक्षा ग्रन्थ प्राप्त होते हैं-

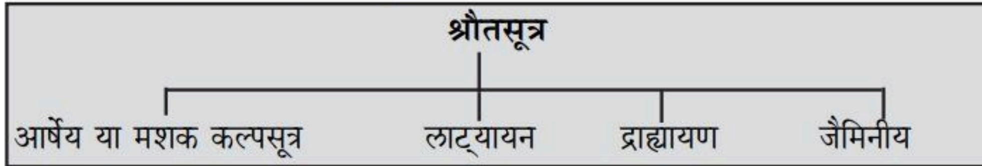
शिक्षा	लेखक
1.गौतमी शिक्षा	गौतम
2.लोमशी शिक्षा	लोमश
3. नारदीय शिक्षा	नारद

सामवेदीय श्रौतसूत्र

- सामवेद के श्रौतसूत्र निम्नलिखित हैं -

  आर्षेय (मशक), क्षुद्र कल्पसूत्र, जैमिनीय, लाट्यायन, द्राह्यायण, निदान, तथा उपनिदान।

- इनमें सामवेदीय प्रकाशित श्रौतसूत्रों की संख्या 4 है।



सामवेदीय गृह्यसूत्र

1- गोभिल गृह्यसूत्र 2- खादिर गृह्यसूत्र 3- द्राह्यायण गृह्यसूत्र

4- जैमिनीय गृह्यसूत्र 5- कौथुम गृह्यसूत्र

सामवेदीय धर्मसूत्र

- सामवेद का 'गौतम धर्मसूत्र' एकमात्र धर्मसूत्र है।
- इसके प्रणेता 'आचार्य गौतम' हैं।
- इसमें 28 अध्याय 1000 सूत्र हैं।

सामवेदीय कल्पसूत्रों का वर्गीकरण			
श्रौतसूत्र	**गृह्यसूत्र**	**धर्मसूत्र**	**शुल्बसूत्र**
आर्षेय (मशक)	गोभिल	गौतम	कोई शुल्ब
लाट्यायन	खादिर		सूत्र नहीं
द्राह्यायण	द्राह्यायण		प्राप्त होता
जैमिनीय	जैमिनीय कौथुम		

सामवेद में सामगान के भेद -

- सामयोनि मन्त्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने विभिन्न गानों की रचना की है, सामगान के चार प्रकार हैं-

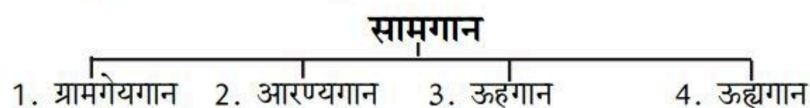
  1- **ग्रामगेयगान-** इसे 'प्रकृतिगान' और 'गेयगान' भी कहते हैं।

  2- **आरण्यगान-** इसे आरण्यक या **'रहस्यगान'** भी कहते हैं। यह वनों या पवित्र स्थानों पर ही गाया जाता है।

  3- **ऊहगान-** ऊह का अर्थ है- विचारपूर्वक विन्यास।

- यह सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसरों पर गाया जाता है।

  4- **ऊह्यगान-** ऊह्यगान रहस्य गान है।



सामगान के विभाग

➢ सामगान के पाँच भाग निम्न हैं-

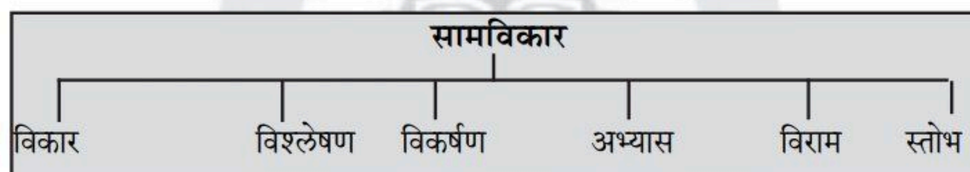
'प्रस्तावोद्‌गीथप्रतिहारोपद्रवनिधनानि भक्तयः'

अर्थात् सामगान के प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव और निधन ये पाँच भाग हैं।

भक्ति	गायक	मन्त्र का अंश
प्रस्ताव	प्रस्तोता	हुँ औग्नाइ
उद्गीथ	उद्गाता	ओम् आयाहि वीतये गृणानो हव्यदायते
प्रतिहार	प्रतिहर्ता	नि होता सत्सि बर्हिषि ओम्
उपद्रव	उद्गाता	नि होता सत्सि ब।
निधन	तीनों मिलकर	र्हिषि ओम्

सामविकार-

➢ सामगान में संगीत के अनुकूल जो शाब्दिक परिवर्तन किया जाता हैं, उसे सामविकार कहा जाता हैं। सामविकार के छः प्रकार होते हैं।



सामवेद के कुछ स्मरणीय तथ्य-

➢ सामवेद में गायन पद्धति है। इसमें स्वरों का सम्मिश्रण है।

➢ सामवेदीय मन्त्रों के ऊपर 1,2,3 संख्यायें दी गई हैं।

1- उदात्त 2- अनुदात्त 3-स्वरित

➢ नारदीय शिक्षा के अनुसार सामवेद में स्वर आदि के सूचक हैं-

"सप्त स्वराः, त्रयो ग्रामाः, मूर्छनास्त्वेकविंशतिः।
ताना एकोनपञ्चाशत्, इत्येतत् स्वरमण्डलम्।।"

➢ अर्थात् स्वर सात हैं।

➢ ग्राम तीन हैं।

➢ मूर्च्छनाएँ 21 हैं।

➢ तान 49 हैं।

सप्त स्वर		
षड्ज	-	(स)
ऋषभ	-	(रे)
गान्धार	-	(ग)
मध्यम	-	(म)
पंचम	-	(प)
धैवत	-	(ध)
निषाद	-	(नि)

सामवेदीय भाष्यकार

➢ सामवेद के भाष्यकार के रूप में इन आचार्यों का वर्णन प्राप्त होता है।

1. **माधव-** ये सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इनके भाष्य का नाम विवरण है।

2. **गुणविष्णु-** इन्होंने सामवेद की कौथुम शाखा पर 'छान्दोग्य- मन्त्रभाष्य' लिखा है।

3. **भरतस्वामी-** इन्होंने सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य लिखा था यह अभी प्रकाशित नहीं है।

भाष्यकार	भाष्य	वर्ष
माधव	विवरण	600 लगभग
गुणविष्णु	छान्दोग्य मन्त्रभाष्य	12 वीं शती ई. उत्तरार्ध
भरतस्वामी	सामवेदीय भाष्य	14 वीं शती ई. पूर्वार्ध

सामवेद के भारतीय अनुवादक-

अनुवादक	भाषा
1. सत्यव्रत	बंगला
2. तुलसीराम स्वामी	हिन्दी- भाष्य
3. जयदेव विद्यालंकार	हिन्दी- भाष्य
4. श्रीराम शर्मा	हिन्दी- भाष्य
5. वीरेन्द्र शास्त्री	हिन्दी- अनुवाद
6. रामनाथ वेदालंकार	संस्कृत हिन्दी- भाष्य

सामवेद के पाश्चात्त्य अनुवादक

अनुवादक	विषय	भाषा	वर्ष
स्टेवेन्सन	राणायनीय शाखा	अंग्रेजी	1843 ई.
बेन्फे	कौथुम शाखा	जर्मन	1848 ई.
कैलेन्ड	जैमिनीय शाखा	रोमन	1907 ई.
ग्रिफिथ	सम्पूर्ण सामवेद	अंग्रेजी	1899 ई.
वेबर	अद्भुत ब्राह्मण	जर्मन	1858 ई.
बर्नेल	सामविधान ब्राह्मण		1873 से
	दैवत ब्राह्मण		1877 तक
	वंश-ब्राह्मण		
	संहितोपनिषद् ब्राह्मण		
	आर्षेय ब्राह्मण		
एर्टल	जैमिनीय उपनिषद्ब्राह्मण	अंग्रेजी	
कैलेण्ड	जैमिनीय ब्राह्मण	जर्मन	
स्टेनो कोनो	सामविधान ब्राह्मण		1893
ग्रास्ट्रा	जैमिनीय गृह्यसूत्र	डच	1906

➢ सामवेद संहिता - एक दृष्टि में

आचार्य	-	जैमिनि
ऋत्विक्	-	उद्गाता
उपवेद	-	गान्धर्ववेद
देवता	-	आदित्य (सूर्य)
विभाजन	-	दो भागों में (पूर्वार्चिक, उत्तरार्चिक)
पूर्वार्चिक	-	4 काण्ड, 6 अध्याय (प्रपाठक)
उत्तरार्चिक	-	9 प्रपाठक, 1225 मन्त्र, 400 सूक्त
शाखा	-	1. कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय
ब्राह्मण	-	8 या 9
आरण्यक	-	2 (तलवकार, छान्दोग्य)
उपनिषद्	-	2 (केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्)
प्रातिशाख्य	-	3 (ऋक्तन्त्र, पुष्पसूत्र, सामतन्त्र)
शिक्षा	-	3 (गौतमी, लोमशी, नारदीय)
श्रौतसूत्र	-	4 (आर्षेय, लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय)
गृह्यसूत्र	-	5 (गोभिल, खादिर, द्राह्यायण, जैमिनीय, कौथुम)
धर्मसूत्र	-	1 (गौतम धर्मसूत्र)
शुल्बसूत्र	-	नहीं प्राप्त होता है।
सामगान	-	4 (ग्रामगेयगान, आरण्यगान, ऊहगान, ऊह्यगान)
सामविकार	-	6 (विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम, स्तोभ)
सामभक्तियाँ	-	5 (प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन)
भाष्यकार	-	माधव, गुणविष्णु, भरतस्वामी।

❑❑

5. अथर्ववेद

- **अथर्ववेद का अर्थ-** 'अथर्वों का वेद।' अर्थात् अभिचार मन्त्रों से सम्बन्धित ज्ञान। वेदों की चारों संहिताओं में अथर्ववेद की एक निजी और अन्यतम विशिष्टता रही है। इस वेद के 'अथर्व' शब्द की सुन्दर व्याख्या यास्काचार्य के निरुक्त तथा गोपथ ब्राह्मण में उपलब्ध है। निरुक्त के अनुसार **'थर्व'** धातु गत्यर्थक है और अथर्व का अर्थ है- गतिहीन अथवा स्थिरता युक्त। अर्थात् जिसमें चित्त में स्थिरता एवं दृढ़ता लाई जा सके। तदनुसार गोपथ ब्राह्मण में प्रस्तुत है कि- समीपस्थ आत्मा को अपने अन्दर देखना।
- पाणिनीय धातु पाठ में **'थर्वी'** धातु हिंसा के अर्थ में पठित है। 'थर्व' धातु कुटिलता एवं हिंसावाची है। अतः अकुटिलता तथा अहिंसा योग से ब्रह्म प्राप्ति कराने के कारण इस संहिता को अथर्ववेद कहा गया।
- अथर्ववेद में विभिन्न ऋषियों के दृष्टमन्त्र हैं तथा अनेक विषयों का प्रतिपादन है, अतः इसके अनेक नाम पड़े हैं। अथर्ववेद तथा अन्य ग्रन्थों में अथर्ववेद के ये नाम प्राप्त होते हैं।

अथर्ववेद की शाखाएँ-

- पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽथर्वणो वेदः' कहकर इस वेद की ९ शाखाओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं- 1. पैप्पलाद 2. तौद (स्तौद) 3. मौद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य
- प्रपंचहृदय, चरणव्यूह और सायण की अथर्ववेद-भाष्य भूमिका में भी नौ शाखाओं का उल्लेख मिलता है।
- इसमें केवल पैप्पलाद एवं शौनकीय शाखा उपलब्ध होती है।

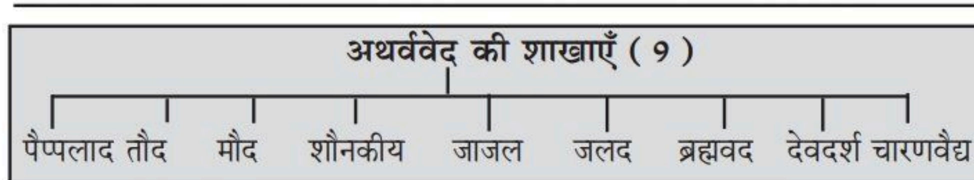
अथर्ववेद के उपवेद

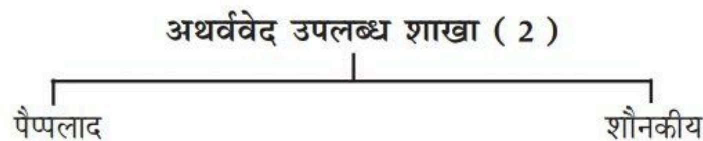
- गोपथ ब्राह्मण में अथर्ववेद के 5 उपवेद का उल्लेख है-

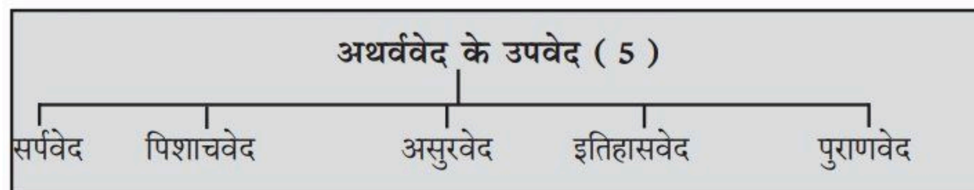
  1. सर्पवेद 2. पिशाचवेद 3. असुरवेद 4. इतिहासवेद 5.पुराणवेद

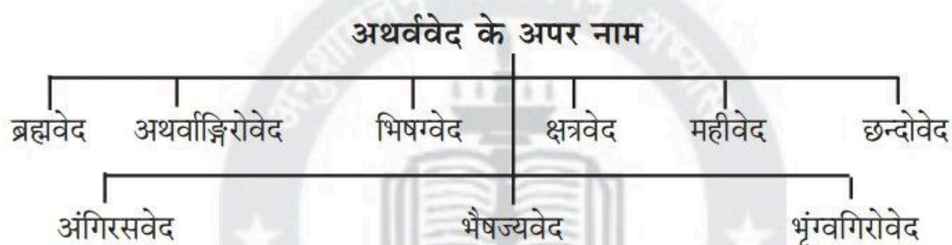
अथर्ववेद के अपर नाम

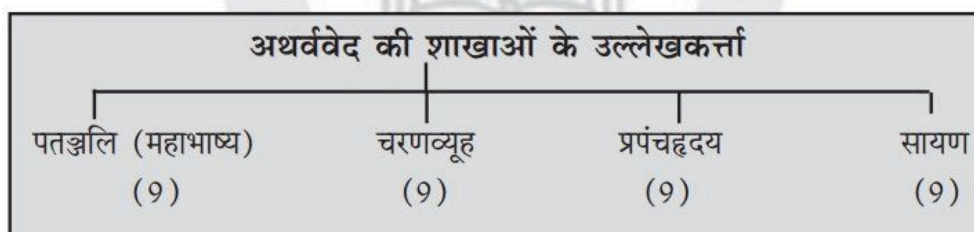
- ब्रह्मवेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, भिषग्वेद, क्षत्रवेद, महीवेद, छन्दोवेद, अंगिरसवेद, भैषज्यवेद, भृग्वंगिरोवेद

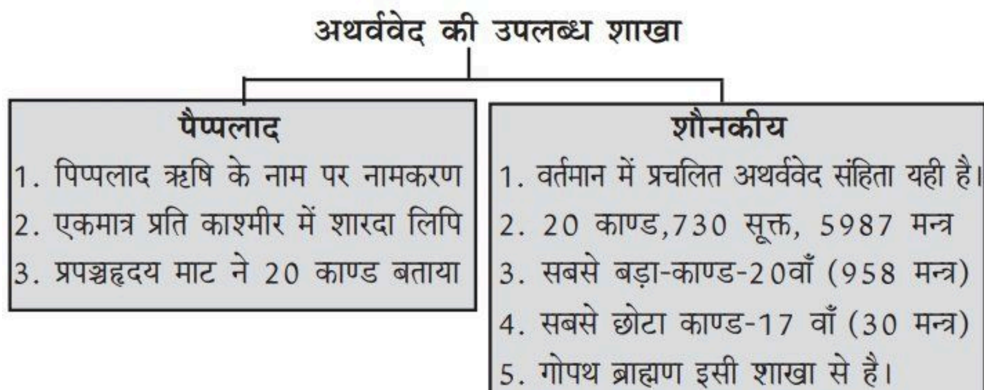












अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा

1. शौनकीय शाखा (शौनक)

➤ आजकल प्रचलित अथर्ववेद संहिता शौनकीय शाखा ही है ।

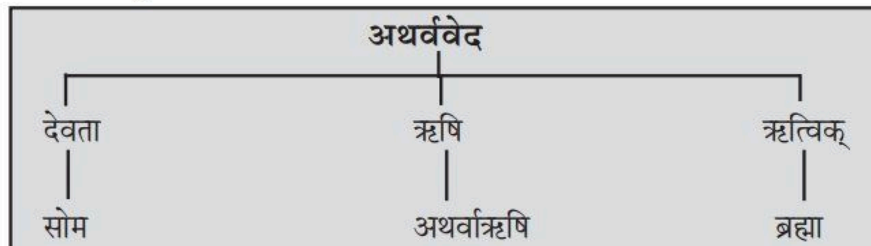
- इसमें 20 काण्ड,730 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं।
- इसमें सबसे बड़े तीन काण्ड हैं -काण्ड-20 (958 मन्त्र)
  काण्ड- 6 (454 मन्त्र)
  काण्ड-19 (453 मन्त्र)
- सबसे छोटा काण्ड-17 वाँ काण्ड है (30 मन्त्र)

2. **पैप्पलाद शाखा**

- पिप्पलाद ऋषि के नाम पर इस शाखा का नामकरण हुआ पैप्पलाद।
- इस शाखा की संहिता 'पैप्पलाद संहिता' है।
- इस शाखा की एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि में प्राप्त हुई थी।
- तत्कालीन काश्मीर नरेश ने 1875 ई0 में वह प्रति प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डा0 राय को उपहार रूप में दी।
- प्रपञ्चहृदयकार ने पैप्पलाद शाखा का संकेत किया है। उन्होंने पैप्पलाद शाखा को 20 काण्डों का बताया।
- 1901 ई0 में अमेरिका में इसकी फोटो स्टेट प्रति छपी, बाद में डॉ0 रघुवीर ने भी इसका सुन्दर संस्करण प्रकाशित किया ।
- पतञ्जलि के प्रमाण से यह स्पष्ट है कि महाभाष्य काल में अथर्ववेद की यही शाखा सर्वाधिक प्रचलित थी।
- अथर्ववेद के देवता-सोम
- अथर्ववेद के ऋषि- अथर्वा ऋषि
- अथर्ववेद के ऋत्विक् - ब्रह्मा

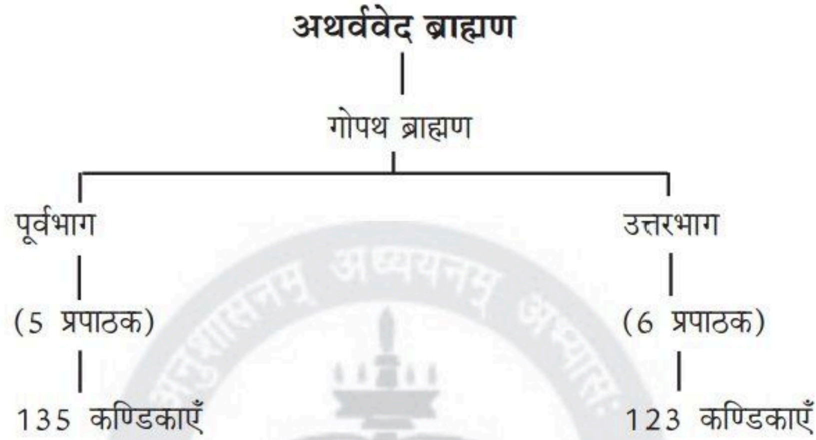
अथर्ववेद के महत्त्वपूर्ण सूक्त

1. पृथिवीसूक्त (12वाँ काण्ड)
2. ब्रह्मचर्य सूक्त (11वाँ काण्ड)
3. काल सूक्त (19वाँ काण्ड)
4. विवाह सूक्त (14वाँ काण्ड)
5. व्रात्य सूक्त (15वाँ काण्ड)
6. मधुविद्या सूक्त (9वाँ काण्ड)
7. ब्रह्मविद्या सूक्त
8. रोहित सूक्त (13वाँ काण्ड)
9. कौशिक सूक्त
10. आयुष्यकर्म सूक्त
11. भैषज्यकर्म सूक्त
12. आरोग्य मन्त्र सूक्त
13. पौष्टिक मन्त्र
14. शान्ति सूक्त
15. प्रकीर्ण सूक्त



अथर्ववेद के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्त

* पृथिवीसूक्त * ब्रह्मचर्यसूक्त * कालसूक्त * विवाहसूक्त * व्रात्यसूक्त * मधुविद्यासूक्त * ब्रह्मविद्यासूक्त * रोहितसूक्त * कौशिकसूक्त * आयुष्यकर्मसूक्त * भैषज्यकर्मसूक्त * आरोग्यमन्त्रसूक्त * पौष्टिकमन्त्र * शान्तिसूक्त * प्रकीर्णसूक्त



अथर्ववेदीय-ब्राह्मण

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है।
- गोपथ ब्राह्मण पैप्पलाद शाखा से संबद्ध है।
- पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र- 'शं नो देवीरभिष्टये' है।
- गोपथ ब्राह्मण दो भागों में विभक्त है- पूर्वभाग (5 प्रपाठक) उत्तरभाग (6 प्रपाठक) = 11 प्रपाठक हैं।
- पूर्व गोपथ ब्राह्मण में 135 कण्डिकाएँ हैं। उत्तर गोपथ ब्राह्मण में 123 कण्डिकाएँ। कुल मिलाकर गोपथ ब्राह्मण में 11 प्रपाठक 258 कण्डिकाएँ हैं। अथर्ववेद का आरण्यक नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय उपनिषद्

- अथर्ववेद के उपलब्ध उपनिषद् तीन हैं –
  (1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्

प्रश्न उपनिषद्

- यह अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा से सम्बन्धित है जो सम्पूर्ण गद्यमय है।
- पिप्पलाद ऋषि अपने छह शिष्य ऋषियों द्वारा पूछे गए अध्यात्म विषयक प्रश्नों का समुचित उत्तर देते हैं इन प्रश्नों के कारण ही इस उपनिषद् का नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ा।

➤ छह शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं-

1. कबन्धी कात्यायन	2. भार्गव वैदर्भि	3. कौसल्य आश्वलायन
4. सौर्य्यायणी	5. शैव्यसत्यकाम	6. सुकेशा भारद्वाज

अथर्ववेदीय उपनिषद्

प्रश्न उपनिषद्	**मुण्डक उपनिषद्**	**माण्डूक्य उपनिषद्**
(सम्पूर्ण गद्यमय) * पिप्पलाद ऋषि द्वारा छः शिष्यों को आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देना * इसी कारण प्रश्न उपनिषद् नाम पड़ा	(3 मुण्डक) * हर मुण्डक 2-2 *खण्डों में 'सत्यमेव जयते' महावाक्य * 'द्वा सुपर्णा सयुजा' मन्त्र * 'वेदान्त' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	(लघुकाय) * कुल 12 वाक्य। खण्ड ऋचा कण्डिका *ॐकार का विशेष वर्णन * ब्रह्म की चार अवस्थाएं वर्णित * चतुष्पाद आत्मा का वर्णन

2. मुण्डकोपनिषद्

➤ अथर्ववेदीय मुण्डकोपनिषद् कुल तीन मुण्डकों तथा प्रत्येक मुण्डक दो-दो खण्डों में विभक्त है।

➤ यह मुण्डक अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित है।

➤ इस उपनिषद् में ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा (अर्थवन्) को ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया है।

➤ प्रसिद्ध वाक्य **'सत्यमेव जयते'** इसी उपनिषद् में है।

➤ द्वैतवाद का प्रतिपादक **''द्वा सुपर्णा सयुजा''** मन्त्र इसी उपनिषद् का है।

➤ वेदान्त शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इसी उपनिषद् में उपलब्ध है।

3. माण्डूक्योपनिषद्

➤ यह उपनिषद् लघुकाय है। लघुता के कारण भी और भाव गाम्भीर्य के कारण बहुत महत्त्वपूर्ण है।

➤ इसमें कुल 12 वाक्य/खण्ड / कण्डिकाएँ हैं।

➤ इसमें विशेष रूप से ओम्कार का रहस्य वर्णित है।

➤ इसमें बताया गया है कि यह सारा संसार, वर्तमान, भूत और भविष्य सब कुछ 'ओम्' की ही व्याख्या है।

➤ इसी में ही ब्रह्म की चार अवस्थाएं बताई गई हैं जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय।

➤ इसी सन्दर्भ में चतुष्पाद आत्मा का सूक्ष्मविवेचन भी प्राप्त होता है।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र			
श्रौतसूत्र	**गृह्यसूत्र**	**धर्मसूत्र**	**शुल्बसूत्र**
वैतानसूत्र	कौशिक सूत्र	उपलब्ध	उपलब्ध
8 अध्याय	14 अध्याय	नहीं हैं।	नहीं हैं।
43 कण्डिकायें	141 कण्डिकायें		

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

➢ अथर्ववेद का वैतान श्रौतसूत्र ही उपलब्ध है।
वैतान श्रौतसूत्र - ब्रह्मा के सभी कर्तव्य, इस श्रौतसूत्र के पहले ही अध्याय में दर्शपूर्ण मास के विवरण में प्रतिपादित हैं।

➢ यह श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।

➢ इसमें 8 अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।

➢ ये श्रौत कर्म बतलाए गए हैं- दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, उक्थ्य, षोडशी अतिरात्र, वाजपेय, अग्निचयन, राजसूय आदि।

अथर्ववेदीय-गृह्यसूत्र

➢ अथर्ववेद का एक मात्र गृह्यसूत्र कौशिक (कौशिकसूत्र) उपलब्ध है।

➢ कौशिक गृह्यसूत्र का अथर्ववेद की शौनकीय शाखा से विशेष सम्बन्ध है।

➢ इसका विभाजन 14 तथा 141 कण्डिकाओं में हुआ है।

➢ शान्तिकर्म और अभिचार कर्मों का विशद विवेचन है।

➢ इसमें प्रायः प्रायश्चित्त कर्म और भविष्यवाणी का विशद विवेचन है।

➢ कौशिक सूत्र को 'संहिता विधि' या **'संहिता कल्प'** संज्ञा प्राप्त है।

➢ अथर्ववेद का धर्मसूत्र नहीं उपलब्ध है।

➢ अथर्ववेद का शुल्बसूत्र नहीं उपलब्ध है।

अथर्ववेदीय शिक्षा ग्रन्थ

➢ अथर्ववेद का केवल एक शिक्षाग्रन्थ है – **माण्डूकी शिक्षा**

➢ यह श्लोकात्मक है।

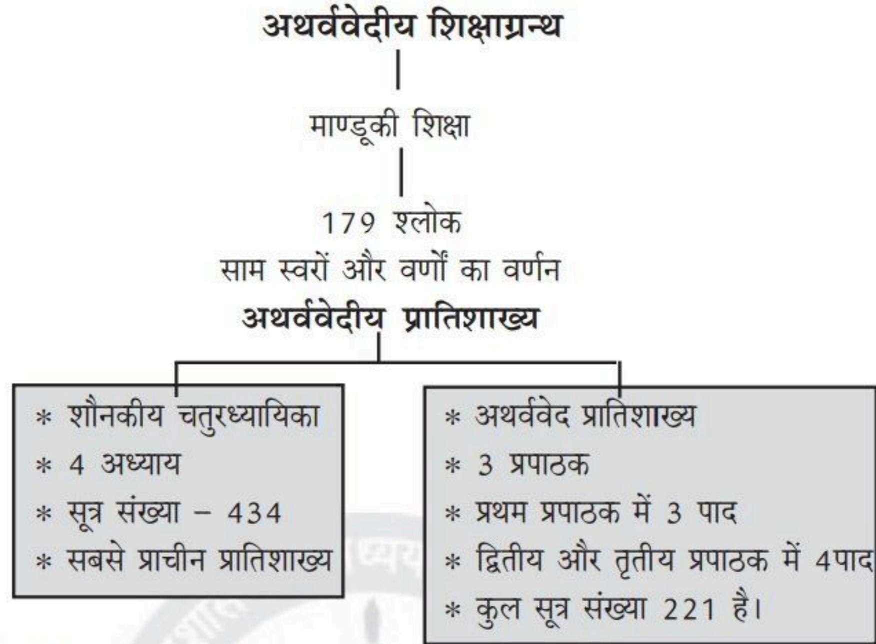
➢ साम स्वरों का इसमें विशद विवेचन है। इसमें कुल 179 श्लोक हैं।

➢ अथर्ववेद के स्वरों तथा वर्णों को भली-भाँति जानने के लिए यह शिक्षा उपयोगी है।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

➢ अथर्ववेद के दो प्रातिशाख्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

  * शौनकीय चतुरध्यायिका
  * अथर्ववेद प्रातिशाख्य



1. शौनकीय चतुरध्यायिका

- इसके लेखक शौनक हैं।
- इसमें चार अध्याय हैं और सूत्रसंख्या 434 है।
- 1. ध्वनि विचार 2. सन्धि विवेचन 3. संहिता पाठ में दीर्घत्व, द्वित्व, णत्व, स्वरसन्धि। 4. अवग्रह, प्रगृह्य आदि का विवेचन।
- यही सबसे प्राचीन अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य है।
- इसका इंग्लिश अनुवाद के सहित संस्करण डॉ० व्हिटनी ने प्रकाशित किया है।
  - * प्रथम अध्याय में 105 सूत्र
  - * द्वितीय अध्याय में 107 सूत्र
  - * तृतीय अध्याय में 96 सूत्र
  - * चतुर्थ अध्याय में 126 सूत्र

2. अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- यह प्रपाठकों में विभक्त है।
- प्रपाठक पुनः पादों तथा सूत्रों में विभक्त हैं।
- प्रथम प्रपाठक में 3 पाद हैं।
- द्वितीय और तृतीय प्रपाठक में चार चार पाद हैं।
- कुल सूत्र संख्या 221 है।
- इस प्रातिशाख्य में सन्धि,स्वर तथा पदपाठ के नियम बताये गए हैं।
- जिनमें स्वरों का वर्णन अधिक विस्तार से किया गया है।
- डॉ. सूर्यकान्त ने इसका एक सुन्दर संस्करण 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया था।

- इस ग्रन्थ की भाषा शैली सूत्रात्मक है।
- इस प्रातिशाख्य ग्रन्थ में अथर्ववेद के उच्चारण सम्बन्धी नियमों का भी उल्लेख है।

अथर्ववेद के भारतीय भाष्यकार

दुर्गादास लाहिड़ी

- सायण-भाष्य सहित अथर्ववेद (शौनक शाखा) को 5 भागों में प्रकाशित किया।

शंकर पाण्डुरंग -

- अथर्ववेद का सायण भाष्य-सहित संस्करण 4 भागों में निकाला था (बम्बई 1898 ई.)
- यह बहुत शुद्ध संस्करण है।

सातवलेकर

- अथर्ववेद संहिता (शौनकीय) 1943 ई0 में प्रकाशित की।
- इन्होंने 'अथर्ववेद' का सुबोध-भाष्य 5 भागों में प्रकाशित किया।
- इन्हें आधुनिक युग का 'सायण' कहा जाता है।
- यह अथर्ववेद का सर्वोत्तम व्याख्या ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ श्री सातवलेकर के अगाध वेदज्ञान और अथक परिश्रम का परिचायक है।

क्षेमकरण त्रिवेदी

- सम्पूर्ण ऋग्वेद का हिन्दी भाष्य किया है।

जयदेव विद्यालंकार

- सम्पूर्ण अथर्ववेद का हिन्दी भाष्य किया ।

श्रीरामशर्मा

- इन्होंने इसे हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया है।

विश्वबन्धु-

- सायण भाष्य सहित अथर्ववेद 5 भागों में निकाला है।

भगवद्दत्त

- अथर्ववेदीय पंचपटलिका और माण्डूकी शिक्षा पर भाष्य टीका लिखी

विश्वबन्धु-

- अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य और अथर्ववेदीय बृहत् सर्वानुक्रमणी पर भाष्यटीका लिखी –
- गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य लिखा - **राजेन्द्र लाल मिश्र**

क्षेमकरण त्रिवेदी -

- गोपथ ब्राह्मण हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया।

डॉ0 विजयपाल शास्त्री-

➢ गोपथ ब्राह्मण पर भाष्य मिलता है।

अथर्ववेदीय पाश्चात्त्य विद्वान्

रोठ और ह्विटनी

➢ अथर्ववेद संहिता (शौनकीय शाखा) का सर्वप्रथम संपादन किया और 1856 ई0 में उसे प्रकाशित किया।

ब्लूम फील्ड और गार्बे

➢ अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) की एक अति जीर्ण काश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त प्रति से फोटो-प्रति तीन बड़ी जिल्दों में 1901 ई0 में छपवाई।

कैलेण्ड-

➢ अथर्ववेद- संहिता का एक आलोचनात्मक संस्करण उट्रिच (हालैंड) से प्रकाशित किया।

ग्रिफिथ-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद वाराणसी से 1895-1898 में छपवाया था।

ह्विटनी और लानामान-

➢ अथर्ववेद का अंग्रेजी में अनुवाद 150 पृष्ठ की भूमिका तथा विविध टिप्पणियों से युक्त है।

➢ जो 1905 ई0 में दो भागों में प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड

➢ पैप्पलाद संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद 1901 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण के पाश्चात्त्य अनुवादक

गास्ट्रा-

➢ गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण 1919 ई0 में प्रकाशित किया।

अथर्ववेदीय कल्पसूत्र के पाश्चात्त्य अनुवादक

ब्लूमफील्ड-

➢ अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र 1890 ई0 में प्रकाशित किया था ।

अथर्ववेद संहिता -एक दृष्टि में

➢ **आचार्य** - सुमन्तु, **ऋषि**-अथर्वा, **ऋत्विक्**- ब्रह्मा

➢ **उपवेद**- पिशाचवेद, सर्पवेद,पुराणवेद,इतिहासवेद,असुरवेद

➢ **अपरनाम** - ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, महीवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, भिषग्वेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, आंगिरसवेद, भृग्वंगिरो वेद

➢ **विभाजन**- 20 काण्ड

➢ **उत्पत्ति देवता**- सोम

- **शाखायें-**
  - पैप्पलाद
  - मौद
  - जाजल
  - ब्रह्मवद
  - चारणवैद्य
  - तौद
  - शौनकीय
  - जलद
  - देवदर्श

- **उपलब्ध शाखा-** पैप्पलाद, शौनकीय (शौनक)
- **ब्राह्मण-** गोपथ ब्राह्मण
- **आरण्यक-** नहीं है (उपलब्ध नहीं)
- **उपनिषद्-** प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य
- **श्रौतसूत्र-** वैतान श्रौतसूत्र
- **गृह्यसूत्र-** कौशिक गृह्यसूत्र
- **धर्मसूत्र-** उपलब्ध नहीं
- **शुल्बसूत्र-** उपलब्ध नहीं
- **शिक्षा-** माण्डूकी शिक्षा
- **प्रातिशाख्य-** 1. शौनकीय चतुरध्यायिका
  2. अथर्ववेद प्रातिशाख्य

भारतीय भाष्यकार-

1. दुर्गादास लाहिड़ी
2. शंकर पांडुरंग पण्डित
3. सातवलेकर
4. क्षेमकरण त्रिवेदी
5. जयदेव विद्यालंकार
6. श्रीराम शर्मा
7. विश्वबन्धु
8. डॉ0 रघुवीर
9. भगवद् दत्त
10. डॉ0 विजयपाल शास्त्री
11. राजेन्द्र लाल मिश्र

पाश्चात्त्य अनुवादक

1. रोठ और ह्निटनी
2. ब्लूमफील्ड और गार्वे
3. कैलेन्ड
4. ग्रिफिथ
5. ह्विट्नी और लानमान
6. गास्ट्रा

❑❑

6. ब्राह्मण-ग्रन्थ

- ब्राह्मण शब्द 'ब्रह्मन्' शब्द से 'अण्' प्रत्यय होने पर बना है।
- **ब्राह्मण शब्द के तीन अर्थ –**

  (1) शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'ब्रह्मन्' शब्द का अर्थ-मन्त्र है **'ब्रह्म वै मन्त्रः'**। (शतपथ ब्राह्मण-7.1.1.5) अतः वेदमन्त्रों की व्याख्या और विनियोग प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ को 'ब्राह्मण' कहते हैं।

  (2) शतपथ के अनुसार ही 'ब्रह्मन्' शब्द का दूसरा अर्थ- 'यज्ञ' है **'ब्रह्म यज्ञः'** (शतपथ-3.1.4.15)

  (3) ब्रह्मन् शब्द का एक अन्य अर्थ है-'पवित्र ज्ञान या रहस्यात्मक विद्या'।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, उन्हें 'ब्राह्मण' कहते हैं।
- **ब्राह्मण का अर्थ –** मीमांसा-दर्शन का कथन है कि - 'मन्त्रभाग या संहिताग्रन्थों के अतिरिक्त वेद-भाग को ब्राह्मण कहते हैं।'
- **भट्ट भास्कर –** भट्ट भास्कर का कथन है कि - 'कर्मकाण्ड और मन्त्रों के व्याख्यान ग्रन्थों को 'ब्राह्मण' कहते हैं। **'ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां व्याख्यानग्रन्थः'।**
- **वाचस्पति के अनुसार-** ब्राह्मण उन ग्रन्थों को कहते हैं- जिनमें निर्वचन (निरुक्ति), मन्त्रों का विविध यज्ञों में विनियोग, प्रयोजन प्रतिष्ठान (अर्थवाद) और विधि का वर्णन होता है।

  नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
  प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते॥
- ग्रन्थ अर्थ में ब्राह्मण शब्द नपुंसकलिङ्ग में होता है।
- ब्राह्मण शब्द का ग्रन्थ अर्थ में प्रयोग अष्टाध्यायी, निरुक्त, शतपथ ब्राह्मण और ऐतरेय ब्राह्मण आदि में प्राप्त होता है।
- पाणिनि की अष्टाध्यायी में 'अनुब्राह्मण' का भी उल्लेख प्राप्त होता है-
  'अनुब्राह्मणादिनिः' (अष्टा. - 4.2.62)
- काशिका में ब्राह्मण के सदृश ग्रन्थ को 'अनुब्राह्मण' कहा गया है।
- ये अनुब्राह्मण लघुकाय ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। इनमें किसी एक अंश का ही विवेचन मिलता है।

मन्त्र-ब्राह्मण-

- संहिताओं में उपलब्ध मन्त्र भाग का कर्मकाण्ड में विनियोग होता है।
- ब्राह्मणभाग मन्त्रों के विनियोग की विधि को बताता है।
- एक मूल है दूसरा उसका व्याख्यान या भाष्य।
- यज्ञों में मन्त्रों से आहुति दी जाती है, ब्राह्मण भाग उसकी उपयोगिता और विधि को बताता है।
- वैदिक वाङ्मय एवं वैदिक साहित्य में ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषदों का भी समावेश है।
- वेद शब्द का गौण अर्थ वैदिक साहित्य लेने पर ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद कहा जा सकता है।
- 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' (आपस्तम्ब श्रौतसूत्र 1.33) मन्त्र और ब्राह्मणग्रन्थों को वेद कहते हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों का विषय और भाषा-शैली

- मुख्य विषय- विधि अर्थात् यज्ञ कब और कहाँ किया जाय, यज्ञ के अधिकारी, यज्ञ के लिये आवश्यक साधन एवं सामग्री आदि।
- संहिताग्रन्थ स्तुतिप्रधान हैं तो ब्राह्मणग्रन्थ विधि प्रधान।
- ब्राह्मणों की भाषा वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत को जोड़ने वाली सुन्दर कड़ी है।
- ब्राह्मणों में वैदिक और लौकिक शब्दावली का समन्वय है।
- वैदिक लेट्लकार का प्रयोग अतिविरल है। तुमर्थक प्रत्ययों के प्राचीनरूप यत्र-तत्र दिखाई पड़ते हैं।
- ब्राह्मणों की भाषा में प्रसादगुण का बाहुल्य है। भाषा सरल, सरस और रोचक है।

ऋषि और आचार्य में अन्तर –

- आश्वलायन गृह्यसूत्र में ऋषि और आचार्य में अन्तर किया गया है।
- मन्त्रद्रष्टा को ऋषि कहते हैं और ब्राह्मणग्रन्थों के द्रष्टा या रचयिता को आचार्य कहते हैं।
- **आचार्यों के तीन गण (वर्ग) बताए गए हैं-**

  (1) माण्डूकेय गण (2) शांखायन गण (3) आश्वलायन गण
- **ब्राह्मणग्रन्थों के रचयिता हैं-** कौषीतकि, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य, शांखायन, ऐतरेय, बाष्कल, शाकल, गार्ग्य, शौनक और आश्वलायन।
- **ब्राह्मणग्रन्थों का प्रतिपाद्य विषय**
- ब्राह्मणग्रन्थों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है- यज्ञ एवं यज्ञ- प्रक्रिया का सर्वाङ्गीण विवेचन।

- यज्ञमीमांसा के दो मुख्य भाग – 1. विधि 2. अर्थवाद।
- विधि का अभिप्राय- यज्ञप्रक्रिया का विस्तृत निरूपण।
- आपस्तम्ब का कथन है- **'कर्मचोदना ब्राह्मणानि'** अर्थात् ब्राह्मण ग्रन्थ विविध यज्ञरूप कर्मों में मनुष्यों को प्रेरित करते हैं।
- अर्थवाद का अभिप्राय है- स्तुति या निन्दापरक विविध विषय।
- वाचस्पति मिश्र ने ब्राह्मणग्रन्थों के चार प्रयोजन बताये हैं-

(1) **निर्वचन=**शब्दों की निरुक्ति बताना, किसी वस्तु का नाम क्यों पड़ा, या धातु को बताना आदि।

(2) **विनियोग=** किस यज्ञ की किस विधि में किन-किन मन्त्रों का पाठ किया जायेगा पूरा विवरण बताना।

(3) **प्रतिष्ठान=** प्रतिष्ठान का अर्थ है- अर्थवाद। यज्ञ की विधियों की प्रशंसा या निन्दा करना।

(4) **विधि=** यज्ञ और उससे सम्बद्ध कार्यों का विस्तृत वर्णन बताना। यज्ञ कब, कहाँ, कैसे होगा, किस यज्ञ के लिये क्या सामग्री अपेक्षित है तथा ऋत्विज् क्या कार्य करेगा आदि का वर्णन।

नैरुक्त्यं यत्र मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते।। (वाचस्पति मिश्र)

- मीमांसा दर्शन के भाष्य में शबरस्वामी ने ब्राह्मण विषयों को कुछ और विस्तृत करते हुये ब्राह्मण-ग्रन्थों के प्रतिपादित विषयों की संख्या दश बतायी है।

हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण-कल्पना।।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य वै।। (मीमांसासूत्र- शाबरभाष्य 2.18)

- ब्राह्मण विषय- 1. हेतु 2. निर्वचन 3. निन्दा 4. प्रशंसा 5. संशय 6. विधि 7. परक्रिया 8. पुराकल्प 9. व्यवधारण-कल्पना 10. उपमान

1. **हेतु-** यज्ञ में कोई कार्य क्यों किया जाता है, इसका कारण बताना।
2. **निर्वचन-** शब्दों की निरुक्ति बताना। जैसे- नद् (शब्द करना)
3. **निन्दा-** यज्ञ मे निषिद्ध कर्मों की निन्दा। जैसे- यज्ञ में असत्य भाषण निषिद्ध है। असत्य भाषण की निन्दा करना।
4. **प्रशंसा-** यज्ञ में विहित कार्यों की प्रशंसा करना। जैसे- **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** अर्थात् यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है, अतः अवश्य करना चाहिए।
5. **संशय-** किसी यज्ञिय कर्म के विषय में कोई सन्देह उपस्थित हो तो उसका निवारण करना।
6. **विधि-** विधि का अभिप्राय है- यज्ञिय क्रियाकलाप की पूरी विधि का विशद निरूपण।

7. **परक्रिया-** इसके अर्थ के विषय में पर्याप्त मतभेद है। परक्रिया का भाव है- परार्थक क्रिया, परहित या परोपकार वाले कर्तव्यों का वर्णन। इसमें इष्टापूर्त का समावेश है। इष्ट का अर्थ है- विविध याग आदि। पूर्त का अर्थ- धर्मार्थ कार्य जैसे- कूप, तडाग आदि का निर्माण।

8. **पुराकल्प-** यज्ञ की विभिन्न विधियों के समर्थन में किसी प्राचीन आख्यान या ऐतिहासिक घटना का वर्णन करना। जैसे- राजा के अभाव में जनता भयभीत रहती थी, अतः राजा के वरण की व्यवस्था की गई।

   हरिश्चन्द्रोपाख्यान में प्रसिद्ध 'चरैवेति' – 'चरैवेति' चलते रहो, चलते रहो आदि का निर्देश।

9. **व्यवधारण- कल्पना-** परिस्थिति के अनुसार कार्य की व्यवस्था करना।

   सायण ने इसका उदाहरण दिया है – जितनें घोड़े हों, उतने जल भरे पात्र रखें। घोड़ों की संख्या के अनुसार आसनों की व्यवस्था की जायेगी।

10. **उपमान-** कोई उपमा या उदाहरण देकर वर्ण्य विषय की पुष्टि करना। जैसे- ऐतरेय ब्राह्मण मे 'चरैवेति' की पुष्टि में सूर्य का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। सूर्य निरन्तर चलता रहता है, अतः उसकी तेजस्विता बनी रहती है।

    सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्। चरैवेति

ब्राह्मणग्रन्थों की संख्या

- प्रतिशाखा के अनुसार प्रत्येक शाखा के ब्राह्मण ग्रन्थ थे। काल के प्रभाव से अधिकतर लुप्त हो गये हैं, तथापि कुछ ब्राह्मण ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

  ब्राह्मणग्रन्थ निम्न हैं-

  (1). ऋग्वेद- 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शांखायन ब्राह्मण (कौषीतकि)

  (2). यजुर्वेद- 1. शुक्लयजुर्वेद – शतपथब्राह्मण
2. कृष्णयजुर्वेद – तैत्तिरीय ब्राह्मण

  (3). सामवेद-

  1. ताण्ड्य ब्राह्मण
  2. षड्विंश ब्राह्मण
  3. सामविधान ब्राह्मण
  4. आर्षेय ब्राह्मण
  5. दैवत ब्राह्मण
  6. छान्दोग्य ब्राह्मण
  7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण
  8. वंश ब्राह्मण
  9. जैमिनीय ब्राह्मण

  (4) अथर्ववेद- गोपथ ब्राह्मण

ऋग्वेदीय ब्राह्मण

ऐतरेय ब्राह्मण-

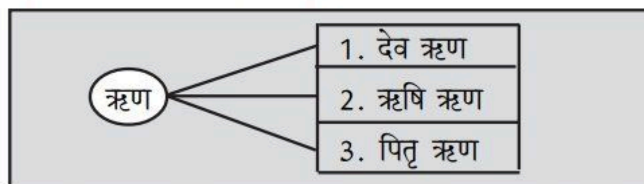
- ऋग्वेद का प्रधान ब्राह्मण 'ऐतरेय' है। इस ब्राह्मण का कर्त्ता 'ऐतरेय महीदास' को माना जाता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में 40 अध्याय हैं। पाँच अध्यायों से युक्त एक पञ्चिका है।

अध्याय - 40	पञ्चिका - 8	कण्डिकायें - 285

- इस ब्राह्मण का प्रधान विषय होत्रकर्म हेतु ऋचाओं के विनियोग का निरूपण करना है।
- इस ब्राह्मण में सोमयाग का विस्तृत विवेचन है।
- प्रथम सोलह (16) अध्यायों में अग्निष्टोम याग का विवेचन हुआ है।
  (17) सत्रह एवं अट्ठारह (18) वें अध्याय में 360 दिवसपर्यन्त सम्पन्न होने वाले गवामयन सत्र का विचार निरूपित है।
- 19 से 24 अध्याय पर्यन्त द्वादशाहयाग का वर्णन है।
- 25 से 32 अध्याय में अग्निहोत्र की व्यवस्था निरूपित है।
- अन्तिम 8 अध्यायों में राज्याभिषेक की विधि विस्तृत रूप में वर्णित है।
- इसके प्रथम और द्वितीय पञ्चिका में एक दिन में सम्पन्न होने वाले 'अग्निष्टोम' नामक सोमयाग में होतृ के विधि-विधानों एवं कर्तव्यों का वर्णन है।
- तृतीय और चतुर्थ पञ्चिका में प्रातः सवन, माध्यन्दिन सवन, सायं सवन विधि के साथ अग्निहोत्र का प्रयोग बताया गया है।
- पञ्चम में द्वादशाह यागों तथा षष्ठ पञ्चिका में सप्ताहों तक चलने वाले सोमयागों एवं उनके होता तथा सहायक ऋत्विजों के कार्यों का विवेचन है।
- सप्तम पञ्चिका में राजसूय यज्ञ तथा शुनःशेप का आख्यान वर्णित है।
- अष्टम पञ्चिका में ऐतिहासिक विवरण है। इसमें प्रथम 'ऐन्द्र महाभिषेक' तदनन्तर चक्रवर्ती नरेशों के अभिषेक का चित्रण है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में इन्द्र को सब देवों में श्रेष्ठ बताया गया है। वह सबसे अधिक शक्तिशाली, साहसी और दूर तक पार लगाने वाला है।

'स वै देवानामोजिष्ठो बलिष्ठः सत्तमः पारयिष्णुतमः' (ऐतरेय ब्राह्मण- 7/16)

- जन्म से ही ब्राह्मण पर तीन ऋण होते हैं-



- इन तीनों ऋणों का परिशोधन यज्ञ या पुत्रोत्पत्ति के द्वारा होता है।

- ऐतरेय ब्राह्मण में शुनःशेप का आख्यान अनेक दृष्टियों से पठनीय है।
- शुनःशेप ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के अनेक सूक्तों के द्रष्टा ऋषि हैं।
- इक्ष्वाकुवंशीय राजा हरिश्चन्द्र के कोई सन्तान नहीं थी। नारद के उपदेश से उन्होनें वरुण के पास जाकर व्रत लिया कि यदि मेरे पुत्र होगा तो उसे वरुणदेव को समर्पित कर दूँगा।
- राजा के घर एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम रोहित था। किन्तु राजा बलि देने के लिये उसे उपयुक्त न समझ व्रत को टालता गया और रोहित प्रौढावस्था को प्राप्त हो गया।
- अन्त में राजा पुत्र को बलि देने के लिये तैयार हो गया किन्तु अवसर पाकर रोहित घर से भाग निकला और जंगलों में इधर उधर भटकता रहा। इसी बीच राजा को वरुण के शाप से जलोदर रोग हो गया।
- यह समाचार सुनकर रोहित घर लौट आया और अजीगर्त ब्राह्मण के पास जाकर उसके मध्यम पुत्र शुनःशेप को सौ गायें देकर खरीद लेता है।
- शुनःशेप का पिता अपने पुत्र की बलि देने के लिये तैयार हो जाता है और शुनःशेप को यूप में बाँध दिया किन्तु शुनःशेप ऐसे अवसर पर देवताओं की स्तुति करता है। जैसे-जैसे स्तुति करता गया वैसे-वैसे वरुण का पाश टूटता गया और महाराज हरिश्चन्द्र का रोग भी घटता गया।
- अन्त में 'शुनःशेप' पाशमुक्त हो गया। राजा भी रोग से मुक्त हो गया। अन्त में शुनःशेप ने अपने लोभी पिता को छोड़ दिया और विश्वामित्र ने उसे दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया।
- ऐतरेय ब्राह्मण में सोम-हरण का भी आख्यान प्राप्त होता है।
- गोविन्दस्वामी तथा सायणाचार्य के भाष्यों सें यह ब्राह्मण विभूषित है। इसका सम्पादन एवं प्रकाशन सर्वप्रथम प्रो0 हाउग ने बम्बई से 1893 ई. में किया था।
- इसके बाद आउफ्रेख्त महोदय ने कई उपयोगी सूचियों के साथ बाननगर से 1879 ई. में प्रकाशित किया जिसकी लिपि रोमन है।
- **ऐतरेय ब्राह्मण के अन्य वर्णन-**
  - देवासुर युद्ध
  - सोमोत्पत्ति
  - यज्ञदेवता
  - वषट्कार के षट्तत्त्व
  - साम्राज्याभिषेक
  - विश्वामित्र एवं वामदेव
  - क्षत्रिय और यज्ञ
  - सुब्रह्मण्य वाक्

2. शांखायन ब्राह्मण या कौषीतकि ब्राह्मण-

- ऋग्वेद का द्वितीय ब्राह्मण शांखायन ब्राह्मण है। इस ब्राह्मण का अपर नाम कौषीतकि है।
- यह शांखायन शाखा का ब्राह्मण है इसलिये इसे शांखायन ब्राह्मण कहते हैं।
- कौषीतकि ब्राह्मण का प्रथम सम्पादन 1887 ई. में लिण्डनर ने किया । तदनन्तर 1920 ई. में ए. बी. कीथ ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ इसका प्रकाशन किया।
- 1911 में गुलाब राय द्वारा सम्पादित शांखायन ब्राह्मण आनन्दाश्रम पूना से प्रकाशित हो चुका है।
- इस ब्राह्मण ग्रन्थ में **30 अध्याय** हैं। प्रत्येक अध्याय में पाँच से लेकर सत्रह खण्ड हैं। खण्डों की संख्या 266 है।
- प्रथम छः अध्यायों में अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास इष्टि ऋतुयाग का निरूपण है।
- सात अध्याय से 30 अध्याय तक ऐतरेय ब्राह्मण के समान सोमयाग का वर्णन है।
- चरणव्यूह की महीदास कृत टीका में एक श्लोक उद्धृत है, जिसमें स्पष्ट कहा है कि शांखायनी शाखा एवं ब्राह्मण कौषीतकि है।
- इस ब्राह्मण के प्रसार का वर्णन निम्न श्लोक में है –

उत्तरे गुर्जरे देशे वेदो बह्वृच ईरितः।
कौषीतकिब्राह्मणं च शाखा शांखायनी स्थिता॥

- इसके प्रधान प्रवक्ता कौषीतकि ऋषि थे।

अध्याय	कुल खण्ड संख्या
30	266

- **अध्यायों के अनुसार प्रतिपाद्य विषय-**

अध्याय-1 अग्न्याधान

अध्याय-2 अग्निहोत्र

अध्याय-3 दर्श और पूर्णमास यज्ञ

अध्याय-4 अनुनिर्वाप्या, अभ्युदिता, अभ्युद्दृष्टा आदि 11 विशेष इष्टियाँ

अध्याय-5 चातुर्मास्य यज्ञ

अध्याय-6 ब्रह्मा के कर्तव्य, हविर्यज्ञ

अध्याय-7-30 सोमयज्ञ का विस्तृत वर्णन

यजुर्वेदीय ब्राह्मण-

यजुर्वेद की दो शाखा
- 1.कृष्णयजुर्वेद
- 2. शुक्लयजुर्वेद

शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण -शतपथ ब्राह्मण

- इसके रचयिता वाजसनि के पुत्र याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

- वाजसनि के पुत्र होने से इन्हें 'वाजसनेय' भी कहा जाता है।
- सूर्य की कृपा से प्राप्त शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या वाजसनेय याज्ञवल्क्य ने की।

'आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येन आख्यायन्ते।'

(शत. -14.9.4.33)

- याज्ञवल्क्य के पिता वाजसनि के विषय में सायण ने लिखा है कि वे अन्नदाता (वाज=अन्न, सनि=दाता) के रूप में विख्यात थे, अतः उनका नाम वाजसनि पड़ा।
- भागवत के अनुसार याज्ञवल्क्य के पिता का नाम 'देवरात' था।
- ब्रह्मरात और देवरात का अर्थ है- ब्रह्मदत्त और देवदत्त।
- स्कन्दपुराण के अनुसार याज्ञवल्क्य की माता का नाम 'सुनन्दा' था।
- बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थीं- मैत्रेयी और कात्यायनी।
- स्कन्दपुराण में कात्यायन और पारस्कर को एक मानकर उन्हें याज्ञवल्क्य का पुत्र बताया गया है।
- यजुर्वेद का गृह्यसूत्र 'पारस्कर गृह्यसूत्र' पारस्कर की रचना है।
- पुराणों में याज्ञवल्क्य की अनेक सिद्धियों का उल्लेख है। वे शुक्लयजुर्वेद और शतपथ ब्राह्मण के सम्पादन के अतिरिक्त याज्ञवल्क्य शिक्षा, याज्ञवल्क्यस्मृति आदि के प्रणेता माने जाते हैं।
- नामकरण- शतपथ में 100 अध्याय हैं, अतः उसे 'शतपथ' कहा जाता है।
- इसकी व्याख्या गणरत्न महोदधि ने इस प्रकार की है जिसमें सौ अध्याय-रूपी मार्ग हैं उसे शतपथ कहतें हैं- **'शतं पन्थानो मार्गा नामाध्याया यस्य तत् शतपथम्'**
- काण्व शतपथ में 104 अध्याय हैं, तथापि शत-संख्या के महत्त्व के कारण उसे शतपथ ही कहा जाता है।
- यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में प्राप्त होता है।
- माध्यन्दिन शाखा के शतपथ ब्राह्मण में अध्याय = 100
- काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण में अध्याय = 104

शतपथ ब्राह्मण (माध्यन्दिनशाखा) में प्रतिपादित विषय-

- माध्यन्दिन (शुक्लयजुर्वेदीय) शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण और 7624 कण्डिकायें हैं।

काण्ड	अध्याय	ब्राह्मण	कण्डिकायें
14	100	438	7624

- सम्पूर्ण ग्रन्थ 14 भागों में विभक्त है, इन्हें काण्ड कहते हैं।
- काण्डों के उपविभाग अध्याय हैं और अध्यायों के उपविभाग ब्राह्मण हैं।

- इन ब्राह्मणों के भी उपविभाग हैं, इन्हें कण्डिका कहते हैं।
- इसप्रकार इसके सन्दर्भ- निर्देश के लिए 4 संख्याएँ आती हैं-
  पहली संख्या काण्ड को, दूसरी अध्याय तीसरी ब्राह्मण तथा चौथी कण्डिका की सूचना देती है।
- काण्ड-1 = दर्श और पूर्णमास याग
- काण्ड-2 = अग्निहोत्र पिण्डपितृयज्ञ, दाक्षायण याग, नवान्नेष्टि, चातुर्मास्य याग।
- काण्ड-3 और 4= सोमयाग
- काण्ड-5 = वाजपेय और राजसूय यज्ञ
- काण्ड-6 = सृष्टि-उत्पत्ति, चयन-निरूपण
- काण्ड-7/8 = चयन निरूपण, वेदि-निर्माण
- काण्ड-9/10= चयननिरूपण, छोटी और बड़ी वेदियों का निर्माण
- काण्ड-11 = दर्श-पूर्णमास, दाक्षायण यज्ञ, उपनयन, पञ्च महायज्ञ, स्वाध्याय-प्रशंसा।
- काण्ड-12 = द्वादशाह, संवत्सर सत्र, ज्योतिष्टोम, सौत्रामणी याग, प्रायश्चित्त।
- काण्ड-13 = अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, दशरात्र, पितृमेध
- काण्ड-14 = प्रवर्ग्ययाग, ब्रह्मविद्या, बृहदारण्यक उपनिषद्

शतपथ ब्राह्मण (काण्व शाखा) का प्रतिपाद्य विषय

- काण्व शतपथ ब्राह्मण में माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण से कुछ क्रम-विन्यास में अन्तर है।
- इसमें 17 काण्ड, 104 अध्याय, 435 ब्राह्मण और 6806 कण्डिकाएँ हैं।
- माध्यन्दिन के काण्ड 2 का वर्ण्य विषय काण्ड एक में कर दिया गया है और काण्ड एक का विषय काण्ड दो में है।

वर्ण्य विषय इस प्रकार है-

- काण्ड-1 = अग्निहोत्र, नवान्न इष्टि (आग्रयण इष्टि) दाक्षायण, चातुर्मास्य
- काण्ड-2 = दर्श और पूर्णमास याग
- काण्ड-3 = अग्निहोत्र और दर्श-पूर्णमास यागों का अर्थवाद
- काण्ड-4/5 = सोमयाग
- काण्ड 6 और 7= वाजपेय और राजसूय
- काण्ड- 8 = उखासंभरण
- काण्ड 9 से 12= विभिन्न चयन याग
- काण्ड-13 = आधानकाल, पथिकृत्, ब्रह्मचर्य, दर्श-पूर्णमास
- काण्ड-14 = सौत्रामणी, प्रायश्चित्त
- काण्ड-15 = अश्वमेध
- काण्ड-16 = प्रवर्ग्य याग
- काण्ड-17 = बृहदारण्यक उपनिषद्, ब्रह्मविद्या
- दोनों ब्राह्मणों में प्रतिपाद्य विषय एक होने पर भी क्रम में भेद है।

- शतपथ की अन्य विशेषता यह है कि इसमें वाजसनेयी संहिता के 18 अध्यायों की क्रमबद्ध व्याख्या प्रथम 9 काण्डों में मिल जाती है।
- केवल अन्तर यह है कि संहिता में पिण्ड-पितृयज्ञ का वर्णन दर्श-पूर्णमास याग के बाद है और ब्राह्मण में अग्निहोत्र के बाद।

शतपथ ब्राह्मण का समय-

- डॉ. मैक्डानल आदि पाश्चात्त्य विद्वान् ब्राह्मण ग्रन्थों का काल 800 ई. पू. से 500 ई. पू. के मध्य मानते हैं।
- श्रीशंकर बालकृष्ण दीक्षित ने शतपथ ब्राह्मण का रचना काल 2500 ई. पू. के लगभग माना है।
- शतपथ ब्राह्मण और तैत्तिरीय ब्राह्मण ही संहिता ग्रन्थों के तुल्य स्वरचिह्नों से युक्त हैं। यह इसकी प्राचीनता का द्योतक है। इन कारणों से इसका रचनाकाल 2500 ई.पू. के लगभग मानना उचित है।

शतपथ के महत्त्वपूर्ण आख्यान-

1. मनु एवं श्रद्धा (1.1.4.14 से 16)
2. जलप्लावन की कथा तथा मत्स्य (1.8.1)
3. इन्द्र-वृत्र-युद्ध तथा इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व (1.6.3.)
4. स्त्री-कामुक गन्धर्व (3.2.4.3.)
5. कद्रू-सुपर्णी (3.6.2.)
6. च्यवन-सुकन्या (4.1.5.)
7. पुरूरवा-उर्वशी (11.5.1.)

- इन सबका इतिहास और पुराणों में बहुत विस्तार से वर्णन हुआ है।

यजुर्वेदीय ब्राह्मण (कृष्ण यजुर्वेद) = तैत्तिरीय ब्राह्मण

- तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता वैशम्पायन के शिष्य आचार्य तित्तिरि हैं।
- महाभारत के शान्तिपर्व में वैशम्पायन को याज्ञवल्क्य का मातुल (मामा) बताया गया है।
- वैशम्पायन का झुकाव तित्तिरि की ओर था, अतः उन्होंने याज्ञवल्क्य को अपमानित कर उसे अपनी शिष्यता से वंचित कर दिया था।
- तित्तिर ने तैत्तिरीय संहिता और तैत्तिरीय ब्राह्मण की रचना की। दूसरी ओर याज्ञवल्क्य ने यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा और शतपथ ब्राह्मण का संकलन किया।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण के अन्तर्गत सम्मिलित काठकभाग (3.10. से 12) के प्रवक्ता काठक आचार्य हैं।
- इस शाखा का दक्षिण भारत के आन्ध्रप्रदेश, नर्मदा के दक्षिणी भाग तथा गोदावरी के तटवर्ती प्रदेशों में अधिक प्रचार था।

तैत्तिरीय ब्राह्मण में प्रतिपादित विषय-

- कृष्णयजुर्वेदीय शाखा का एकमात्र ये ही ब्राह्मण संप्रति पूरा उपलब्ध है। काठक के कुछ अंश प्राप्त हैं।
- शतपथ ब्राह्मण के तुल्य विशालकाय है।
- यह तीन काण्डों या अष्टकों में विभाजित है।
- प्रथम और द्वितीय काण्ड में 8-8 अध्याय /प्रपाठक हैं।
- तृतीयकाण्ड में 12 अध्याय (प्रपाठक) हैं। इनके उपखण्डों को 'अनुवाक' कहते हैं। अनुवाकों की संख्या – 353 है।
- काण्डों में प्रतिपाद्य विषय

काण्ड		विषय
काण्ड-1	–	अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, राजसूय-याग
काण्ड-2	–	अग्निहोत्र, सौत्रामणी, उपहोम आदि।
काण्ड-3	–	पुरुषमेध और नक्षत्रेष्टियाँ

काण्डत्रयम्

काण्ड		अध्याय
1. प्रथम काण्ड	=	8
2. द्वितीय काण्ड	=	8
3. तृतीय काण्ड	=	12

- ऋग्वेद से अधिकतर ऋचाएँ ली गयी हैं कुछ ऋचाएँ नवीन हैं।
- काण्ड 2 में ऋग्वेद के नासदीयसूक्त (ऋग्. 10.129) के मन्त्रों का विनियोग एक उपहोम (2.8) के लिए किया गया है।
- यज्ञ को पृथिवी का अन्त और मध्य माना गया है।

  वेदिमाहुः परमन्तं पृथिव्याः। वेदिमाहुर्भुवनस्य नाभिम्। (तैत्ति. 2.7.4 से 10)
- तृतीय काण्ड अवान्तरकालीन रचना माना जाता है जिसमें प्रथमतः 'नक्षत्रेष्टि' का विस्तृत वर्णन है।
- चतुर्थ प्रपाठक में पुरुषमेध के उपयुक्त पशुओं का वर्णन है, जो कृष्णयजुर्वेद की संहिता में उपलब्ध नहीं होता प्रत्युत माध्यन्दिन-संहिता से वहाँ उद्धृत किया गया है।
- कठोपनिषद् में इसी आख्यान का विकसित रूप हमें उपलब्ध होता है।
- द्वादश प्रपाठक में चातुर्होत्र तथा वैश्वसृज याग का वर्णन है।

सामवेदीय ब्राह्मण

- सामवेद के ब्राह्मणों की संख्या अन्य वेदों के ब्राह्मणों की अपेक्षा कहीं अधिक है।
- सामवेदीय ब्राह्मणों की संख्या आठ है जिनका नामोल्लेख सायण ने इस प्रकार किया है-

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं ब्राह्मणमादिमम्।
षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्॥
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरिताः॥

- उपर्युक्त आठ ब्राह्मणों में से केवल प्रथम और द्वितीय अर्थात् ताण्ड्य और षड्विंश को पूर्ण ब्राह्मण का स्थान प्राप्त है।
- शेष सामविधान आदि छः ब्राह्मण 'अनुबाह्मण' में गिने जाते हैं। ये वेदों की अनुक्रमणिकाओं के तुल्य लघुकाय ग्रन्थ हैं, अतः इन्हें ब्राह्मणग्रन्थों के तुल्य बताकर 'अनुब्राह्मण' कहा गया है।

ताण्ड्य ब्राह्मण का परिचय

- तांड्य ब्राह्मण को ही 'पंचविंश ब्राह्मण' और 'प्रौढ ब्राह्मण' कहा जाता है। यह विशालकाय ग्रन्थ है, अतः इसे ब्राह्मण के स्थान पर महाब्राह्मण भी कहते हैं।
- इसके रचयिता सामवेदीय आचार्य 'तांडि' माने जाते हैं।
- जैमिनीय ब्राह्मण में इसे ताण्ड्य कहा गया है- 'तदु होवाच ताण्ड्यः'
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र में भी 'ताण्ड्यम्' कहा गया है।
- शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र (3.3.27) के भाष्य में ताण्डिन् और शाट्यायिन् शाखाओं का उल्लेख किया है।

ताण्ड्य ब्राह्मण का विषय-

- ताण्ड्य ब्राह्मण 25 अध्यायों में विभक्त है, अतः इसे **'पञ्चविंश ब्राह्मण'** भी कहते हैं।
- विषय विवेचन की प्रौढता के कारण इसे **'प्रौढ ब्राह्मण'** भी कहते हैं।
- इसमें पाँच-पाँच अध्यायों की पाँच पञ्चिकाएँ हैं।
- इसका सम्बन्ध सामवेद की कौथुम शाखा से है।

अध्याय	**पञ्चिका**
25	5 × 5=25

- इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है। इसमें ज्योतिष्टोम से लेकर एक हजार वर्ष तक चलने वाले सोमयागों का वर्णन है।
- यह उद्गाता के कार्यों की विस्तृत विवेचना के कारण आदरणीय ब्राह्मण माना जाता है।
- **अध्यायों के अनुसार प्रतिपाद्य विषय-**

  अध्याय 1- उद्गाता के लिये पठनीय मन्त्रों का निर्देश।

  अध्याय 2 और 3- त्रिवृत्, पञ्चदश, सप्तदश आदि स्तोमों की विष्टुतियाँ।

  अध्याय 4 और 5- वर्षभर चलने वाले 'गवामयन' याग का वर्णन।

अध्याय 6 और 9- (बारहवें भाग तक) ज्योतिष्टोम, उक्थ्य और अतिरात्र का वर्णन 12 से आगे के खण्डों में विभिन्न प्रायश्चित्तों की विधियाँ हैं।

अध्याय 10 से 15- द्वादशाह यागों का वर्णन।

अध्याय 16 से 19- एकाह यागों का वर्णन।

अध्याय 20 से 22- अहीन यागों का वर्णन।

अध्याय 22 से 25- सत्र यागों का वर्णन।

- इसमें कुल 178 सोमयागों का वर्णन है।
- अहीन याग ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों के लिये है। इसमें दक्षिणा दी जाती है। 13 दिन से लेकर वर्षों तक चलता है। इसमें ब्राह्मण यजमान होंगे। दक्षिणा नहीं दी जायेगी। 17 से 24 तक यजमान हो सकते हैं। यह सोमयाग का ही अंग है।

ताण्ड्य ब्राह्मण के प्रमुख तथ्य-

- ताण्ड्य ब्राह्मण अत्यन्त सुव्यवस्थित है। इसकी भाषाशैली, रचनासौष्ठव और वाक्यविन्यास सुनियोजित है। अतएव धर्म और आचार संहिता के लिये यह सुविख्यात है।
- इसमें 'व्रात्य यज्ञ' विशेष महत्त्वपूर्ण है। यह संस्कारहीन व्यक्तियों की शुद्धि के लिये होता है। यह एकाह (एक दिन का) याग होता है।
- भौगोलिक ज्ञान के लिए इसमें विपुल सामग्री है। कुरुक्षेत्र और सरस्वती के क्षेत्र को स्वर्गतुल्य बताया गया है।
- सरस्वती नदी के लुप्त होने के स्थान 'विनशन' और उसके पुनः प्रकट होने के स्थान 'प्लक्ष-प्रास्रवण' का वर्णन है।
- इसमें यमुना नदी, नैमिषारण्य, खाण्डव वन, कुरु-पाञ्चाल एवं मगध जनपद आदि का उल्लेख है। निषाद आदि जातियों का भी उल्लेख मिलता है। (ता.- 16.6.7)
- इसमें यज्ञ का बहुत महत्त्व वर्णित है। यज्ञ न करने वालों को निकृष्ट और वध्य बताया गया है।

षड्विंश ब्राह्मण का परिचय

- यह कौथुम शाखीय सामवेद का महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण है।
- यह पञ्चविंश के स्थान पर षड्विंश ब्राह्मण है, अर्थात् इसमें 25 के स्थान पर 26 अध्याय हैं।
- यह पञ्चविंश (ताण्ड्य) ब्राह्मण का ही परिशिष्ट समझा जाता है।
- सायण ने अपने भाष्य में इसे **'ताण्ड्यैकशेष ब्राह्मण'** अर्थात् ताण्ड्य का एक भाग या परिशिष्ट कहा है।
- षड्विंश ब्राह्मण में 6 अध्याय हैं। इनके अवान्तर भेद खण्ड हैं। इसके प्रथम पाँच अध्यायों में यज्ञ का ही विषय वर्णित है।

- अन्तिम अध्याय (अ0-6) को 'अद्भुत ब्राह्मण' कहते हैं।
- इसमें भूकम्प, अतिवृष्टि, अकाल, अनिष्ट, कुस्वप्न और अपशकुनों आदि के साथ ही विभिन्न उत्पातों की शान्ति के लिए विभिन्न याग आदि का वर्णन है।
- यह ब्राह्मण तत्कालीन मान्यताओं, प्रथाओं आदि के ज्ञान के लिए बहुत उपयोगी है।
- इसके प्रथम अध्याय में 'सुब्रह्मण्या' ऋचा का विशेष वर्णन है।
- भूः, भुवः और स्वः इन तीन महाव्याहृतियों से क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद की उत्पत्ति का वर्णन है।
- ब्राह्मणों के लिये सन्ध्योपासना का समय अहोरात्र की सन्धि अर्थात् प्रातः और सायं सन्धिवेला बताया गया है।

  'तस्माद् ब्राह्मणोऽहोरात्रस्य संयोगे सन्ध्यामुपास्ते।' (षड्0 5.5.8)
- षड्विंश ब्राह्मण में यज्ञिय विधानों के प्रसंग में 24 आख्यायिकाएँ आई हैं। इनमें इन्द्र और अहल्या वाला आख्यान बहुत प्रसिद्ध है।

3. सामविधान ब्राह्मण का परिचय

- यह ब्राह्मण प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से अन्य ब्राह्मणों से सर्वथा भिन्न है। इसमें जादू-टोने से सम्बद्ध सामग्री प्राप्त होती है।
- विभिन्न उपद्रवों की शान्ति के लिये सामगान के साथ ही विभिन्न अनुष्ठानों का भी विधान है।
- सामविधान ब्राह्मण में श्रौत यागों के साथ ही प्रायश्चित्त-विधान, कृच्छ्र आदि व्रत, काम्य याग और अभिचार कर्मों का भी वर्णन है।
- विषय-वस्तु की दृष्टि से इस ब्राह्मण का क्षेत्र बहुत व्यापक है।
- सामविधान-ब्राह्मण में तीन प्रपाठक और 25 अनुवाक हैं।

  इनमें वर्णित विषय-वस्तु संक्षेप में इस प्रकार है -
- **प्रपाठक-1** प्रजापति से सृष्टि की उत्पत्ति, साम-प्रशंसा, सामस्वरों के देवता, देवों के लिये यज्ञ, कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतों का वर्णन, स्वाध्याय और अग्न्याधान के नियम, दर्श-पूर्णमास, अग्निहोत्र सौत्रामणी आदि यागों का वर्णन, श्रौतसूत्रों के साथ देव-प्रीत्यर्थ सामगान, विभिन्न पापों के लिये प्रायश्चित्तों का वर्णन।

प्रपाठक 2 और 3 में

- काम्य-कर्म, रोग निवृत्ति एवं क्षेम के लिये विभिन्न प्रयोग, अभीष्ट सिद्धि, राज्याभिषेक, अभिचार शान्ति, युद्ध-विजय आदि के लिए विभिन्न प्रयोग दिए गये हैं।
- अन्त में साम-सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्यों का वर्णन, अध्ययन के अधिकारी और दक्षिणा का वर्णन है।

सामविधान ब्राह्मण के कुछ तथ्य-

इसमें श्रौत और तान्त्रिक विधियों का समन्वय है। इसमें अभिचार कार्यों के लिये सामगान के साथ कतिपय अनुष्ठानों के विधान हैं।

जैसे- शत्रु को भगाने के लिये चिता की भस्म शत्रु के घर या बिस्तर पर डालना।

- शत्रु को मारने के लिये शत्रु की आटे की मूर्ति बनाकर उसका चाकू से गला काटना और उसे आग में डालना।
- इसमें काम्य प्रयोग और प्रायश्चित्तों का विधान विशेष रूप से है।
- यह ब्राह्मण धर्मसूत्रों की पूर्वपीठिका है। इसमें विविध पापों के लिए प्रायश्चित्तों का वर्णन है। यह ब्राह्मणग्रन्थ पापों, अपराधों और कुकर्मों के सामाजिक अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

4. आर्षेय ब्राह्मण का परिचय

- यह ब्राह्मण एक प्रकार से आर्ष-अनुक्रमणी का काम करता है। जिन ऋषियों ने जो गान प्रचलित किए थे या जो उन गानों के प्रवर्तक हैं, उन गानों के नाम उन ऋषियों के नाम पर रखे गए हैं।
- इस ब्राह्मण में 3 प्रपाठक हैं, जो 82 खण्डों में विभाजित हैं।
- सामगान के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह ब्राह्मण विशेष उपयोगी है।
- सामगान के केवल दो गानों का ही आर्षेय ब्राह्मण में वर्णन है,ये हैं-

  1. ग्रामगेय 2. अरण्यगेय
- इसमें ऊह और ऊह्यगानों पर विचार नहीं किया गया है।
- सामगानों का नामकरण प्रायः पाँच आधारों पर हुआ है। इनके कारण सामगानों की पाँच कोटियाँ हो गई हैं।
- पाँच आधार ये हैं-

  1. उन ऋषियों के नामों पर, जिन्होनें उनका साक्षात्कार किया था।
  2. ऋचा के प्रारम्भिक पदों के आधार पर।
  3. गान के अन्तिम भाग (निधन) के आधार पर।
  4. प्रयोजन के आधार पर। जैसे- रक्षोघ्न (राक्षसों के नाशार्थ)
  5. इनसें भिन्न अन्य आधार पर जैसे- वीङ्क आदि सामगान।
- आर्षेय ब्राह्मण ऋषि के नाम के साथ उनके गोत्र-नाम का भी उल्लेख कर देता है। जैसे- हविष्मत् गान के ऋषि हैं – हविष्मान्। इनका सम्बन्ध अंगिरा (अंगिरस्) गोत्र से है।
- अधिकतर विद्वानों का मत है कि आर्षेय ब्राह्मण और देवताध्याय ब्राह्मण एक ही ग्रन्थ के दो भाग हैं।

- एक में सामगान के ऋषियों का वर्णन है और दूसरे में देवों का।
- आर्षेय ब्राह्मण में ग्रामगेय गानों का उल्लेख सामवेद संहिता के क्रम से है।

देवताध्याय ब्राह्मण का परिचय

- आकार की दृष्टि से यह बहुत छोटा ब्राह्मण है । यह सूत्रशैली में लिखा गया है।
- इसमें चार खण्ड हैं। कुछ संस्करणों में केवल तीन खण्ड हैं। इसमें सामगानों के देवताओं का विशेष रूप से वर्णन है।

  खण्डों के अनुसार वर्ण्य-विषय इस प्रकार है-

  खण्ड-1 इसमें विभिन्न सामों के सम्बन्ध में देवताओं का वर्णन है। सामगान के देवताओं के रूप में सर्वप्रथम इन देवताओं का वर्णन है- अग्नि, इन्द्र, प्रजापति, सोम, वरुण, त्वष्टा, अंगिरस्, पूषा (पूषन्), सरस्वती और इन्द्राग्नी।

  खण्ड-2 इस खण्ड में छन्दों के देवता और उनके वर्णों का विशेष वर्णन है।

  खण्ड-3 इस खण्ड में सामवेदीय छन्दों के नामों की निरुक्तियाँ दी गयी हैं। इन निरुक्तियों में से अनेक निरुक्तियों को यास्क ने अपने निरुक्त में ग्रहण किया है।

  जैसे- 'गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मणः' (निरुक्त 7.12) अर्थात् स्तुति अर्थ वाली गै धातु से गायत्री शब्द बना है।

  इसीप्रकार निरुक्त में- अनुष्टुप्, उष्णिक्, ककुभ्, जगती, पंक्ति, बृहती, त्रिष्टुप् आदि के निर्वचन दिए गए हैं।

  खण्ड-4 इसमें गायत्र साम की आधाररूप गायत्री के विभिन्न अङ्गों की देवरूपता का वर्णन है।

- भाषाशास्त्र की दृष्टि से इसका निर्वचन वाला खण्ड अतिमहत्त्व का है। इसमें निर्वचन बहुत प्रामाणिक ढंग से दिए गए हैं।

6. उपनिषद् ब्राह्मण का परिचय

- इसका दूसरा नाम 'छान्दोग्यब्राह्मण' है। इसमें 10 प्रपाठक हैं। यह ब्राह्मण दो ग्रन्थों का सम्मिलित रूप है।
- * **मन्त्र ब्राह्मण-** प्रथम दो प्रपाठकों को मन्त्र ब्राह्मण या मन्त्र पर्व कहते हैं।
- प्रत्येक प्रपाठक के 8-8 खण्ड हैं। इनमें गृह्य संस्कारों में विनियुक्त मन्त्रों का संकलन है।
- इन मन्त्रों का ही गोभिल और खादिर गृह्यसूत्रों में विभिन्न गृह्य संस्कारों में विनियोग है।
- इन मन्त्रों की संख्या 268 है। प्रथम प्रपाठक में गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, चूडाकर्म, उपनयन, विवाह और समावर्तन के मन्त्र दिए गए हैं।
- द्वितीय प्रपाठक में भूतबलि, आग्रहायणी कर्म, पितृ-पिण्डदान, देवबलिहोम, दर्श-पूर्णमास, आदित्योपस्थान,नवगृहप्रवेश और प्रसादप्राप्ति के मन्त्र हैं।
- इसमें अन्य संहिताओं और ब्राह्मणों से भी मन्त्र लिये गये हैं, जैसे लाजाहोम का मन्त्र है-

इयं नार्युपब्रूतेऽग्नौ लाजानावपन्ती ।
दीर्घायुरस्तु मे पतिः शतं वर्षाणि जीवतु॥ (1.3.8-9)

➢ छान्दोग्य ब्राह्मण पर दो व्याख्याएँ हैं-

* 1. गुणविष्णु कृत 'छान्दोग्यमन्त्र-भाष्य'
* 2. सायणकृत- वेदार्थप्रकाश।

➢ गुणविष्णु ने ऋषि, देवता, छन्द और विनियोग का विस्तृत वर्णन किया है।

➢ अर्थ के महत्त्व को दिखाने के लिये उन्होनें 'स्थाणुरयं भारहारः किलाभूद्----(निरुक्त- 1.18) को उद्धृत किया है कि जो अर्थ नहीं जानता वह मूर्ख है और जो अर्थ जानता है, उसी को सफलता प्राप्त होती है।

➢ सायण ने अपने भाष्य में गुणविष्णु का अनुकरण किया है।

* छान्दोग्य उपनिषद् ब्राह्मण-

➢ छान्दोग्य ब्राह्मण के शेष 8 प्रपाठक छान्दोग्य उपनिषद् है।

➢ यह कौथुम शाखा से सम्बद्ध है।

➢ शंकराचार्य ने इसे 'ताण्डिनाम् उपनिषद्' अर्थात् ताण्ड्य ब्राह्मण से सम्बद्ध उपनिषद् कहा है।

➢ इसमें तत्त्वज्ञान और उससे सम्बद्ध कर्म और उपासनाओं का सुन्दर वर्णन है।

➢ श्री शंकराचार्य ने इसका भाष्य किया है, अतः इसका महत्त्व बढ़ गया है। इसके प्रथम अध्याय में ओंकार का महत्त्व और उसकी उपासना का वर्णन है।

➢ द्वितीय अध्याय में विविध सामों की उपासना का वर्णन है।

➢ तृतीय अध्याय में सूर्योपासना, गायत्री का महत्त्व, ब्रह्मयज्ञ, प्राण और मन का विवेचन है।

➢ इसमें अनेक आख्यानों का भी वर्णन है यथा-

1. दाल्भ्य और प्रवाहण का संवाद
2. सत्यकाम का आख्यान
3. अश्वपति का आख्यान
4. राजा जानश्रुति और रैक्व का उपाख्यान
5. उपस्ति का आख्यान
6. उद्दालक और श्वेतकेतु का संवाद
7. सनत्कुमार और नारद का संवाद आदि।

(7) संहितोपनिषद् ब्राह्मण का परिचय

➢ संहितोपनिषद् का अर्थ है- संहिता के उपनिषद् अर्थात् रहस्य को बताने वाला ब्राह्मण ग्रन्थ।

- यहाँ संहिता शब्द का अर्थ सामवेदसंहिता आदि नहीं है अपितु 'संहिता' शब्द का अर्थ- साम के गान की संहिता अर्थात् सातत्य।
- संहितोपनिषद् ब्राह्मण शास्त्रीयगान की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- शास्त्रीय गान में सप्त स्वरों का मन्द्र मध्य और तार स्थानों से समन्वय अत्यावश्यक है।
- सायण के अनुसार यह समन्वय ही संहिता है, इसके रहस्य का प्रतिपादन करना इस ब्राह्मण का उद्देश्य है।

सायण का कथन- साम्नां सप्त स्वरा भवन्ति।.....मन्द्रमध्यताराणि वाचः स्थानानि भवन्ति। एतेषां यः सन्निकर्षः सा संहिता।

संहितोपनिषद् ब्राह्मण का प्रमुख विषय

- इस ब्राह्मण में पाँच खण्ड हैं, जो सूत्रों में विभक्त हैं। इनका संक्षिप्त विवरण है-

खण्ड-1 इसमें तीन प्रकार की गान-संहिताओं का विस्तृत वर्णन है। ये तीन गान-संहिताएँ हैं- देवहू संहिता, वाक्शबहू ,अमित्रहू

- देवहू संहिता का उच्चारण मन्द्र स्वर से होता है। इसके गान से देवता शीघ्र पधारते हैं।
- देवहू के उद्गाता को धन-धान्य, श्री की प्राप्ति होती है। यह कल्याणकारिणी है। अन्य दो संहिताएँ अमंगलकारक हैं।
- वाक्शबहू में अस्पष्ट उच्चारण के कारण उद्गाता को हानि होती है।
- इसी प्रकार अमित्रहू अशास्त्रीय गान के कारण हानिकारक है। संहिता का एक अन्य प्रकार से विभाजन किया गया है। 1. शुद्धा 2. दुःस्पृष्टा 3. निर्भुजा
- शुद्ध और मधुर स्वर से उच्चरित सामगान शुभ है।
- अशुद्ध और असंगत सामगान सदा कष्टकारी है।

खण्ड 2 और 3= सामगान का शास्त्रीय वर्णन प्राप्त होता है।

- सामगान की विधि, स्तोम, अनुलोम स्वर तथा विविध स्वरों का विशद विवेचन है।
- ये अध्याय शास्त्रीय गान के ज्ञान के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं।

खण्ड 4 और 5= इसमें पूर्वोक्त विषय का ही विस्तृत वर्णन किया गया है।

इस ब्राह्मण की दो टीकायें हैं-

1. द्विजराज भट्टकृत-भाष्य
2. सायणभाष्य- वेदार्थप्रकाश

- इस ब्राह्मण पर सायण की अपेक्षा द्विजराज भट्ट का भाष्य अधिक विस्तृत और प्रामाणिक है।
- द्विजराज सायण से पूर्ववर्ती आचार्य हैं।

(8) वंश ब्राह्मण का परिचय

- यह ब्राह्मण बहुत छोटा है। सामगान के प्रवर्तक ऋषियों की वंश-परम्परा के ज्ञान के लिए यह ब्राह्मण उपयोगी है।
- इसमें तीन खण्ड हैं। इसमें स्वयंभू ब्रह्मा से सामवेद की परम्परा का प्रारम्भ माना गया है।
- स्वयंभू ब्रह्मा से कश्यप तक तथा कश्यप से शर्वदत्त गार्ग्य तक की वंश परम्परा इस प्रकार दी गई है।
- स्वयंभू ब्रह्मा से प्रजापति ने, प्रजापति से मृत्यु ने, मृत्यु से वायु ने, वायु से इन्द्र ने, इन्द्र से अग्नि ने और अग्नि से कश्यप ने सामवेद प्राप्त किया।
- तदनन्तर यह परम्परा कश्यप ऋषि से शर्वदत्त गार्ग्य तक आई।

(9) जैमिनीय-ब्राह्मण का परिचय

सामवेद की जैमिनीय शाखा के तीन ब्राह्मण प्राप्त होते हैं-

1. जैमिनीय ब्राह्मण 2. जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण 3. जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण

- सामवेद की कौथुम और राणायनीय शाखा के साथ ही जैमिनीय शाखा भी प्रचलित रही।
- जैमिनीय शाखा वाले ब्राह्मणों में प्राचीन वैदिक रूप मिलते हैं।
- इनकी वर्णनशैली प्राचीन है और आख्यानों में भी पुरातनता मिलती है।
- जैमिनीय ब्राह्मण में तीन काण्ड हैं। ये खण्डों में विभक्त हैं। प्रथम खण्ड में 364 खण्ड हैं। द्वितीय में 442 और तृतीय खण्ड में 386 इसप्रकार कुल खण्डों की संख्या 1192 हैं।

काण्ड

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
364 खण्ड	442 खण्ड	386 खण्ड = कुल 1192 खण्ड

- मंगलाचरण के श्लोकों में महर्षि जैमिनि की स्तुति की गई है। उन्हें व्यास का शिष्य और तलवकार का गुरु बताया गया है –

  (क) व्यासशिष्याय मुनये तस्मै जैमिनये नमः।

  (ख) तं जैमिनिं तलवकारगुरुं नमामि।।
- जैमिनीय ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय तीन काण्डों में विभक्त है -
- **काण्ड-1** इसमें अग्निहोत्र के दो भेदों, नित्य और काम्य का वर्णन है। काम्य अग्निहोत्र अधिक प्रचलित था।
- खण्ड 66 से 364 तक अग्निहोत्र का विस्तृत वर्णन है। राजा वर्ष में एक बार अग्निष्टोम याग करता था।

- राजकुमार द्वादशाह याग और अन्य लोग छन्दस्य तथा अग्निहोत्र याग करते थे।

खण्ड-2 इसमें एकाह (एक दिन वाला) से लेकर द्वादशाह (12 दिन तक चलने वाला) तक के यागों का वर्णन है।

- इनके नाम द्विरात्र, त्रिरात्र, सप्तरात्र, नवरात्र, दशरात्र आदि हैं।
- इसमें 12 दिन से अधिक चलने वाले यागों का भी वर्णन है। वर्षभर चलने वाले 'गवामयन' का पूर्ण विवरण इस खण्ड में दिया गया है।
- सरमा और पणि की कथा और भौगोलिक महत्त्व के अनेक नाम इस खण्ड में प्राप्त होते हैं।

खण्ड-3 इसमें 12 दिन चलने वाले (द्वादशाह) यागों का विस्तृत वर्णन है। अनेक सामों का भौतिक लाभ के लिए उपयोग बताया गया है।

- इसमें अनेक भौगोलिक तथ्य वर्णित हैं। अर्थवन् के पुत्र दधीचि की कथा विस्तार से दी गई है।

* जैमिनीय ब्राह्मण की कुछ विशेष बातें-

- अनुष्टुप् छन्द को गायत्री छन्द की माता कहा गया है।
- 'भूर्भुवः स्वः' इन तीन महाव्याहृतियों को सारे पापों का प्रायश्चित्त कहा गया है। ये सारे पापों को दूर करने में समर्थ हैं।
- गायत्री का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि यह तीनों सवनों (प्रातः, मध्याह्न और सायं) की आत्मा है।
- यह तीनों सवनों का यथास्थान देवों तक पहुँचाती है।
- मुख्यरूप से 33 देव हैं। इनका ही विस्तार 303 और 3003 देवता हैं।
- सृष्टि की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है।

* जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण-

- कौथुम शाखा के आर्षेय ब्राह्मण के तुल्य इसमें भी स्वाध्याय और यज्ञ की दृष्टि से ऋषि, देवता और छन्द के ज्ञान पर विशेष बल दिया जाता है।
- सामवेद के ऋषियों से सम्बद्ध विवरण इसमें दिया गया है। ग्रामगेय गानों के ऋषि-विवरण में अध्यायों और खण्डों की व्यवस्था और विन्यास प्रायः समान है।

* जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण-

- इसको जैमिनीय तलवकार उपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं। जैमिनीय ब्राह्मण के मङ्गलाचरण में जैमिनि को तलवकार ऋषि का गुरु बताया गया है।
- इस प्रकार यह जैमिनि ऋषि के शिष्य की रचना है।
- यह ब्राह्मण चार अध्यायों में विभक्त है। अध्यायों के उपविभाग अनुवाक और खण्ड हैं।
- प्रारम्भ में ओंकार और हिंकार के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है।

- सृष्टिविद्या का सम्बन्ध तीनों वेदों से है। ओम् से गायत्री की रचना हुई। गायत्री से ही प्रजापति, देवता और ऋषि अमर हुए। गायत्री अमृत है।

  'तदेतद् अमृतं गायत्रम्। एतेन वै प्रजापतिरमृतत्वम् अगच्छत्।'

  'एतेन देवाः। एतेन– ऋषयः'
- इस ब्राह्मण में यह वर्णन है कि पवित्र ज्ञान ब्रह्म से कश्यप ऋषि तक किस क्रम से गया।
- इसके अनुसार ब्रह्म से > प्रजापति > परमेष्ठी > सविता > अग्नि > इन्द्र > कश्यप।
- तत्पश्चात् कश्यप से **गुप्त लौहित्य** तक यह ज्ञान किस परम्परा से गया, इसका भी विस्तृत विवरण दिया गया है।
- वंश ब्राह्मण ने भी मानवों में सर्वप्रथम कश्यप ऋषि को यह पवित्र ज्ञान प्राप्त होने का उल्लेख किया है। इसके पश्चात् 'केन उपनिषद्' है।

ओंकार का महत्त्व

- इस ब्राह्मण में ओम् के महत्त्व पर बहुत बल दिया गया है। ओम् ही परम ज्ञान और बुद्धि का आदि कारण है।
- ओम् अक्षर है। अविनाशी और अमृत है, ओम् वेदों का मूर्धन्य है।
- ओम् का ही विस्तार तीनों वेद हैं। जिस प्रकार कोमल पत्तों में सुई प्रविष्ट होती है, इसी प्रकार तीनों लोकों में 'ओम्' व्याप्त है।

गायत्री की महिमा

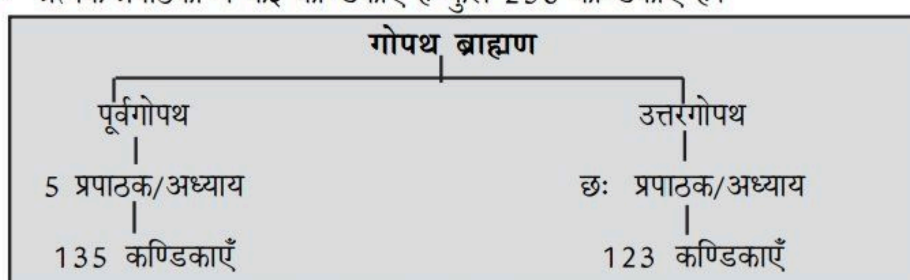
- गायत्री गान करने वाले की रक्षा करती है। गय और गाय का अर्थ – प्राण।
- प्राण की रक्षा करने के कारण यह गायत्री है, ब्रह्म का ही नाम गायत्री है।
- इसमें वैदिक भाषा, शब्दावली और व्याकरण के प्राचीन रूप उपलब्ध हैं। इसमें अनेक प्राचीन देवशास्त्रीय आख्यान वर्णित हैं।
- इसमें प्राचीन मान्यताओं और रीतियों का वर्णन है। जैसे- मृत व्यक्तियों का पुनः प्रकट होना, प्रेतात्माओं के द्वारा मार्गनिर्देशन, अतिमानवीय शक्तियों की प्राप्ति के लिये श्मशान-साधना आदि।

अथर्ववेदीय- ब्राह्मण (गोपथ ब्राह्मण)

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है।
- पहले इसे शौनकीय शाखा से संबद्ध समझा जाता था, क्योंकि इसमें उस शाखा के कुछ मन्त्रों के प्रतीक हैं।
- पैप्पलाद शाखा के अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र **'शं नो देवीरभिष्टय......'** है। गोपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि अथर्ववेद का पाठ **'शं नो देवीरभिष्टय...'** इस मन्त्र से प्रारम्भ होता है।
- वेंकट माधव की ऋग्वेदानुक्रमणी में 'पैप्पलादम् अथर्वणाम्' कहकर गोपथ ब्राह्मण को पैप्पलाद शाखा से सम्बद्ध बताया गया है।

गोपथ का नामकरण-

- गोपथ ब्राह्मण के रचयिता गोपथ ऋषि हैं, क्योंकि अथर्ववेद के ऋषियों की नामावली में गोपथ ऋषि का नाम आया है।
- गोपथ ब्राह्मण के दो भाग हैं 1. पूर्वगोपथ 2. उत्तरगोपथ
- पूर्वगोपथ में पाँच प्रपाठक या अध्याय हैं और उत्तरगोपथ में छः प्रपाठक या अध्याय हैं।
- प्रत्येक प्रपाठकों में कई कण्डिकाएँ हैं कुल 258 कण्डिकाएँ हैं।



गोपथ ब्राह्मण में कुल कण्डिकाएँ = 258

- गोपथ 'गुप्' धातु से बना है। अथर्वाङ्गिरसों को '**गोप्तारः**' कहा गया है, ये रक्षक हैं।
- इसमें पूर्व और उत्तर भाग मिलाकर 11 प्रपाठक हैं।
- गायों का पथ (गोपथ) अंगिरस् जानते थे, अतः गोपथ नाम पड़ा। इनमें प्रथम मत ही ग्राह्य है। शेष अनुमान-प्रधान हैं।

गोपथ ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय-

गोपथ ब्राह्मण का पूर्वभाग

- प्रपाठक-1 सृष्टि-उत्पत्ति, प्रणव उपनिषद् और गायत्री उपनिषद्।
- प्रपाठक-2 ब्रह्मचारी के कर्तव्य, होता आदि की भूमिका, यज्ञिय तत्त्वों की मीमांसा।
- प्रपाठक-3 यज्ञविवेचन, ब्रह्मा का महत्त्व, दर्श-पूर्णमास, अग्निहोत्र और अग्निष्टोम की रहस्यात्मक व्याख्या।
- प्रपाठक-4 गवामयन आदि सत्रयागों की मीमांसा, आध्यात्मिक विवरण।
- प्रपाठक-5 संवत्सर सत्र, अश्वमेध, अग्निष्टोम आदि का विवरण, अंगिरस् की उत्पत्ति, ऋत्विजों के कर्तव्यों का विवेचन।

गोपथ ब्राह्मण का उत्तर भाग

- प्रपाठक-1 ब्रह्मा का आसन, दर्श-पूर्णमास याग, काम्य इष्टियाँ, चातुर्मास्य।
- प्रपाठक-2 काम्य इष्टियाँ, सोमयाग, प्रायश्चित्त, दर्श-पूर्णमास

- प्रपाठक-3 वषट्कार और अनुवषट्कार, ऋतु-ग्रहादि एकाह यज्ञ।
- प्रपाठक-4 एकाह यज्ञ, तृतीय सवन, षोडशी याग
- प्रपाठक-5 अतिरात्र, वाजपेय, अप्तोर्याम, अहीनयज्ञ
- प्रपाठक-6 अहीनयज्ञ, उक्थ और शिल्प, षडह यज्ञ, कुन्ताप सूक्त।

गोपथ ब्राह्मण का समय-

- गोपथ ब्राह्मण के रचनाकाल के सम्बन्ध में पर्याप्त विवाद है। प्रो. ब्लूमफील्ड गोपथ ब्राह्मण को वैतान श्रौतसूत्र से बाद की रचना मानते हैं।
- डॉ. कीथ और कैलेन्ड प्रो. ब्लूमफील्ड के मत से सहमत नहीं हैं वे इसे प्राचीन मानते हैं।
- यास्क का समय ८०० ई. पू. के लगभग माना जाता है।

गोपथ ब्राह्मण के प्रमुख तथ्य-

- गोपथ ब्राह्मण में शब्दों का निर्वचन भाषाशास्त्र की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जैसे- दीक्षित शब्द की व्युत्पत्ति 'धीक्षित' से की गयी है।
- 'धीक्षित' शब्द का अर्थ- श्रेष्ठ(बुद्धि) वाला व्यक्ति है।

'श्रेष्ठां धियं क्षियतीति वा एतं धीक्षितं सन्तं दीक्षित इत्याचक्षते।' (गो. ब्रा.-3/19)

- इसीप्रकार वरुण शब्द की व्युत्पत्ति 'वरुण' शब्द से (राजा का वरण किये जाने के कारण) की गयी है। ('तं वा एतं वरणं सन्तं वरुण इत्याचक्षते')
- गोपथ ब्राह्मण में बताया गया है कि प्रत्येक मनुष्य पर तीन ऋण होते हैं –

  1. देवऋण 2. ऋषिऋण 3. पितृऋण
- इन त्रिविध ऋणों के परिशोधन के लिए पुरुष को विवाह कर सन्तानोत्पादन करना चाहिए।
- किसी भी अनुष्ठान के प्रारम्भ में ओ३म् का उच्चारण कर तीन बार आचमन करना चाहिये।
- गोपथ का कथन है कि शान्तचित्त होकर एक हजार बार ओम् का प्रतिदिन जप करने से सारी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

  'एतदक्षरं (ओंकारं).....सहस्त्रकृत्त्व आवर्तयेत्, सिध्यन्त्यस्यार्थाः सर्वकर्माणि च।' (1.1.22)
- गोपथ ने 21 प्रकार के यज्ञ बनाए हैं 7 सुत्या, 7 पाकयज्ञ और 7 हविर्यज्ञ। इसका विस्तृत विवरण भी दिया है।

- अग्निष्टोम, वाजपेय आदि 7 सुत्या हैं। दैनिक अग्निहोत्र, पितृयज्ञ आदि 7 पाकयज्ञ हैं। दर्श-पूर्णमास, चातुर्मास्य आदि 7 हविर्यज्ञ हैं।
- ब्रह्मा यज्ञ के विघ्नों को नष्ट करता है - **'ब्रह्मा .... यज्ञस्य विरिष्टं शमयति'**
- गोपथ में अनेक शब्दों के निर्वचन दिए गए हैं। यास्क ने निरुक्त में इसी पद्धति को अपनाया है। जैसे- ओम् (अव् और आप् धातु से)
- अंगिरस् (अंगिरा)- अंग+रस से
- वरुण- वृ (वरण) धातु से
- जाया – जन् धातु से, जायते अस्याम्, पति ही पुनः गर्भ में आकर पुत्ररूप में उत्पन्न होता है।
- अर्थवन् (अथर्वा) अथ+अर्वाक् = अथर्वन्
- गोपथ ब्राह्मण वैदिक साहित्य का सबसे परवर्ती रचना माना गया है।
- गोपथ ब्राह्मण में शिव का उल्लेख है जिससे प्रतीत होता है कि यह ब्राह्मण, ब्राह्मण काल की अपेक्षा वेदोत्तर काल की रचना है।



7. आरण्यक ग्रन्थ

- आरण्यकों का विकास ब्राह्मण ग्रन्थों के **परिशिष्ट** के रूप में हुआ। ब्राह्मण के जिस भाग में वानप्रस्थाश्रम के लिए उपयोगी यज्ञादि का विधान किया गया है उन्हें आरण्यक कहते हैं।
- वन में पढ़े जाने के कारण इन्हें 'आरण्यक' कहा गया है जैसा कि भाष्यकार सायण ने कहा है- **'अरण्याध्ययनादेतद् आरण्यकमितीर्यते।'**
- **'अरण्ये भवम् आरण्यकम्'** अर्थात् अरण्य में होने वाले अध्ययन- अध्यापन, मनन- चिन्तन शास्त्रीय चर्चा और अध्यात्मविवेचन आरण्यक के अन्तर्गत आते हैं।

आरण्यकों का महत्त्व

- आरण्यक ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषद् को जोड़ने वाली कड़ी है।
- यह आरण्यक सकाम से निष्काम की ओर प्रवृत्ति कराता है।
- यह स्थूल से सूक्ष्म की ओर ले जाता है तथा भौतिकवाद से अध्यात्म की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाने वाला है।
- आरण्यकों में यज्ञ प्रक्रिया के दार्शनिक पक्ष का विवेचन है।
- **वेदों का नवनीत -** आरण्यक वेदों के सारभाग हैं जैसे दही से मक्खन, मलय से चन्दन और औषधियों से अमृत प्राप्त होता है वैसे ही वेदों से आरण्यक प्राप्त हुए हैं-

नवनीतं यथा दध्नो मलयाच्चन्दनं यथा
आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा॥

(महाभारत 1.331.3)

- आरण्यकों में पवित्र ब्रह्मविद्या का वर्णन है ।
- यज्ञोपवीत का सर्वप्रथम उल्लेख तैत्तिरीय ब्राह्मण में आता है तैत्तिरीय आरण्यक में भी यज्ञोपवीत का महत्त्व वर्णित है।
- **प्रव्रज्या का उल्लेख-** बृहदारण्यक में संन्यासी के अर्थ में प्रव्रज्या शब्द का उल्लेख है। प्रव्रज्या का अर्थ है- घर छोड़कर जाना अर्थात् तत्त्वदर्शन या ब्रह्मज्ञान के लिए घर छोड़कर वन आदि में जाना।

➢ मैत्रायणी आरण्यक में भारत के चक्रवर्ती सम्राटों के नाम मिलते हैं जिनके नाम हैं- सुद्युम्न- भूरिद्युम्न- इन्द्रद्युम्न- कुवलयाश्व-यौवनाश्व-वध्र्यश्व-अश्वपति-शशबिन्दु- हरिश्चन्द्र- अम्बरीष- ननक्तु-शर्याति-ययाति- अनरण्य- अक्षसेनादयः।

आरण्यकग्रन्थों के प्रवक्ता ऋषि

➢ ऐतरेय ब्राह्मण के प्रवक्ता महिदास ऐतरेय हैं उनको ही ऐतरेय आरण्यक का प्रवक्ता माना जाता है । (1-3 आरण्यक तक)

'एतद् हस्य वै तद् विद्वान् आह महिदास ऐतरेय' (ऐत. 2.1.8)

➢ ऐतरेय आरण्यक के चतुर्थ आरण्यक के प्रवक्ता 'आश्वलायन' माने जाते हैं।

➢ पञ्चम आरण्यक के रचयिता शौनक माने जाते हैं।

➢ शांखायन आरण्यक के प्रवक्ता 'गुण शांखायन' हैं इनके गुरु का नाम कहोल कौषीतकि था।

➢ बृहदारण्यक के प्रवचन कर्त्ता 'महर्षि याज्ञवल्क्य' हैं। ये सम्पूर्ण शतपथ ब्राह्मण के प्रवक्ता हैं।

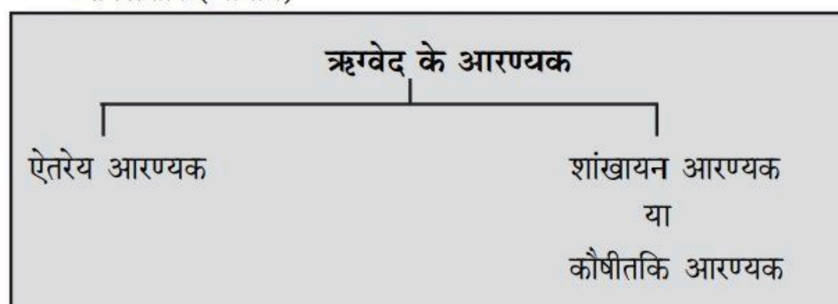
➢ तैत्तिरीय आरण्यक कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यक है सायण ने अपने भाष्य में कठ ऋषि को इसका प्रवक्ता बताया है।

➢ मैत्रायणी आरण्यक के प्रवक्ता भी कठ ऋषि को ही मानना चाहिए।

➢ तवलकार आरण्यक 'जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण' ही है इसके प्रवक्ता 'जैमिनि मुनि' हैं।

आरण्यक प्रवक्ता

- ऐतरेय आरण्यक (1-3 अध्याय- महिदास, चौथा अध्याय- आश्वलायन पाँचवाँ अध्याय- शौनक)
- शांखायन (कहोल कौषीतकि)
- बृहदारण्यक (याज्ञवल्क्य)
- तैत्तिरीय (कठ ऋषि)
- मैत्रायणी (कठ ऋषि)
- तवलकार (जैमिनि)



ऐतरेय आरण्यक का परिचय

- यह ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है।
- इसमें 5 भाग हैं, कुल 18 अध्याय हैं।

ऐतरेय आरण्यक का वर्ण्य विषय

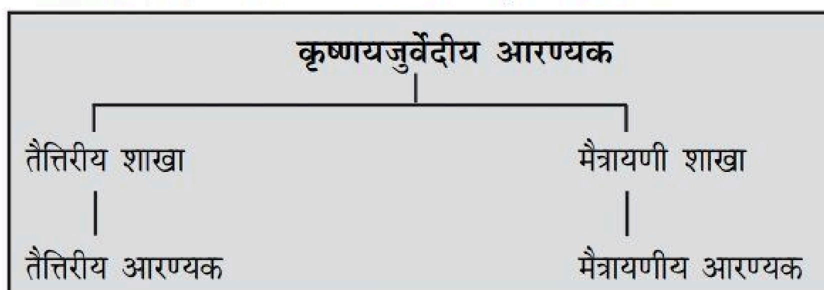
- अध्याय 1- इसमें महाव्रत का वर्णन है।
- अध्याय 2- इसके प्रथम 3 अध्यायों में उक्थ (3 निष्केवल्य प्राण विद्या और पुरुष) का विवेचन है।
- अध्याय 3- इसमें संहिता, पदपाठ, क्रमपाठ तथा स्वर और व्यञ्जन आदि के स्वरूप का विवेचन है।
- अध्याय 4- इसमें महानाम्नी ऋचाओं का वर्णन है। जो महाव्रत में बोली जाती है।
- अध्याय 5- इसमें निष्केवल्य **शस्त्र** (मन्त्रों) का वर्णन है।
- ऐतरेय आरण्यक में प्राणविद्या का वर्णन है।
- प्रज्ञा का महत्त्व, आत्मस्वरूप का वर्णन वैदिक अनुष्ठान, स्त्रियों का महत्त्व, शास्त्रीय महत्त्व, आचार संहिता (नैतिकता) का वर्णन है।

शांखायन आरण्यक का परिचय

- यह ऋग्वेदीय आरण्यक है। इसमें 15 अध्याय हैं।
- अध्याय 3-6 तक को 'कौषीतकि उपनिषद्' कहते हैं।
- अध्याय 7-8 संहितोपनिषद्
- अध्याय-9- इसमें प्राणविद्या की श्रेष्ठता का वर्णन है।
- अध्याय- 10 इसमें आध्यात्मिक अग्निहोत्र का सांगोपांग वर्णन है।
- अध्याय-11- इसमें मृत्यु के निराकरण के लिए एक विशेष याग का विधान है।
- अध्याय-12 इसमें समृद्धि के लिए बिल्व (बेल) के फल से एक मणि बनाने का वर्णन है।
- अध्याय-13 इसमें श्रवण, मनन, आदि के लिए शरीर- शुद्धि, तपस्या, श्रद्धा और दम आदि की आवश्यकता का वर्णन है।
- अध्याय-14 इसमें **'अहं ब्रह्मास्मि'** और वेदों के अर्थज्ञान का महत्त्व बताया गया है।
- अध्याय-15 इसमें आचार्यों की वंश परम्परा दी गयी है।
- कौषीतकि शांखायन के गुरु हैं।

बृहदारण्यक का सामान्य परिचय

- यह शुक्लयजुर्वेदीय आरण्यक है।
- यह शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 14 वें काण्ड के अन्त में दिया गया है।
  नोट- इसे यथार्थतः आरण्यक नहीं उपनिषद् ही माना जाता है।



तैत्तिरीय आरण्यक का परिचय

- यह कृष्णयजुर्वेदीय आरण्यक है।
- इसमें 10 प्रपाठक या परिच्छेद हैं प्रपाठकों के उपविभाग अनुवाक हैं।
- 10प्रपाठकों के नाम-
  1 भद्र 2. सह वै 3. चिति 4. युञ्जते 5. देव वै 6. परे 7. शिक्षा 8. ब्रह्मविद्या9. भृगु 10. नारायणीय
- प्रथम प्रपाठक 'भद्रं कर्णेभिः' मन्त्र से प्रारम्भ हुआ है। अतः इस प्रपाठक का नाम 'भद्र' है।

तैत्तिरीय आरण्यक का वर्ण्य विषय-

- प्रपाठक - 1 इसमें आरुण- केतुक नामक अग्नि की उपासना और तदर्थ इष्टका-चयन का वर्णन है।
- प्रपाठक 2 इसमें स्वाध्याय और पञ्चमहायज्ञों का वर्णन हैं।
- प्रपाठक 3 इसमें चातुर्होत्र चिति से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- प्रपाठक 4 इसमें प्रवर्ग्य होम से सम्बद्ध मन्त्र हैं।
- प्रपाठक 5 इसमें यज्ञ सम्बन्धी कतिपय संकेत दिये गये हैं।
- प्रपाठक 6 इसमें पितृमेध- सम्बन्धी मन्त्रों का संकलन है इसमें ऋग्वेद के भी मन्त्र दिये गये हैं।
- प्रपाठक 7-9 यह 'तैत्तिरीय उपनिषद्' है।
- प्रपाठक 10 यह महानारायणीय उपनिषद् है इसको 'खिल काण्ड' भी कहते हैं।

पाँच महायज्ञ-

* 1 ब्रह्मयज्ञ- (संध्या)
* 2 देवयज्ञ- (अग्निहोत्र)
* 3 पितृयज्ञ- (मातृ-पितृ सेवा, इसे श्राद्ध- तर्पण भी कहते हैं।)
* 4 मनुष्ययज्ञ- (अतिथिसत्कार)
* 5 भूतयज्ञ- (बलिवैश्वदेव यज्ञ, पशु पक्षियों आदि को अन्नादि देना, व्यासमुनि का पाराशर्य (पराशर के पुत्र) नाम से उल्लेख है।

मैत्रायणी आरण्यक का सामान्य परिचय

➢ यह कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणीय शाखा का आरण्यक है। इसको मैत्रायणीय उपनिषद् भी कहते हैं।

➢ इसमें 7 प्रपाठक हैं। प्रपाठक खण्डों में विभक्त हैं।

वर्ण्य विषय-

➢ प्रपाठक 1 – ब्रह्मयज्ञ राजा बृहद्रथ को वैराग्य और मुनि शाकायन्य द्वारा उसे उपदेश।

➢ प्रपाठक 2 – शाकायन्य द्वारा ब्रह्मविद्या का उपदेश

➢ प्रपाठक 3 – जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन। कर्म फल और पुनर्जन्म।

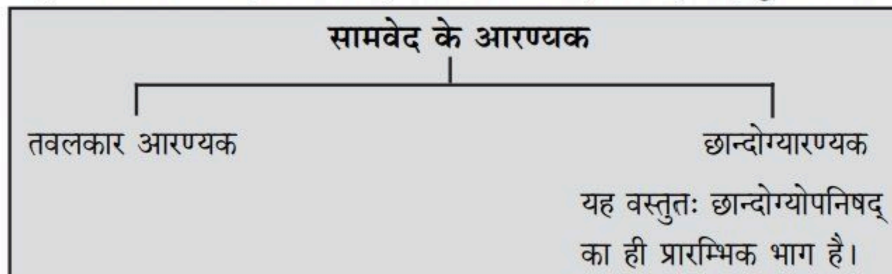
➢ प्रपाठक 4 – ब्रह्म- सायुज्य- प्राप्ति के उपाय।

➢ प्रपाठक 5 – कौत्सायनी स्तुति। ब्रह्म की नानारूपों में स्तुति।

➢ प्रपाठक 6 – ओम्, प्रणव, उद्गीथ और गायत्री की उपासना। आत्मयज्ञ का वर्णन, षडङ्ग योग, शब्द ब्रह्म, निर्विषय मन से मोक्ष प्राप्ति।

➢ प्रपाठक 7 – आत्म स्वरूप का वर्णन।

➢ ज्ञान के विघ्न - मोह का प्रपञ्च, मनोरंजन- प्रियता, प्रवास, भिक्षावृत्ति आदि।



तवलकार आरण्यक का परिचय

➢ जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है।

➢ यह चार अध्यायों में है।

- चतुर्थ अध्याय का दशम अनुवाक केनोपनिषद् कहलाता है।
- ब्राह्मण आरण्यक उपनिषद् का मिश्रण है।
- इसे जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं।
- अथर्ववेद का कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं है।

आरण्यकों का महत्त्व

1. कर्मकाण्ड व ज्ञानकाण्ड का समन्वय है।
2. वानप्रस्थ के लिए विशेष उपयोगी है।
3. सूक्ष्म अध्यात्मवाद।
4. निष्काम कर्म का महत्त्व।
5. वैदिक यज्ञों की आध्यात्मिक व्याख्या।



8. उपनिषद् ग्रन्थ

- 'उपनिषद्' शब्द उप और नि उपसर्गपूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है- **उप+नि+सद्+क्विप् = उपनिषद्।**
- उपनिषद् का अर्थ है- उप = समीप
  नि = निश्चय या निष्ठापूर्वक
  सद् = बैठना
- अर्थात् तत्त्वज्ञान के लिए गुरु के पास सविनय बैठना।
- श्रीशंकराचार्य ने उपनिषद् का अर्थ 'ब्रह्मविद्या' माना है।
- शंकराचार्य के अनुसार सद् धातु के तीन अर्थ हैं-
  1. विशरण- नाश होना 2. गति- पाना या जानना 3. अवसादन- शिथिल होना
- मुक्तिकोपनिषद् के अनुसार उपनिषदों की संख्या 108 है।

वेद	**उपनिषदों की संख्या**
ऋग्वेद	10
शुक्लयजुर्वेद	19
कृष्णयजुर्वेद	32
सामवेद	16
अथर्ववेद	31
	कुल 108

- आचार्य शंकर ने 10 उपनिषदों पर अपना भाष्य लिखा वे इस प्रकार हैं-

  ''ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।
  ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश॥''

  ये उपनिषद् प्राचीन तथा प्रमाणिक हैं।
- इसके अतिरिक्त कौषीतकि उपनिषद्, श्वेताश्वतर तथा मैत्रायणीय भी प्राचीन माने जाते हैं।

वेद	उपनिषद् नाम	शान्तिपाठ
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि आदि।	वाङ् मे मनसि ...
शुक्लयजुर्वेद	ईश, बृहदारण्यक आदि।	पूर्णमदः पूर्णमिदं ...
कृष्णयजुर्वेद	कठ, तैत्तिरीय आदि।	सह नाववतु ...
सामवेद	केन, छान्दोग्य आदि।	आप्यायन्तु ...
अथर्ववेद	प्रश्न, मुण्डक आदि।	भद्रं कर्णेभि ...

- **ऋग्वेद के उपनिषद्-**
  1. ऐतरेय उपनिषद्
  2. कौषीतकि उपनिषद्
- **शुक्लयजुर्वेद के उपनिषद्-**
  1. ईशोपनिषद्
  2. बृहदारण्यकोपनिषद्
- **कृष्णयजुर्वेद के उपनिषद्-**
  1. तैत्तिरीयोपनिषद्
  2. कठोपनिषद्
  3. श्वेताश्वतरोपनिषद्
  4. मैत्रायणी उपनिषद्
  5. महानारायणोपनिषद्
- **सामवेद के उपनिषद्-**
  1. केनोपनिषद्
  2. छान्दोग्योपनिषद्
- **अथर्ववेद के उपनिषद्-**
  1. मुण्डकोपनिषद्
  2. माण्डूक्योपनिषद्
  3. प्रश्नोपनिषद्
- कुछ विद्वान् उपनिषद् का रचनाकाल 700 ई. पू. मानते हैं।
- बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिष गणना के आधार पर उपनिषद् का रचनाकाल 1600 ई.पू. माना है।

1- ऐतरेय उपनिषद्-

- यह ऐतरेय आरण्यक का एक अंश है।
- ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ खण्ड से लेकर षष्ठ खण्ड तक का नाम 'ऐतरेय उपनिषद्' है।
- इसमें तीन अध्याय हैं।
- प्रथम अध्याय में परमात्मा के ईक्षण से सृष्टि का उल्लेख प्राप्त है।
- द्वितीय अध्याय में पुनर्जन्म के सिद्धान्त का वर्णन है।
- तृतीय अध्याय में 'प्रज्ञानं ब्रह्म' का वर्णन है।

2. कौषीतकि उपनिषद्-

- कौषीतकि उपनिषद् कौषीतकि ब्राह्मण से सम्बद्ध है। कौषीतकि ब्राह्मण से कौषीतकि आरण्यक है।
- कौषीतकि आरण्यक के तृतीय अध्याय से षष्ठ अध्याय तक को 'कौषीतकि उपनिषद्' कहते हैं।
- इसे ही 'कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद्' भी कहते हैं।
- इस उपनिषद् में कुल 4 अध्याय हैं।
- प्रथम अध्याय में देवयान और पितृयान का वर्णन है।
- द्वितीय अध्याय में प्राण को ब्रह्म माना गया है, इसका वर्णन है।
- तृतीय अध्याय में प्राण और प्रज्ञा के महत्त्व का वर्णन है।
- चतुर्थ अध्याय में काशिराज अजातशत्रु और बालाकि का दार्शनिक संवाद वर्णित है।

3. ईशोपनिषद्-

- यह शुक्लयजुर्वेद की काण्व शाखा से सम्बन्धित है।
- यह वाजसनेयी संहिता का 40 वाँ अध्याय है।
- इसमें 18 मन्त्र हैं।
- ईशोपनिषद् को ही ईशावास्योपनिषद् कहते हैं।

4. तैत्तिरीय उपनिषद्

- कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। तैत्तिरीय ब्राह्मण का अन्तिम भाग तैत्तिरीय आरण्यक है।
- तैत्तिरीय आरण्यक के 10 प्रपाठकों में सप्तम, अष्टम एवं नवम प्रपाठकों को तैत्तिरीयोपनिषद् कहते हैं।
- इस उपनिषद् में 3 वल्ली हैं।

  1. शीक्षा वल्ली 2. ब्रह्मानन्द वल्ली 3. भृगुवल्ली

वर्ण्य विषय

- **1-शीक्षा वल्ली-** शिक्षा शास्त्र, संहिता के अनेक रूप, भूः, भुवः, स्वः तीन व्याहृतियाँ आत्मा का निवास, आत्म- ब्रह्म की व्याख्या, सत्य, तप और स्वाध्याय का महत्त्व, दीक्षान्त उपदेश।

2. **ब्रह्मानन्द वल्ली-** अन्न, प्राण, मन, विज्ञान, आनन्दमय इन पाँच कोशों का वर्णन, ब्रह्म रस रूप है, सूर्य और पुरुष दोनों में एक ही शक्ति है।
3. **भृगुवल्ली-** पञ्च कोशों का वर्णन, अन्न का स्वरूप, अन्न का विराट् रूप।

कठोपनिषद्

- कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा को कठोपनिषद् कहते हैं।

- इसमें कुल 2 अध्याय एवं 6 वल्लियाँ हैं।
- इसके प्रत्येक अध्याय में 3 खण्ड हैं।
- इसमें सुप्रसिद्ध यम और नचिकेता की कथा है।
- यम ने नचिकेता को तीन वर प्रदान किये।

यम द्वारा नचिकेता को प्राप्त तीन वर

1. मेरे यमलोक से लौटने पर पिता मुझे देखकर प्रसन्न हों।
2. दिव्य अग्निविद्या।
3. जीवन और मृत्यु का रहस्य।

- नचिकेता के पिता वाजश्रवा थे।
- वाजश्रवा के पिता उद्दालक थे।

श्वेताश्वतरोपनिषद्

यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध अनुपलब्ध श्वेताश्वतर संहिता का एक अंश है। इसमें कुल छः अध्याय हैं।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में प्रतिपादित विषय-

- **अध्याय-1-** हंस, त्रैतवाद, माया, क्षर, अक्षर सत्य और तप से आत्मदर्शन।
- **अध्याय-2-** योग, योगविधि, ब्रह्मतत्त्व का वर्णन।
- **अध्याय-3-** रुद्र विश्वरूप, जीव का स्वरूप, आत्मा का वर्णन।
- **अध्याय-4-** एकेश्वरवाद, त्रैतवाद प्रकृति, माया-मायी शिव ब्रह्मरूप का वर्णन।
- **अध्याय-5-** क्षर-अक्षर, कपिल, ऋषि, जीवात्मा का स्वरूप।
- **अध्याय-6-** ब्रह्म के अनेक नाम, हंस, ईश्वर प्रकृति एवं जीव का नियन्ता, गुरुभक्ति।

बृहदारण्यकोपनिषद्

- यह शतपथ ब्राह्मण के 14वें काण्ड का अन्तिम भाग है।
- यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है।
- यह आकार में विशालकाय नहीं अपितु तत्त्वज्ञान में भी अग्रगण्य है।
- यह अध्यात्म शिक्षा से ओतप्रोत है।
- इसमें 6 छः अध्याय हैं।
- यह उपखण्डों में विभक्त है।

बृहदारण्यक उपनिषद् के वर्ण्य विषय-

- **अध्याय 1.** यज्ञिय अश्व के रूप में परम पुरुष का वर्णन, मृत्यु का विकराल रूप, जगत् की उत्पत्ति, प्राण की श्रेष्ठता का वर्णन।

- **अध्याय 2.** अभिमानी गार्ग्य और काशिराज, अजातशत्रु का संवाद, ब्रह्म के दो रूप मूर्त और अमूर्त, याज्ञवल्क्य का अपनी दोनों पत्नियों, कात्यायनी और मैत्रेयी में सम्पत्ति का विभाजन, मैत्रेयी का सम्पत्ति लेने से अस्वीकार करना और याज्ञवल्क्य से ब्रह्मविद्या का उपदेश प्राप्त करना।
- **अध्याय 3.** जनक की सभा में याज्ञवल्क्य का अपने प्रतिपक्षियों को हराना, गार्गी और याज्ञवल्क्य के प्रश्नोत्तर।
- **अध्याय 4.** याज्ञवल्क्य का जनक को ब्रह्मविद्या का उपदेश।
- **अध्याय 5.** प्रजापति का देव मनुष्य और असुरों को द द द का उपदेश, ब्रह्म के विभिन्न रूपों का वर्णन प्राण ही वेदरूप है, गायत्री के विभिन्न रूप।
- **अध्याय 6.** प्राण की श्रेष्ठता, ऋषि प्रवाहण जैबलि और श्वेतकेतु का दार्शनिक संवाद, पञ्चाग्नि मीमांसा, उपनिषदीय ऋषियों की वंश परम्परा का विस्तृत वर्णन।

मैत्रायणी उपनिषद्

- यह कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी संहिता से सम्बद्ध है।
- यह परवर्ती काल की रचना है।
- यह गद्यबद्ध रचना है।
- इसमें कुल सात अध्याय हैं।
- सात अध्यायों में षष्ठ अध्याय के अन्तिम आठ प्रपाठक और सप्तम अध्याय परिशिष्ट रूप है।
- इस उपनिषद् का विषय विवेचन तीन प्रश्नों के उत्तर के रूप में किया गया है।
- प्रथम प्रश्न है- आत्मा मौलिक शरीर में किस प्रकार प्रवेश पाता है?
- द्वितीय प्रश्न है- यह परमात्मा किस प्रकार भूतात्मा बनता है?
- तृतीय प्रश्न है- इस दुःखात्मक स्थिति से मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है?

महानारायणोपनिषद्-

- यह कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध तैत्तिरीय आरण्यक का दशम प्रपाठक है।
- इसमें द्रविणों के अनुसार 64 अनुवाक हैं, आन्ध्रों के अनुसार 80 अनुवाक हैं, कर्नाटकों के अनुसार 74 अनुवाक हैं।
- इस उपनिषद् में नारायण का परमात्म तत्त्व के रूप में उल्लेख है।
- इसमें सत्य, तप, दया, दान, धर्म, अग्निहोत्र यज्ञ आदि का उल्लेख है।
- इसमें तत्त्वज्ञानी के जीवन का यज्ञ के रूप में चित्रण है।

छान्दोग्य उपनिषद्-

- यह सामवेदीय उपनिषद् है।
- इस उपनिषद् में आठ अध्याय हैं।

- प्रत्येक अध्याय में अनेक खण्ड हैं-

अध्याय	खण्ड
प्रथम अध्याय	13
द्वितीय अध्याय	24
तृतीय अध्याय	19
चतुर्थ अध्याय	17
पञ्चम अध्याय	24
षष्ठ अध्याय	16
सप्तम अध्याय	26
अष्टम अध्याय	15

- इसके वर्ण्य-विषय इस प्रकार हैं-
- **अध्याय 1.** ओम् (प्रणव, उद्‌गीथ) की उपासना, ऋक् और साम का युग्म, वाक् मन और प्राण की उपासना, प्रणव और उद्गीथ की एकता, साम का आधार स्वर, प्राण आदित्य और अन्न का महत्त्व, शौव उद्गीथ
- **अध्याय 2.** पञ्चविध साम की उपासना, सप्तविध साम, त्रयी विद्या धर्म के तीन स्कन्द, ओम् ही वेदत्रयी का सार।
- **अध्याय 3.** देवमधु के रूप में सूर्य की उपासना, गायत्री का महत्त्व, सर्वं खल्विदं ब्रह्म का वर्णन, प्राण ही वसु रुद्र और आदित्य है, घोर अंगिरस् द्वारा कृष्ण को अध्यात्म की शिक्षा, चतुष्पाद ब्रह्म।
- **अध्याय 4.** रैक्व द्वारा अध्यात्म शिक्षा, सत्यकाम जाबाल की कथा, सत्यकाम जाबाल द्वारा उपकोशल को ब्रह्मज्ञान की शिक्षा।
- **अध्याय 5.** प्राण की श्रेष्ठता, प्रवाहण जैबलि के दार्शनिक सिद्धान्त, परलोक विज्ञान, राजा अश्वपति द्वारा सृष्टि- उत्पत्ति विषयक प्रश्नों के उत्तर में 6 दार्शनिक सिद्धान्तों का समन्वय
- **अध्याय 6.** महर्षि आरुणि द्वारा अपने पुत्र श्वेतकेतु को अद्वैतवाद का उपदेश, 'तत् त्वमसि' का विस्तृत प्रतिपादन।
- **अध्याय 7.** ऋषि सनत्कुमार नारद को उपदेश 'यो वै भूमा तत् सुखम्' भूमा दर्शन की शिक्षा।
- **अध्याय 8.** देवराज इन्द्र और असुरराज विरोचन को प्रजापति द्वारा आत्मज्ञान की शिक्षा।
- आत्मप्राप्ति के कुछ व्यवहारिक उपाय।

केनोपनिषद्-

- यह उपनिषद् सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध है।
- इसे 'तवल्कारोपनिषद्' भी कहते हैं। इसमें 4 खण्ड हैं -प्रथम दो खण्ड पद्यात्मक शेष दो गद्यात्मक।
- 1 पद्यमय भाग- यह वेदान्त के विकास काल की रचना प्रतीत होती है।
- 2. गद्यमय भाग- यह भाग अत्यन्त प्राचीन है।
- प्रथम खण्ड में उपास्य ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म में अन्तर बताया गया है।
- द्वितीय खण्ड में ब्रह्म के रहस्यमय स्वरूप का विवेचन है।
- तृतीय और चतुर्थ खण्डों में **'उमा हैमवती के आख्यान'** द्वारा परब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता का विवेचन है।

प्रश्नोपनिषद्

- यह अथर्ववेद की पिप्पलाद शाखा से सम्बद्ध है।
- इसमें महर्षियों द्वारा छः प्रश्न पूछे गये हैं जिसके कारण इसका नाम प्रश्नोपनिषद् पड़ा।
- 1- प्रथम प्रश्न कबन्धी कात्यायन का है- भगवन्! समस्त प्रजा की उत्पत्ति कैसे और कहाँ से हुई?
- 2- द्वितीय प्रश्न भार्गव का है- कितने देवता प्रजाओं को धारण करते हैं, कौन उन्हें प्रकाशित करता है और उनमें सबसे श्रेष्ठ कौन है?
- 3- तृतीय प्रश्न आश्वलायन का है- प्राणों की उत्पत्ति कहाँ से हुई? उसका शरीर में आवागमन और उत्क्रमण किस प्रकार होता है?

  4- चतुर्थ प्रश्न गार्ग्य सौर्यायणी का है- आत्मा की जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीन अवस्थाओं का आध्यात्मिक रहस्य क्या है?
- 5- पञ्चम प्रश्न सत्यकाम का है-ॐ की उपासना का क्या रहस्य है? और उसके ध्यान से किस लोक की प्राप्ति होती है?
- 6- षष्ठ प्रश्न सुकेशा का है- षोडशकला सम्पन्न पुरुष का स्वरूप क्या है?

मुण्डकोपनिषद्-

- यह अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बद्ध है।
- यह मुण्डित अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित हुई है।
- इसमें 3 मुण्डक (अध्याय) हैं। प्रत्येक के दो - दो खण्ड हैं।
- इस उपनिषद् में ब्रह्म ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा (अर्थवन्) को ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया है।

- इसमें परा और अपरा नामक दो विद्याओं का विवेचन है।
- इसमें द्वैतवाद का स्पष्ट उल्लेख है।
- दो पक्षियों के रूपक द्वारा जीव और ब्रह्म का भेद बताया गया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया

- इसमें बताया गया है कि जीवात्मा भोक्ता तथा परमात्मा साक्षी है।

माण्डुक्योपनिषद्-

- यह एक लघुकाय उपनिषद् है।
- इसमें कुल बारह वाक्य हैं यह गद्यात्मक है।
- इसमें ओङ्कार का रहस्य वर्णित है।
- वेदान्त की मूलभावना इसी उपनिषद् में प्राप्त होती है।
- इसमें ब्रह्म और आत्मविषय का विवेचन है।
- इसमें ब्रह्म की चार अवस्थायें बतायी गयी हैं।

  1. जाग्रत 2. स्वप्न 3. सुषुप्ति 4. तुरीय

- ओम् की अवस्थाओं का वर्णन

ओम् की मात्रा	अवस्था	आत्मा का स्वरूप	विषय
अ	जागरित	वैश्वानर	स्थूलभुक् (स्थूल)
उ	स्वप्न	तैजस्	प्रविविक्तभुक्त (सूक्ष्म)
म्	सुषुप्ति	प्राज्ञ	आनन्द भुक् (आनन्द)
--	तुरीय	अद्वैत शिव	अवर्णनीय

❑❑

9. वेदाङ्ग

- वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है। उन्हे वेदाङ्ग कहते हैं।
- वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग।
- 'वेदाङ्ग' में अङ्ग शब्द का अर्थ है 'वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।' 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि।'
- वेदाङ्गों के द्वारा मन्त्रों का अर्थ उनकी व्याख्या तथा यज्ञ में उनके विनियोग आदि का बोध होता है।
- वेदाङ्गों की संख्या छः है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

'**छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।**
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।। (पा0शि041-42)'

1. छन्द	पाद (पैर)
2. कल्प	हस्त (हाथ)
3. ज्योतिष	चक्षु (नेत्र)
4. निरुक्त	श्रोत्र (कान)
5. शिक्षा	घ्राण (नाक/नासिका)
6. व्याकरण	मुख (मुँह)

- वेदाङ्गो का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चार वेदों के नाम के बाद हुआ।
- उपनिषदों में दो प्रकार की विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है-पराविद्या,अपराविद्या। अपराविद्या के अन्तर्गत चार वेद तथा छः वेदाङ्ग आते हैं।

शिक्षा

- शिक्षा का अर्थ है- वर्णोच्चारण की शिक्षा देना
- 'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा' अर्थात् जिसमें स्वर वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है उसे शिक्षा कहते हैं ।
- शिक्षा को वेद पुरुष का प्राण कहा गया है **'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य'**।
- तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों का उल्लेख है जो हैं- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

वर्ण-

- वर्णोऽकारादिः अर्थात् अकार आदि को वर्ण कहते हैं । वेदों के ज्ञान के लिए वर्णों का ज्ञान होना आवश्यक है।
- वेदों में 52 वर्ण प्राप्त हैं– स्वर 13,स्पर्श 27, य र ल व तथा श ष स ह - 8, विसर्ग, अनुस्वार, जिह्वामूलीय उपध्मानीय- एक एक वर्ण होते हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में संस्कृत में वर्णों की संख्या 63 है। संवृत और विवृत अ को अलग-अलग मानने पर 64 वर्ण हो जाते हैं स्वर की संख्या तीन है- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।
- स्वर का अभिप्राय स्वराघात है स्वर भेद से अर्थ भेद होता है।
- **मात्रा -** स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं।
- ह्रस्व,दीर्घ,प्लुत के भेद से मात्रा के तीन भेद हैं।

ह्रस्व	**-**	**एक मात्रा**
दीर्घ	**-**	**दो मात्रा**
प्लुत	**-**	**तीन मात्रा**

- व्यञ्जन की आधी मात्रा होती है।

  पलक गिरने में जितना समय लगता है उतने समय को एक मात्रा कहते हैं- नारदीय शिक्षा

बल-

- वर्णों के उच्चारण में होने वाले प्रयत्न और उनके उच्चारण स्थान को बल कहते हैं।
- प्रयत्न दो हैं - आभ्यन्तर तथा बाह्य।
- जिन स्थानों से टकराकर वायु बाहर निकलती है उसे 'स्थान' कहते हैं।
- स्थान आठ हैं- हृदय,कण्ठ,शिर, जिह्वामूल,दन्त,नासिका,ओष्ठ,तालु।

साम-

- वर्णों के दोष रहित एवं शुद्ध माधुर्य आदि गुणों से युक्त उच्चारण को 'साम' कहते हैं। साम का अभिप्राय है- समविधि से सुस्पष्ट एवं सुस्वर से उच्चारण।

सन्तान-

- सन्तान का अर्थ है संहिता। पदों की अतिशय सन्निधि को संहिता कहते हैं इसके लिए सन्धि नियमों को जानना और उनका यथास्थान उपयोग करना।

शिक्षाग्रन्थ-

- उपलब्ध शिक्षाग्रन्थ 35 हैं। 32 शिक्षा ग्रन्थों का एक संकलन 'शिक्षा-संग्रह' नाम से प्रकाशित हुआ।
- इसमें ध्वनिविज्ञान से सम्बन्ध उनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए गए हैं।

पाणिनीय शिक्षा-

- पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है।
- पाणिनीय शिक्षा में साठ श्लोक हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या,उच्चारण-प्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन,स्थान और प्रयत्न का विवरण,संवृत-विवृत,घोष-अघोष,पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।
- **भारद्वाज शिक्षा-** पदों की शुद्धता तथा ध्वनि भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन किया है।
- **याज्ञवल्क्य शिक्षा-** याज्ञवल्क्य शिक्षा में 232 श्लोक हैं।

* इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है।
* वर्णों के भेद,स्वरूप,परस्पर साम्य,वैषम्य,लोप आगम-विकार,प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

- **प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा-**
  इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विवेचन तथा प्राचीन वैयाकरण के मतों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- **नारदीय शिक्षा-**
  नारदीय शिक्षा में सामवेद के स्वरों का विस्तार से वर्णन है।
- **अन्य महत्त्वपूर्ण शिक्षा ग्रन्थ-** व्यासशिक्षा, वशिष्ठशिक्षा ,कात्यायनी शिक्षा, पाराशरी शिक्षा,माण्डव्य शिक्षा,माध्यन्दिनी शिक्षा,वर्णरत्नप्रदीपिका,केशवी शिक्षा,स्वरांकन शिक्षा,स्वरभक्ति लक्षण शिक्षा।

व्याकरण वेदाङ्ग –

वेद को व्याकरण का मुख माना जाता है – **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'।**

- जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति प्रत्यय का विवेचन किया जाता है उसे व्याकरण कहते हैं **'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'**
- व्याकरण शास्त्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है- वैदिक व्याकरण तथा लौकिक व्याकरण।
- व्याकरण शास्त्र में पद-पदार्थ, वाक्य-वाक्यार्थ आदि का विवेचन प्राप्त होता है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में व्याकरण शास्त्र को एक वृषभ के रूपक में बाँधा गया है-

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आविवेश।।

* चत्वारि श्रृंगा - नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।

* त्रयो पादा - भूत, भविष्य, वर्तमान काल
* सप्त हस्ता - सात विभक्तियाँ
* त्रिधा बद्धो - उर,कण्ठ,शिर तीन स्थानों से बँधा हुआ।

➢ शब्दों की व्युत्पत्ति तथा अर्थबोध के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। व्याकरणशास्त्र के पाँच प्रयोजन हैं **'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः'**

रक्षा - वेदों की रक्षा के लिए।
ऊह (तर्क) - यथास्थान विभक्ति-परिवर्तन,वाच्य-परिवर्तन आदि के लिए।
आगम - ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढ़ना चाहिए
लघु - सरल ढंग से शब्द ज्ञान के लिए
असन्देह - शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिए।

संस्कृत व्याकरण के आचार्य एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

पाणिनि के पूर्ववर्ती वैयाकरण-

➢ आचार्य पाणिनि ने दस आचार्यों का उल्लेख अष्टाध्यायी में किया है- आपिशलि, काश्यप, गार्ग्य, भारद्वाज, शाकटायन, स्फोटायन ये मुख्य हैं।

➢ प्रातिशाख्य आदि में पाणिनि से पूर्ववर्ती लगभग 75 आचार्यों का उल्लेख है जिसमें प्रमुख आचार्य हैं- शिव (महेश्वर), बृहस्पति , इन्द्र, आचार्य व्याडि, आत्रेय, कात्यायन, काण्व,गौतम,यास्क,वाल्मीकि,शाकल्य, शाकल,शौनक, शांखायन, हारीत आदि।

आचार्य पाणिनि एवं परवर्ती आचार्य

➢ आचार्य पाणिनि को दाक्षीपुत्र,शालातुरीय और आहिक नाम से भी जाना जाता है।

➢ आचार्य कात्यायन ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा।इनका समय चतुर्थ शती ई0पू0 माना जाता है।

➢ आचार्य पतञ्जलि को गोणिकापुत्र,गोनर्दीय, अहिपति,शेषाहि नाम से जाना जाता है।

➢ आचार्य पतञ्जलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी और कात्यायन के वार्तिक पर भाष्य लिखा जिसे **महाभाष्य** कहा जाता है।

➢ पाणिनि,कात्यायन और पतञ्जलि की गणना **'मुनित्रय'** के रूप में होती है।

➢ आचार्य भर्तृहरि का समय 340ई0पू0 के लगभग है।

➢ आचार्य भर्तृहरि का निवास उज्जैन माना जाता है। इनके द्वारा रचित 'वाक्यपदीय' दार्शनिक व्याकरण का सर्वोत्तम ग्रन्थ है।

➢ वाक्यपदीयम् में तीन काण्ड हैं– ब्रह्मकाण्ड (आगमकाण्ड),वाक्यकाण्ड,पदकाण्ड या प्रकीर्ण काण्ड।

➢ जयादित्य और वामन का समय 660 ई0 के लगभग है इन्होंने अष्टाध्यायी पर काशिका टीका लिखी।

➢ आचार्य कैय्यट का समय 1035 ई0 के लगभग है ये काश्मीर के निवासी थे इन्होंने महाभाष्य पर 'प्रदीप' नाम की टीका लिखी।

➢ भट्टोजिदीक्षित का समय 1450ई० के लगभग है इन्होंने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर

वृत्ति सहित 'सिद्धान्तकौमुदी' नामक ग्रन्थ लिखा।

- **नागेशभट्ट-** नागेशभट्ट महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे।
  उद्योत टीका (महाभाष्य की टीका) लघुशब्देन्दुशेखर, बृहत्शब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दुशेखर, स्फोटवाद, मञ्जूषा, लघुमञ्जूषा, परमलघुमञ्जूषा नागेशभट्ट द्वारा रचित ग्रन्थ हैं।
- लघुसिद्धान्त कौमुदी तथा मध्यसिद्धान्त कौमुदी के लेखक वरदराज हैं, इनका समय 1475 ई0 के लगभग माना जाता है।

- **अन्य वैयाकरण -**

वैयाकरण	-	ग्रन्थ/टीका
वृषभदेव	-	वाक्यपदीय प्रथम काण्ड पर टीका
पुण्यराज	-	वाक्यपदीय द्वितीय काण्ड के टीकाकार
हेलाराज	-	सम्पूर्ण वाक्यपदीय के टीकाकार
मण्डनमिश्र	-	स्फोट सिद्धान्त के रचयिता
कौण्डभट्ट	-	वैयाकरणभूषण और वैयाकरणभूषणसार के रचयिता
भट्टि	-	भट्टिकाव्य के रचयिता

- **प्रातिशाख्य ग्रन्थ-**
  प्रातिशाख्य शब्द का अर्थ है 'प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाला ग्रन्थ।'
- प्रातिशाख्य ग्रन्थों का शिक्षा, व्याकरण और छन्द तीनों से साक्षात् सम्बन्ध है। वेदों के यथार्थ ज्ञान के लिए वर्णोच्चारणशिक्षा, सन्धि नियम, शब्दरूप, धातुरूप उदात्तादि स्वर और छन्दों का ज्ञान आवश्यक है इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रातिशाख्य ग्रन्थों की रचना हुई।

ऋक्प्रातिशाख्य का परिचय

- ऋक्प्रातिशाख्य का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल शाखा से है।
- ऋक्प्रातिशाख्य को पार्षद या पारिषद सूत्र भी कहा जाता है।
- ऋक्प्रातिशाख्य के रचयिता आचार्य शौनक हैं।

ऋक्प्रातिशाख्य में प्रतिपादित विषय-

- पारिभाषिक शब्दों के लक्षण, विभिन्न सन्धियों का विवेचन, क्रमपाठ का विवरण, पद विभाग और व्यञ्जनों के स्वरूप का विवेचन।
- ऋक्प्रातिशाख्य पर दो भाष्य प्राप्त होते हैं-
- उव्वट का भाष्य जिसका समय 11वीं शती ई. भाष्य है।

नोट- इसके अतिरिक्त उव्वट ने शुक्ल यजुर्वेद का भी भाष्य किया। विष्णुमित्र कृत वृत्ति।

शुक्ल यजुः प्रातिशाख्य या वाजसनेयि प्रातिशाख्य-

- इस प्रातिशाख्य के रचयिता कात्यायन हैं।
- शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य में आठ अध्याय हैं।
- शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य में दस प्राचीन ऋषियों के नामों का उल्लेख है जो हैं- काण्व, काश्यप, गार्ग्य, माध्यन्दिन, शाकटायन, शाकल्य, शौनक आदि।
- इस प्रातिशाख्य के वर्ण्य विषय हैं- वर्णविचार, स्वरविचार, सन्धिविचार, पदपाठ विचार, क्रमपाठ विचार, वेदाध्ययन-विषयक विचार।
- आचार्य पाणिनि इसी प्रातिशाख्य से पारिभाषिक शब्द को लिए हैं जैसे- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, लोप, उपधा, आम्रेडित, अपृक्त।
- शुक्लयजुर्वेद प्रातिशाख्य की दो व्याख्या प्राप्त होती है -
  1. उव्वट द्वारा मातृवेद नामक भाष्य
  2. अनन्तभट्ट कृत पदार्थ प्रकाशक नामक भाष्य।

तैत्तिरीयप्रातिशाख्य-

- तैत्तिरीय प्रातिशाख्य का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
  दो प्रश्नों में बारह-बारह अध्याय हैं, इसप्रकार इस प्रातिशाख्य में कुल चौबीस अध्याय हैं।
- वर्ण-समाम्नाय, स्वर एवं व्यञ्जन सन्धियाँ, अनुस्वार एवं अनुनासिक का भेद, स्वरों के भेद, संहिता का स्वरूप आदि।
- तैत्तिरीय प्रातिशाख्य की तीन व्याख्याएँ प्राप्त होती हैं-
  1 माहिषेय कृत 'पदक्रम सदन' भाष्य।
  2 सोमयार्य कृत त्रिभाष्य रत्न भाष्य।
  3 गोपालयज्वा कृत वैदिकाभरण।

सामवेदीय प्रातिशाख्य

पुष्पसूत्र

- पुष्पसूत्र के प्रणेता पुष्प ऋषि हैं।
- इसमें 10 प्रपाठक हैं जिनका सम्बन्ध सामगान से है।
- पुष्पसूत्र पर अजातशत्रु की व्याख्या उपलब्ध है।
- पुष्पसूत्र में स्तोभ का मुख्य रूप से विवेचन है।

ऋक्तन्त्र-

- 'ऋक्तन्त्र' सामवेद की कौथमुशाखा से सम्बन्धित प्रातिशाख्य ग्रन्थ है।
- 'ऋक्तन्त्र व्याकरण' भी इसे कहा जाता है।
- ऋक्तन्त्र में पाँच प्रपाठक तथा 280 सूत्र हैं।
- ऋक्तन्त्र के रचयिता 'शाकटायन' हैं।
- वर्णोच्चारण शिक्षा, सन्धिविचार, पदान्त वर्णों के विभिन्न परिवर्तन, आदि इसके वर्ण्य विषय हैं।

- ऋकतन्त्र में पारिभाषिक संज्ञाएँ तीन प्रकार की हैं - कृत्रिम, आदि या अन्त का अक्षर तथा अन्वर्थक।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- अथर्ववेद से सम्बन्धित दो प्रातिशाख्य उपलब्ध हैं-
  (1) शौनकीय चतुरध्यायिका (2) अथर्ववेद प्रातिशाख्य।

शौनकीय चतुरध्यायिका-

- इसके लेखक शौनक माने गए हैं।
- अंग्रेजी अनुवाद के साथ डा. **व्हिटनी** ने इसे प्रकाशित किया। इसमें चार अध्याय हैं।
- ध्वनि विचार, सन्धिविवेचन, संहिता पाठ, अवग्रह, प्रगृह्य आदि का वर्णन इस प्रातिशाख्य में है।

अथर्ववेद प्रातिशाख्य-

- डॉ. सूर्यकान्त ने 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया इसमें सन्धि, स्वर और पदपाठ के नियमों का वर्णन है।

छन्द-वेदाङ्ग

- छन्द शब्द छद् धातु (ढँकना) से बना है।
- 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है- आचार्य यास्क।
- **'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है, उसे छन्द कहते हैं- आचार्य कात्यायन।
- वैदिक छन्दों का आधार अक्षर या वर्णों की संख्या है।
- छन्द को वेद का पाद (पैर) कहा जाता है **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'**।
- आठ अध्यायों में विभक्त छन्दःसूत्र के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं।
- वैदिक छन्द वृत्तात्मक हैं तथा इनमें मात्रिक छन्दों का अभाव है।
- निदानसूत्र में छन्दों के नाम और लक्षण दिये गए हैं।
- **पिंगल के छन्दःसूत्र** के पूर्वभाग में वैदिक छन्दों का तथा उत्तरभाग में लौकिक छन्दों का विवेचन प्राप्त होता है।
- वैदिक छन्दों को 'अक्षर छन्द' भी कहा जाता है।
- वैदिक छन्द दो प्रकार के होते हैं- अक्षरगणनानुसारी तथा पादाक्षरगणनानुसारी।
- जिसमें अक्षरों की गणना हो उसे अक्षरगणनानुसारी तथा जिसमें पदों की गणना हो उसे 'पादाक्षरगणनानुसारी' छन्द कहते हैं।
- वैदिक छन्दों की कुल संख्या 26 है।
- ऋग्वेद में प्रयुक्त छन्दों की संख्या बीस है।
- वेदों में मुख्य रूप से सात छन्दों का प्रयोग है जो हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती।

➢ हलायुध ने छन्दसूत्र पर 'मृतसंजीवनी' टीका लिखी।
➢ ऋग्वेद में अधिकांश 20 अक्षरों वाले छन्दों से लेकर 48 अक्षरों वाले छन्द प्रयुक्त हैं।

छन्द विषयक नियम

➢ पद के अन्त के साथ शब्द का अन्त होता है।
➢ ह्रस्व स्वर के बाद संयुक्त वर्ण होंगे तो पूर्ववर्ती लघु स्वर को गुरु माना जाता है। बाद में कोई स्वर हो तो पूर्ववर्ती दीर्घस्वर को ह्रस्व कर दिया जाता है।
➢ शब्द के अन्तर्गत और सन्धि स्थानों में प्राप्त य् व् को आवश्यक्तानुसार क्रमशः इ,उ पढ़ा जाता है।
➢ एकादेश हुए स्वरों को उच्चारण के समय आवश्यकतानुसार एकादेश से पूर्व की स्थिति में पढ़ा जाता है।
➢ ए और ओ के बाद पूर्वरूप हुए अ को आवश्यक्तानुसार फिर अ पढ़ा जाता है।

छन्द नाम	अक्षर/वर्ण	पाद
1. गायत्री	24	3
2. उष्णिक्	28	3
3. अनुष्टुप्	32	4
4. बृहती	36	4
5. पंक्ति	40	5
6. त्रिष्टुप्	44	4
7. जगती	48	4
8. अतिजगती	52	5
9. अतिशक्वरी	60	5
10. अष्टि	64	5

➢ छन्द में एक अक्षर कम होने पर निचृत् कहलाता है जैसे- निचृत् गायत्री, निचृत् उष्णिक् आदि। निचृत् गायत्री में 23 अक्षर होते हैं।
➢ छन्द में एक अक्षर अधिक होने पर भुरिक् कहलाता है जैसे- भुरिक् गायत्री, भुरिक् उष्णिक् भुरिक अनुष्टुप् आदि। भुरिक् गायत्री में 25 अक्षर होते हैं।
➢ छन्द में दो अक्षर कम होने पर विराट् कहा जाता है जैसे- विराट् गायत्री, विराट् उष्णिक् आदि। इस प्रकार विराट् गायत्री में 22 अक्षर होंगे।
➢ छन्द में दो अक्षर अधिक होने पर स्वराट् कहा जाता है जैसे- स्वराट् गायत्री, स्वराट् उष्णिक् स्वराट् अनुष्टुप् आदि। इस प्रकार स्वराट् गायत्री में 26 अक्षर होंगे।

निरुक्त वेदाङ्ग

➢ निरुक्त आचार्य यास्क की कृति है जिसमें बारह अध्याय है तथा दो अध्याय परिशिष्ट के रूप में है। परिशिष्ट सहित 14 अध्याय है।

- निरुक्त वेदपुरुष का श्रोत्र (कान) है – **'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'**
- निरुक्त निघण्टु का व्याख्यान ग्रन्थ है जिसमें ऋग्वेद के शब्दों का संग्रह है।
- निरुक्त के प्रारम्भिक तीन अध्याय **'नैघण्टुक काण्ड'** कहे जाते हैं।
- चार, पाँच, छः अध्याय को **'नैगम काण्ड'** कहा जाता है।
- अन्तिम छः अध्याय (7-12) को **'दैवत काण्ड'** के नाम से जाना जाता है।
- निरुक्त में शब्दों का निर्वचन तीन प्रकार से किया गया है - प्रत्यक्ष, परोक्ष, अतिपरोक्ष।
- निरुक्त को **'शब्द व्युत्पत्ति शास्त्र'** भी कहा जाता है।
- निरुक्त में तीन काण्ड हैं- नैघण्टुक काण्ड, नैगम काण्ड,दैवत काण्ड।
- नैगम काण्ड को 'ऐकपदिक' भी कहा जाता है।
- वैदिक शब्दों का संग्रह निघण्टु में तथा उनकी व्याख्या निरुक्त में है।
- दुर्गाचार्य, यास्क कृत निरुक्त के प्रसिद्ध टीकाकार हैं।
- वेदों के अर्थों को स्पष्ट करने में निरुक्त आवश्यक है और व्याकरण शास्त्र का पूरक है।
- वेदमन्त्रों के कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति निरुक्त करता है- **'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'** - सायण
- निरुक्त में चार प्रकार के पद हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात **'चत्वारि पदजातानि नामाख्याते च, उपसर्गनिपाताश्च'**

यास्क के पूर्ववर्ती निरुक्तकार-

- आग्रायण, औपमन्यव, और्णवाभ, गार्ग्य, गालव, वार्ष्यायणि, शाकपूणि आदि।

  निरुक्त के टीकाकार- निरुक्त की तीन टीकाएँ प्राप्त होती है जो हैं-

  1 दुर्गाचार्य कृत ऋज्वर्थ वृत्ति टीका

  2 स्कन्द महेश्वर कृत टीका जो लाहौर से प्रकाशित हुई।

  3 वररुचि कृत निरुक्त निचय टीका
- निरुक्त के पाँच प्रतिपाद्य विषय हैं-

  वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश, धातु का अनेक अर्थों में प्रयोग।

''वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्।।''

निरुक्त में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादितविषय	अध्याय
निघण्टु, नाम आख्यात आदि पद विभाग, शब्दनित्यता का विवेचन मन्त्रों की सार्थकता का प्रतिपादन, अर्थ ज्ञान का महत्त्व	अध्याय-एक
निर्वचन, वर्णपरिवर्तन आदि से सम्बन्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन।	अध्याय 2-3

वेदों के निघण्टु में पढ़े गए कठिन शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या।	अध्याय 4-6
देवतावाची शब्दों की विस्तृत व्याख्या, द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथिवी स्थानीय देवों का निरूपण।	7-12
निर्वचन प्रक्रिया, सृष्टि उत्पत्ति, आदि अनेक विषयों का विवेचन।	अध्याय 13-14

नोट- निरुक्त का अध्याय 13,14 परिशिष्ट के रूप में हैं।

ज्योतिष वेदाङ्ग

- आचार्य पाणिनि ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है **'ज्योतिषामयनं चक्षुः'**
- ज्योतिष का अर्थ है- ज्योतिर्विज्ञान। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पदार्थों की गणना ज्योतिर्मय पदार्थों के अन्तर्गत होती है।
- वेदाङ्ग ज्योतिष भारतीय ज्योतिष शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है, जिसके रचयिता **लगध** नामक ऋषि हैं।
- वेदाङ्ग ज्योतिष के दो पाठ प्राप्त होते हैं।
- एक का नाम आर्चज्योतिष अर्थात् ऋग्वेद सम्बन्धी ज्योतिष तथा दूसरे का नाम **याजुष्** ज्योतिष अर्थात् यजुर्वेद सम्बन्धी ज्योतिष।
- ऋग्वेद ज्योतिष में 36 श्लोक तथा यजुर्वेद ज्योतिष में 44 श्लोक हैं।

विद्वानों के अनुसार वेदाङ्ग ज्योतिष का समय-

- शङ्करबालकृष्ण दीक्षित 1400 ई.पू. मानते हैं।
  ह्विटनी -1338 ई.पू. कालब्रुक-1410 ई.पू.
  बेवर- 500 ई.पू. मैक्समूलर- 300 ई.पू.
- शोभाकार द्वारा वेदाङ्ग ज्योतिष पर एक भाष्य प्रकाशित है। सुधाकर द्विवेदी ने भी वेदाङ्गज्योतिष पर भाष्य लिखा है।
- वेदाङ्गज्योतिष के प्रथम आचार्य ब्रह्मा हैं।
- ब्रह्मा ने अपने पुत्र वसिष्ठ को ज्योतिष विद्या सिखायी।
- विष्णु ने उस ज्ञान को सूर्य को सिखाया जो 'सूर्य सिद्धान्त' कहा जाता है।
- सूर्य ने उस सिद्धान्त को मय को पढ़ाया जो 'वासिष्ठ सिद्धान्त' नाम से प्रसिद्ध हुआ। ज्योतिषशास्त्र का प्राचीनरूप वैदिक संहिताओं में प्राप्त होता है।

वेदाङ्ग ज्योतिष में प्रतिपादित विषय-

- काल का विभाजन, नक्षत्र और नक्षत्र देवता, युग के वर्ष, काल और तिथि का निर्णय, अयन और पर्व निर्धारण, नक्षत्रों का काल विभाजन, तिथि-नक्षत्र, नक्षत्र और पर्व का काल निर्धारण, अधिक मास आदि।
- 'वेदाङ्ग ज्योतिष' के अनुसार **पाँच सौर वर्षों का** एक युग होता है।
- पाँच सौर वर्षों के नाम हैं- संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इद्वत्सर, वत्सर।
- पाँच वर्ष का युग मानने का कारण- पाँच वर्ष बाद सूर्य और चन्द्रमा राशिचक्र के उसी नक्षत्र पर पुनः एक सीध में होते हैं।

सत्ताइस नक्षत्रों के नाम-

- जौ (अश्विनी), द्रा (आर्द्रा), गः -भगः (उत्तराफल्गुनी), खे-विशाखे (विशाखा), श्वे-विश्वेदेवाः (उत्तरा आषाढा), अहिः - अहिर्बुध्न्य (उत्तरा भाद्रपदा), रो (रोहिणी), षा - आश्लेषा, चित् - चित्रा, मू-मूल, ष-शतभिषक्, ण्यः - भरण्यः (भरणी), सू - पुनर्वसू (पुनर्वसु), मा - अर्यमा (पूर्वाफल्गुनी), धा - अनुराधा, णः - श्रवणः (श्रवणा), रे- रेवती, मृ - मृगशिरस् (मृगशिरा), घाः - मघाः (मघा), स्वा - स्वाति, आपः - आपः (पूर्वा अषाढा), अजः - अज एक पाद् (पूर्वा भाद्रपदा), कृ - कृत्तिका, ष्यः - पुष्य, ह - हस्त, ज्ये - ज्येष्ठा, ष्ठाः - श्रविष्ठा।
- अथर्ववेद के अनुसार सात सौर मण्डल हैं।
- ऋग्वेद में सूर्य अनेक हैं तथा सात दिशाएँ है, ऐसा वर्णन प्राप्त होता है।
- अथर्ववेद के अनुसार सूर्य की सात किरणें है इन्हीं के कारण वर्षा होती है।
- सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी को रोके है ऐसा वर्णन ऋग्वेद और यजुर्वेद में प्राप्त होता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण और गोपथ ब्राह्मण के अनुसार न कभी सूर्य का उदय होता है और न कभी अस्त।
- एक अहोरात (दिनरात) में तीस मुहूर्त होते हैं, मन्त्र में मुहूर्त के लिए धाम शब्द का प्रयोग किया गया है।
- विषुवत् रेखा का उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में प्राप्त होता है।
- वेदाङ्ग ज्योतिष के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा दोनों **श्रविष्ठा** नक्षत्र के आदि में उत्तर की ओर गति करते हैं।
- सूर्योदय से लेकर अगले दिन सूर्योदय तक के 24 घण्टे के समय को सावन दिन कहते हैं।
- सावन शब्द **सवन (यज्ञ)** से बना है।
- सावन वर्ष में केवल 360 दिन होते हैं।
- सूर्य और चन्द्र की **युती अमावस्या** है।

कल्प वेदाङ्ग

- कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।
- जिनसे सिद्ध प्रयोग का ज्ञान हो, वह कल्प है।
- सिद्ध प्रयोगों के बोधक होने के कारण कल्प अनुष्ठान के साधन होते हैं।
- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं- आचार्य सायण।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक कर्मों का सांगोपांग विवेचन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं।
- कल्पसूत्र के भेद- कल्पसूत्र के चार भेद हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र।

श्रौतसूत्रों का परिचय

- श्रौत शब्द का अर्थ है 'श्रुति द्वारा प्रतिपादित या वेदों में वर्णित।
- श्रौतसूत्रों में यज्ञ-याग इष्टियों का विस्तृत विवेचन और वर्णन है।
- दर्श-पूर्णमास याग, सोमयाग, वाजपेययाग, राजसूययाग, अश्वमेधयाग, सौत्रामणीयाग आदि का विवेचन श्रौतसूत्र में प्राप्त होता है।
- दर्शपौर्णमास यज्ञ में चार ऋत्विक् होते हैं- अध्वर्यु, ब्रह्मा, होता, आग्नीध्र।
- दर्श-पूर्णमास याग अमावस्या और पूर्णिमा को किया जाता है।
- अमावस्या वाले याग में अग्नि के लिए पुरोडाश और इन्द्र के लिए दूध तथा दही की आहुति की जाती है।
- पूर्णिमा को किए जाने वाले यज्ञ में अग्नि और सोम के लिए घी और पुरोडाश (पिसा हुआ चावल) की आहुति दी जाती है।
- दर्शयाग अमावस्या को तथा पूर्णमासयाग पूर्णिमा को (पूर्णमासी को) किया जाता है। दर्श-पूर्णमास में तीन-तीन याग होते हैं।

  दर्शयाग के तीन भेद-

  1 अग्नि के लिए पुरोडाश याग 2 इन्द्र के लिए दधियाग

  3 इन्द्र के लिए दुग्धयाग
- पूर्णमासयाग के तीन भेद

  1 अग्नि के लिए अष्टकपालों में संस्कृत पुरोडाशयाग।

  2 अग्निष्टोम के लिए घृत का उपांशुयाग।

  3 अग्निष्टोम के लिए एकादशकपाल पुरोडाश याग।
- सान्नाय्यपद दधि और दुग्ध का बोधक होता है।
- **सात हविर्यज्ञ के नाम-** अग्न्याधान,अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास्य, निरूपढपशुबन्ध, सौत्रामणि।
- **सात सोमयाग के नाम-** अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम।
- चातुर्मास्य यज्ञ में चार पर्व होते हैं- वैश्वदेव, वरुणप्रघास, साकमेध, शुनासीरीय।
- सौत्रामणी एक पशुयाग है जो इन्द्र के निमित्त किया जाता है।

ऋग्वेद से सम्बन्धित श्रौतसूत्र-

- ऋग्वेद से सम्बन्धित दो श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं- आश्वलायन श्रौतसूत्र तथा शांखायन श्रौतसूत्र

आश्वलायन श्रौतसूत्र का परिचय

- आश्वलायन श्रौतसूत्र के रचयिता ऋषि आश्वलायन हैं।
- आश्वलायन शौनक ऋषि के शिष्य थे।
- ऐतरेय ब्राह्मण के अन्तिम दो अध्यायों के रचयिता आश्वलायन और शौनक माने जाते हैं।

- आश्वलायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल और बाष्कल दोनों शाखाओं से है। इसमें बारह अध्याय हैं।

आश्वलायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- दर्श-पूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयणेष्टि, काम्य इष्टियाँ, चातुर्मास्य, सौत्रामणी,
- ज्योतिष्टोम, सत्रयाग, एकाह, अहीनयाग, गवामयन आदि।
- श्रौतयागों के ऋत्विज् - होता, मैत्रावरुण, अच्छावाक्, ग्रावस्तुत।

शांखायन श्रौतसूत्र का परिचय

- शांखायन श्रौतसूत्र के रचयिता शांखायन ऋषि माने जाते हैं।
- शांखायन श्रौतसूत्र में 18 अध्याय हैं।

शांखायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- दर्श-पूर्णमास याग, अग्निहोत्र, आग्रयणेष्टि, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, अतिरात्र, द्वादशाह, विश्वजित्, हविर्याग, वाजपेय, बृहस्पति सव, सोम संस्थाएँ, आप्तोर्याम, राजसूय अश्वमेध, सर्वमेध, पुरुषमेध आदि।

शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र

- शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र कात्यायन श्रौतसूत्र है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र के रचयिता कात्यायन ऋषि हैं। इसमें कुल 26 अध्याय हैं।

कात्यायन श्रौतसूत्र का परिचय

- कात्यायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व दोनों शाखाओं से है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र में 26 अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय का विभाजन कण्डिकाओं में हुआ है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र की मुख्य आधारशिला शतपथ ब्राह्मण है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र के तीन अध्याय (22-24) सामवेद की ताण्ड्य ब्राह्मण पर निर्भर हैं।
- कर्काचार्य का विस्तृत भाष्य गूढ रहस्यों को समझने के लिए विशेष उपयोगी है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र पर पूर्वमीमांसा का प्रभाव है,- श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या इन छः प्रमाणों का प्रभाव इस श्रौतसूत्र में प्राप्त होता है।

कात्यायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- याग-सम्बन्धी परिभाषाएँ, दर्शपूर्णमास याग, दाक्षायण याग, आग्रयणेष्टि, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, द्वादशाह, गवामयन वाजपेय, राजसूय, सौत्रामणी, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, एकाह, अहीन, प्रवर्ग्य।

कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित श्रौतसूत्र

- कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित आठ श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं-
  बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ या हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज, वाधूल, वाराह, मानवश्रौतसूत्र।

बौधायन श्रौतसूत्र का परिचय

- बौधायन श्रौतसूत्र के रचयिता बोधायन हैं जिनका समय 900 ई.पू. से 850 ई.पू. के मध्य माना जाता है।
- बौधायन श्रौतसूत्र की रचना ब्राह्मण ग्रन्थों के समान प्रवचन शैली में हुई है।
- बौधायन श्रौतसूत्र 30 प्रश्नों (अध्यायों) में विभाजित है।
- बौधायन श्रौतसूत्र का सम्पादन कैलेण्ड ने किया।
- दर्शपूर्णमास, अग्नयाधेय, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, वाजपेय, राजसूय, औपानुवाक्य, अश्वमेध, द्वादशाह, अतिरात्र, एकाह, शुल्ब, प्रवर इसके प्रमुख वर्ण्य विषय हैं।

आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं जो बोधायन के शिष्य हैं।
- आपस्तम्ब का समय सातवीं शती ई.पू. माना जाता है।
- आपस्तम्ब कल्पसूत्र में 30 प्रश्न (अध्याय) हैं।
- आपस्तम्ब कल्पसूत्र श्रौत, गृह्य, धर्म, शुल्बसूत्र का मिश्रित रूप है।
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र पर धूर्तस्वामी का प्रसिद्ध भाष्य प्राप्त होता है, जो मैसूर से प्रकाशित है।

सत्याषाढ या हिरण्यकेशी श्रौतसूत्र-

- सत्याषाढ श्रौतसूत्र कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बन्धित है।
- इसके रचयिता सत्याषाढ हैं।
- सत्याषाढ़ का उपनाम हिरण्यकेशी है।
- सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र में 24 प्रश्न (अध्याय) हैं।
- इस श्रौतसूत्र में पितृमेध से पहले धर्मसूत्रों का समावेश है।
- सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र का एक संस्करण अनेक टीकाओं से युक्त आनन्द आश्रम पुणे से 1932 ई. में प्रकाशित हुआ जिसमें दस खण्ड हैं।

वैखानस श्रौतसूत्र का परिचय

- वैखानस श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- वैखानस गृह्यसूत्र में इसके रचयिता का नाम विखनस दिया गया है।
- वैखानस श्रौतसूत्र में 21 अध्याय हैं।
- वैखानस श्रौतसूत्र में अश्वमेध याग का निरूपण नहीं है।
- 1941 ई. में कैलेण्ड द्वारा सम्पादित संस्करण कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

वैखानस श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- अग्न्याधान, पुनराधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रायण, चातुर्मास्य, निरुढपशुबन्ध, सौत्रामणी, परिभाषा, अग्निष्टोम, वाजपेय, अग्निचयन, प्रायश्चित आदि विषयों का उल्लेख।

भारद्वाज श्रौतसूत्र का परिचय

- भारद्वाज श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र बौधायन श्रौतसूत्र का पश्चात्वर्ती तथा आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का पूर्ववर्ती है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र 15 वें प्रश्न की 5वीं कण्डिका तक ही उपलब्ध है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र का गृह्यसूत्र और परिशिष्ट सूत्र भी प्राप्त होता है।
- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, परिशिष्ट सूत्र ग्रन्थों को संकलित करके अंग्रेजी अनुवाद के साथ डा. चिन्तामणि गणेश काशीकर ने वैदिक संशोधन मण्डल पूना से 1964 ई. में प्रकाशित कराया है।

वाधूल श्रौतसूत्र का परिचय

- वाधूल श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- वाधूल श्रौतसूत्र में 15 प्रपाठक (अध्याय) हैं। इनके उपविभाग अनुवाक और पटल हैं।
- डॉ. ब्रजबिहारी चौबे ने सम्पादित करके होशियारपुर से 1993 में प्रकाशित किया।

वाधूल श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, पुरोडाशी, याजमान, आग्रयण, बह्मत्व, चातुर्मास्य, पशुबन्ध, ज्योतिष्टोम, वाजपेय, राजसूय अश्वमेध, पवित्रेष्टि आदि।

वराह श्रौतसूत्र का परिचय

- वराह श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा से है।
- वराह श्रौतसूत्र में तीन अध्याय हैं और उनके उपखण्ड हैं।
- प्रथम अध्याय **प्राक्सौमिक** में है।
- **डा. कैलेन्ड और डा. रघुवीर** के द्वारा सम्पादित इसका संस्करण 1993 में मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास लाहौर ने प्रकाशित किया।

वराह श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- परिभाषा, याजमान, ब्रह्मत्व, दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रायण, पशुबन्ध चातुर्मास्य ये प्रथम अध्याय में वर्णित हैं।
- द्वितीय अध्याय में अग्निचयन से सम्बद्ध सामग्री प्राप्त होती है।
- तृतीय अध्याय में वाजपेय द्वादशाह, गवामयन, उत्सर्गाणाम् अयन, महाव्रत, सौत्रामणी, राजसूय, अश्वमेध का वर्णन प्राप्त होता है।
- वराह श्रौतसूत्र में अपत्नीक को भी अग्न्याधान का अधिकार दिया गया है।

मानव श्रौतसूत्र का परिचय

- मानव श्रौतसूत्र का सम्बन्ध मैत्रायणी शाखा से है।
- मानव श्रौतसूत्र प्राचीनतम श्रौतसूत्र है।
- मानव श्रौतसूत्र में पाँच भाग और ग्यारह अध्याय हैं।
- मानव श्रौतसूत्र के पाँच भाग-प्राक सोम, इष्टिकल्प, अग्निष्टोम, राजसूय, चयन।
- इस श्रौतसूत्र की शैली कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मणग्रन्थों के समान है इसमें आख्यान नहीं है।

- फ्रीड्रिश क्राउएर ने प्रारम्भिक पाँच अध्यायों को सेंट पीटर्सवर्ग से प्रकाशित किया।
- सन् 1961 ई. में जे. एम. गेल्डर ने सम्पूर्ण मानव श्रौतसूत्र को सम्पादित कर दिल्ली से प्रकाशित किया।
- श्रीमती गेल्डर ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।

सामवेदीय श्रौतसूत्र

- सामवेदीय श्रौतसूत्रों की संख्या चार है- आर्षेय कल्प, लाट्यायन श्रौतसूत्र, द्राह्यायण श्रौतसूत्र, जैमिनीय श्रौतसूत्र।

आर्षेय कल्पसूत्र का परिचय

- आर्षेय कल्पसूत्र सामवेदीय तांड्य महाब्राह्मण से सम्बद्ध है।
- मशक ऋषि द्वारा लिखे जाने के कारण इसे **'मशक कल्पसूत्र'** भी कहा जाता है।
- आर्षेय कल्पसूत्र दो भागों में विभक्त है- आर्षेय कल्पसूत्र, क्षुद्रकल्पसूत्र।
- आर्षेय कल्पसूत्र में छोटे भागों का वर्णन।
- आर्षेय कल्पसूत्र में ग्यारह अध्याय हैं जिनका मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि किस याग में किस विशेष साम का गान किया जाता है।

सोमयाग के तीन प्रकार-

- एकाह - एक दिन में पूर्ण होने वाला।
- अहीन- 2-11 दिन तक चलने वाला यज्ञ इसे 'क्रतु' भी कहते हैं।
- सम- 12 दिन से लेकर एक वर्ष या उससे भी अधिक समय तक चलने वाला याग।
- चार प्रकार के अभिचार-श्येन, इषु, सन्दंश, वज्र।
- ज्योतिष्टोम संख्या के चार प्रकार- अग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, अतिरात्र।

क्षुद्रकल्पसूत्र का परिचय

- क्षुद्रकल्पसूत्र के रचयिता भी मशक ऋषि हैं। यह आर्षेय, कल्प का ही दूसरा भाग है।
- यह ग्रन्थ तीन प्रपाठक और छः अध्यायों में विभक्त है।

क्षुद्रकल्पसूत्र में प्रतिपादित विषय-

विषय	अध्याय
विभिन्न काम्य इष्टियाँ और प्रायश्चित	अध्याय एक और दो
षृष्ठ्य षडह, द्वादशाह अनुकल्प	अध्याय तीन और चार
विभिन्न द्वादशाह याग	अध्याय पाँच और छः

- क्षुद्रकल्पसूत्र पर ताताचार्य के पुत्र श्रीनिवास की विस्तृत टीका प्राप्त होती है।
- डा. वी. आर. शर्मा द्वारा सम्पादित विश्वेश्वरानन्द संस्थान होशियारपुर से 1974 में प्रकाशित हुआ।

लाट्यायन श्रौतसूत्र का परिचय

- लाट प्रदेश गुजरात के आधार पर इसका नाम लाट्यायन पड़ा।
- इसमें दस प्रपाठक और 2641 सूत्र हैं।
- लाट्यायन श्रौतसूत्र पञ्चविंश ब्राह्मण से सम्बद्ध है।

लाट्यायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादित विषय	प्रपाठक
परिभाषाएँ और ऋत्विक् वरण	प्रथम प्रपाठक
अग्निष्टोम और उससे सम्बद्ध याग	द्वितीय प्रपाठक
षोडशी विषयक द्रव्य विधान	तृतीय प्रपाठक
वाजिभक्षण	चतुर्थ प्रपाठक
चातुर्मास्य, वरुणप्रघास और सोमचमस	पञ्चम प्रपाठक
सामविधान और द्वयक्षर-प्रतिहार	षष्ठ प्रपाठक
चतुरक्षा प्रतिहार, गायत्र गान	सप्तम प्रपाठक
एकाह, अहीन, वाजपेय याग, राजसूय याग	नवम प्रपाठक
सत्रयाग और उसकी परिभाषाएँ	दशम प्रपाठक

- लाट्यायन श्रौतसूत्र पर अग्निस्वामी का प्राचीन भाष्य उपलब्ध है।
- सम्पूर्ण लाट्यायन श्रौतसूत्र, अग्निस्वामी के भाष्य के साथ बिब्लियोथिका इण्डिका ग्रन्थमाला में सन् 1870-72 में प्रकाशित हुआ।

द्राह्यायण श्रौतसूत्र का परिचय

- द्राह्यायण श्रौतसूत्र का सम्बन्ध राणायनीय शाखा से है।
- द्राह्यायण श्रौतसूत्र के अपर नाम- छान्दोग्यसूत्र, प्रधानसूत्र, वाशिष्ठसूत्र
- द्राह्यायण श्रौतसूत्र का प्रचार दक्षिण भारत में अधिक है।
- कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा में यह श्रौतसूत्र अधिक प्रचलित है।
- द्राह्यायण श्रौतसूत्र में 3 पटल या अध्याय हैं।

द्राह्यायण श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादित विषय	अध्याय
ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम	1-7
गवामयन सत्रयाग	8-11
ब्रह्मा के कार्य, हविर्याग, सोमयाग से सम्बद्ध कार्य कलाप	12-21
एकाहयाग	22-25
अहीनयाग	26-27
सत्रयाग	28-29
अयनयाग	30-31

- द्राह्यायण श्रौतसूत्र पर धन्विन् भाष्य उपलब्ध है।

- प्रो. बी. आर. शर्मा द्वारा सन् 1983 में गङ्गानाथ झा विद्यापीठ प्रयाग से इसका परिष्कृत रूप प्रकाशित कराया।

जैमिनीय श्रौतसूत्र का परिचय

- जैमिनीय श्रौतसूत्र का सम्बन्ध जैमिनीय शाखा से है।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र के रचयिता **जैमिनि** माने गए हैं।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र का बौधायन श्रौतसूत्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- तीन खण्डों के नाम- सूत्रखण्ड, कल्पखण्ड, पर्याध्याय या परिशेष खण्ड।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र में कुल अध्यायों की संख्या अठारह है।

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

- अथर्ववेद का एकमात्र श्रौतसूत्र वैतान श्रौतसूत्र है।
- वैतान श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।
- वैतान श्रौतसूत्र के पूर्वार्द्ध पर कात्यायन श्रौतसूत्र तथा कौशिक श्रौतसूत्र का प्रभाव है।
- वैतान श्रौतसूत्र में आठ अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।

वैतान श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- परिभाषा, दर्श-पूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयणीय, इष्टि, चातुर्मास्य, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, एकाह, अहीन याग, काम इष्टियाँ।

गृह्यसूत्रों का सामान्य परिचय

- गृह्यसूत्र में गृहस्थ से सम्बद्ध षोडश संस्कार, पञ्चमहायज्ञ, सातपाकयज्ञ, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, पशुपालन और कृषिकर्म, आदि से सम्बद्ध यज्ञों की विधियों का वर्णन प्राप्त होता है।
- गृह्यसूत्र का सम्बन्ध गृहस्थ जीवन से है, गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित सभी संस्कार इसमें वर्णित हैं।
- गृह्यसूत्रों से आर्यों की सामाजिक स्थिति और परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
- गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त और मृत्यु के बाद भी किए जाने वाले संस्कारों तथा अनुष्ठान विधियों का विवरण प्राप्त होता है।
- गृह्यसूत्र में 42 संस्कारों का वर्णन है किन्तु गौतम चालीस संस्कार मानते हैं।
- गृह्यसूत्रों से जनपदों और ग्रामों में प्रचलित लोकधर्म और प्रथाओं का ज्ञान होता है।

ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र

- ऋग्वेद के तीन गृह्यसूत्र प्राप्त होते हैं-
- आश्वलायन श्रौतसूत्र, शांखायन श्रौतसूत्र, कौषीतकि श्रौतसूत्र

आश्वलायन गृह्यसूत्र का परिचय

- आश्वलायन गृह्यसूत्र के रचयिता आश्वलायन ऋषि थे।
- आश्वलायन गृह्यसूत्र में चार अध्याय हैं।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में वर्णित विषय-

वर्णित विषय	अध्याय
पाकयज्ञ, दैनिक होम, स्थानीक, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, अन्नप्राशन, मधुपर्क	एक
श्रवणाकर्म, अष्टका, वास्तु निर्माण गृहप्रवेश —	दो
पञ्चमहायज्ञ, ऋषितर्पण, उपाकर्म, समावर्तन —	तीन
दाहकर्म, श्राद्ध —	चार

- इस गृह्यसूत्र की **चार टीकाएँ** प्राप्त होती हैं
  1. जयन्त-स्वामी कृत विमलोदय
  2. देवस्वामी का भाष्य
  3. नारायण कृत विवरण टीका
  4. हरदत्त कृत अनाविला टीका

शांखायन गृह्यसूत्र का परिचय

- शांखायन गृह्यसूत्र ऋग्वेद की बाष्कल शाखा से है।
- शांखायन गृह्यसूत्र के रचयिता 'सुयज्ञ' हैं। इस गृह्यसूत्र में छः अध्याय हैं।
- टीकाकार नारायण के अनुसार पञ्चम अध्याय परिशिष्ट के रूप में है।
- वैदिक संहिताओं और उपनिषदों आदि के अध्ययन का नियम छठें अध्याय में है।
- प्रो. ओल्डेनबर्ग ने जर्मन भाषा में इस गृह्यसूत्र का अनुवाद किया।
- सीताराम सहगल द्वारा सम्पादित दिल्ली से 1960 में प्रकाशित हुआ।

कौषीतकि गृह्यसूत्र का परिचय

- कौषीतकि गृह्यसूत्र के रचयिता शाम्भव्य या शांबव्य हैं।
- इस गृह्यसूत्र में पाँच अध्याय हैं।
- पाँचवें अध्याय में अन्त्येष्टि का निरूपण है।
- कौषीतकि गृह्यसूत्र के दो संस्करण प्राप्त होते हैं-
  1 टी. आर. चिन्तामणि द्वारा सम्पादित, मद्रास विश्वविद्यालय से प्रकाशित
  2 पं. रत्नगोपाल द्वारा सम्पादित, काशी संस्कृत सीरीज से प्रकाशित।

शुक्लयजुर्वेद के गृह्यसूत्र

- शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक गृह्यसूत्र पारस्कर गृह्यसूत्र प्राप्त होता है।

पारस्कर गृह्यसूत्र का परिचय

- पारस्कर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं से है।
- पारस्कर गृह्यसूत्र में तीन काण्ड तथा प्रत्येक काण्ड कण्डिकाओं में विभक्त हैं।
- इस गृह्यसूत्र के रचयिता आचार्य पारस्कर हैं जिनका समय 200ई.पू. के लगभग माना जाता है।

- पारस्कर गृह्यसूत्र पर पाँच विद्वानों ने भाष्य किए हैं- कर्क, जयराम, हरिहर, गदाधर, विश्वनाथ

पारस्कर गृह्यसूत्र में वर्णित विषय-

होम के सामान्य नियम, विवाह विधि
गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म — प्रथम काण्ड
नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन

चूडाकर्म, उपनयन, समावर्तन, पञ्चमहायज्ञ
उपाकर्म, अनध्याय, इन्द्रयज्ञ, सीतायज्ञ — द्वितीय काण्ड

आग्रहायणी कर्म, अष्टका, शालाकर्म, दाहविधि
सभाप्रवेश, रथारोहण, हस्ति आरोहण — तृतीय काण्ड

कृष्ण यजुर्वेद के गृह्यसूत्र

- कृष्ण यजुर्वेद के नौ गृह्यसूत्र प्राप्त हैं।
- नौ गृह्यसूत्रों के नाम- बौधायन; मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस।

बौधायन गृह्यसूत्र का परिचय

- बौधायन गृह्यसूत्र के रचयिता बोधायन हैं।
- बोधायन का समय ९००ई.पू. के लगभग है।
- शामशास्त्री द्वारा सम्पादित 1920 ई. में एक संस्करण मैसूर से प्रकाशित हुआ।
- बौधायन गृह्यसूत्र में चार प्रश्न (अध्याय) हैं।
- इस गृह्यसूत्र का प्रचार दक्षिण भारत में रहा है।
  विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण श्राद्ध आदि इसके मुख्य विषय हैं।

मानव गृह्यसूत्र का परिचय

- मानव गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा से है।
- मानव गृह्यसूत्र को मैत्रायणीय मानव गृह्यसूत्र भी कहा जाता है।
- गृह्यसूत्र के रचयिता आचार्य मानव को माना जाता है।
- इसमें दो पुरुष या अध्याय हैं।

मानव गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- ब्रह्मचारी के कर्तव्य, समावर्तन संस्कार, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण आदि।

भारद्वाज गृह्यसूत्र का परिचय

- भारद्वाज गृह्यसूत्र भारद्वाज कल्पसूत्र का एक अंश है।
- इस गृह्यसूत्र में तीन प्रश्न या अध्याय हैं।

- उपनयन, विवाह, सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, गृहप्रवेश, श्राद्ध आदि इसके प्रतिपादित विषय हैं।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र आपस्तम्ब कल्पसूत्र का अंश है जिसमें तीस प्रश्न हैं। 25, 26, 27 अध्याय गृह्यसूत्र के नाम से जाना जाता है। 25वें तथा 26वें अध्याय में विनियोज्य मन्त्रों का तथा 27वें अध्याय में गृह कर्मों का वर्णन है।
- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र पर दो टीकाएँ प्राप्त होती है।

  1 हरदत्तमिश्र की अनाकुला टीका 2 सुदर्शनाचार्य की तात्पर्यदर्शन टीका

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय

- परिभाषाएँ, पाकयज्ञ, विवाह, स्थालीपाक, वैश्वदेवकर्म, उपाकरण, उपनयन, गायत्री उपदेश, चौलकर्म, होम, स्विष्टकृत् , रथारोहण आदि।

काठक गृह्यसूत्र का परिचय

- काठक गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से है।
- काठक गृह्यसूत्र का अपरनाम 'लौगाक्षि गृह्यसूत्र' है।
- इस गृह्यसूत्र का मानव और वाराह गृह्यसूत्रों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- इस गृह्यसूत्र में पाँच अध्याय 75 कण्डिकाएँ हैं।
- काठक गृह्यसूत्र की तीन व्याख्या प्राप्त होती हैं-

  1 आदित्यदर्शन की विवरण 2 ब्राह्मणबल गृह्यपद्धति

  3 देवपल कृत भाष्य
- डॉ. कैलेन्ड ने तीनों व्याख्याओं के सारांश के साथ सम्पादित कर लाहौर से 1922 में प्रकाशित किया।

काठक गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय

ब्रह्मचर्य के नियम, समावर्तन, उपाकर्म, पाकयज्ञ, विवाह, वेदाध्ययन, होम, स्वस्त्ययन, श्राद्ध है।

आग्निवेश्य गृह्यसूत्र का परिचय

- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र के रचयिता अग्निवेश हैं।
- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र में तीन प्रश्न या अध्याय हैं।
- इस गृह्यसूत्र में मूर्तिपूजा का विधान तथा तान्त्रिक यन्त्रों का उल्लेख है।
- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र श्री.एल.ए. रविवर्मा द्वारा सम्पादित 1940 में त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित हुआ।

हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र का परिचय

- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र को सत्याषाढ गृह्यसूत्र भी कहा जाता है।
- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र में दो प्रश्न (अध्याय) हैं, तथा प्रत्येक प्रश्न में आठ पटल हैं।

- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय उपनयन, समावर्तन, प्रायश्चित, विवाह, शालाकर्म का वर्णन प्रथम प्रश्न में वर्णित हैं।
- सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपाकरण का वर्णन द्वितीय प्रश्न में वर्णित है।

वाराह गृह्यसूत्र का परिचय

- वाराह गृह्यसूत्र का सम्बन्ध मैत्रायणीय संहिता से है।
- वाराह गृह्यसूत्र की वस्तु मानव गृह्यसूत्र के समान है।
  इस गृह्यसूत्र के दो संस्करण हैं
  1. सन् 1920 में मैसूर से डा. शामशास्त्री द्वारा सम्पादित
  2. सन् 1932 में लाहौर से डा. रघुवीर द्वारा सम्पादित

वैखानस गृह्यसूत्र का परिचय

- वैखानस गृह्यसूत्र का सम्बन्ध तैत्तिरीय शाखा से है।
- वैखानस गृह्यसूत्र के रचयिता विखनस् मुनि माने गये हैं।
- इस गृह्यसूत्र में विनियोग वाले मन्त्र प्रतीक रूप में दिए गए हैं।
- मन्त्रों के एक संकलन वैखानसीया मन्त्रसंहिता नाम से प्रकाशित हुआ है।
- वैखानस गृह्यसूत्र में सात प्रश्न और 120 खण्ड हैं।
- संस्कारों की संख्या अठारह है जिसे 'शरीर' नाम दिया है।
- अठारह संस्कारों के नाम- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तकर्म, जातकर्म, नामकरण, चूडाकर्म, उपनयन, उपाकर्म, समावर्तन, पाणिग्रहण।
- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ पाँच यज्ञों का वर्णन है।
- हविर्यज्ञ तथा सोमयज्ञ का उल्लेख भी प्राप्त होता है।
- डा. कैलेन्ड ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ कलकत्ता से 1929 में प्रकाशित किया

सामवेदीय गृह्यसूत्र

- सामवेद के निम्नलिखित गृह्यसूत्र उपलब्ध हैं- गोभिल, खादिर, द्राह्यायण और जैमिनीय गृह्यसूत्र। इसके अतिरिक्त कौथुमगृह्यसूत्र का सम्पादन डा. सूर्यकान्त ने किया, यह भी प्राप्त होता है।

गोभिल गृह्यसूत्र का परिचय

- गोभिल धर्मसूत्र सामवेद की कौथुम शाखा से सम्बन्धित है।
- सामवेदीय गोभिल गृह्यसूत्र सबसे प्रसिद्ध गृह्यसूत्र है।
- इसमें मन्त्र प्रतीकरूप में दिए गए हैं, सामवेद के मन्त्र भी इस गृह्यसूत्र में प्राप्त होते हैं।
- गोभिल गृह्यसूत्र में चार प्रपाठक हैं जो 39 खण्डों में विभक्त हैं।

गोभिल गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- सामान्य विधियाँ, होम के अधिकार, अग्न्याधान, आचमनविधि, वैश्वदेव विधि, दर्शपूर्णमास का वर्णन प्रथम प्रपाठक में है।

- विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, उपनयन का वर्णन द्वितीय प्रपाठक में है।
- गोदान, ब्रह्मचारी के कर्म, उपाकर्म, अनध्याय समावर्तन का वर्णन तृतीय प्रपाठक में है।
- पितृयज्ञ, काम्यकर्म, वास्तुनिर्माण, वास्तुयोग यशस्काम कर्म का वर्णन चतुर्थ प्रपाठक में है।

खादिर गृह्यसूत्र का परिचय

- खादिर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध राणायनीय शाखा से है।
- खादिर गृह्यसूत्र पर रुद्रस्कन्द की वृत्ति प्राप्त होती है।
- 1913 में महादेव शास्त्री ने इसका एक संस्करण मैसूर से प्रकाशित किया।

द्राह्यायण गृह्यसूत्र का परिचय

- द्राह्यायण गृह्यसूत्र के दो संस्करण प्राप्त होते हैं।
- आनन्द आश्रम पूना से 1914 तथा हिन्दी अनुवाद सहित मुजफ्फरपुर से 1934 ई. में प्रकाशित।

जैमिनीय गृह्यसूत्र का परिचय

- जैमिनीय गृह्यसूत्र में दो अध्याय हैं।
- प्रथम अध्याय में चौबीस और द्वितीय में नौ कण्डिकाएँ हैं।
- संस्कारों का वर्णन प्रथम अध्याय में तथा श्राद्ध, अष्टकाएँ, अन्त्येष्टि और शात्तिकृत्य का उल्लेख द्वितीय अध्याय में है।
- जैमिनीय गृह्यसूत्र पर श्रीनिवासाध्वरी की सुबोधिनी टीका प्राप्त होती है।

कौथुम गृह्यसूत्र का परिचय

- कौथुम गृह्यसूत्र का सम्पादन सूर्यकान्त ने किया जो एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता से प्रकाशित है।
- कौथुमगृह्यसूत्र में सबसे पहले प्रायश्चित्तों का वर्णन है।

अथर्ववेद के गृह्यसूत्र

- अथर्ववेद का एकमात्र गृह्यसूत्र प्राप्त होता है जो **कौशिक गृह्यसूत्र** है।
- कौशिक गृह्यसूत्र मे चौदह अध्याय हैं जिसका विभाजन कण्डिकाओं में है।
- कौशिक गृह्यसूत्र में शान्ति कर्म और अभिचार कर्मों का वर्णन है जो अथर्ववेद से गृहीत है।
- कौशिक गृह्यसूत्र में गृह कर्मों का वर्णन कम है। अभिचार कर्मों, यातुविद्या, मन्त्र-तन्त्र, रोगनाशक उपाय, आदि का वर्णन अधिक है।

धर्मसूत्रों का परिचय

- धर्मसूत्र आचार संहिता से सम्बद्ध ग्रन्थ हैं।
- धर्मसूत्र स्मृतियों के पूर्वरूप हैं।
- समाज को शान्ति और स्थिरता प्रदान करना धर्मसूत्रों का उद्देश्य है।
- करनिर्धारण, कर के प्रकार, कर का उपयोग, सम्पत्ति विभाजन, स्त्रीधन का स्वरूप आदि विषयों का वर्णन धर्मसूत्रों में प्राप्त होता है।

ऋग्वेद के धर्मसूत्र

- ऋग्वेद के दो धर्मसूत्र प्राप्त हैं- वासिष्ठ धर्मसूत्र तथा विष्णु धर्मसूत्र।

वासिष्ठ धर्मसूत्र का परिचय

- वासिष्ठ धर्मसूत्र महर्षि वसिष्ठ की रचना है।
  इसमें अध्यायों की संख्या भिन्न-भिन्न है, आनन्दाश्रम और फ्यूहरर के संस्करण में तीस-तीस अध्याय हैं।
- 25-28 अध्याय पद्यात्मक रूप में हैं तथा अध्याय 29–30 में गद्य एवं पद्य दोनों है।
- वासिष्ठ धर्मसूत्र में **'आचारः परमो धर्मः'** कहकर सदाचार पर बहुत बल दिया गया है।

विष्णु धर्मसूत्र का परिचय

- विष्णु धर्मसूत्र गद्य एवं पद्य से मिश्रित है।
- इस धर्मसूत्र में स्मृति, गौतम धर्मसूत्र, वासिष्ठ धर्मसूत्र के श्लोक एवं सूत्र प्राप्त होते हैं।
- डा. जोली ने इसे अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया।

यजुर्वेद के धर्मसूत्र

हारीत धर्मसूत्र का परिचय

- इसमें पद्यात्मक वचन प्राप्त होता है।
- आठ प्रकार के विवाहों में आर्ष और प्राजापत्य के स्थान पर क्षात्र और मानुष नाम का उल्लेख है।
- आनन्द आश्रम पूना संस्करण से वृद्ध हारीत नाम से प्रकाशित हुआ है जिसमें दस अध्याय हैं।

बौधायन धर्मसूत्र का परिचय

- बौधायन धर्मसूत्र बौधायन कल्पसूत्र का अंश है ।
- बौधायन धर्मसूत्र में चार प्रश्न (अध्याय) हैं। डॉ0 कीथ ने चतुर्थ प्रश्न को प्रक्षिप्त माना है।
- चतुर्थ प्रश्न पद्यात्मक है और पूर्व प्रश्नों के ही विषय हैं ।
- बौधायन धर्मसूत्र आपस्तम्ब से पूर्ववर्ती तथा गौतम से परवर्ती है ।

बौधायन धर्मसूत्र में प्रतिपादित विषय

विषय	प्रश्न
ब्रह्मचर्य के नियम,दायभाग, भक्ष्याभक्ष्य, चातुर्वर्ण्य विचार वर्णसङ्कर, राजा के कर्तव्य, पाँच महापाप और उनके दण्ड, आठ प्रकार के विवाह।	प्रथम प्रश्न
महापातकों के प्रायश्चित्त,कृच्छ्र आदि व्रत, संन्यास के नियम आदि।	द्वितीय प्रश्न
वानप्रस्थ, संन्यासी के धर्म, चान्द्रायण व्रत।	तृतीय प्रश्न
प्रायश्चित्त, काम्य सिद्धियाँ।	चतुर्थ प्रश्न

आपस्तम्ब धर्मसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब धर्मसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं ।

- आपस्तम्ब कल्पसूत्र के दो प्रश्न 28-29 आपस्तम्ब धर्मसूत्र कहे जाते हैं ।
- दोनों प्रश्नों में 11-11 पटल हैं।
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र में प्राचीन दस आचार्यो का उल्लेख है।
- श्रुति,अंग, विधि आदि मीमांसा के पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख है।
- प्राजापत्य और पैशाच विवाह को अवैध माना गया है।
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र में ब्याज लेना निन्द्य है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है।
- हरदत्त मिश्र की उज्ज्वला व्याख्या प्राप्त होती है।

सामवेद के धर्मसूत्र

- सामवेद का एक ही धर्मसूत्र प्राप्त होता है - गौतमधर्मसूत्र

गौतम धर्मसूत्र का परिचय

- गौतम धर्मसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है।
- गौतम धर्मसूत्र के रचयिता गौतम हैं।
- गौतम धर्मसूत्र में 28 अध्याय तथा एक हजार सूत्र प्राप्त होते हैं ।
- गौतम धर्मसूत्र का 26 वाँ अध्याय सामविधान ब्राह्मण के समान है ।

गौतम धर्मसूत्र में प्रतिपादित विषय

प्रतिपादित विषय	अध्याय
धर्मस्रोत,उपनयन,चार आश्रमों का वर्णन ब्रह्मचारी, गृहस्थ, भिक्षु और वैखानस के कर्तव्य, आठ प्रकार के विवाह,पंचमहाव्रत	अध्याय 1-5
माता-पिता-गुरु का सत्कार,आपद्धर्म, 40 संस्कार चारों वर्णों के कर्तव्य, राजधर्म, कर, सम्पत्ति की सुरक्षा	अध्याय 6-10
अपराध और दण्ड-विधान, साक्षी साक्ष्य के नियम	अध्याय 11-15
भक्ष्याभक्ष्य विचार, स्त्रीधर्म,नियोग विविध पातक और प्रायश्चित्त	अध्याय 16-20
विविध पातक और प्रायश्चित्त, कृच्छ्र आदि व्रत, चान्द्रायण व्रत, सम्पत्ति का विभाजन दायभाग	अध्याय 21-28

शुल्बसूत्रों का परिचय

- शुल्बसूत्र गणितशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं।
- शुल्बसूत्र में गणितशास्त्र के अङ्ग ज्यामितीयशास्त्र से सम्बद्ध अनेक प्रमेय दिए गए हैं।
- यज्ञ की वेदी के निर्माण की विधि एवं छोटी - बड़ी वेदियों का वर्णन शुल्बसूत्र में प्राप्त होता है।
- शुल्ब शब्द का अर्थ रस्सी है।
- रेखागणित की दृष्टि से शुल्बसूत्रों का काफी महत्त्व है।

बौधायन शुल्बसूत्र का परिचय

- बौधायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है, इसके रचयिता बोधायन मुनि हैं।
- बोधायन का समय 900ई.पू. से 850 ई.पू. के मध्य माना जाता है ।

- बौधायन शुल्बसूत्र सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र है।
- बौधायन शुल्बसूत्र में तीन परिच्छेद तथा 519 सूत्र हैं।
- तीनों परिच्छेद में सूत्रों की संख्या -

परिच्छेद		सूत्र
प्रथम	-	113 सूत्र
द्वितीय	-	83 सूत्र
तृतीय	-	323 सूत्र

- बौधायन शुल्बसूत्र पर दो टीकाएँ प्राप्त हैं -
  1. द्वारकानाथ यज्वा की शुल्बदीपिका टीका।
  2. वेंकटेश्वर दीक्षित की शुल्बमीमांसा टीका।

आपस्तम्ब शुल्बसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है ।
- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं, जिनका समय 7 वीं शती ई.पू. माना जाता है ।
- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र में छः पटल, 21 अध्याय तथा 498 सूत्र हैं ।

आपस्तम्ब शुल्बसूत्र के प्रतिपादित विषय -

- एक से तीन अध्यायों में वेदियों की रचना के आधारभूत रेखागणितीय सिद्धान्त का विवरण - प्रथम पटल
- अध्याय 4-6 में वेदियों के क्रमिक स्थान और उनकी विभिन्न आकृतियों का वर्णन तथा उनके बनाने के ढंग का वर्णन - द्वितीय पटल
- पन्द्रह अध्यायों में काम्य इष्टियों के लिए आवश्यक वेदियों के आकार प्रकार का वर्णन - अध्याय 3-6 में।

कात्यायन शुल्बसूत्र का परिचय

- कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है।
- कात्यायन शुल्बसूत्र को कात्यायन शुल्ब परिशिष्ट या कातीय शुल्ब परिशिष्ट कहते हैं।
- इसके दो भाग हैं, प्रथम भाग सूत्रों में हैं, इसमें छः कण्डिकाओं में 102 सूत्र हैं ।
- द्वितीय भाग श्लोकात्मक है जिसमें चालीस श्लोक हैं।
- कात्यायन ने वेदिनिर्माण के नियमों का विशेष क्रमबद्ध रूप से वर्णन किया है ।
- कात्यायन शुल्बसूत्र की तीन टीकाएँ प्राप्त होती हैं।

मानव शुल्बसूत्र का परिचय

- मानव शुल्बसूत्र गद्य-पद्य मिश्रित एक छोटा ग्रन्थ है।
- इसमें प्रसिद्ध 'सुपर्णा चिति' वेदी का विवरण है, जो अन्यत्र नहीं प्राप्त होती।
- इसमें अनेक नवीन वेदियों का वर्णन मिलता है, जो अन्य शुल्बसूत्रों में नहीं है।

❑❑

10. वैदिक देवता

वैदिक देवता

वेदों में सर्वोत्कृष्ट तत्त्व ही 'देव' शब्द से वाच्य है। (ऋग्वेद 1/139/119) के अनुसार कुल 33 देवता हैं, जिनमें से 11 पृथ्वी में, 11 अन्तरिक्ष में तथा 11 द्युलोक में हैं। शतपथ ब्राह्मण (11/6/3/5) के अनुसार 8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य तथा 1 इन्द्र ,1प्रजापति, कुल 33 देवता हैं। यद्यपि ऋग्वेद (11/53/6), शतपथ ब्राह्मण (11/6/3/4) तथा शांखायन श्रौतसूत्र (8/21/14) में देवताओं की संख्या 3339 निर्दिष्ट है। यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य है कि पुराणों में जो 33 कोटि देवता का उल्लेख मिलता है, वहाँ 'कोटि' शब्द प्रकार वाचक है, संख्या वाचक नहीं।

अग्नि देवता

- अग्नि पृथ्वी स्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 200 सूक्तों में की गयी है।
- अग्नि देवता ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त के देवता हैं।
- अग्नि सूक्त (1.1) के ऋषि 'मधुच्छन्दा' हैं।
- अग्नि देवता का प्रधान कर्म हविष्य का वहन करना है।
- **अग्नि देवता के प्रमुख विशेषण/उपाधियाँ-** ऋत्विक्, होता, पुरोहित, रत्नधातमम्, कविक्रतु, चित्रश्रवस्तम्, कवि, हव्यवाह, धूमकेतु, गृहपति, दमूनस्, अंगिरस्, दूत, विश्ववेदाः, सप्तरश्मि, घृतपृष्ठ, घृतलोम, घृतप्रतीक, शोचिषकेश, विश्पति, असुर, सहस्राक्ष, त्रिमूर्द्धा, मन्द्रजिह्व, अपानपात्, उर्जोनपात् इत्यादि।

अग्नि देवता से जुड़ी कुछ विशेष ऋचाएँ-

* अग्निमीळे पुरोहितम्।
* होतारं रत्नधातमम्।
* स देवाँ एह वक्षति।
* अग्निर्होता कविक्रतुः।
* राजन्तमध्वराणाम्।
* सः न पितेव सूनवे।

अग्नि देवता का स्वरूप -

अग्नि के विराट् रूप का वर्णन करते हुए अथर्ववेद (8.1.11) में कहा गया है कि वह चार प्रकार का है- भौतिक अग्नि, जलीय अग्नि, सूर्य, विद्युत्।

- वेदों में तीन अग्नियों का उल्लेख है - गार्हपत्य अग्नि, आहवनीय अग्नि, दक्षिणाग्नि
- अग्नि का मुख्य आहार घृत है।
- घृत और ईंधन के अतिरिक्त सोम भी इनका प्रिय पेय है। इनको 'सोमगोपा' भी कहते हैं।
- अग्नि अपने उपासकों का कल्याण उसी प्रकार करते हैं, जैसे- पिता-पुत्र का- 'सः न पितेव सूनवेऽग्ने........' (ऋक् 1/1/9)
- ऋग्वेद पुरुषसूक्त के अनुसार, अग्नि की उत्पत्ति, विराट्-पुरुष के मुख से हुई है- **'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'**
- वैदिक ऋषि अग्नि के पिता को 'द्यौ' की संज्ञा देते हैं- **'यदेनं द्यौर्जनयत् सुरेताः।'**
- कहीं पर इन्हें त्वष्टा का पुत्र तो कहीं पर द्यावापृथिवी का पुत्र कहा गया है।
- ऋग्वैदिक विवरण के अनुसार इन्द्र ने दो पत्थरों के बीच अग्नि को उत्पन्न किया- **'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान'**
- इसके अतिरिक्त अग्नि का जन्म दो अरणियों के घर्षण से अथवा दश युवतियों से हुआ माना जाता है।
- अग्नि को पृथिवी तथा अमृत की 'नाभि' कहा गया है।
- अन्तरिक्ष में स्थित जल से भी अग्नि की उत्पत्ति बतायी गयी है।

निरुक्त के अनुसार 'अग्नि' की व्युत्पत्ति-

* अङ्गं नयति सन्नममानः।
* अक्नोपनो भवति।
* अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते।
* अग्रणीर्भवति इति।

इन्द्र देवता का परिचय

- इन्द्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं।
- इन्द्र की स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है। ऋग्वेद में सर्वाधिक स्तुति इन्द्र की ही है।
- इन्द्र सूक्त (2.12) के ऋषि 'गृत्समद्' हैं।

इन्द्र की प्रमुख उपाधियाँ

वृत्रहा, सुशिप्र, सोमपा, शक्र, पुरन्दर, वज्री, वज्रहस्त, मरुत्सखा, वज्रबाहु, हरिकेश, हरिश्मश्रु, हिरण्यबाहु, चित्रभानु, पुरुहूत, वृषा, शचीपति, आखण्डल, सोमी, मरुत्वान्, धनञ्जय, गोत्रभिद्, मनस्वान्, संवृक्समत्सु, सप्तरश्मि, अच्युतच्युत, अपांनेता इत्यादि।

इन्द्र देवता का स्वरूप

- इनके होठों के अत्यन्त सुन्दर होने के कारण इन्हें 'सुशिप्र' कहा गया है।
- इन्द्र का प्रधान शस्त्र 'वज्र' है। इसी वज्र को धारण करने के कारण इन्हें 'वज्रिन्' या 'वज्रबाहु' आदि नामों से पुकारा गया है।
- इन्द्र का सर्वश्रेष्ठ पेय 'सोम' है। इसीलिए इन्हें 'सोमपा' कहा गया है- 'यो सोमपा निचितो वज्रबाहुः।'
- उत्पन्न होते ही इन्द्र ने अपने पराक्रम का परिचय दिया, जिससे आकाश और पृथ्वी काँपने लगे- 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यषेताम्।'
- ऋग्वेद पुरुषसूक्त के अनुसार इन्द्र की उत्पत्ति, विराट् पुरुष के मुख से हुई है- 'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च'।
- मरुत् का मित्र होने के कारण इन्द्र को मरुत्सखा, मरुत्वान् आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

इन्द्र के महत्त्वपूर्ण कार्य

- इनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वृत्रवध है।
- इन्होंने 'बल' नामक असुर का वध करके गायों को उसकी गुफा से मुक्त किया।
- इन्द्र ने ही सूर्य तथा उषा को उत्पन्न किया- 'यो सूर्यं उषसं जजान।'
- इन्द्र ने ही 'शम्बर' नामक असुर को 40 वर्ष पर्यन्त ढूँढ कर मार डाला।
- इन्होंने ही द्युलोक में चढ़ते हुए रौहिण नामक असुर को झटका देकर नीचे गिरा दिया।

इन्द्र की व्युत्पत्ति

- इरां दृणाति।
- इरां ददाति।
- इरां दधाति।
- इरां दारयते।
- इरां धारयते।
- इन्दवे द्रवति।
- इन्दौ रमत, इन्दञ्छत्रूणां दारयिता।

इन्द्र		
स्थान	स्तुति	ऋषि
(अन्तरिक्षस्थानीय)	(250 सूक्तों में)	(गृत्समद)

इन्द्र (2.12) सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ

- **यो जात एव प्रथमो मनस्वान्** (जो उत्पन्न होते ही सब देवताओं मे प्रमुख मनस्वी हुआ।)
- **येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि।** (जिसने इन सम्पूर्ण नश्वर भुवनों को स्थिर किया है।)
- **यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य।**
  (अर्थात् जो समृद्धिशाली व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला है, जो निर्धन को प्रेरणा देने वाला है।)
- **यः सूर्यं य उषसं जजान।**
  (अर्थात् जिसने सूर्य को और जिसने ऊषा को उत्पन्न किया)
- **यः शश्वतो मह्येनो दधानान्।**
  (जिसने अत्यधिक पाप को धारण करने वाले व्यक्तियों का वध कर डाला)

वरुण देवता

- वरुण द्युस्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 12 सूक्तों में की गयी है।
- वरुण सूक्त (1/25) के ऋषि 'शुनः शेप' हैं।

वरुण देवता की प्रमुख उपाधियाँ

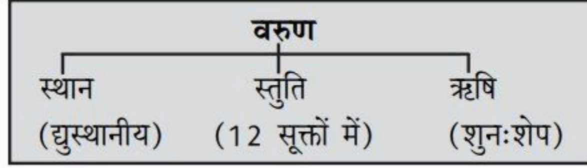
असुर, क्षत्रिय, धृतव्रत, ऋतगोपा, अमृतस्यगोपा, उरुशंशः, दूतदक्षः, स्वराट्, मायावी इत्यादि।

वरुण देवता का स्वरूप

- इनका सुनहरा कवच दर्शकों के हृदय को चकाचौंध कर देता है।
- ये दूर से दूर की वस्तु को भी देख सकते हैं।
- सूर्य इनके नेत्र हैं।

महत्त्वपूर्ण कार्य

- इनकी आज्ञायें अत्यन्त कठोर हैं। इन कठोर नियमों के अनुशीलन के ही कारण इन्हें 'धृतव्रत' भी कहा गया है।
- ये अपने उपासकों को केवल उसी के द्वारा किये गये पापों से मुक्त नहीं करते हैं, बल्कि उसके पिता द्वारा, दूसरों के द्वारा तथा अज्ञान व भ्रमवश किये गये सभी पापों से मुक्त कर देते हैं।
- विश्व के नैतिक अध्यक्ष के रूप में वरुण से बढ़कर कोई भी देवता नहीं है।



वरुण' की व्युत्पत्ति

➢ वरुणो वृणोतीति सतः।

वरुण (1/25) से सम्बन्धित ऋचाएँ

➢ **तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छातः।** (1.25.6)
(अर्थात् शुभ कामना करते हुए मित्र और वरुण समान रूप से एक सी ही उस हवि को प्राप्त करते हैं)

➢ **वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः।** (1.25.9)
(अर्थात् ये वरुण देवता विस्तीर्ण या व्यापक, दर्शनीय और गुणों से महान् वायु के मार्ग को जानते हैं।)

➢ **उत यो मानुषेष्वा यशश्चक्रे असाम्या।** (1.25.15)
(जिस देवता ने मनुष्यों में अन्न को उत्पन्न किया।)

सवितृ देवता का परिचय

➢ सवितृ द्युस्थानीय देवता हैं।

➢ इनकी स्तुति 11 सूक्तों में की गयी है।

सवितृ देवता की उपाधियाँ

असुर, हिरण्यपाणि, सुपर्ण, सुनीथ, हिरण्याक्ष, हिरण्यस्तूप, स्वर्णपाद, सुमृतळीक, दमूना, स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद, स्वर्णजिह्व इत्यादि।

सवितृ देवता का स्वरूप

➢ सवितृ देव मुख्य रूप से स्वर्णिम देवता हैं। इसीलिए इन्हें स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद एवं स्वर्णजिह्व, की सञ्ज्ञा दी गयी है।

➢ इनको लौह, जबडों वाला भी कहा गया है।

➢ इनके केश, पीले तथा सुनहले हैं।

➢ ये विविध रूपवाले स्वर्णिम रथ पर चढ़कर चलते हैं, जिसे सफेद पैर वाले दो घोड़े खींचते हैं।

महत्त्वपूर्ण कार्य

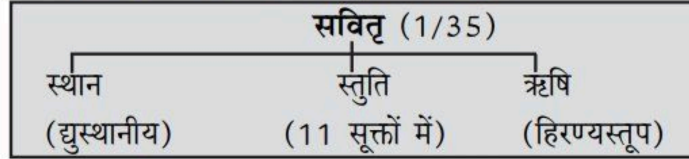
➢ सवितृ मुख्य रूप से सबके प्रकाशक देवता हैं।

➢ ये पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक सबको प्रकाशित करते हैं।

➢ कोई भी प्राणी इनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता।

➢ इन्हें एक प्रेरक देवता के रूप में देखा गया है।

➢ गायत्री मन्त्र का सम्बन्ध सीधे सवितृ देव से ही है।



सवितृ की व्युत्पत्ति

➢ सविता सर्वस्य प्रसविता, अन्धकार मध्यादागच्छन् प्रकाशः सवितेति कथ्यते।

सवितृ सूक्त (1/35) से सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ-

➢ **ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये।**
(अर्थात् अपने कल्याण के लिए मैं सबसे पहले अग्नि देवता का आह्वान करता हूँ।)

➢ **याति देवः प्रवता यात्युद्धता याति।**
(अर्थात् देदीप्यमान सविता देवता प्रवण मार्ग से जा रहा है और उत्कृष्ट ऊर्ध्व मार्ग से जा रहा है।)

➢ **तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ।**
(अर्थात् स्वर्ग से उपलक्षित प्रकाशमान लोक तीन हैं। उनमें से दो लोक सूर्य के समीप हैं।)

➢ **अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री।**
(सूर्य ने पृथिवी की आठों दिशाओं को प्रकाशित किया)

विष्णु देवता का परिचय

➢ विष्णु द्युस्थानीय देवता हैं।
➢ विष्णु की स्तुति 5 सूक्तों में की गयी है।
➢ विष्णु (1/154) सूक्त के ऋषि 'दीर्घतमा' हैं।

विष्णु के विशेषण

उरुक्रम, उरुगाय, कुचर, गिरिष्ठा, वृष्ण, गिरिक्षित, विक्रम, त्रिविक्रम, भीम इत्यादि।

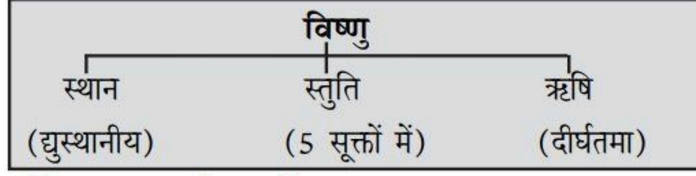
विष्णु देवता का स्वरूप

➢ मानवाकृति के रूप में विष्णु के तीन कदमों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है- 'विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः' 'यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु', 'उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था', सधस्थमेको त्रिभिरित्पदेभिः' इत्यादि।

➢ विष्णु के परमधाम में सहस्त्र सींगों वाली गायें हैं-
'ता वां वास्तून्युशमसि गमध्यै। यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः।।'

➢ वेदों में विष्णु को इन्द्र का मित्र तथा पुराणों में उपेन्द्र भी कहा गया है।

➢ पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड इनके वाहन हैं।



विष्णु के महत्त्वपूर्ण कार्य

- विष्णु ने अपने तीन कदमों के द्वारा सम्पूर्ण लोकों को नापा था
- विष्णु गर्भ के रक्षक माने जाते हैं।
- गर्भाधान के निमित्त अन्य देवताओं के साथ विष्णु की भी स्तुति की जाती है।
- ये परोपकारी, प्रचुर धन का दान करने वाले, उदार, सबके रक्षक तथा विश्व का भरण पोषण करने वाले हैं।
- शाकपूणि के मत में सूर्य के तीनों लोक- पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक ही विष्णु के तीनों कदम हैं जबकि **और्णवाभ** के मत में विष्णु के तीनों कदम ही सूर्य के उदय, मध्याह्न तथा अस्त के द्योतक हैं।

विष्णु की व्युत्पत्ति

- विष्णातेर्विशतेर्वा स्याद् वेवेष्टेर्व्याप्तिकर्मणः।

विष्णु (1/154) से सम्बन्धित प्रमुख ऋचाएँ-

- **यः पार्थिवानि विममे रजांसि।**

  (अर्थात् जिस विष्णु ने पृथिवी सम्बन्धी रजःकणों अर्थात् अग्नि, वायु, आदित्य विशेष लोकों की विशेष रूप से रचना की ।

- **यस्य त्री पूर्णा मधुना।**

  (अर्थात् जिस विष्णु के मधुर दिव्य अमृत से भरे हुए तीन पद कभी क्षीण न होते हुए अन्न के द्वारा आनन्दित करते हैं)

- **यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।**

  (जहाँ बड़े-बड़े ऊँचे सींगो वाली गायें अथवा अनेक प्रकार से फैलने वाली किरणें निवास करती हैं।)

रुद्र देवता

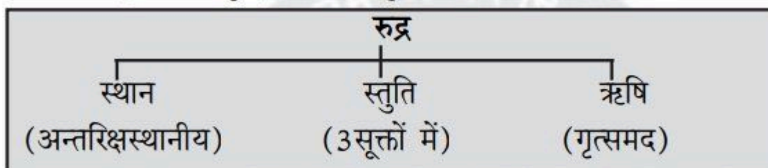
- रुद्र अन्तरिक्ष-स्थानीय देवता हैं।
- इनकी स्तुति 3 सूक्तों में की गयी है।
- रुद्र सूक्त (2/33) के ऋषि गृत्समद हैं।

रुद्र के विशेषण

त्रयम्बक, कृत्तिवास, नीललोहित, भव, शर्व, पशुपति, मरुत्पिता, असुर, मरुत्वान्, मीळवान्, तव्यान्, भिषक्तम्, वङ्कु, जलाषभेषज, सुशिप्र, रक्तवर्णी, मृण्याकुः, शिव इत्यादि।

रुद्र देवता का स्वरूप

- रुद्र का वर्ण भूरा है तथा होंठ बहुत सुन्दर हैं। इसी कारण से इनके लिए ऋग्वेद में क्रमशः 'बभ्रु' तथा 'सुशिप्र' विशेषण का प्रयोग किया गया है।
- इनको वाजसनेयी संहिता में रक्तवर्णी बताया गया है।
- वाजसनेयी संहिता में ही इन्हें नाना प्रकार के रूपों को धारण करने वाले तथा सूर्य की भाँति प्रकाशमान कहा गया है।
- ये चर्मवस्त्र को धारण करते हैं।
- ये पर्वतों पर निवास करते हैं।
- ये शस्त्र के रूप में धनुष तथा बाण धारण करते है-'अहं रुद्राय धनुरातनोमि।'
- रुद्र का कृपाण विद्युत् से निर्मित हुआ है।



रुद्र देवता के कार्य

- ऋग्वेद, रुद्र के विनाशकारी तथा कल्याणकारी द्विविध स्वरूपों का चित्रण प्रस्तुत करता है।
- ये एक भयानक पशु के समान विध्वंसक तथा शक्तिशाली वृषभ हैं।
- रुद्र के लिए 'असुर' विशेषण का प्रयोग हुआ है।
- जब रुद्र प्रसन्न होते हैं, तो अपने लोकोपकारक शिवस्वरूप में आते हैं और मनुष्यों एवं पशु-पक्षी सभी जीवों की रक्षा करते हैं।
- रुद्र के हाथों को मृण्याकुः (सुखदेनेवाला), जलाषः (शीतलता प्रदान करने वाला), भेषजः (आरोग्यता प्रदान करने वाला) कहा गया है।
- रुद्र देवताओं के कुशल वैद्य के रूप में प्रसिद्ध हैं।

'रुद्र' की व्युत्पत्ति-

रौतीति सतो रोरूयमाणो द्रवतीति वा रोदयतेर्वा।

रुद्र (2/33) से सम्बन्धित ऋचाएँ

- **आ ते पितर्मरुतां सम्नमेतु :**

  (अर्थात् हे मरुत् नामक देवताओं के पिता रुद्र! तुम्हारे द्वारा हमें देने योग्य सुख प्राप्त होवें।)

- **श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियांसि।**

  (अर्थात् हे रुद्र! उत्पन्न हुए इस सम्पूर्ण जगत् में तुम अपने ऐश्वर्य से सबसे श्रेष्ठ हो।)
- **मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिः।**

  (अर्थात् हे रुद्र! हम तुमको अनुचित प्रकार से किये गये नमस्कारों से क्रोधित न करें।)
- **अहन्बिभर्षि सायकानि धन्व।**

  (अर्थात् हे रुद्र! योग्य होते हुये तुम बाणों और धनुष को धारण करते हो।)
- **परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः।**

  (अर्थात् रुद्र देवता का शस्त्र हमें छोड़ दे अर्थात् हमारी हिंसा न करें।)

❑❑

11. वेदों के भाष्य एवं भाष्यकार

- वैदिक काल में मानव का मस्तिष्क जितना उर्वरक एवं विकसित रहा है उतना परवर्त्तीकाल में नहीं रहा है। वेदों पर संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि भागों पर हजारों वर्षों से कितने ही भाष्य लिखे गये और कितनी टीकाएँ रची गयी परन्तु अभी वेद जैसे गूढ़ विषयों का अर्थावबोध उनके लिये कठिन होता गया ।
- वर्तमान में वैदिक वाङ्मय पर उपलब्ध भाष्य एवं टीकाओं के विशाल साहित्य को देखकर आश्चर्य होता है। अब तक प्रकाशित भाष्य एवं टीका ग्रन्थ, उस प्रकाशित विशाल साहित्य के समक्ष अत्यल्प हैं कुछ भाष्यकारों के तो नाम उपलब्ध हैं और कुछ के नाम अभी तक प्राप्त नहीं हैं। कालान्तर में जब वेद- मन्त्रों का अर्थावबोध में कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं तो वेदभाष्यों का निर्माण होने लगा।
- इसप्रकार समस्त संहिताओं, ब्राह्मणों एवं उपनिषदों पर अनेक भाष्य लिखे गये। वेद भाष्यकर्त्ताओं में स्कन्दस्वामी, आनन्दतीर्थ, वेङ्कटमाधव, सायण आदि प्रमुख हैं परिचय का क्रम वेदत्रयी अर्थात् ऋक् -यजु- साम- के क्रमानुसार ही है।

स्कन्दस्वामी -

- ऋग्वेद के भाष्यकारों में स्कन्दस्वामी सबसे प्राचीन हैं।
- ये गुजरात की राजधानी वलभी के रहने वाले थे-

वलभीविनिवासस्येतामृगर्थागमसंहृतिम् ।
भर्तृध्रुवसुतश्चक्रे स्कन्दस्वामी यथास्मृतिः॥

(ऋग्वेदभाष्य प्रथमाष्टक)

- इनके पिता का नाम भर्तृध्रुव था।
- ये शतपथ ब्राह्मण के भाष्यकार हरिस्वामी के गुरु थे।
- स्कन्दस्वामी ने 600 - 625 ई. के मध्य ऋग्वेद पर भाष्य लिखा था।
- यास्क के निरुक्त पर भी टीका लिखी।
- ऋग्वेद पर स्कन्दस्वामी का भाष्य अत्यन्त विशद है।
- इसके प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में सूत्र के ऋषि तथा देवता का उल्लेख है।
- स्कन्दस्वामी का भाष्य केवल चतुर्थ अष्टक तक ही प्राप्त है।
- ऋग्वेद के भाष्य में वेंकटमाधव ने लिखा है कि स्कन्दस्वामी, नारायण और उद्गीथ आचार्यों ने मिलकर ऋग्वेद का भाष्य किया था-

स्कन्दस्वामी नारायण उद्गीथ इति ते क्रमात्।
चक्रुः सहैकम् ऋग्भाष्यं, पदवाक्यार्थगोचरम्।।

- स्कन्दस्वामी ने केवल चार अष्टकों तक ही ऋग्वेद भाष्य की रचना की थी, शेष भाग की पूर्ति नारायण एवं उद्गीथ द्वारा की गयी है।
- स्कन्दस्वामी हर्ष तथा बाणभट्ट के समकालीन हैं।
- निरुक्त टीका में 'प्रयस्' शब्द का तथा वेदभाष्य में 'श्रवस्' शब्द का स्कन्दस्वामी के द्वारा 'अन्न' अर्थ किये जाने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है।
- 'उप प्रयोमिरागत् इत्यादिषु निरुक्तटीकायां स्कन्दस्वामिना प्रय इत्यन्नं नाम उच्यते , तथा च 'अक्षिति श्रवः' इत्यादिनिगमेषु वेदभाष्ये श्रव इत्यन्नं नाम इति स्पष्टमुच्यते ।

नारायण और उद्गीथ -

- ऋग्वेद के पूर्वभाग पर स्कन्दस्वामी मध्यभाग पर नारायण और अन्तिम भाग पर उद्गीथ ने भाष्य लिखा है।
- उद्गीथ ने अपने भाष्य में प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपना परिचय दिया है- **वनवासीविनिर्गताचार्यस्य उद्गीथस्य कृता ऋग्वेदभाष्ये ....अध्यायः समाप्तः।**
- प्राचीनकाल में कर्णाटक का पश्चिमी भाग वनवासी प्रान्त के नाम से प्रसिद्ध था।
- आचार्य उद्गीथ सम्भवतः इसी प्रान्त के रहने वाले रहे होंगे।
- इनका समय सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।
- उद्गीथ के नाम का उल्लेख सायण तथा आत्मानन्द ने अपने भाष्य में किया है।
- उद्गीथाचार्य का वनवासी से कोई न कोई सम्बन्ध प्रतीत होता है।
- आचार्य उद्गीथ इसी प्रान्त अर्थात कर्णाटक देश के समीप के ही रहने वाले जान पड़ते हैं।
- उद्गीथ सायण से पूर्ववर्ती भाष्यकार हैं, क्योंकि सायण ने उद्गीथ के भाष्य का उल्लेख किया है।
- यह भाष्य ऋग्वेद के दशम मण्डल के सूक्त 5 से लेकर सूक्त 83 के पॉचवें मन्त्र तक उपलब्ध होता है। जिसमें आदि के अंश को डी.ए.वी. कालेज के शोध विभाग ने प्रकाशित किया।

माधवभट्ट

- यह सामवेद संहिता के भाष्यकार हैं।
- माधव नामधारी तीन भाष्यकारों का सम्बन्ध ऋग्वेद के साथ है। इनमें से एक तो सायण-माधव ही हैं।
- दूसरे माधव वेंकटमाधव हैं, जिनका निर्देश प्राचीन भाष्यों में मिलता है। एक अन्य माधव यह भी है, जिनकी प्रथम अष्टक की टीका अभी हाल में मद्रास विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुई है। देवराज यज्वा ने अपनी निघण्टु टीका में वेंकटमाधव और माधवभट्ट के व्यक्तित्व को सम्मिलित कर दिया है।

- इस टीका के आरम्भ करने से पहले उन्होंने ग्यारह अनुक्रमणियाँ लिखी थी , जिनमें से हर एक कोश रूप में रखकर ऋग्वेद के शब्दार्थ को प्रकट करने में समर्थ हैं। इनमें से दो उपलब्ध अनुक्रमणी छप चुकी हैं। वे है नामानुक्रमणी और आख्यातानुक्रमणी ।

अनुक्रमणी

1. नामानुक्रमणी
2. आख्यातानुक्रमणी

वेंकट माधव -

- ऋग्वेद के प्रथम अध्याय के अन्त में वेङ्कटमाधव ने अपना परिचय दिया है।
- इनके पितामह का नाम माधव था और इनके पिता का नाम वेङ्कट था।
- इनके नाना का नाम भवगोल और माता का नाम सुन्दरी था।
- इनका गोत्र कौशिक और मातृगोत्र वसिष्ठ था।
- इनका एक छोटा भाई था जिसका नाम संकर्षण था और वेङ्कट तथा गोविन्द नामक दो पुत्र थे।
- ये दक्षिणापथ के चोलदेश के निवासी थे।
- इनका समय बारहवीं शताब्दी से बाद का नहीं माना जा सकता ।
- इनका भाष्य अत्यन्त संक्षिप्त और सुबोध है- 'वर्जयन् शब्दविस्तारं शब्दैः कतिपयैरिति'
- इनका भाष्य डॉ. लक्ष्मणस्वरूप ने संपादित कर 4 भागों में प्रकाशित किया है।
- इसके प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली हैं।

वेंकट माधव का संक्षिप्त परिचय

निवास	-	चोलदेश
पितामह	-	माधव
पिता	-	वेंकट
माता	-	सुन्दरी
नाना	-	भवगोल
गोत्र	-	कौशिक
भाई	-	संकर्षण
पुत्र	-	1. वेंकट 2. गोविन्द

धानुष्कयज्वा -

- धानुष्कयज्वा नाम के किसी तीनों वेदों के भाष्यकार का नाम वेदाचार्य की सुदर्शनमीमांसा में कई बार आया है।
- इन स्थानों पर ये 'त्रिवेणी भाष्यकार' तथा त्रयीनिष्टवृद्ध कहे गये हैं ।
- ये एक वैष्णव आचार्य थे। इनका समय विक्रम संवत् 1600 से पूर्व होना चाहिए।

आनन्दतीर्थ-

- इनका दूसरा नाम 'मध्व' है। ये द्वैत सिद्धान्त के आचार्य थे।
- इन्होंने 'मध्व सम्प्रदाय' को चलाया। इनके 'मध्व' और 'पूर्णप्रज्ञ' आदि भी नाम हैं।
- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों पर भाष्य लिखा है।
- इन्होंने वेद का प्रतिपाद्य नारायण को माना है। इनका समय 1255 से 1355 ई. के मध्य माना जाता है।
- जिनमें ऋग्वेद के कतिपय मन्त्रों की व्याख्यावाला वेदभाष्य भी है। यह भाष्य छन्दोबद्ध है।
- इसमें राघवेन्द्र यति का यह कथन पर्याप्त रूप से प्रमाणित है -
  ''ऋक्शाखागतैकोत्तरसहस्रसूक्तमध्ये कानिचित् चत्वारिंशत् सूक्तानि भगवत्पादैः व्याख्यातानि।''
- मध्वभाष्य के ऊपर सुप्रसिद्ध माध्व आचार्य जयतीर्थ ने ग्रन्थ रचना के तीस साल के भीतर ही अपनी टीका लिखी।
- इस टीका पर नरसिंह ने (1718 सं.वि.) अपनी विवृत्ति तथा नारायण ने 'भावरत्नप्रकाशिका' नामक दूसरी विवृत्ति लिखी।

आत्मानन्द -

- आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अन्तर्गत आने वाले प्रथम मण्डल के 1/164 वें सूक्त जो अस्य वामीय सूक्त है, पर अपना स्वतन्त्र भाष्य लिखा है।
- इस भाष्य में उद्धृत ग्रन्थकारों में स्कन्द, भास्कर आदि का नाम मिलता है, परन्तु सायण का नाम नहीं मिलता।
- ये सायण से पूर्व के भाष्यकार प्रतीत होते हैं।
- इनके द्वारा उद्धृत लेखकों में मिताक्षरा के कर्ता विज्ञानेश्वर तथा स्मृतिचन्द्रिका के रचयिता देवणभट्ट (13 वी. शती.ई॰) के नाम होने से हम कह सकते हैं कि इनका आविर्भाव - काल विक्रम की चौदहवीं शताब्दी है।
- प्रसिद्ध अद्वैतवादी विद्वान् आत्मानन्द ने सूक्त पर आध्यात्मिक भाष्य लिखा है।
- आत्मानन्द ने अपने भाष्य के अन्त में स्वयं कहा है कि स्कन्दस्वामी आदि के भाष्य 'यज्ञपरक ' है निरुक्त अधिदेव परक है, परन्तु यह भाष्य 'अध्यात्म विषयक' है -
  अधियज्ञविषयकं स्कन्दादिभाष्यम् निरुक्तमधिदैवतविषयम्, इदन्तु भाष्यमध्यात्मविषयमिति। न च भिन्नविषयाणां विरोधः अस्य भाष्यस्य मूलं विष्णुधर्मोत्तरम्।

सायण -

- सायण आन्ध्रप्रान्त के अन्तर्गत तुङ्गभद्रा नदी के दक्षिणतट पर स्थित विजयनगर राज्य के निवासी थे।
- वैदिक भाष्यकारों में सायण का स्थान सर्वोच्च है।
- सायण मेधावी मनीषी तो थे ही इसके अतिरिक्त वे विजयनगर के संस्थापक राजा 'बुक्क' तथा महाराज 'हरिहर' के अमात्य भी थे।

- सायण के पिता का नाम मायण और माता का नाम श्रीमती/श्रीमायी था।
- सायण का समय 1317-1387 ई. तक माना जाता है।
- बड़े भाई का नाम माधव तथा छोटे भाई का नाम भोगनाथ था।
- सायण के तीन गुरु थे - विद्यातीर्थ, भारतीतीर्थ तथा श्रीकण्ठ।
- सायण भारद्वाज गोत्र के थे।
- सायण के तीन पुत्र थे - कम्पण, मायण और शिंगण।
- इन्होंने अपने शरीर का त्याग (72 वर्ष की अवस्था में) 1387 ई॰ में किया।
- सायण ने अनेक विद्वानों की सहायता से चारों वेदों पर प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण भाष्य लिखा है। उनके सहयोगी विद्वान् नरहरि सोमयाजी, नारायण वाजपेयी और पण्डरी दीक्षित थे।
- सायण ने इन सुप्रसिद्ध वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के ऊपर अपने भाष्यों की रचना की है-
  1. तैत्तिरीय संहिता (कृष्णयजुर्वेद)
  2. ऋग्वेद संहिता
  3. सामवेद संहिता
  4. काण्व संहिता (शुक्लयजुर्वेद)
  5. अथर्ववेद संहिता

सायणाचार्य द्वारा व्याख्यात ब्राह्मण तथा आरण्यक

1. कृष्णयजुर्वेदीय ब्राह्मण

1. तैत्तिरीय ब्राह्मण   2. तैत्तिरीय आरण्यक

2. ऋग्वेदीय ब्राह्मण

1. ऐतरेय ब्राह्मण   2. ऐतरेय आरण्यक

3. सामवेदीय ब्राह्मण

1. ताण्ड्य ब्राह्मण   2. षड्विंश ब्राह्मण   3. सामविधान ब्राह्मण
4. आर्षेय ब्राह्मण   5. देवताध्याय ब्राह्मण   6. उपनिषद् ब्राह्मण
7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण   8. वंशब्राह्मण

- शुक्लयजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण पर भी सायण का भाष्य उपलब्ध है।
- सायण ने अन्त में अथर्वभाष्य लिखा है।
- सायणाचार्य ने 5 संहिताओं के भाष्य तथा 13 ब्राह्मण आरण्यकों की व्याख्या लिखी ।
- सायण ने अपने ऋग्वेदभाष्य का नाम 'वेदार्थप्रकाश' रखा है। इसके अतिरिक्त इन्होंने अपने कई ग्रन्थों के पहले 'माधवीय' शब्द का प्रयोग किया है।
- सायण की एक रचना 'माधवीया धातुवृत्ति' के नाम से प्रसिद्ध है।
- सम्भवतः इन्होंने अपने बड़े भाई माधव के सम्मान के लिए 'माधवीया' नामकरण किया है।
- सायणाचार्य ने वैदिक ग्रन्थों के उपरान्त अपनी विद्वत्ता को अनेक साहित्यिक क्षेत्रों में प्रसृत किया।

वेद भाष्य के उपरान्त भी सायण ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया - ये ग्रन्थ अधोलिखित हैं -

1. सुभाषित सुधानिधि -

- इस ग्रन्थ का प्रणयन प्रथम आश्रयदाता कम्पण के राज्यकाल (1340 -1354) में हुआ था।

2. प्रायश्चित्त सुधानिधि -

इस ग्रन्थ की रचना सायण ने (1355ई॰) में की थी।

3. आयुर्वेद सुधानिधि -

- इस ग्रन्थ में सायण ने आयुर्वेद के रहस्यों को उद्घाटित किया है। इसका उल्लेख स्वयं सायण ने 'अलङ्कारसुधानिधि ' में किया है।

4. अलङ्कार सुधानिधि -

- इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने समस्त अलंकारों के लक्षण तथा उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। दक्षिण के प्रसिद्ध विद्वान् अप्पयदीक्षित ने इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है।

धातुवृत्ति -

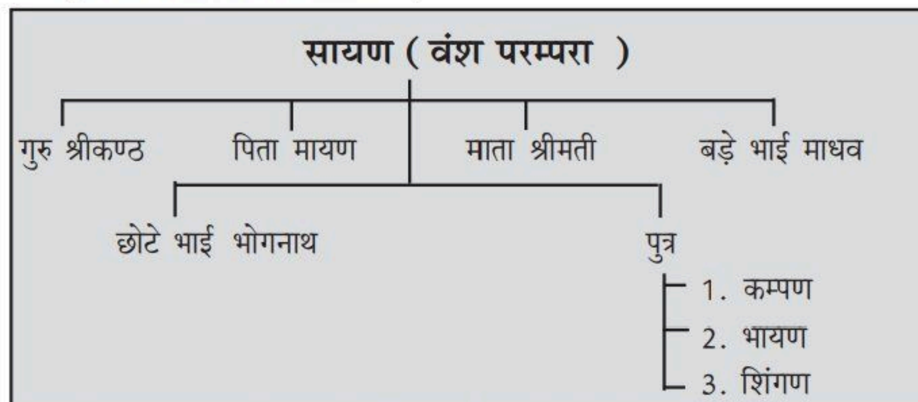
- वैयाकरणों में यह धातुवृत्ति 'माधवीया धातुवृत्ति' के नाम से जानी जाती है।
- वस्तुतः यह रचना सायण की है तथापि ग्रन्थारम्भ में भी सायण विरचित होने पर भी इसे 'माधवीया' नाम से व्यवहृत किया गया है।

मुद्गल -

- मुद्गल भाष्य प्रथमाष्टक पर पूर्ण और चतुर्थाष्टक पर पाँच अध्यायों तक मिलता है।
- मुद्गल सायणानुयायी थे एक तरह से सायण भाष्य का ही संक्षेप मुद्गल भाष्य है।
- मुद्गल का काल 15 वीं शताब्दी माना जाता है।

रावण -

- वेद भाष्यकारों में 'रावण' का नाम भी आदर के साथ लिया जाता है।
- वेद - भाष्यकारों रावण एवं रामायण के प्रसिद्ध रावण (दशानन) एक हैं अथवा भिन्न इस विषय में अनेक विसंगतियाँ हैं।



- सायण ने सर्वप्रथम कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता पर अपना भाष्य लिखा। ये तैत्तिरीय शाखाध्यायी ब्राह्मण थे। अतः उस पर प्रथमतः भाष्य लिखना स्वाभाविक था।

सायणभाष्य क्रमानुसार

- कृष्ण यजुर्वेद
- ऋग्वेद की शाकल संहिता
- शुक्लयजुर्वेद की काण्वसंहिता
- सामवेद की कौथुम संहिता
- अथर्ववेद की शौनक संहिता
- सामवेद के आठों ब्राह्मणों पर भाष्य

1. ताण्ड्य ब्राह्मण 2. षड्विंश ब्राह्मण 3. सामविधान ब्राह्मण
4. आर्षेय ब्राह्मण 5. देवताध्याय 6. उपनिषद् ब्राह्मण
7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण 8. वंश ब्राह्मण

यजुर्वेद भाष्यकार (माध्यन्दिन संहिता)

➢ **उव्वट-** यह नाम उव्वट और उवट दोनों प्रकार से लिखा जाता है ।

➢ माध्यन्दिन भाष्यों में उवट का भाष्य अतीव विख्यात है ।

➢ ये आनन्दपुर निवासी 'वज्रट' के पुत्र थे । इन्होनें 11 वीं शती के अन्त में महाराजा भोज के शासनकाल में अवन्ती में रहकर इस भाष्य की रचना की ।

आनन्दपुरवास्तव्यवज्रटाख्यस्य सूनुना ।
उव्वटेन कृतं भाष्यं पदवाक्यैः सुनिश्चितैः ॥
ऋष्यादींश्च पुरस्कृत्य अवन्त्यामुव्वटो वसन् ।
मन्त्राणां कृतवान् भाष्यं महीं भोजे प्रशासति ॥

➢ उव्वट का समय ग्यारहवीं शताब्दी का मध्यकाल माना जाता है ।
इन्होंने शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर एक भाष्य लिखा है जिसका नाम उव्वट भाष्य है।

➢ इसके दो पाठ हैं - काशी पाठ और महाराष्ट्र पाठ ,इनका भाष्य अत्यन्त प्रामाणिक माना जाता है ।

➢ इसके अतिरिक्त इन्होंने ऋक्प्रातिशाख्य की टीका ,यजुः प्रातिशाख्य की टीका, ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य और ईशावास्योपनिषद् पर भाष्य लिखा है । ये ग्रन्थ प्रकाशित हैं-

➢ उव्वट-भाष्य-

* शुक्लयजुर्वेद (वेददीप)
* ऋक् प्रातिशाख्य की टीका
* यजुः प्रातिशाख्य की टीका
* ऋक्सर्वानुक्रमणी पर भाष्य
* ईशोपनिषद् पर भाष्य

निवास स्थान	पिता	राजा	समय	भाष्य नाम
आनन्दपुर	वज्रट	महाराजा भोज	11 वीं शती	उव्वट भाष्य

महीधर -

- वाजसनेय संहिता का अन्य प्रसिद्ध भाष्य महीधर भाष्य कृत 'वेददीप' है । महीधर 'काशी' के निवासी नागर ब्राह्मण थे ।
- इस भाष्य की रचना सत्रहवीं शती में हुई । इन्होंने एक तन्त्रग्रन्थ 'मन्त्रमहोदधि' (1588 ई.) भी लिखा है ।
- वेद शब्दप्रधान शास्त्र हैं उनके त्रिविध अर्थ हैं - आधिदैविक , आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक।
- इन्होंने यजुर्वेद पर उव्वट के भाष्य को ही आधार बनाया है और उसका विस्तार किया है।
- इन्होंने सम्बद्ध अंशों पर शतपथ ब्राह्मण आदि के अंश प्रमाण रूप में उद्धृत हैं।

शौनक

- माध्यन्दिन संहिता के 31 वें अध्याय पर ऋषि शौनक का भाष्य उपलब्ध है।
- इसमें 'अपरे' 'केचित्' कहकर उन्होंने अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन भाष्यकारों के मतों का उल्लेख किया है ।

धर्मसम्राट् करपात्री स्वामी -

- आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व सम्पूर्ण भारतवर्ष में नास्तिकवाद चरम सीमा पर था।
- सर्वत्र वेद-निन्दा, यज्ञ-निन्दा, ईश्वर-निन्दा का प्रचार व्याप्त था ।
- उस समय विद्वानों के समक्ष एक समस्या अत्यधिक ज्वलन्त थी कि 'को वेदानुद्धरिष्यति' वेदों का उद्धार कौन करेगा? ऐसे विषम समय में आद्य जगद्गुरुशंकरभगवत्पाद ने आर्यावर्त में अवतरित होकर निरीश्वरवादी मतमतान्तरों का समूलोन्मूलन कर वैदिक धर्म को पुनः प्रतिष्ठित किया था ।
- शुक्लयजुर्वेद संहिता के 20 वीं शताब्दी के प्रमुख भाष्यकार स्वामी करपात्री जी हैं जिन्होंने अत्यन्त दुरूह प्रतीत होने वाले मन्त्रों का रहस्य पुनः प्रकाशित किया। करपात्री स्वामी जी के कतिपय प्रमुख ग्रन्थ निम्नलिखित हैं -

  1- वेद -प्रामाण्यमीमांसा 2- वेदस्वरूपविमर्श
  3- वेद का स्वरूप और प्रामाण्य (दो खण्ड)
  4- श्रीविद्यारत्नाकर 5- भक्तिरसार्णव
  6- श्रीविद्यावरिवस्या 7- चातुर्वर्ण्यसंस्कृतविमर्श
  8- मार्क्सवाद और रामराज्य 9- रामायण मीमांसा
  10- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू धर्म
  11- धर्म और राजनीति 12- भक्तिसुधा
  13- समन्वय साम्राज्य संरक्षण
- वेदभाष्य चारों वेदों पर लिखा है,जिसका प्रकाशन शनैः शनैः चल रहा है। इसप्रकार साहित्य सेवा करते हुए युगद्रष्टा महापुरुष श्री महाराज करपात्री स्वामी का महानिर्वाण सन् 1982 ई. में हुआ।

स्वामी दयानन्द -

- आधुनिक युग में वेदोद्धार का सूत्रपात 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' ने किया।

- अंग्रेजी शासकों की 'विभाजन करो और राज करो' की नीति से विस्खलित हिन्दू समुदाय को एकत्रित करने का महान् प्रयास कर स्वामी दयानन्द ने भारतीय इतिहास को नया मोड़ प्रदान किया था।
- स्वामी जी का जन्म संवत् 1881 में हुआ था। वे सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण थे।
- स्वामी जी ने 'ऋग्वेदभाष्य भूमिका' लिखी थी , जिसका प्रकाशन संवत् 1935 में हुआ था।
- यह भाष्य ऋग्वेद के 7 मण्डल, 2 सूक्त और 2 मन्त्र तक ही हो सका था, इसी बीच स्वामी जी का देहान्त 1940 संवत् में हो गया।
- स्वामी दयानन्द ने अपने वेदोद्धार के प्रयास में अनेक असफल वैदिक मान्यताओं का उपस्थापन किया था, अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो गयी थी, जिनका खण्डन अनेक विद्वानों ने किया है जिनमें प्रमुख भारतीय कांग्रेस के जन्मदाता मि0 ह्यूम, प्रो0 ग्रिफिथ एवं परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री करपात्रीस्वामी आदि विद्वान् हैं।

काण्वसंहिता-भाष्य

आनन्दबोध -

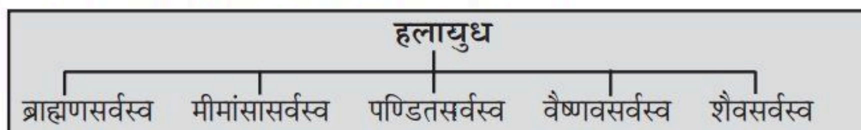
- 'जातवेद भट्टोपाध्याय' के पुत्र आनन्दबोध ने सम्पूर्ण काण्वसंहिता पर 'काण्ववेदमन्त्र-भाष्य-संग्रह' की रचना की है।
- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की 'सारस्वतसुषमा' पत्रिका में (संवत् - 2009-2011) आनन्दबोध भाष्य के अन्तिम दश अध्याय का भाष्य प्रकाशित हुआ था ।
- अपने भाष्य में इन्होंने ऋषि, देवता, छन्द आदि का निर्देश किया है। इनके भाष्य पर पूर्ववर्ती भाष्यकार उवट एवं महीधर के भाष्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

हलायुध -

- हलायुध ने काण्वसंहिता पर 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामक भाष्य लिखा है । इसके अतिरिक्त मीमांसासर्वस्व,वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व और पण्डितसर्वस्व आदि ग्रन्थ भी हलायुध प्रणीत माने जाते हैं किन्तु ये अप्रकाशित और अनुपलब्ध हैं ।
- हलायुध बङ्गाल नरेश लक्ष्मणसेन के दरबार में धर्माधिकारी थे ।

'बाल्ये ख्यापितराजपण्डितपदं श्वेतार्चिबिम्बोज्ज्वल
छत्रोत्सिक्तमहामहस्तमुपदं दत्वा नवे यौवने।
यस्मै यौवनशेषयोग्यमखिलक्ष्मापालनारायणः
श्रीमान् लक्ष्मणसेनदेवनृपतिर्धर्माधिकारः ददौ॥'

- लक्ष्मणसेन ने (1170-1200) के मध्य शासन किया था। अतः हलायुध का समय बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध रहा होगा।
- ये वत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे । इनके पिता धनञ्जय थे।



अनन्ताचार्य-

- ये काण्वशाखीय ब्राह्मण थे । इनके पिता का नाम 'नागेशभट्ट' और माता का नाम 'भागीरथी' था।
- ये काशी-निवासी थे। इन्होंने संहिता के उत्तरार्ध (21अध्याय से 40अध्याय) पर अपना भाष्य लिखा है।
- इसके अतिरिक्त 'भाषिकसूत्र-भाष्य' 'यजुः प्रातिशाख्य-भाष्य' और 'शतपथब्राह्मण भाष्य' (13वें काण्ड) भी बनाया।
- इनका स्थिति-काल 16वीं शती माना जाता है।
- पं0 रामगोविन्द त्रिवेदी जी ने इन्हें 18 वीं शताब्दी का भाष्यकार माना है । अनन्ताचार्य (भाष्य)- 1.संहिता के उत्तरार्ध पर 2.भाषिकसूत्र-भाष्य 3.प्रातिशाख्य भाष्य 4. शतपथ ब्राह्मण भाष्य

कृष्णयजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता)

भवस्वामी-

- इन्होनें तैत्तिरीयसंहिता पर अपना भाष्य लिखा।
- भट्टभास्कर मिश्र ने अपनी तैत्तिरीय - संहिता के भाष्यारम्भ में 'भवस्वाम्यादिभाष्य' से भवस्वामी के भाष्य का अस्तित्व स्वीकार किया है। परन्तु यह भाष्य उपलब्ध नहीं हो सका है।
- इनका स्थितिकाल अनुमानतः 'विक्रम' से 800 वर्ष पूर्व होना चाहिए।

गुहदेव -

- 8वीं या 9वीं शती ई0.में इन्होंने तैत्तिरीय संहिता का भाष्य लिखा था।
- देवराज यज्वा ने अपने निघण्टु भाष्य में इन्हें भाष्यकार कहा है।
- रामानुजाचार्य ने अपने ग्रन्थ 'वेदार्थ संग्रह' ग्रन्थ में स्वशिष्यरूपेण गुहदेव का उल्लेख किया है।
- इनका समय विक्रम से 800 वर्ष पूर्व होना चाहिए ।

भट्टभास्कर मिश्र -

- तैत्तिरीय संहिता के उपलब्ध भाष्यों में भट्टभास्कर मिश्र के भाष्य का प्रथम स्थान है।
- स्थितिकाल की दृष्टि से ये 11 वीं शताब्दी के भाष्यकार हैं।
- आचार्य भास्कर मिश्र ने मङ्गलाचरण में शिव को प्रणाम किया है। इससे प्रतीत होता है कि ये शैव थे।
- ये कौशिक गोत्रीय शैव थे।
- देवराज यज्वा एवं सायण ने भाष्यों में बहुशः भट्टभास्कर भाष्य को उद्धृत किया है।
- इनके भाष्य का नाम 'ज्ञानयज्ञ' है ।
- तैत्तिरीय संहिता के उल्लिखित प्रमुख भाष्यकारों के अतिरिक्त क्षुर,वेंकटेश,बालकृष्ण,शत्रुघ्न आदि विद्वान् आचार्यों के भाष्य होने के संकेत हैं ,परन्तु उनके विषय में विस्तृत उल्लेख नही किया है।

सामवेद के भाष्यकार

माधव -

- सामवेद के प्रथम भाष्यकार हैं। इन्होने सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य लिखा है । भाष्य का नाम 'विवरण' है।

- इनका प्रथम भाष्यकार (7वीं शती) के समय प्रतीत होता है ।
- इन्होंने संहिता के पूर्वार्द्ध के विवरण को 'छन्दरसिका' एवं उत्तरार्द्ध को उत्तरविवरण नाम से विवृत किया है।
- प्रसिद्ध वेदानुसन्धानकर्त्ता पं0 सत्यव्रत सामश्रमी ने सामवेद के सायण भाष्य के साथ 'सामविवरण' को टिप्पणी के रूप में सर्वप्रथम प्रकाशित किया है ।

भरतस्वामी-

- सम्पूर्ण साम-संहिता पर भाष्य लिखने वाले विद्वान् आचार्यों में 'भरत स्वामी' का भाष्य भी समादृत है।
- इनका गोत्र कश्यप था। इनके पिता का नाम 'नारायण' और माता का नाम 'यज्ञदा' था -

इत्थं श्री भरतस्वामी काश्यपो यज्ञदासुतः।
नारायणार्यतनयो व्याख्यात् साम्नामृचोऽखिलः।।

- भाष्यकार भरत स्वामी ने भाष्यारम्भ में स्वविषयक कुछ वृत्त दिया है । इन पद्यों से यह ज्ञात होता है कि '**श्री रङ्गपट्टम्**' में रहते हुए होसलाधीश्वर रामनाथ के राज्यकाल में भरतस्वामी ने अपने भाष्य की रचना की।
- इतिहासकारों के अनुसार होसलावंश के ख्यातनामा वीर रामनाथ का शासनकाल 13 वीं शती माना जाता है। अतः भरतस्वामी का भी स्थिति काल 13 वीं शताब्दी सिद्ध होता है।

गुणविष्णु

- (12 वीं शती ई॰ का उत्तरार्ध) इन्होंने सामवेद की कौथुम शाखा पर छान्दोग्य-मन्त्रभाष्य लिखा है।
- इसके दो अन्य ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं-

  1. मन्त्रब्राह्मण भाष्य 2. पारस्कर गृह्यसूत्र - भाष्य

अथर्ववेद-संहिता भाष्य

- अथर्ववेद संहिता पर केवल सायण का ही भाष्य प्राप्त होता है और प्रकाशित भी है।
- सायणाचार्य ने अन्य वैदिक संहिताओं पर भाष्य लिखने के बाद अन्त में यह भाष्य लिखा।
- भाष्य के आरम्भ में इन्होंने इस वेद की असाधारण विशेषता को बताया है।
- इसका आशय यह है कि 'परलोक में फल देने वाले तीनों वेदों का (ऋक्, यजु, साम)' भाष्य रचने के पश्चात् लोक, परलोक दोनों में फल देने वाले चतुर्थ वेद अथर्ववेद का भाष्य किया है।

  ऐहिकामुष्मिकफलं चतुर्थं व्याचिकीर्षति ।।

- सायण ने पूरे अथर्ववेद पर भाष्य लिखा था, परन्तु प्रकाशित ग्रन्थों में केवल इन काण्डों 1 से 4,6से 8,11,17 से 20 काण्ड) का ही भाष्य मिलता है।

❑❑

12. वैदिक सूक्त संग्रह

1. अग्निसूक्त (1.1)

मण्डल-1, **सूक्त**-1 **कुल मन्त्र**-9, **ऋषि**- मधुच्छन्दा,
देवता - अग्नि, **छन्द**-गायत्री, **स्वर** - षड्ज

1. अग्निमीळे पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

अर्थ- यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

2. अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति॥

अर्थ- प्राचीन ऋषियों ने जिसकी स्तुति की थी, आधुनिक ऋषि जिसकी स्तुति करते हैं, वह अग्नि, देवों को इस यज्ञ में बुलावें।

3. अग्निना रयिमश्नवत्, पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम्॥

अर्थ- अग्नि के अनुग्रह से यजमान को धन मिलता है और वह धन अनुदिन बढ़ता और कीर्तिकर होता है तथा उनसे अनेक वीर पुरुषों की नियुक्ति की जाती है।

4. अग्ने यं यज्ञमध्वरं, विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति॥

अर्थ- हे अग्निदेवता! जिस यज्ञ को तुम चारों ओर से घेरे रहते हो, उसमें राक्षसादि-द्वारा हिंसा कर्म सम्भव नहीं है और वही यज्ञ देवों को तृप्ति देने स्वर्ग जाता है या देवताओं का सामीप्य प्राप्त करता है।

5. अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत्॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम होता, अशेषबुद्धिसम्पन्न या सिद्ध-कर्मा, सत्यपरायण, अतिशय कीर्ति से युक्त और दीप्तिमान् हो। देवों के साथ इस यज्ञ में आओ।

6. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम जो हविष् देने वाले यजमान का कल्याण साधन करते हो, वह कल्याण, हे अङ्गिर! तुम्हारा ही प्रीति साधक है।

7. उप त्वाग्ने दिवेदिवे, दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥

अर्थ- हे अग्नि! हम अनुदिन, दिन-रात, अन्तस्तल के साथ तुम्हें नमस्कार करते-करते तुम्हारे पास आते हैं।

8. राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्।
वर्धमानं स्वे दमे॥

अर्थ- हे अग्नि! तुम प्रकाशमान, यज्ञ रक्षक, कर्मफल के द्योतक और यज्ञशाला में वर्धनशाली हो।

9. स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥

अर्थ- जिस तरह पुत्र-पिता को आसानी से पा जाता है, उसी तरह हम भी तुम्हें पा सकें या तुम हमारे अनायास-लभ्य बनो और हमारा मंगल करने के लिए हमारे पास निवास करो।

2. वरुणसूक्त (1.25)

मण्डल-1, **सूक्त-**25 **कुल मन्त्र-**21, **ऋषि-** अजीगर्त शुनःशेप, **देवता -** वरुण, **छन्द-**गायत्री, **स्वर-**षड्ज

1. यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम्।
मिनीमसि द्यविद्यवि॥

अर्थ- जिस तरह संसार के मनुष्य वरुणदेव के व्रतानुष्ठान में भ्रम करते हैं, उसी तरह हम लोग भी दिन-दिन प्रमाद करते हैं।

2. मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः।
मा हृणानस्य मन्यवे॥

अर्थ- वरुण! अनादर कर और घातक बनकर तुम हमारा वध नहीं करना। क्रुद्ध होकर हमारे ऊपर क्रोध नहीं करना।

3. वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न संदितम्।
गीर्भिर्वरुण सीमहि॥

अर्थ- वरुणदेव, जिस प्रकार रथ का स्वामी अपने थके हुए घोड़ों को शान्त करता है, उसी प्रकार सुख के लिए स्तुति-द्वारा हम तुम्हारे मन को प्रसन्न करते हैं।

4. परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये।
वयो न वसतीरुप॥

अर्थ- जिस तरह चिड़ियाँ अपने घोसलों की ओर दौड़ती हैं, उसी तरह हमारी क्रोध-रहित चिन्तायें भी धन-प्राप्ति की ओर दौड़ रही हैं।

5. कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे। मृळीकायोरुचक्षसम्॥

अर्थ- वरुणदेव बलवान् नेता और असंख्य लोगों के द्रष्टा हैं। सुख के लिए हम कब उन्हें यज्ञ में ले आवेंगे।

6. तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छतः। धृतव्रताय दाशुषे॥

अर्थ- यज्ञ करने वाले हव्यदाता के प्रति प्रसन्न होकर मित्र और वरुण यह साधारण हव्य ग्रहण करते हैं, त्याग नहीं करते।

7. वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम्। वेद नावः समुद्रियः॥

अर्थ- जो वरुण अन्तरिक्षचारी चिड़ियों का मार्ग और समुद्र की नौकाओं का मार्ग जानते हैं।

8. वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते॥

अर्थ- जो व्रतावलम्बन करके अपने-अपने फलोत्पादक बारह महीनों को जानते हैं और उत्पन्न होने वाले तेरहवें मास को भी जानते हैं।

9. वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः। वेदा ये अध्यासते॥

अर्थ- जो वरुणदेव विस्तृत शोभन और महान् वायु का भी पथ जानते हैं और जो ऊपर आकाश में, निवास करते हैं, उन देवों को भी जानते हैं।

10. नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्याऽस्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः॥

अर्थ- धृतव्रत और शोभन कर्मा वरुणदैवी सन्तानों के बीच साम्राज्य संसिद्धि के लिए आकर बैठे थे।

11. अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा॥

अर्थ- ज्ञानी मनुष्य वरुण की कृपा से वर्तमान और भविष्यत् - सारी अद्भुत घटनाओं को देखते हैं।

12. स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा करत्।
प्र ण आयूंषि तारिषत्॥

अर्थ- वही सत्कर्म परायण और अदिति-पुत्र वरुण हमें सदा सुपथगामी बनावें,। हमारी आयु बढ़ावें।

13. बिभ्रद्द्रापिं हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम्।
परि स्पशो नि षेदिरे॥

अर्थ- वरुण सोने का वस्त्र धारण कर अपना पुष्ट शरीर ढ़ँकते हैं, जिससे चारों ओर हिरण्यस्पर्शी किरणें फैलती हैं।

14. न यं दिप्सन्ति दिप्सवो न द्रुह्वाणो जनानाम्।
न देवमभिमातयः॥

अर्थ- जिस वरुण देव से शत्रु लोग शत्रुता नहीं कर सकते, मनुष्यपीड़क जिसे पीड़ा नहीं दे सकते, और पापी लोग जिस देव के प्रति पापाचरण नहीं कर सकते।

15. उत यो मानुषेष्वा यशश्चक्रे असाम्या। अस्माकमुदरेष्वा॥

अर्थ- जिन्होंने मनुष्यों विशेषतः हमारी उदर-पूर्ति के लिए यथेष्ट अन्न तैयार कर दिया है।

16. परा मे यन्ति धीतयो। गावो न गव्यूतीरनु। इच्छन्तीरुरुचक्षसम्॥

अर्थ- बहुतों ने उस वरुण को देखा है। जिस प्रकार गौएँ गौशाला की ओर जाती हैं, उसी प्रकार निवृत्तिरहित होकर हमारी चिन्ताएँ वरुण की ओर जा रही हैं।

17. सं नु वोचावहै पुनर्यतो मे मध्वाभृतम्। होतेव क्षदसे प्रियम्॥

अर्थ- वरुण! चूँकि मेरा मधुर हव्य तैयार है। इसलिए होता की तरह तुम वही प्रिय हव्य भक्षण करो। अनन्तर हम दोनों बाते करेंगे।

18. दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि। एता जुषत मे गिरः॥

अर्थ- सर्व- दर्शनीय वरुण को मैंने देखा है। भूमि पर कई बार, उनका रथ मैंने देखा है। उन्होंने मेरी स्तुति ग्रहण की है।

19. इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके॥

अर्थ- वरुण! मेरा यह आह्वान सुनो। आज मुझे सुखी करो। तुम्हारी रक्षा का अभिलाषी होकर मैं तुम्हें बुलाता हूँ।

20. त्वं विश्वस्य मेधिर दिवश्च ग्मश्च राजसि। स यामनि प्रति श्रुधि ॥

अर्थ- मेधावी वरुण! तुम द्युलोक, भूलोक और समस्त संसार में दीप्तिमान् हो। हमारी रक्षा-प्राप्ति के लिए प्रार्थना सुनने के अनन्तर तुम उत्तर दो।

21. उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत। अवाधमानि जीवसे।

अर्थ- हमारे ऊपर का पाश ऊपर से खोल दो, मध्य नीचे का पाश भी खोल दो, जिससे हम जीवित रह सकें।

3. सूर्य सूक्त (1.115)

मण्डल-1, **सूक्त-**115 **कुल मन्त्र-**6, **ऋषि-** अङ्गिरस कुत्स, **देवता -** सूर्य, **छन्द-**त्रिष्टुप्, **स्वर-**धैवत।

1. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥

अर्थ- विचित्र तेजः पुञ्ज तथा मित्र, वरुण और अग्नि को चक्षुस्वरूप सूर्य उदित हुये हैं। उन्होंने द्यावा-पृथिवी और अन्तरिक्ष को अपनी किरणों से परिपूर्ण किया है। सूर्य जंगम और स्थावर-दोनों की आत्मा है।

2. सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां, मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि, वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् ॥

अर्थ- जैसे पुरुष स्त्री का अनुगमन करता है, वैसे ही सूर्य भी दीप्तिमती उषा के पीछे-पीछे आते हैं। इसी समय देवाभिलाषी मनुष्य बहु-युग-प्रचलित यज्ञ कर्म का विस्तार करते हैं। सुफल के लिए कल्याण-कर्म को सम्पन्न करते हैं।

3. भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः ॥

अर्थ- सूर्य की कल्याण-रूप हरि नाम के विचित्र घोड़े इस पथ से जाते हैं। वे सबके स्तुति-भाजन हैं। हम उनको नमस्कार करते हैं। वे आकाश के पृष्ठ-देश में उपस्थित हुए हैं। वे घोड़े तुरन्त ही द्यावापृथिवी चारों दिशाओं का परिभ्रमण कर डालते हैं।

4. तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥

अर्थ- सूर्य देव का ऐसा ही देवत्व और माहात्म्य है कि वे मनुष्यों के कर्म समाप्त होने के पहले ही अपने विशाल किरण-जाल का उपसंहार कर डालते हैं। जिस समय सूर्य अपने रथ से हरि नाम के घोड़ों को खोलते हैं, उस समय सारे लोकों में रात्रि अन्धकाररूप आवरण विस्तृत करती है।

5. तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥

अर्थ- उस समय मित्र और वरुण के अर्थात् उनसे उपलक्षित समग्र विश्व के देखने के लिए वास्तविक स्वरूप ज्ञान के लिए सूर्य आकाश के शिखर पर मध्य में अपने तेजोमय रूप प्रकाश को प्रकट करता है। इस सूर्य के हरे रंग के घोड़े या किरणें कभी तो विलक्षण व्यापक अपार चमकदार बल को अर्थात् तेज को निष्पादित करती हैं। दिन और रात्रि के चक्र को सूर्य ही प्रवर्तित करता है।

6. अद्या देवा उदिता सूर्यस्य, निरंहसः पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥

अर्थ- प्रदीप्त होती हुई हे सूर्य की रश्मियों! आज सूर्य के उदय होने पर तुम हमें पाप से छुड़ाओं और निन्द्यकर्मों से हमें बचाओं, और हमारी उस प्रार्थना का मित्र (हिंसा से रक्षा करने वाले सूर्य), वरुण (आवरण शक्ति से युक्त वरुण देव), अदिति (अखण्डनीय शक्तिशाली देवमाता), सिन्धु (स्यन्दन जलाभिमानी देवी), पृथिवी (भूलोक की अधिष्ठात्री धारणशील शक्ति) और द्यौ (द्यु लोक की अधिष्ठात्री दीप्तियुक्त शक्ति) अनुमोदन करें।

4. इन्द्र सूक्त (2.12)

मण्डल-2, **सूक्त-**12 **कुल मन्त्र-**15, **ऋषि-** गृत्समद, **देवता -** इन्द्र, **छन्द-**त्रिष्टुप्, **स्वर-**धैवत।

1. यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां, नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो प्रकाशित हैं, जिन्होंने जन्म के साथ ही देवों में प्रधान और मनुष्यों में अग्रणी होकर वीरकर्म-द्वारा सारे देवों को विभूषित किया था, जिनके शरीर-बल से द्यावा-पृथिवी भयभीत हुई थी और जो महती सेना के नायक थे, वे ही इन्द्र हैं।

2. यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने व्यथित, पृथिवी को दृढ़ किया है, जिन्होंने प्रकुपित पर्वतों को नियमित किया है। जिन्होंने प्रकाण्ड अन्तरिक्ष को बनाया है और जिन्होंने द्युलोक को निस्तब्ध किया है, वे ही इन्द्र हैं।

3. यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने वृत्र का विनाश करके सात नदियों को प्रवाहित किया है, जिन्होंने बल असुर-द्वारा रोकी हुई गायों का उद्धार किया था। जो दो मेघों के बीच से अग्नि को उत्पन्न करते हैं और जो समर-भूमि में शत्रुओं का नाश करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

4. येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि, यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवाँल्लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने समस्त विश्व का निर्माण किया है, जिन्होंने दासों को निकृष्ट और गूढ़ स्थान में स्थापित किया है, जो लक्ष्य जीतकर व्याध की तरह शत्रु के सारे धन को ग्रहण करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

5. यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरम् उतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन भयंकर देव के सम्बन्ध में लोग जिज्ञासा करते हैं, वे कहाँ हैं? जिनके विषय में लोग बोलते हैं कि वे नहीं हैं और जो शासक की तरह शत्रुओं का सारा धन विनष्ट करते हैं। विश्वास करो, वही इन्द्र हैं।

6. यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो समृद्ध धन प्रदान करते हैं, जो दरिद्र याचक और स्तोता को धन देते हैं और जो शोभन हनु या केहुनी वाले होकर सोमाभिषव-कर्ता और हाथों में पत्थर वाले यजमान के रक्षक हैं वे ही इन्द्र हैं।

7. यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! घोड़े, गायें, गाँव और रथ जिनकी आज्ञा के अधीन हैं, जो सूर्य और उषा को उत्पन्न करते हैं और जो जल प्रेरित करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

8. यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! दो सेनादल परस्पर मिलने पर जिन्हें बुलाते हैं, उत्तम-अधम दोनों प्रकार के शत्रु जिन्हें बुलाते हैं और एक ही तरह के रथों पर बैठे हुए दो मनुष्य जिन्हें नाना प्रकार से बुलाते हैं। वे ही इन्द्र हैं।

9. यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिनके न रहने से कोई विजयी नहीं हो सकता, युद्ध काल में रक्षा के लिए जिन्हें लोग बुलाते हैं, जो सारे संसार के प्रतिनिधि हैं और जो क्षय-रहित पर्वतादि को भी नष्ट करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

10. यः शश्वतो मह्येनो दधानान् अमन्यमानाञ्छर्वा जघान।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः ॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने वज्र द्वारा अनेक महापापी अपूजकों का विनाश किया है, जो गर्वकारी मनुष्य को सिद्धि प्रदान करते हैं और जो दस्युओं के हन्ता हैं वे ही इन्द्र हैं।

11. यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जिन्होंने पर्वत में छिपे शम्बर असुर को चालीस वर्ष खोजकर प्राप्त किया था और जिन्होंने बल-प्रकाशक अहि नाम के सोये हुये दैत्य का विनाश किया था, वे ही इन्द्र हैं।

12. यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् अवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! जो सप्तवर्ण या वराह, स्वपत, विद्युत्, महः, धूपि, स्वापि, गृहमेघ आदि सात रश्मिओं वाले, अभीष्टवर्षा और जिन्होंने वज्रबाहु होकर स्वर्ग जाने को तैयार रौहिण को विनष्ट किया था, वे ही इन्द्र हैं।

13. द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों या असुरों! द्यावा-पृथिवी उन्हें प्रणाम करती है। उनके बल के सामने पर्वत काँपते हैं और जो सोमपान कर्ता दृढांग वज्रबाहु और वज्र युक्त हैं, वे ही इन्द्र हैं।

14. यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः॥

अर्थ- मनुष्यों जो सोमाभिषवकर्ता यजमान की रक्षा करते हैं, जो पुरोडाश आदि पकानेवाले, स्तोता और स्तुतिपाठक यजमान की रक्षा करते हैं, वे ही इन्द्र हैं।

15. यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम॥

अर्थ- इन्द्र, दुर्धर्ष होकर सोमाभिषव-कर्ता और पाककारी यजमान को अन्न प्रदान करते हैं, इसीलिए तुम्हें सत्य हो। हम प्रिय और वीर पुत्र-पौत्र आदि से युक्त होकर चिरकाल तक तुम्हारे स्तोत्र का पाठ करेंगे।

5. उषस् सूक्त (3.61)

मण्डल-3, **सूक्त**-61 **कुल मन्त्र**-7, **ऋषि**- विश्वामित्र,
देवता - उषस्, **छन्द**-त्रिष्टुप्

1. उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।
पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे।।

अर्थ- हे अन्नवती तथा धनवती उषा! प्रकृष्ट ज्ञानवती होकर तुम स्तोत्र करने वाले स्तोता के स्तोत्र को ग्रहण करो। हे सबके द्वारा वरणीया, पुरातनी युवती की तरह शोभमाना और बहुस्तोत्रवती उषा, तुम यज्ञ कर्म को लक्ष्यकर आगमन करो।

2. उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती।
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये।।

अर्थ- हे मरणधर्म-रहिता, सुवर्णमय रथ वाली उषा देवी, तुम प्रिय सत्यरूप वचन का उच्चारण करने वाली हो। तुम सूर्य किरण के सम्बन्ध से शोभमाना होओ। प्रभूतबल युक्त जो अरुण-वर्ण अश्व हैं, वे सुखपूर्वक रथ में योजित किये जा सकते हैं। वे तुम्हें आवाहन करें।

3. उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः।
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व।।

अर्थ- हे उषा देवी, तुम निखिल भूतजात के अभिमुख आगमनशीला, मरणधर्म-रहिता और सूर्य की केतु-स्वरूपा हो। तुम आकाश में उन्नत होकर बहती हो। वे नवतरा उषा, तुम एक मार्ग में विचरण करने की इच्छा करती हुई आकाश में चलने वाले सूर्य के रथाङ्ग की तरह पुनः पुनः उसी मार्ग में प्रवृत्त हो।

4. अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।
स्व१र्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः।।

अर्थ- जो धनवती उषा वस्त्र की तरह विस्तीर्ण अन्धकार को क्षयित करती हुई सूर्य की पत्नी होकर गमन करती हैं, वही सौभाग्यवती और सत्य-कार्य शालिनी उषा द्युलोक और पृथिवी के अवसान से प्रकाशित होती है।

5. अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम्।
ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक्।।

अर्थ- हे स्तोताओं, तुम लोगों के अभिमुख उषादेवी शोभमाना होती हैं। तुम लोग नमस्कार-द्वारा उसकी शोभन स्तुति करो। स्तुति को धारण करने वाली उषा आकाश में उर्ध्वाभिमुख तेज को आश्रित करती है। रोचनशीला और रमणीय दर्शना उषा अतिशय दीप्त होती है।

6. ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ।
आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ।।

अर्थ- जो उषा सत्यवती है, उसे सब कोई द्युलोक के तेजः प्रभाव से जानते हैं। धनवती उषा नानाविध, रूप से युक्त होकर द्यावा-पृथिवी को व्याप्त करके रहती है। हे अग्नि, तुम्हारे अभिमुख आने वाली भासमाना उषा देवी से हवि की याचना करने वाले तुम रमणीय धन को प्राप्त करते हो।

7. **ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश ।**
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा ॥

अर्थ- वृष्टि द्वारा जल के प्रेरक आदित्य सत्यभूत दिवस के मूल में उषा का प्रेरण करके विस्तीर्ण द्यावा पृथिवी के मध्य में प्रवेश करते हैं। तदन्तर महती उषा मित्र और वरुण की प्रभास्वरूपा होकर सवर्ण की तरह अपनी प्रभा को अनेक देशों में प्रसारित करती हैं।

6. पर्जन्य-सूक्त (5.83)

मण्डल-5, **सूक्त-**83 **कुल मन्त्र-**10, **ऋषि-** अत्रि, **देवता -** पर्जन्य, **छन्द-**1, 5, 6, 7, 8, और 10 वे मन्त्र में त्रिष्टुप् 2, 3, 4 में जगती तथा 9 वें मन्त्र में अनुष्टुप्

1. **अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास।**
कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम्॥

अर्थ- हे स्तोता, तुम बलवान् पर्जन्य देव के अभिमुखवर्ती होकर उनकी प्रार्थना करो। स्तुति वचनों से उनका स्तवन करो। हविर्लक्षण अन्न से उनकी परिचर्या करो। जल वर्षक, दानशील, गर्जनकारी पर्जन्य वृष्टिपात द्वारा ओषधियों को गर्भ-युक्त करते हैं।

2. **वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात् ।**
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः ॥

अर्थ- पर्जन्य वृक्षों को नष्ट करते हैं, राक्षसों का वध करते हैं और महान् वध-द्वारा समग्र भुवन को भय प्रदर्शित करते हैं। गरजने वाले पर्जन्य पापियों का संहार करते हैं, अतएव निरपराधी भी वर्षण करने वाले पर्जन्य के निकट से भीत होकर पलायमान कर जाते हैं।

3. **रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन्नाविर्दूतान्कृणुते वर्ष्याँ३अह ।**
दूरात्सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत्पर्जन्यः कृणुते वर्ष्यं१नभः ॥

अर्थ- रथी जिस प्रकार से कसाघात-द्वारा अश्वों को उत्तेजित करके योद्धाओं को आविष्कृत करते हैं, उसी प्रकार पर्जन्य भी मेघों को प्रेरित करके वारिवर्षक मेघों को प्रकटित करते हैं। जब तक पर्जन्य जलद-समूह को अन्तरिक्ष में व्याप्त करते हैं, तब तक सिंह की तरह गरजने वाले मेघ का शब्द दूर में ही उत्पन्न होता है।

4. **प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः ।**
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति ॥

जब तक पर्जन्य वृष्टि द्वारा पृथिवी की रक्षा करते हैं, तब तक वृष्टि के लिए हवा बहती है। चारों तरफ बिजलियाँ चमकती रहती हैं, ओषधियाँ बढ़ती रहती हैं अन्तरिक्ष स्रवित होता

रहता है और सम्पूर्ण भुवन की हितसाधना में पृथिवी समर्थ होती रहती है।

5. **यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।**
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ॥

अर्थ- हे पर्जन्य, तुम्हारे ही कर्म से पृथिवी अवनत होती है, तुम्हारे ही कर्म से पाद-युक्त या खुर विशिष्ट पशु समूह पुष्ट बलवान् होते हैं या गमन करते हैं। तुम्हारे ही कर्म से ओषधियाँ विविध वर्ण धारण करती हैं। तुम हम लोगों को महान् सुख प्रदान करो।

6. **दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः।**
अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः॥

अर्थ- हे मरुतों, तुम लोग अन्तरिक्ष से हमलोगों के लिए वृष्टि प्रदान करो। वर्षणकारी और सर्वव्यापी मेघ की उदक धारा को क्षरित करो (वर्षाओ)। हे पर्जन्य, तुम जल सेंचन करके गर्जनशील मेघ के साथ हमलोगों के साथ अभिमुख आगमन करो। तुम वारिवर्षक और हम लोगों के पालक हो।

7. **अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन।**
दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः॥

अर्थ- पृथिवी के ऊपर तुम शब्द करो– गर्जन करो, उदक द्वारा ओषधियों को गर्भ-धारण कराओं, वारिपूर्ण रथ-द्वारा अन्तरिक्ष में परिभ्रमण करो, उदक धारक मेघ को वृष्टि के लिए आकृष्ट करो या विमुक्त बन्धन करो, उस बन्धन को अधोमुख करो, उन्नत और निम्नतम प्रदेश को समतल करो अर्थात् सब उदकपूर्ण हो।

8. **महान्तं कोशमुदचा निषिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।**
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः॥

अर्थ- हे पर्जन्य, तुम कोश स्थानीय (जल-भण्डार) महान् मेघ को ऊर्ध्व भाग में उत्तोलित करो एवं वहाँ से उसे नीचे की ओर क्षारित करो अर्थात् वारि वर्षण कराओ। अप्रतिहत वेगशालिनी नदियाँ पूर्वाभिमुख या पुरोभाग में प्रवाहित हों। जल-द्वारा द्यावा-पृथिवी को क्लिन्न (आर्द्र) करो। गौओं के लिए पानयोग्य सुन्दर जल प्रचुर मात्रा में हो।

9. **यत्पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।**
प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि॥

अर्थ- हे पर्जन्य, जब तुम गंभीर गर्जन करके पापिष्ठ मेघों को विदीर्ण करते हो, तब यह सम्पूर्ण विश्व और भूमि में अधिष्ठित चराचरात्मक पदार्थ हृष्ट होते हैं अर्थात् वृष्टि होने से सम्पूर्ण जगत् प्रसन्न होता है।

10. **अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ।**
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम्॥

अर्थ- हे पर्जन्य, तुमने वृष्टि की है। अभी वृष्टि संहारण करो। तुमने मरुभूमियों को सुगम्य बनाने के लिए जलयुक्त किया है। मनुष्यों के भोग के लिए ओषधियों को उत्पन्न किया है। प्रजाओं के समीप से तुमने स्तुतियाँ प्राप्त की है।

7. अक्ष-सूक्त (10.34)

मण्डल-10, **सूक्त**-34 **कुल मन्त्र**-14,
ऋषि- कवष ऐलूष, **देवता** - अक्षकृषि प्रशंसा, अक्षकितवनिन्दा
छन्द-सातवें मन्त्र में जगती, शेष में त्रिष्टुप्।

1. प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृतानाः।
सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान्।

अर्थ- बड़े-बड़े पासे जिस समय नक्शे (पाशा खेलने के स्थानों) के ऊपर इधर-उधर चलते हैं, उस समय उन्हें देखकर मुझे बड़ा आनन्द होता है। मूजवान् पर्वत पर उत्पन्न उत्तम सोमलता का रस पीकर जैसे प्रसन्नता होती है, वैसे ही बहेरे (वृक्ष) के काठ से बना अक्ष (पाशा) मेरे लिये प्रीति-प्रद और उत्साह-दाता है।

2. न मा मिमेथ न जिहीळ एषा शिवा सखिभ्य उत मह्यमासीत्।
अक्षस्याहमेकपरस्य हेतोरनुव्रतामप जायामरोधम्॥

अर्थ- मेरी यह रूपवती पत्नी कभी मुझसे उदासीन नहीं हुई, न कभी मुझसे लज्जित हुई वह पत्नी मेरी और मेरे बन्धुओं की विशेष सेवा-शुश्रषा करती थी। किन्तु केवल पासे के कारण मैंने उस परम अनुरागिणी भार्या को छोड़ दिया।

3. द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया रुणद्धि न नाथितो विन्दते मर्डितारम्।
अश्वस्येव जरतो वस्न्यस्य नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम्॥

अर्थ- जो जुआड़ी (कितव) जुआ खेलता है, उसकी सास उसकी निन्दा करती है,और उसकी स्त्री उसे छोड़ देती है। जुआड़ी किसी से कुछ माँगता है, तो उसे कोई नहीं देता। जैसे बूढ़े घोड़े को कोई नहीं खरीदता, वैसे ही जुआड़ी का कोई आदर नहीं करता।

4. अन्ये जायां परि मृशन्त्यस्य यस्यागृधद्वेदने वाज्य१क्षः।
पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम्॥

अर्थ- पासे का आकर्षण बड़ा कठिन है। यदि किसी के धन के प्रति अक्ष (पासे) की लोभ-दृष्टि हो जाय, तो पासे वाले की पत्नी व्यभिचारिणी हो जाती है। जुआड़ी के माता, पिता और सहोदर भ्राता कहते हैं- ''हम इसे नहीं जानते, जुआड़ियों, इसे पकड़कर ले जाओ''।

5. यदादीध्ये न दविषाण्येभिः परायद्भ्योऽव हीये सखिभ्यः।
न्युप्ताश्च बभ्रवो वाचमक्रतँ एमीदेषां निष्कृतं जारिणीव।

अर्थ- जिस समय मैं इच्छा करता हूँ कि, मैं अब पाशा नहीं खेलूँगा, उस समय साथी जुआड़ियों के पास से हट जाता हूँ किन्तु नक्शे पर पीले पासों को देखकर नहीं ठहरा जाता। जैसे भ्रष्टा नारी उपपति के पास जाती है, वैसे ही मैं भी जुआड़ियों के घर जाता हूँ।

6. सभामेति कितवः पृच्छमानो जेष्यामीति तन्वा३शूशुजानः।
अक्षासो अस्य वि तिरन्ति कामं प्रतिदीव्ने दधत आ कृतानि॥

अर्थ- जुआड़ी अपनी छाती फुलाकर कूदता हुआ जुए के अड्डे पर आता और कहता है कि, "मैं जीतूगाँ"। कभी-कभी पासा जुआड़ी की इच्छा पूरी करता है और कभी-कभी विपक्ष के जुआड़ी के लिए वह जो कुछ चाहता है, वह सब भी कभी सिद्ध हो जाता है।

7. अक्षास इदङ्कुशिनो नितोदिनो निकृत्वानस्तपनास्तापयिष्णवः ।
कुमारदेष्णा जयतः पुनर्हणो मध्वा संपृक्ताः कितवस्य बर्हणा ॥

अर्थ- किन्तु कभी-कभी वही पासा बेहाथ हो जाता है- अंकुश के समान चुभता है, बाण के सदृश छेदता है, छूरे के समान काटता है, तप्त पदार्थ के समान संताप देता है। जो जुआड़ी विजयी होता है, उसके लिये पासा पुत्र जन्म के समान आनन्द दाता होता है, मधुरिमा से युक्त होता है और मानो मीठे वचनों से संभाषण करता है; किन्तु हारे हुए जुआड़ी को तो प्रायः मार ही डालता है।

8. त्रिपञ्चाशः क्रीळति व्रात एषां देव इव सविता सत्यधर्मा ।
उग्रस्य चिन्मन्यवे ना नमन्ते राजा चिदेभ्यो नम इत्कृणोति ॥

अर्थ- तिरपन पासे नक्शे के ऊपर मिलकर विहार करते हैं- मानों सत्य-स्वरूप सूर्य देव संसार में विचरण करते हैं। कोई कितना बड़ा उग्र क्यों न हो। परन्तु पासा किसी के वश में नहीं आ सकता। राजा भी पासे को नमस्कार करते हैं।

9. नीचा वर्तन्त उपरि स्फुरन्त्यहस्तासो हस्तवन्तं सहन्ते ।
दिव्या अङ्गारा इरिणे न्युप्ताः शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति ॥

अर्थ- पासे कभी नीचे उतरते हैं और कभी ऊपर उठते हैं। इनके हाथ नहीं है, परन्तु जिनके हाथ हैं, वे इनसे हार जाते हैं। ये श्रीसम्पन्न हैं, जलते हुए अंगारे के समान ये नक्शे के ऊपर बैठे हैं। ये छूने में ठंडे हैं; किन्तु हृदय को जलाते हैं।

10. जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित् ।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति ॥

अर्थ- जुआड़ी की स्त्री दीन-हीन वेश में यातना भोगती रहती है, पुत्र कहाँ-कहाँ घूमा करता है- ऐसा सोचकर जुआड़ी की माता व्याकुल रहा करती है। जो जुआड़ी को उधार देता है, वह इस सन्देह में रहता है कि– "मेरा धन फिर मिलेगा या नहीं।" जुआड़ी बेचारा दूसरे के घर में रात काटा करता है।

11. स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं ततापान्येषां जायां सुकृतं च योनिम्।
पूर्वाह्णे अश्वान् युयुजे हि बभ्रून्त्सो अग्नेरन्ते वृषलः पपाद ॥

अर्थ- अपनी स्त्री की दशा देखकर जुआड़ी का हृदय फटा करता है। अन्यान्य स्त्रियों का सौभाग्य और सुन्दर अट्टालिका देखकर जुआड़ी को सन्ताप होता है। जो जुआड़ी प्रातः काल घोड़े की सवारी कर आता है, वही सन्ध्या-समय, दरिद्र के समान जाड़े से बचने के लिए आग तापता है- शरीर पर वस्त्र भी नहीं रहता।

12. यो वः सेनानीर्महतो गणस्य राजा व्रातस्य प्रथमो बभूव ।
तस्मै कृणोमि न धना रुणध्मि दशाहं प्राचीस्तदृतं वदामि ॥

अर्थ- पासो, तुम्हारे दल में जो प्रधान, सेनापति व राजा के समान हैं, उसको मैं अपनी

दसों अँगुलियाँ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। मैं सच्ची बात कहता हूँ कि मैं तुम लोगों से अर्थ नहीं चाहता।

13. अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः॥

अर्थ- जुआड़ी, कभी जुआ नहीं खेलना; खेती करना। कृषि से जो कुछ लाभ हो, उसी से सन्तुष्ट रहना- अपने को कृतार्थ समझना। इसी से स्त्री प्राप्त करोगे और अनेक गायें भी पाओगे। प्रभु सूर्य देव ने मुझसे ऐसा कहा है।

14. मित्रं कृणुध्वं खलु मृळता नो मा नो घोरेण चरताभि धृष्णु ।
नि वो नु मन्युर्विशतामरातिरन्यो बभ्रूणां प्रसितौ न्वस्तु ॥

अर्थ- पासो (अक्षो), हमें बन्धु जानो; हमारा कल्याण करो। हमारे ऊपर अपने दुर्द्धर्ष प्रभाव का प्रयोग नहीं करना। हमारा शत्रु ही तुम्हारी कोप-दृष्टि में गिरे। दूसरे तुममें फँसे रहें।

8. ज्ञान सूक्त (10.71)

मण्डल-10, **सूक्त**-71 **कुल मन्त्र**-11, **ऋषि**- बृहस्पति,
देवता - परब्रह्म ज्ञान, **छन्द**- नवम मन्त्र में जगती छन्द,
शेष दस मन्त्रों में त्रिष्टुप्

1. बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः॥

अर्थ- बृहस्पति (स्वात्मन्), बालक प्रथम पदार्थों का नाम भर ("तात") आदि रखते हैं; यह उनकी भाषा-शिक्षा का प्रथम सोपान है। इनका जो उत्कृष्ट और निर्दोष ज्ञान (वेदार्थज्ञान) गोपनीय है, वह सरस्वती के प्रेम से प्रकट होता है।

2. सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि॥

अर्थ- जैसे-सूप से सत्तू को परिष्कृत किया जाता है, वैसे ही बुद्धिमान् लोग बुद्धि-बल से परिष्कृत भाषा को प्रस्तुत करते हैं। उस समय विद्वान् लोग अपने अभ्युदय को जानते हैं। इनके वचन में मंगलमयी लक्ष्मी निवास करती हैं।

3. यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्तरेभा अभि सन्नवन्ते॥

अर्थ- बुद्धिमान् लोग यज्ञ के द्वारा वचन (भाषा) का मार्ग पाते हैं। ऋषियों के अन्तकरण में जो वाक् (भाषा) थी, उसको उन्होंने प्राप्त किया। उस वाणी (भाषा) को लेकर उन्होंने सारे मनुष्यों को पढ़ाया सातों छन्द इसी भाषा में स्तुति करते हैं।

4. उतत्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्नशृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मैतन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः॥

अर्थ- कोई-कोई समझकर व देखकर भी भाषा को नहीं समझते व देखते, कोई-कोई उसे

सुनकर भी नहीं सुनते। किसी-किसी के पास वाग्देवी स्वयं वैसे ही प्रकट होती हैं, जैसे सम्भोगाभिलाषी भार्या, सुन्दर वस्त्र धारण करके, अपने स्वामी के पास अपने शरीर को प्रकाश करती है।

5. उतत्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुः नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।
अधेन्वाचरति माययैष वाचं शुश्रुवान् अफलाम पुष्पाम्॥

अर्थ- विद्वन्मण्डली में किसी-किसी की यह प्रतिष्ठा है कि, वह उत्तम भावग्राही है और उसके बिना कोई कार्य नहीं हो सकता (ऐसे लोगों के कारण ही वेदार्थ ज्ञान होता है)। कोई-कोई असार-वाक्य का अभ्यास करते हैं। वे वास्तविक धेनु नहीं हैं- काल्पनिक, माया-मात्र धेनु हैं।

6. यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं श्रृणोत्यलकं श्रृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्॥

अर्थ- जो विद्वान् मित्र को छोड़ देता है, उसकी वाणी से कोई फल नहीं है। वह जो कुछ सुनता है, व्यर्थ ही सुनता है। वह सत्कर्म का मार्ग नहीं जान सकता।

7. अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः।
आदघ्नास उपकक्षास उत्वे ह्रदा इव स्नात्वा उत्वे ददृश्रे॥

अर्थ- जिन्हें आँखें हैं, कान हैं, ऐसे सखा समान-(ज्ञानी) मन के भाव को (ज्ञान को) प्रकाश करने में असाधारण होते हैं। कोई-कोई मुख तक जल वाले पुष्कर और कोई-कोई कटिपर्यन्त जल वाले तड़ाग के समान होते हैं कोई-कोई स्नान करने के उपयुक्त गंभीर ह्रद् के समान होते हैं।

8. ह्रदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं विजहुर्वेद्याभिरोहब्राह्मणो विचरन्त्युत्वे॥

अर्थ- जिस समय अनेक समान ज्ञानी ब्राह्मण हृदय से मनोगम्य वेदार्थों के गुण-दोष-परीक्षण के लिए एकत्र होते हैं, उस समय किसी-किसी व्यक्ति को कुछ ज्ञान नहीं होता। कोई-कोई स्तोत्रज्ञ (ब्राह्मण) वेदार्थ ज्ञाता होकर विचरण करते हैं।

9. इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः॥

अर्थ- जो व्यक्ति इस लोक में वेदज्ञ ब्राह्मणों के और परलोकीय देवों के साथ (यज्ञादि) कर्म नहीं करते, जो न तो स्तोता (ऋत्विक्) हैं, न सोम-यज्ञ कर्त्ता हैं, वे पापाश्रित लौकिक भाषा की शिक्षा के द्वारा, मूर्ख व्यक्ति के समान, लाङ्गल-चालक (हल जोतने वाले) बनकर कृषि - रूप बाना बुनते हैं।

10. सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय॥

अर्थ- यश (सोम) मित्र के समान कार्य करता है, यह सभा में प्राधान्य प्रदान करता है। इसे प्राप्त कर सब प्रसन्न होते हैं; क्योंकि यश के द्वारा दुर्नाम दूर होता है, अन्न-प्राप्ति होती है, बल मिलता है, नाना प्रकार से उपकार होता है।

11. ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वा वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उत्वः।।

अर्थ- एक जन अनेक ऋचाओं का स्तव करते हुये यज्ञानुष्ठान में सहायता करते हैं, दूसरे गायत्री छन्द में साम-गान करते हैं। ब्रह्मा नामक जो पुरोहित हैं, वे ज्ञात-विद्या (प्रायश्चित्त आदि) की व्याख्या करते हैं। अध्वर्यु पुरोहित यज्ञ के विभिन्न कार्य करते हैं।

9. पुरुष सूक्त (10.90)

मण्डल-10, **सूक्त-**90 **कुल मन्त्र-**16, **ऋषि-** नारायण, **देवता -**पुरुष, **छन्द-**अनुष्टुप्, अन्तिम मन्त्र में त्रिष्टुप्

1. सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

अर्थ- परमपुरुष (परमेश्वर) हजारों शिरों वाला, हजारों नेत्रों वाला तथा हजारों पैरों वाला है। वह भूमि को सभी ओर से आवृत्त कर दश अंगुल का अतिक्रमण कर अवस्थित हो गया है।

2. पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

अर्थ- यह सब कुछ-जो उत्पन्न हो चुका है, जो उत्पन्न होगा, इसके अतिरिक्त अमरता का स्वामी (पुरुष) तथा जो अन्न से बढ़ता है- वह सब पुरुष ही है।

3. एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

अर्थ- इतना इस पुरुष का ऐश्वर्य है और पुरुष इससे भी बड़ा है। समस्तप्राणी इसका चतुर्थांश मात्र हैं। इसका तीन-चौथाई अमृतरूप से द्युलोक में अवस्थित है।

4. त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत् साशनानशने अभि।।

अर्थ- तीन पादों से युक्त पुरुष ऊपर को उठ गया, फिर भी इसका चतुर्थांश यहीं रह गया। वह (पुरुष) भोजन करने वाले (चेतन) तथा न करने वाले (अचेतन) सभी को चारों ओर से व्याप्त कर लिया।

5. तस्माद् विराळजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।

अर्थ- उस (आदिपुरुष) से विराट् उत्पन्न हुआ। विराट् (व्यक्त जगत्) से अधिष्ठाता के रूप में पुरुष (जीवात्मा) उत्पन्न होकर जगत् के पीछे तथा आगे की भूमि से अतिक्रमण कर गया।

6. यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।।

अर्थ- जब देवताओं ने पुरुषरूप हवि के द्वारा यज्ञ को सम्पन्न किया, तब इस (यज्ञ) का घृत-वसन्त ऋतु, ईंधन-ग्रीष्मऋतु तथा हवि-शरद्ऋतु थी।

7. तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

अर्थ- सर्वप्रथम उत्पन्न यज्ञ साधनभूतपुरुष को कुश पर (रखकर) जल छिड़कर (पवित्र किया)। उससे देवताओं तथा ऋषियों ने यजन (यज्ञ) किया।

8. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये।

अर्थ- जिसमें सब कुछ होम कर दिया गया, उस यज्ञ से दधिमिश्रित घृत इकट्ठा किया गया (जिससे) वायु में विचरण करने वाले (पक्षियों) तथा वन्य पशुओं और ग्राम्य-पशुओं को उत्पन्न किया।

9. तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥

अर्थ- जिसमें सब कुछ होम कर दिया गया, उस यज्ञ से ऋचायें तथा साम उत्पन्न हुए, उससे छन्द उत्पन्न हुए तथा उससे यजुष् उत्पन्न हुआ।

10. तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥

अर्थ- उस (यज्ञ) से अश्व उत्पन्न हुए और जो कोई ऊपर-नीचे दोनों ओर दाँतों वाले (पशु हैं) उत्पन्न हुए। उससे गायें उत्पन्न हुईं। उससे भेड़-बकरियाँ पैदा हुईं।

11. यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥

अर्थ- जब पुरुष को देवों ने विभक्त किया, तब (उसे) कितने भागों में विविधरूप से कल्पित किया। इसका मुख क्या था?, इसकी भुजाएँ कौन थीं ?, (इसकी) जंघाएं क्या (हुईं) और पैर क्या कहे जाते हैं?

12. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

अर्थ- ब्राह्मण इस (पुरुष) का मुख था। दोनों भुजाओं को क्षत्रिय बनाया गया। जो वैश्य हैं, वह इसकी जंघाओं के रूप में था। दोनों पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।

13. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥

अर्थ- (पुरुष के) मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ। नेत्र से सूर्य उत्पन्न हुआ। मुख से इन्द्र और अग्नि तथा प्राण से वायु उत्पन्न हुआ।

14. नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन्॥

अर्थ- (पुरुष की) नाभि से अन्तरिक्ष उत्पन्न हुआ। सिर से द्युलोक उत्पन्न हुआ। पैरों से

भूमि और कानों से दिशाएं (उत्पन्न हुई)- इस प्रकार लोकों की रचना की।

15. सप्तास्यासन् परिधयस् त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

अर्थ- जिस समय देवताओं ने यज्ञ का विस्तार करते हुए पुरुष रूपी पशु को (यूप में) बाँधा (उस समय) उस (पुरुष) की सात परिधियाँ थीं (और) इक्कीस समिधाएं बनाई गई।

16. यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

अर्थ- देवताओं ने यज्ञ के द्वारा यज्ञस्वरूप (प्रजापति) का यजन किया। वे धर्म सबसे मुख्य हुए। वे महिमाशाली (उपासक) दिव्य स्वर्ग को प्राप्त करते हैं, जहाँ प्राचीन साध्यदेव हैं।

10. हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121)

मण्डल-10, **सूक्त**-121 **कुल मन्त्र**-10, **ऋषि**- हिरण्यगर्भ,
देवता -क संज्ञक प्रजापति, **छन्द**- त्रिष्टुप्

1. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- हिरण्यगर्भ (प्रजापति) सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ। उत्पन्न होते ही वह सम्पूर्ण प्राणियों का अद्वितीय स्वामी हो गया (तथा) उसने इस पृथिवी और द्युलोक को धारण किया (उसे छोड़कर) हम किस देवता के लिए हवि से विधान (पूजन) करें।

2. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जो (हिरण्यगर्भ) प्राण (आत्मा) दाता (और) बलदाता है। जिसके आदेश की समस्त (प्राणी तथा) देवता उपासना करते हैं, जिसकी छाया अमृत है, जिसकी (छाया) मृत्यु है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

3. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जो (हिरण्यगर्भ) अपनी महिमा से- श्वास-प्रश्वास लेने वाले, पलकों का संचालन करने वाले और गतिशील प्राणिजगत् का अकेला ही राजा हो गया और जो दो पैरों वाले (मनुष्यों) तथा चार पैरों वाले (पशुओं) का स्वामित्व करता है, (उसके अतिरिक्त) किसके लिए हवि से विधान करें।

4. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जिस (हिरण्यगर्भ) की महिमा से ये बर्फीले पर्वत (स्थित) हैं, नदियों के साथ समुद्र को जिसका बताया जाता है, जिसकी ये प्रधान दिशाएँ हैं (तथा) जिसकी भुजाएँ (रक्षिका) हैं, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

5. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जिसके द्वारा उन्नत द्युलोक और पृथिवी को दृढ़ (स्थिर) किया गया, जिसके द्वारा स्वर्गलोक और नागलोक स्तब्ध कर दिया गया; जो अन्तरिक्ष में लोकों को नापने वाला है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

6. यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- (प्राणियों की) रक्षा के लिए स्थिर बनाए गए तथा मन से काँपते हुए द्युलोक और पृथिवीलोक जिस (प्रजापति) की ओर देखते हैं, जिसे आधार बना कर सूर्य उदित होकर चमकता है, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

7. आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जब गर्भ धारण करती हुई और अग्नि को उत्पन्न करती हुई, विशाल जल राशि ने विश्व को व्याप्त कर लिया, तब देवताओं का एकमात्र प्राणभूत (प्रजापति) उत्पन्न हुआ, (उसके अतिरिक्त किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

8. यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जिसने अपनी महिमा से दक्ष (प्रजापति) को धारण करती हुई तथा यज्ञ को उत्पन्न करती हुई जलराशि को चारों ओर देखा, जो देवताओं में एक अद्वितीय देव हो गया, (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

9. मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- वह (प्रजापति) हमें कष्ट न दे, जो पृथिवी को उत्पन्न करने वाला है, तथा सत्यनियमवाला जिसने द्युलोक को उत्पन्न किया है, (तथा) जिसने आनन्ददायक विशाल जलराशि को उत्पन्न किया है, (उसके अतिरिक्त) हम किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

10. प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥

अर्थ- हे प्रजापति! तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई इन (वर्तमान तथा) उन (भूत) सम्पूर्ण उत्पन्न पदार्थों को व्याप्त नहीं कर पाया; जिस (फल) की कामना करते हुए हम तुम्हें हवि प्रदान करते हैं, वह (फल) हमारा हो जाय। हम लोक समृद्धियों (धनों) के स्वामी हो जायें।

11. वाक् सूक्त (10.125)

मण्डल-10, **सूक्त**-125 **कुल मन्त्र**-8, **ऋषि**- वागाम्भृणी, **देवता** -परमात्मा वाक्, **छन्द**-दूसरे मन्त्र में जगती और सबमें त्रिष्टुप्

1. **अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।**
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥

अर्थ- मैं (वागाम्भृणी) रुद्रों तथा वसुओं के साथ चलती हूँ। मैं आदित्यों और विश्वदेवों के साथ (चलती हूँ), मैं मित्र तथा वरुण दोनों को धारण करती हूँ। मैं इन्द्र तथा अग्नि और दोनों अश्विनों को (धारण करती हूँ)।

2. **अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।**
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये३ यजमानाय सुन्वते॥

अर्थ- मैं आवेश उत्पन्न करने वाले सोम को धारण करती हूँ और मैं त्वष्टा, पूषा तथा भग को (धारण करती हूँ), मैं सोम निचोड़ते हुए हवि-प्रदाता (तथा) भली-भाँति सहायता के योग्य यजमान के लिए धन धारण करती हूँ।

3. **अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।**
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्॥

अर्थ- मैं (सम्पूर्ण विश्व की) स्वामिनी हूँ,धनों को प्राप्त कराने वाली हूँ, पूजनीयों में प्रमुख ज्ञानवती हूँ। अनेकों स्थानों में स्थित तथा अनेक प्राणियों में (अपना) प्रवेश कराती हुई मुझको देवताओं ने अनेक स्थानों में पृथक्-पृथक् (विविध रूपों में) स्थापित किया।

4. **मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।**
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥

अर्थ- जो अन्न खाता है, जो देखता है, जो श्वास लेता है, जो इस कहे हुए को सुनता है, वह मेरे द्वारा (ही होता है)। मुझे न मानने वाले (जो लोग हैं) वे नष्ट हो जाते हैं। हे विद्वान्! सुनो (मैं) तुम्हारे लिए विश्वसनीय (बात) कहती हूँ।

5. **अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।**
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥

अर्थ- मैं स्वयं ही देवताओं तथा मनुष्यों के लिए प्रिय यह (बात) कहती हूँ। जिसे-जिसे चाहती हूँ, उसे-उसे बलयुक्त, उसे ब्रह्मा, उसे ऋषि (तथा) उसे ज्ञानी बनाती हूँ।

6. **अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।**
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश॥

अर्थ- ब्रह्मद्वेषी हिंसक को मारने के निमित्त मैं निश्चय ही रुद्र के लिए धनुष को तान देती हूँ। मैं मनुष्यों के लिए युद्ध करती हूँ। मैं द्युलोक तथा पृथ्वीलोक में समाई हुई हूँ।

7. **अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्व१न्तः समुद्रे।**
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि॥

अर्थ- मैं इस (भूलोक) के ऊपर पितास्वरूप द्युलोक को उत्पन्न करती हूँ। मेरा उत्पत्ति स्थान जल के भीतर समुद्र में है, वहाँ से मैं सब लोकों में अनेक रूपों में स्थित हो जाती हूँ और शीर्षभाग से उस द्युलोक को स्पर्श करती हूँ।

8. **अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।**
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव॥

अर्थ- मैं ही सकल भुवनों को उत्पन्न करती हुई, वायु के समान प्रवाहित होती हूँ। मैं द्युलोक से परे तथा इस पृथ्वीलोक से (भी) परे (बढ़कर) हूँ। (मैं) अपनी महिमा से इतनी (विशाल) हो गई हूँ।

12. नासदीय सूक्त (10.129)

मण्डल-10, **सूक्त**-129 **कुल मन्त्र**-7, **ऋषि-** परमेष्ठी प्रजापति, **देवता** -सृष्टि-स्थिति-प्रलय कर्त्ता परमात्मा, **छन्द-** त्रिष्टुप्

1. **नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।**
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्॥

अर्थ- उस समय न नामरूपादि-रहित अवस्था थी, न नामरूपात्मक अवस्था ही थी, न कोई लोक था, न आकाश ही था, जो ऊपर है। किसने आवृत किया था? कहाँ किसकी सुरक्षा में? क्या अपार गम्भीर जल था?

2. **न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।**
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास॥

अर्थ- तब मृत्यु नहीं थी, अमृतत्व भी नहीं था। रात्रि तथा दिन का भेदात्मक ज्ञान भी नहीं था। एक वायु के बिना (भी) अपनी इच्छा शक्ति से श्वाँस ले रहा था। उससे बढ़कर अलग पहले कुछ भी नहीं था।

3. **तम आसीत्तमसा गूळहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।**
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्॥

अर्थ- महान् अन्धकार से ढँका हुआ सर्वप्रथम अन्धकार था। इस सम्पूर्ण (विश्व का कारणभूत) जल से भिन्न कोई चिन्ह नहीं था। (वह) जो स्थित था, सर्वव्यापी भावरूप अज्ञान था। अपनी तपस्या की महिमा से वह एक उत्पन्न हुआ।

4. **कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।**
सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा॥

अर्थ- काम, जो मन का प्रथम विकार था, उसमें सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ। बुद्धिमानों ने हृदय में प्रज्ञा से विचार कर नामरूपात्मक जगत् का कारण नामरूपरहित तत्त्व में ही पाया।

5. **तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्।**
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्॥

अर्थ- उनका (कार्यजाल जो) किरणों की तरह शीघ्र फैला हुआ था, क्या वह मध्य में था? अथवा क्या वह नीचे था? अथवा क्या वह ऊपर था? (सृष्टि का) बीज धारण करने वाले थे; (आकाशादि) महाभूत थे; नीचे भोग्य था, ऊपर भोक्ता।

6. **को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।**
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव॥

अर्थ- कौन सही रूप में जानता है? कौन यहाँ कहेगा कि यह कहाँ से उत्पन्न हुई हैं? यह विविध प्रकार की सृष्टि कहाँ से? देवता इस सृष्टि की अपेक्षा अर्वाचीन हैं। तब यह कौन जानता है, जहाँ से यह (सृष्टि) उत्पन्न हुई है?

7. **इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।**
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥

अर्थ- यह विविध रूपों वाली सृष्टि जहाँ से आई है (उसको उसने) या तो धारण किया था, या अगर नहीं (तो किसने धारण किया था?)। जो इसका ईश्वर है, वह सर्वोच्च स्वर्ग में है; वही निश्चित रूप से इसे जानता है; यदि वह नहीं जानता (तो कौन जानता है?)

शुक्लयजुर्वेद

13. शिवसंकल्प सूक्त (अध्याय-34)

शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनवाजसनेयिसंहिता
अध्याय-34 **कण्डिका** 1-6 **कुल मन्त्र**- 06, **ऋषि**- याज्ञवल्क्य,
देवता -मनस्, **छन्द**-त्रिष्टुप्

1. **यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।**
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जो मन पुरुष की जाग्रतावस्था में अधिक दूर चला जाता है, जो एकमात्र आत्मा का दर्शन करने वाला है; जो पुरुष की सुषुप्तावस्था में उसी प्रकार लौट आता है (तथा) जो समस्त बाह्य इन्द्रियों का एकमात्र प्रकाशक है; वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

2. **येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।**
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जिस मन में कर्मनिष्ठ बुद्धिमान् पुरुष यज्ञ में तथा उपासनाओं में कर्म करते हैं, जो सब (इन्द्रियों) से पहले उत्पन्न होता है, और यज्ञ करने में समर्थ है, तथा जो प्राणिमात्र के शरीर के भीतर रहता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

3. **यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।**
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जो मन विशेषज्ञान तथा सामान्यज्ञान (का साधन) है, जो धैर्य रूप है, जो प्राणियों के भीतर (इन्द्रियों की प्रेरक) अमर ज्योति है तथा जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

4. येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जिस अमर मन के द्वारा इस संसार में भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल के सब पदार्थ जाने जाते हैं, और जिसके द्वारा सात होता वाला (अग्निष्टोम) यज्ञ किया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

5. यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- रथ चक्र की नाभि में तीलियों की भाँति जिस मन में ऋचाएँ, साम और यजुः प्रतिष्ठित होते हैं, जिसमें प्राणियों का सर्वपदार्थविषयक ज्ञान निहित है, वह मेरा मन शुभसङ्कल्प वाला होवे।

6. सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- जैसे अच्छा सारथी घोड़ों को इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, उसी प्रकार जो मन प्राणियों को बार-बार इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, जो हृदय में स्थित है, जो जरा से रहित तथा अत्यन्त वेगवान् है, वह मेरा मन शुभ संङ्कल्प वाला होवे।

14. प्रजापति सूक्त

(शुक्लयजुर्वेद अध्याय-23, मन्त्र-1-5 तक)

ऋषि - प्रजापति, **देवता -** परमेश्वर।

1. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- सृष्टि के आदिकाल में एक मात्र हिरण्यगर्भ पुरुष ही विद्यमान था। वह अकेला ही सर्व उत्पन्न मात्र भूतों का अधिपति या पालक था। उसी ने इस पृथिवी को धारण किया और इस द्युलोक को भी। उस प्रजापति को श्रद्धा भक्ति से परिचारित करें।

2. उपयामगृहीतोसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिः सूर्यस्ते महिमा।
यस्तेऽहन्संवत्सरे महिमा संबभूव यस्ते वायावन्तरिक्षे महिमा संबभूव यस्ते।
दिवि सूर्ये महिमा संबभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः॥

अर्थ- (महिम ग्रह को ग्रहण करना।) हे ग्रह! तुम उपयाम पात्र के द्वारा ग्रहण किये गये हो। प्रजापति के लिए प्रिय तुम्हें मैं ग्रहण करता हूँ। (ग्रह को वेदि पर धरना।) यह तुम्हारा स्थान है। हे ग्रह! यह सूर्य तुम्हारी महिमा है। तुम्हारी जो महिमा दिन में, संवत्सर में उत्पन्न हुई, तुम्हारी जो महिमा वायु में, अन्तरिक्ष में उत्पन्न हुई तथा तुम्हारी जो महिमा द्युलोक में, सूर्य में उत्पन्न हुई- उस तुम्हारी महिमा के लिए, प्रजापति और अन्य देवों के लिए यह आहुति है।

3. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अर्थ- जो प्रजापति अपनी महिमा के कारण जगत् के सम्पूर्ण प्राणननिमेषोन्मेष करने वालों का स्वामी हुआ और जो इस समस्त द्विपाद-चतुष्पाद ऐश्वर्य का स्वामी है, उसी प्रजापति देव के लिए हम अपने धन-धान्यादि से सदा यज्ञादि करते रहें।

4. उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा संबभूव यस्ते पृथिव्यामग्नौ महिमा संबभूव यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा संबभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा॥

अर्थ- हे पात्र! तुम उपयाम पात्र के द्वारा ग्रहण किये गये हो। प्रजापति के लिए प्रिय तुम्हें मैं ग्रहण करता हूँ। (ग्रह को वेदि पर धरना।) हे ग्रह! यह तुम्हारा स्थान है। हे ग्रह! यह चन्द्रमा तुम्हारी महिमा है। तुम्हारी जो महिमा रात्रि-संवत्सर में उत्पन्न हुई, तुम्हारी जो महिमा पृथ्वी-अग्नि में उत्पन्न हुई और तुम्हारी जो महिमा नक्षत्रों-चन्द्रमा में उत्पन्न हुई है, उस तुम महिमावान् प्रजापति तथा अन्य देवों के लिए यह आहुति है।

5. युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः रोचन्ते रोचना दिवि॥

अर्थ- इस स्थिर जगत् के ऊपर रक्ताभ, स्व-कीली पर घूमने वाले तथा आकाशचारी सूर्य को ऋत्विज् अपनी स्तुतियों से स्वकार्यरत करते हैं। उसी की ज्योति से द्युलोक में यह रोचमानग्रह- नक्षत्र आदि प्रकाशित होते हैं।

अथर्ववेद

15. राष्ट्राभिवर्धन सूक्त

कुल मन्त्र-6, **ऋषि-** वशिष्ठ, **देवता -**ब्रह्मणस्पति, अभीवर्तमणि
छन्द-अनुष्टुप्

1. अभीवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
तेनास्मान् ब्रह्मणस्पतेभि राष्ट्राय वर्धय॥

अर्थ- हे ब्रह्मणस्पते! जिस समृद्धिदायक मणि से इन्द्र की वृद्धि हुई है, उसी मणि के द्वारा तू हमें देश के हित के निमित्त विस्तृत कर।

2. अभिऽवृत्य सपत्नानभि या नो अरातयः।
अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति॥

अर्थ- हे मणे! हमारे विरोधी हिंसक शत्रु सेनाओं को जो हमसे युद्ध करने की कामना करते हैं, जो हमसे द्वेष करते हैं, तू उन्हें घेरकर पराक्रमहीन कर।

3. अभि त्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृधत्।
अभि त्वा विश्वा भूतान्यभीवर्तो यथाससि॥

अर्थ- हे मणे! सविता देवता ने तुझे समृद्ध और सोम ने तुझे विस्तृत किया है। सभी प्राणी

तेरी वृद्धि करते हैं। तू उसके शौर्य और यश को फैलाती है जो तुझे धारण करता है।

4. अभीवर्तो अभिभवः सपत्नक्षयणो मणिः।
राष्ट्राय मह्यं बध्यतां सपत्नेभ्यः पराभुवे॥

अर्थ- शत्रुओं को वश में कर उन्हें नष्ट करने वाली इस मणि को विरोधियों का शमन करने के लिए तथा देश की उन्नति के लिए, देह से बाँधकर रखें।

5. उदसौ सूर्यो अगादुदिदं मामकं वचः।
यथाहं शत्रुहोऽसान्यसपत्नः सपत्नहा॥

अर्थ- सब प्राणियों को प्रेरित करने के निमित्त सूर्य उदित हुआ। हमारी मंत्ररूप वाणी भी प्रकट हो गई। हम इनके प्रभाव हेतु शत्रुनाशक, पापियों पर आघात करने वाले बैरियों से सर्वथा रहित हों।

6. सपत्नक्षयणो वृषाभिराष्ट्रो विषासहिः।
यथाहमेषा वीराणां विराजानि जनस्य च॥

अर्थ- हे मणे! तेरी प्राप्त शक्ति से हम शत्रुओं का हनन करने वाले, बलवान् तथा विजयी होकर शत्रुओं के वीरों और उनकी प्रजा पर शासन करने में समर्थ हों।

16. काल सूक्त (10.53)

कुल मन्त्र-10, **ऋषि-** भृगु, **देवता** -काल, **छन्द-**त्रिष्टुप्, बृहती, अनुष्टुप्

1. कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥

अर्थ- जरारहित, प्रचुर पराक्रम से सम्पन्न, सप्तरश्मियों और सहस्र चक्षुओं से युक्त कालस्वरूप अश्व जगत्रूपी रथ के वाहक हैं। समस्त लोक उस रथ के चक्र हैं उस अश्वयुक्त रथ पर विद्वान् ही आरूढ़ होते हैं।

2. सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः।
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः॥

अर्थ- उस सात चक्रों के वाहक काल की सात नाभियाँ हैं। उसका अक्ष (धुरा) अमृतरूप है। वह काल (देवता) सभी भुवनों को उत्पन्न (प्रकट) करता हुआ गतिमान् है।

3. पूर्णः कुम्भोधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ् कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥

अर्थ- काल के ऊपर स्थित यह कुम्भ ब्रह्माण्ड रूप से भरा हुआ है। सन्त एवं ज्ञानीजन उसकाल को अनेक रूपों में देखते हैं। प्राणियों के समक्ष प्रकट होने वाला काल उन्हें अपने में व्याप्त कर लेता है। साधुजन उस काल को अनेक भेद से देखते हुए उसे आकाश के समान निर्लेप बनाते हैं।

4. स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्यैत्।
पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमस्ति तेजः॥

अर्थ- वह (काल) समस्त भुवनों का पोषण करने वाला, सभी में उत्तम ढंग से व्याप्त है। भूतकाल में वो ही इनका (प्राणियों का) पिता और अगले जन्म में इनका पुत्र हो जाता है। इस काल से श्रेष्ठ अन्य कोई तेज नहीं है।

5. कालोमूं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरुत।
काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते॥

अर्थ- समस्त प्राणियों की आश्रयभूत भूमि को तथा दिव्यलोक को समय ने उत्पन्न किया। भूत, भविष्य तथा वर्तमान आदि इस समय के ही अधीन हैं।

6. कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः।
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्विपश्यति॥

अर्थ- सृष्टि का सृजनकर्त्ता भी समय (काल) ही है। जगत् को प्रकाशित करने वाला सूर्य काल से ही प्रेरित है। सभी प्राणी इस काल के आश्रित हैं। इसी काल के आश्रित होकर नेत्र भी सब पदार्थों को देखने में समर्थ होते हैं।

7. काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम्।
कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः॥

अर्थ- समयानुसार प्रकट होने वाले काल में ही मन, प्राण तथा नाम भी समाहित हैं। समस्त प्रजाजन काल के अनुकूलता से ही हर्षित होते हैं।

8. काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः॥

अर्थ- काल सभी का ईश्वर, पिता और प्रजापति है। काल में ही तपः शक्ति, ज्येष्ठता (महानता) तथा ब्रह्म-विद्या समाहित हैं।

9. तेनेषितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम्।
कालो ह ब्रह्म भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम्॥

अर्थ- समय (काल) ही अपनी ब्राह्मी चेतना को विशाल करके परमेष्ठी को धारण करता है। काल द्वारा ही यह जगत् प्रेरित है और उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है तथा उसी के आश्रय में स्थित है।

10. कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम्।
स्वयम्भूः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत॥

अर्थ- काल स्वयंभू है। सबका द्रष्टा कश्यप काल से उत्पन्न हुआ तथा काल से ही तपः शक्ति की उत्पत्ति हुई। सृष्टि के आरम्भ में भी काल ने सबसे पहले प्रजापति का सृजन किया और उसके पश्चात् प्रजाजनों की रचना की।

17. पृथ्वी सूक्त (12.1)

कुल मन्त्र-63, **ऋषि-** अथर्वा, **देवता -**भूमि, **छन्द-**त्रिष्टुप्, जगती, पंक्ति, अष्टि, शक्वरी, बृहती, अनुष्टुप्,गायत्री

1. सत्यं बृद्‌तमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥

अर्थ- सत्य, महत्ता, ऋत, उग्रता (शक्ति), दीक्षा, तपस्या, ब्रह्म और यज्ञ पृथिवी को धारण करते हैं। भूत और भविष्यत् की पत्नी वह पृथ्वी हमारे लोक को (हमारे लिए) विस्तृत बना दे।

2. असंबाधं बध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः॥

अर्थ- जिस (पृथ्वी) के बहुत से ऊँचे, नीचे और समतल (क्षेत्र) मनुष्यों के बीच बाधा रहित स्थित हैं, जो अनेक प्रकार की शक्तियों से युक्त औषधियों को धारण करती है, (वह) पृथ्वी हमारे लिए विस्तृत हो और हमारे लिए समृद्ध बने।

3. यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥

अर्थ- जिस (पृथ्वी) पर समुद्र, नदियाँ तथा जल (हैं) जिस पर अन्न और खेतियाँ (फसलें) उत्पन्न होती हैं; जिस पर यह श्वास लेने वाला और गतिशील जगत् आनन्दित होता है, वह पृथिवी हमें प्रथम पेय में (उत्तम पेय वाले प्रदेश में) स्थापित करें।

4. यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु॥

अर्थ- जिस पृथिवी की चार प्रमुख दिशाएँ हैं, जिस पर अन्न और फसलें उत्पन्न होती हैं, जो श्वास लेने वाले तथा गतिशील (जगत्) को अनेक प्रकार से धारण करती है, वह पृथिवी हमें गायों और अन्न में स्थापित करें।

5. यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु॥

अर्थ- जिस (पृथ्वी) पर (हमारे) प्राचीन पूर्वजों ने विशिष्ट कर्म किया, जिस पर देवताओं ने असुरों को आक्रमणपूर्वक भगा दिया,जो (पृथिवी) गायों, अश्वों और पक्षियों का निवास-स्थान है, (वह पृथिवी) हमें ऐश्वर्य और तेज प्रदान करे।

6. यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥

अर्थ- जो (पृथ्वी) पहले समुद्र में जल के भीतर थी, जिसे मनीषियों ने (अपनी) बुद्धि से प्राप्त किया (और) जिस पृथ्वी का, सत्य से ढँका हुआ अमर्त्य हृदय परम व्योम में स्थित है, वह भूमि हमको बल और तेज प्रदान करे तथा हमें उत्तम राष्ट्र में प्रतिष्ठित करे।

7. यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा।।

अर्थ- जिस पृथ्वी पर चारों ओर विचरण करने वाला जल समान भाव से दिन-रात निर्बाध रूप में बहता रहता है, अनेक धाराओं वाली वह पृथिवी हमें दुग्ध (जल) प्रदान करें तथा हमें तेज से अभिसिञ्चित करें।

8. यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।
इन्द्रो यां चक्र आत्मनेनमित्रां शचीपतिः।
सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः।।

अर्थ- जिस (पृथ्वी) को अश्विनीकुमारों ने नापा है, जिस पर विष्णु ने (अपना) पादन्यास किया, जिसे शक्ति के स्वामी इन्द्र ने अपने (हित के) लिए शत्रुहीन कर दिया। वह हमारी माता तुल्य भूमि (अपने) पुत्रस्वरूप मुझे (अपना) दूध प्रदान करें।

9. गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोहतो अक्षतोध्यष्ठां पृथिवीमहम्।।

अर्थ- हे पृथिवी! तुम्हारी पहाड़ियाँ, हिमाच्छादित पर्वत और तुम्हारे वन (हमारे लिए) सुखकर होवें। भूरी, काली, लाल, अनेक रूपों वाली स्थिर और इन्द्र द्वारा रक्षित सुविस्तृत-पृथिवी पर मैं अजेय, अहिंसित (तथा) अक्षत (होकर) अधिष्ठित हो जाऊँ।

10. यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।।

अर्थ- हे पृथिवी! जो तुम्हारा मध्यभाग है, जो नाभि का क्षेत्र है, तथा जो तुम्हारे शरीर से उत्पन्न रस हैं, उस सब में हमें प्रतिष्ठित करो। हमें पवित्र करो। भूमि माँ है। मैं पृथिवी का पुत्र हूँ। पर्जन्य पिता हैं, वह हमारा पालन-पोषण (रक्षा) करें।

11. त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः।
तवे मे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य उद्यन्त्सूर्यो रश्मिभिरातनोति।।

अर्थ- तुमसे उत्पन्न हुए प्राणी तुम्हारे ऊपर (ही) कर्म करते हैं, तुम दो पैरों वाले (मनुष्यों तथा) चार पैरों वाले (पशुओं) को धारण करती हो। हे पृथिवी! ये सभी मनुष्य तुम्हारे (ही हैं), जिनके लिए उदित होता हुआ सूर्य (अपनी) किरणों से अमृत तुल्य प्रकाश का विस्तार करता है।

12. जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।।

अर्थ- विविध बोली वाले, विभिन्न धर्मों वाले (तथा) वाञ्छित स्थान पर घर बनाकर रहने वाले लोगों को अनेक प्रकार से धारण करती हुई पृथ्वी, स्थिर (और) अचपल गाय के समान, मेरे लिए धन की हजारों धाराएँ दुह दे देवें।



13. वैदिक-वाङ्मय का बिन्दुवार अध्ययन

1. वैदिक संहिता

- ‘श्रुति’ किसे कहते हैं - **वेद को**
- वेदः कः - **अपौरुषेयं वाक्यम्**
- वेदों की संख्या है - **चार**
- वेदों को किसने विभाजित किया है - **कृष्णद्वैपायन (व्यास)**
- वर्ण व्यवस्था का प्रथम उल्लेख होता है - **ऋग्वेद में**
- ‘श्रुति’ शब्दः कस्यार्थस्य बोधकोऽस्ति - **वेदस्य**
- ‘वेदा अपौरुषेयाः’ इति स्वीकुर्वन्ति - **मीमांसकाः**
- मीमांसा की दृष्टि से वेद के प्रकार हैं - **पाँच, विधि-मन्त्र-नामधेय-निषेध-अर्थवाद**
- ‘श्रुतिः’ पद का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है - **शृणोति धर्मं यः**
- इतिहासपुराणाभ्यां ..... समुपबृंहयेत् - **वेदम्**
- अपौरुषेयाः वेदाः भवन्ति - **नित्याः**
- वेद इन्हें कहते हैं - **मन्त्र-ब्राह्मण को**
- मन्त्राणां समुदायस्य किं नाम अस्ति - **संहिता**
- वेदों के काव्यात्मक हिस्से को कहा जाता है - **संहिता**
- संहितापाठानन्तरं क्रियते - **पदपाठः**
- ‘वेदत्रयी’ समूह क्या है - **ऋग्वेद, यजुर्वेद,सामवेद**
- ‘त्रयी’ इति संज्ञा - **वेदस्य**
- अपौरुषेयग्रन्थः को विद्यते - **वेदः**
- वेदारम्भः कुतः प्रारभ्यते - **संहितातः**
- सायणमते वेदस्य स्वरूपं किम् - **‘इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारस्य अलौकिकोपायभूतं ज्ञानम्’**
- आर्षेयपरम्परा के अनुसार वेद हैं - **अपौरुषेयः**
- वेदः कोऽस्ति - **अपौरुषेयः**

- वेदस्य स्वतः प्रामाण्यत्वे किं मानम् - **ईश्वरप्रोक्तम्**
- 'वेदत्रयी' में किसकी गणना नहीं होती है - **अथर्ववेद की**
- वेदशब्दस्य निष्पत्तौ का निष्पत्तिः समीचीना नास्ति - **विद्निवारणे**
- कः कथ्यते वेदनिन्दकः - **नास्तिकः**
- धर्म का मूल प्रमाण है - **वेद (श्रुति)**
- धर्म का मूल स्रोत है - **वेद**
- 'वेदेन प्रयोजनमुद्दिश्यविधीयमानोऽर्थः धर्मः' एतल्लक्षणं केन कृतम् - **आपदेवेन**
- आद्युदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः - **ग्रन्थवाचकः**
- अन्त्योदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः - **कुशमुष्टिवाचकः**
- 'ऋक्-प्रातिशाख्य' सम्बन्धित है - **ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदीयः ऋत्विक् - **होता**
- 'होता' कस्य वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति - **ऋग्वेदस्य**
- छन्दोबद्धः वेदोऽस्ति - **ऋग्वेदः**
- सबसे पुराना वेद कौन सा है - **ऋग्वेद**
- पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार प्राचीनतम वेद कौन है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद का दूसरा नाम है - **दशतयी**
- आयुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः - **ऋग्वेदस्य**
- होतुः सम्बद्धः वेदः कः - **ऋग्वेदः**
- मण्डलक्रमः केन वेदेन सम्बद्धः - **ऋग्वेदेन**
- ऋग्वेद की सृष्टि किससे हुयी है - **अग्नि से**
- ऋग्वेदः सम्प्राप्तः - **अग्नि से**
- ऋग्वेद का प्रथमसूक्त है - **अग्निसूक्त**
- ऋग्वेदे प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्तं किम् - **अग्निसूक्त**
- ऋग्वेद में सूक्तों की संख्या - **1028**
- पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की शाखाओं की संख्या है - **एकविंशतिः**
- प्रसिद्ध ऋग्वेद सम्बद्ध है - **शाकलशाखा से**
- 'शाकलसंहिता' किस वेद की है - **ऋग्वेद**
- 'बाष्कलसंहिता' वर्तते - **ऋग्वेदस्य**
- माण्डूकायनशाखा से सम्बन्धित है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद के दशम मण्डल में कितने सूक्त हैं - **191**
- ऋग्वेद की मूल लिपि थी - **ब्राह्मी**

- स्कन्दस्वामी का भाष्य किससे सम्बद्ध है - **ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदस्य शाखाः सन्ति - **5 (पाँच)**
- ऋग्वेद के पदपाठकार हैं - **शाकल्य**
- वंशीयमण्डलानि उपलभ्यन्ते - **ऋग्वेदे**
- दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति - **ऋग्वेद-संहिता**
- पुरुषसूक्त का सम्बन्ध है - **ऋग्वेद से**
- पुरुषसूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है - **दशममण्डल में**
- ऋग्वेदे स्वरितस्वरः प्रदर्श्यते - **उपरिष्यत्**
- शाकलशाखा से सम्बद्ध वेद है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद में मन्त्रों की संज्ञा है - **ऋचा**
- आयुर्वेद किस वेद का उपवेद है - **ऋग्वेद**
- पुरूरवा-उर्वशी संवाद किस वेद में है - **ऋग्वेद में**
- ऋग्वेद में 'पारिवारिक-मण्डल' कहे गये हैं - **दो से सात**
- 'समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः' किस वेद का अन्तिम मन्त्र है - **ऋग्वेद का**
- 'ऋक्'-शब्दस्यार्थः भवति - **स्तुतिः**
- "पावका नः सरस्वती" इति मन्त्रः वर्तते - **तृतीयसूक्तस्य**
- प्रसिद्ध गायत्रीमन्त्र किस धर्म-ग्रन्थ में हैं - **ऋग्वेद**
- किसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है - **सामवेद का**
- ऋग्वैदिककाल के प्रारम्भ में निम्न में से किसे महत्त्वपूर्ण मूल्यवान् सम्पत्ति समझा जाता था - **गाय को**
- ऋग्वेद संहिता का नवम मण्डल पूर्णतः किसको समर्पित है - **सोम और इस पेय पर नामांकित देवता को**
- ऋग्वेद का कौन सा मण्डल पूर्णतः 'सोम' को समर्पित है - **9वाँ मण्डल**
- ऋग्वेद के किस मण्डल में 'बालखिल्य सूक्त' है - **अष्टम मण्डल में**
- बालखिल्यसूक्तानि विद्यन्ते - **ऋग्वेदे**
- ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्त कितने हैं - **ग्यारह**
- ऋग्वेद का कौन-सा मण्डल सबसे अर्वाचीन है - **दशम मण्डल**
- अवेस्ता की तुलना किस वेद से की जाती है - **ऋग्वेद से**
- सामगान का जिस वेद पर गायन किया जाता है, वह वेद है - **ऋग्वेद**
- प्रसिद्ध 'शुनःशेपाख्यान' जिसमें मिलता है, वह वेद है - **ऋग्वेद**

- सामवेद के मन्त्र सबसे अधिक किस वेद से लिये गये हैं - **ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदेऽग्निसूक्तेऽग्निरुच्यते - **पुरोहितः**
- 'ऋक्'–शब्दस्य दार्शनिकः अर्थः कः - **ब्रह्म**
- यागे शस्त्रं केन पठ्यते - **होत्रा**
- कः ऋग्वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति - **होता**
- ऋग्वेद की रचना कहाँ हुयी थी - **सप्तसैन्धव प्रदेश में**
- ऋग्वेदस्य कस्य मण्डलस्य नाम पवमानमण्डलम् अस्ति - **नवमस्य**
- कः वेदः अभ्यर्हितः - **ऋक्**
- 'अस्यवामीयसूक्त' मिलता है - **ऋग्वेद में**
- ऋग्वेदस्य मुख्यविषयः अस्ति - **उपासना**
- वर्णव्यवस्था का सर्वप्रथम विवरण कहाँ प्राप्त होता है - **ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल (पुरुषसूक्त) में**
- चारों वर्णों का प्रथमबार उल्लेख किस वेद में किया गया है - **ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल (पुरुषसूक्त) में**
- ऋग्वेदकाल में जनता निम्न में से मुख्यतया किसमें विश्वास करती थी - **बलि एवं कर्मकाण्ड में**
- ऋग्वेद में वर्णित धर्म का आधार था - **प्रकृति-पूजा**
- वेद में वर्णित सबसे सामान्य अपराध निम्नलिखित में से क्या था - **पशुओं की चोरी**
- 'होतृगणे' कति ऋत्विजः भवन्ति - **चत्वारः**
- आर्य-अनार्य युद्ध का वर्णन मिलता है - **ऋग्वेद में**
- स्तुतिप्रधान वेद है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद के किस मण्डल में सोमयज्ञ के मन्त्र उपलब्ध होते हैं - **नवम मण्डल में**
- 'आश्वलायन श्रौतसूत्र' से सम्बन्धित वेद है - **ऋग्वेद**
- 'Langlois' ने ऋग्वेद का जिस भाषा में अनुवाद किया है वह है - **French (फ्रेंच)**
- 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इति मन्त्रांशं कस्य वेदस्यास्ति - **ऋग्वेदस्य**
- यम-यमी-संवादसूक्त किस वेद में है - **ऋग्वेद में**
- यम-यमी–संवादे 'यमी' आसीत् यमस्य - **भगिनी**
- "किं भ्रातासद्यनाथम्" इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते - **यम-यमी-संवादसूक्ते**
- विश्वामित्र-नदी-संवाद किसमें मिलता है - **ऋग्वेद में**
- 'सरमा-पणि-संवाद' किस वेद में मिलता है - **ऋग्वेद में**

- 'पुरूरवा-उर्वशी' संवादसूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है - **दशम मण्डल में**
- 'नासदीयसूक्त' है - **ऋग्वेद में**
- 'यम-यमी-संवाद' ऋग्वेद के किस मण्डल में है - **दशम मण्डल में**
- ''न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति'' इति वर्तते - **पुरूरवा-उर्वशी-संवादे**
- ''मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते'' वर्तते - **विश्वामित्र-नदी-संवादे**
- ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्'' इति मन्त्रपादः कुत्र विराजते - **सरमा-पणि-संवादे**
- 'यमी' प्रतीक है - **रात्रि की**
- 'विपाशा शुतुद्री' इति नाम्नोः नद्योः वर्णनं कस्मिन् संवादसूक्ते विद्यते - **विश्वामित्र-नदी-सूक्ते**
- विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त में ऋषिका नदियाँ कौन है - **विपाट्छुतुद्री**
- ''एना वयं पयसा पिन्वमाना अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः'' इति ऋचायाः केन संवाद-सूक्तेन सम्बन्धः - **विश्वामित्र-नदी-सूक्तेन**
- ''आ घा ता गच्छा'' इति पठ्यते - **यम-यमी-संवादे**
- ''तस्य वयं प्रसवे याम् उर्वीः'' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते - **विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य**
- ऋग्वेद के किस मण्डल में विश्वामित्र-नदी-संवाद सूक्त है - **तृतीय मण्डल में**
- 'इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः' से सम्बन्धित सूक्त है - **विश्वामित्र-नदी-संवाद**
- 'सरमा-पणि' संवादसूक्तस्य मण्डलक्रमः कः - **10/108**
- ''कदा सूनुः पितरं जात इच्छात्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते - **पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते**
- 'आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्'' मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते - **विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य**
- 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' इयमुक्तिर्भवति - **उर्वश्याः**
- सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते - **नासदीयसूक्ते**
- ऋग्वेद के किन दो मण्डलों में सूक्तों की संख्या समान है - **प्रथम और दशम**
- ''पयसा जवेते'' से सम्बन्धित सूक्त है - **विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्त**
- ''स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा, अप ते गवां सुभगे भजाम'' इति मन्त्रांशः कुतः उद्धृतः - **सरमा-पणि-संवादात्**
- वेदानुसारेण ''चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः

सूर्यो अजायत'' इयं पंक्तिः अस्ति - **पुरुषसूक्तस्य**
- 'नासदीयसूक्त' का सम्बन्ध है - **ऋग्वेद से**
- 'स देवाँ एह वक्षति' इति कस्मिन् सूक्ते उपलभ्यते - **अग्निसूक्ते**
- कस्मिन् सूक्ते चतुर्णां वर्णानामुल्लेखोऽस्ति - **पुरुषसूक्ते**
- 'आ कृष्णेन रजसा' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते - **सवितृसूक्ते**
- 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' से सम्बन्धित सूक्त है - **शिवसङ्कल्पसूक्त**
- ऋक्सामच्छन्दोयजूंषि कस्मात् समुत्पन्नानि - **पुरुषविशेषात्**
- 'सृष्टि-स्थिति-प्रलय' विषयकं विवेचनम् उपलभ्यते - **नासदीयसूक्ते**
- ''संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते - **पृथिवीसूक्ते**
- 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इत्यस्मिन् मन्त्रे 'इळे' पदस्य अर्थः अस्ति - **स्तौमि**
- विराट्पुरुषस्य कस्मादङ्गात् वैश्यो जातः - **ऊरुतः**
- ब्राह्मण की उत्पति ब्रह्मा के किस अङ्ग से हुयी है - **मुख**
- ब्रह्मा के ऊरु से किसकी उत्पत्ति हुयी है - **वैश्य**
- सबसे पहले किसकी सृष्टि हुयी - **जल**
- पुरुषसूक्त में हमें मिलता है - **चातुर्वर्ण्य का सिद्धान्त**
- जल से उत्पत्ति का सिद्धान्त किस सूक्त में है - **नासदीयसूक्त में**
- 'नासत्या वृक्तबर्हिषा' यह किस सूक्त में है - **अश्विनौसूक्त**
- 'रोहितसूक्त' किस वेद में उपलब्ध होता है - **अथर्ववेद में**
- 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान्' यह मन्त्रांश किस सूक्त का है - **इन्द्रसूक्त का**
- 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव' इति मन्त्रांशः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते - **अग्निसूक्ते**
- संज्ञानसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते - **10 (दसवें)**
- ''देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती'' इति मन्त्रांशः कस्य सूक्तस्य - **उषस्-सूक्तस्य**
- नासदीयसूक्तस्य प्रतिपाद्यं किम् - **सृष्टिः**
- ''मध्या कर्तोर्विततं सञ्जभार'' इति पठ्यते - **सूर्यसूक्ते**
- ''पर्जन्यः पिता'' इति कस्मिन् सूक्ते प्रतिपाद्यते - **पृथिवीसूक्ते**
- ''श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते- **पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते**
- सृष्ट्युत्पत्तिविषयं विवेचनं वर्तते - **पुरुषसूक्ते**
- ''अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्''

मन्त्रांशोऽयं वर्तते - **पृथिवीसूक्ते**
- 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते - **दशमे**
- 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' किस सूक्त में प्राप्त होता है – - **वाक्सूक्त में**
- ऋग्वेद में कौन दार्शनिक सूक्त है - **पुरुषसूक्त**
- 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्' यह किस सूक्त में उपनिबद्ध है - **पुरुषसूक्त में**
- रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अंश क्या है– 'स्वस्ति नो........' - **बृहस्पतिर्दधातु**
- 'स जातो अत्यरिच्यत' में 'सः' पद का अर्थ - **पुरुष**
- किस सूक्त को सर्वेश्वरवाद का मूल माना जाता है - **पुरुष**
- नासदीयसूक्तम् अस्ति - **दार्शनिक-सूक्त**
- ''वृषायमाणोऽवृणीत सोमम्'' से सम्बन्धित सूक्त है - **इन्द्र**
- 'को अद्धा वेद क इह प्र वोचत' इत्यादयः प्रश्नाः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते - **नासदीयसूक्ते**
- कस्मिन् सूक्ते सृष्टिप्रक्रिया वर्णितास्ति - **पुरुषसूक्ते**
- मन्त्राः कस्मात् - **मननात्**
- अक्षसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते - **दशममण्डले**
- ''हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्'' अस्मिन् मन्त्रे 'हिरण्यगर्भः' इति पदस्य कः अर्थः - **हिरण्यगर्भः प्रजापतिः**
- 'कृषिमित्कृषस्व' किस सूक्त का है - **अक्षसूक्त**
- 'भूमिसूक्त' (पृथिवीसूक्त) किस वेद में है - **अथर्ववेद में**
- ''सह वामेन'' से सम्बद्ध सूक्त है - **उषासूक्त**
- 'एतावानस्य महिमा' से सम्बन्धित सूक्त है - **पुरुषसूक्त**
- ऋग्वेदस्य (1.154) सूक्ते विष्णुदेवाय मन्त्राणां संख्या अस्ति– - **6 (छह)**
- '..... समवर्तताग्रे' मन्त्रस्य रिक्तांशे प्रयोज्यमस्ति - **हिरण्यगर्भः**
- 'यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।' मन्त्रांशोऽयं केन सूक्तेन सम्बद्धः - **पृथिवीसूक्तेन**
- अग्नि की कितने सूक्तों में स्तुति की गयी है - **200**
- ऋग्वेद के कितने सूक्तों में बृहस्पति देवता की स्वतन्त्र रूप में उपासना की गयी है - **11 सूक्तों में**
- 'विश्वामित्र-नदी-संवादो' वर्तते - **ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले**

- शाकलशाखा अस्ति - **ऋग्वेदस्य**
- शांखायनशाखा कस्य वेदस्य - **ऋग्वेदस्य**
- शांखायन-गृह्यसूत्रस्य सम्बन्धः अस्ति - **ऋग्वेदीयबाष्कलशाखातः**
- ऋग्वेद में मण्डलों की संख्या है - **दश (10)**
- किस वेद का अष्टक और मण्डल दो प्रकार का विभाजन है - **ऋग्वेद**
- 'पुरुषसूक्त' ऋग्वेद के किस मण्डल में आता है - **दशम**
- ऋग्वेद में कितने अष्टक हैं - **आठ (8)**
- ऋग्वेदे कति मन्त्राः सन्ति - **10552**
- खिलसूक्तैः सह ऋग्वेदे कति सूक्तानि सन्ति - **1028**
- वेद विकृतियाँ हैं - **8 (आठ)**
- ऋग्वेद का विभाजन क्रम है - **मण्डल और अष्टक क्रम**
- ऋग्वेदस्य प्रत्येकम् अष्टकेषु कति अध्यायाः भवन्ति - **अष्ट**
- ऋग्वेद के अक्षसूक्त में कितने मन्त्र हैं - **चतुर्दश**
- वेदाध्ययने विकृतिपाठः कतिविधो विद्यते - **अष्टविधः**
- अष्टकक्रमे ऋग्वेदे कति अध्यायाः सन्ति - **64**
- 'ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति - **षोडश**
- 'नासदीयसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति - **सप्त**
- 'अष्टकक्रम' में विभक्त ग्रन्थ है - **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में मन्त्रों की संख्या है - **9 (नव)**
- ऋग्वेद की सूक्तव्यवस्था किसके अनुसार है - **मण्डल**
- किस वेद का विभाजन अष्टकों में किया गया है - **ऋग्वेद**
- 'दाशुषे' का अर्थ है - **हविर्दाता यजमान के लिए**
- 'रोदसी' का क्या अर्थ है - **द्यावापृथिवी**

- 'मृगो न भीमः' मे 'न' पद का क्या अर्थ है - **इव**
- 'कर्मण्यपसो मनीषिणः' में 'अपसः' का क्या अर्थ है - **कर्मनिष्ठ**
- 'रायः' शब्दस्य कोऽर्थः - **धन**
- 'मेदिनी' किसे कहते हैं - **पृथ्वी**
- ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः - **रात्रिन्दिवा**
- यास्कमते 'वृत्रम्' कस्य प्रतीकः अस्ति - **मेघः**
- 'क्रतुः' इत्यस्य कोऽर्थः - **यज्ञः**
- शुल्बशब्दस्य कोऽर्थः - **रज्जुः**
- 'देवासः' इति प्रयोगः - **छान्दसः**

- 'सान्नाय्य' शब्द का अर्थ है - **दधिपयसी**
- 'ग्मा' जिसका पर्यायवाची शब्द है, वह है - **पृथ्वी**
- गद्यात्मक वेद है - **यजुर्वेद**
- जिस वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गयी है उसका नाम है - **यजुर्वेद**
- यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है - **कर्मकाण्ड**
- कः वेदः 'अध्वर्युवेद' नाम्नाऽपि ज्ञायते - **यजुर्वेदस्य**
- वेदव्यासः यजुर्वेदस्य ज्ञानं कस्मै दत्तवान् - **वैशम्पायनाय**
- 'यजुर्वेदः' सम्प्राप्तः - **वायोः**
- 'धनुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः - **यजुर्वेदस्य**
- पतञ्जलि के अनुसार यजुर्वेद की कितनी शाखायें हैं - **एक सौ (100)**
- कः यजुषां वमनं कृतवानासीत् - **याज्ञवल्क्यः**
- कः यज्ञस्य नेता - **अध्वर्युः**
- यजुर्वेदः केषां योनिः - **क्षत्रियाणाम्**
- ब्रह्मा वायोः सकाशात् किं प्रकाशितवान् - **यजुर्वेदम्**
- अध्वर्यु किस वेद का पुरोहित है - **यजुर्वेद का**
- 'अध्वर'-शब्दस्यार्थो भवति - **यज्ञः**
- यजुर्वेदाध्यायी भवति - **अध्वर्युः**
- यजुर्वेदीयः ऋत्विक् - **अध्वर्युः**
- आध्वर्यकर्मणः कृते कः वेदः भवति - **यजुर्वेदः**
- अध्वर्युः कस्य वेदस्य प्रातिनिध्यं करोति - **यजुर्वेदस्य**
- अध्वर्यु से युक्त वेद है - **यजुर्वेद**
- श्रौतयागेषु भित्तिस्थानीयो वेदः को विद्यते - **यजुर्वेदः**
- यजुर्मन्त्रः कीदृशो भवति - **गद्यात्मकः**
- शुक्लत्वकृष्णत्वभेदः कस्य वेदस्य विद्यते - **यजुर्वेदस्य**
- यजुर्वेदे यजुषां संग्रहः किमर्थम् अस्ति - **अध्वर्युत्वम्**
- "देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्" इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे अस्ति - **यजुर्वेदे**
- कः वेदः अनियताक्षरावसानात्मको भवति - **यजुर्वेदः**
- सायणाचार्यः प्रथमतया कस्य वेदस्य व्याख्यां कृतवान् - **यजुर्वेदस्य**
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' शुक्लयजुर्वेदस्य कस्मिन् अध्याये प्राप्यते - **चत्वारिंशे**
- माध्यन्दिनसंहितायाः अपरं नाम किमस्ति - **वाजसनेयिसंहिता**
- शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है - **शतपथब्राह्मण**

- 'वाजसनेयी-संहिता' नाम है - **शुक्लयजुर्वेद का**
- 'परमावटिक' शाखीय वेद है - **शुक्लयजुर्वेद**
- माध्यन्दिनसंहितायाम् अनुदात्तस्वरचिह्नं कुत्र दीयते - **अधः**
- 'माध्यन्दिनम्' शाखा कस्य वेदस्य - **यजुर्वेदस्य**
- ईशावास्योपनिषद् किस संहिता से सम्बद्ध है - **काण्वसंहिता से**
- याज्ञवल्क्य का सम्बन्ध किस वेद से है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- शुक्लयजुर्वेदस्य शाखा अस्ति - **माध्यन्दिन**
- माध्यन्दिनशाखा से सम्बद्ध वेद है - **शुक्लयजुर्वेद**
- 'ईशोपनिषद्' कस्य वेदस्यान्तिमोऽध्यायः - **यजुर्वेदस्य**
- शुक्लयजुर्वेद की शाखा है - **काण्व शाखा**
- कस्मिन् वेदे मन्त्रैः सह विनियोगवाक्यानां संग्रहो नास्ति - **शुक्लयजुर्वेदे**
- वाजसनेयिसंहिता कस्य वेदस्य संहिताऽस्ति. - **शुक्लयजुर्वेदस्य**
- माध्यन्दिनशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते - **उत्तरभारते**
- महीधरभाष्य से सम्बन्धित वेद है - **शुक्लयजुर्वेद**
- कात्यायनश्रौतसूत्र किस वेद से सम्बद्ध है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- 'शिवसङ्कल्पसूक्त' किस वेद से सम्बन्धित है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- पितृयज्ञस्य वर्णनं वाजसनेयि-संहितायाः कस्मिन् अध्याये प्राप्यते - **द्वितीये अध्याये**
- वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये अग्निहोत्रस्य वर्णनमस्ति - **तृतीये अध्याये**
- हस्तेन त्रैस्वर्यं प्रदर्श्यते - **माध्यन्दिनसंहितायाम्**
- हस्तस्वर होता है - **शुक्लयजुर्वेदे**
- शुक्लयजुर्वेद किस नाम से भी जाना जाता है - **वाजसनेयिसंहिता**
- वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये शिवसङ्कल्पोपनिषद् अस्ति - **चतुस्त्रिंशे अध्याये**
- आदित्यसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति - **शुक्लयजुर्वेदः**
- काण्वसंहिता किस वेद से सम्बन्धित है - **शुक्लयजुर्वेद से**
- काण्वशाखायाः प्रचारः विशेषतया कस्मिन् प्रदेशे वर्तते - **महाराष्ट्रे**
- वाजसनेयिसंहितायाः प्रथमाध्याये कस्य यज्ञस्य वर्णनमस्ति - **दर्शपौर्णमासस्य**
- यजुर्वेद की मुख्यतया कितनी शाखायें हैं - **दो**
- यजुर्वेदेन सम्बद्धे वेदाङ्गज्योतिषे कति श्लोकाः सन्ति - **चतुःचत्वारिंशत्**
- ब्रह्मगणे कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**

- यजुर्वेदस्य आहत्य कति शाखाः स्वीक्रियन्ते - **86**
- यजुर्वेदस्य मैत्रायणीशाखायां कति काण्डानि सन्ति - **चत्वारः**
- शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहितायां मन्त्रसंख्या वर्तते - **1975**
- शिवसङ्कल्पसूक्तं कस्यां शाखायाम् उपदिष्टम् - **माध्यन्दिनीयशाखायाम्**
- शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्त का अध्याय है - **34**
- शुक्लयजुर्वेद में कितने अध्याय हैं? - **40 (चत्वारिंशत्)**
- वाजसनेयिसहितायां कति अध्यायाः सन्ति - **40**
- प्रधानतया वाजसनेयिसंहितायाः कति शाखाः सन्ति - **02**
- शुक्लयजुःप्रातिशाख्ये कति अध्यायाः सन्ति - **अष्ट**
- कात्यायनस्य अनुक्रमणीग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति - **पञ्च**
- अध्वर्युगणे कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- वाजसनेयिसंहितायां प्रथमाध्याये कियन्तः मन्त्राः राराजन्ते - **31**
- वर्तमान में शुक्लयजुर्वेद की कितनी शाखायें उपलब्ध हैं? - **2**
- शुक्लयजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय है - **ईशोपनिषत्**
- '40 अध्याय' हैं – - **वाजसनेयिसंहिता में**
- इष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- शुक्लयजुर्वेदे रुद्राध्यायाः सन्ति - **अष्ट**
- शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति - **षट् (6)**
- माध्यन्दिनशाखायां कति अध्यायाः खिलरूपेण सन्ति - **पञ्चदश**
- वाजसनेयी शाखा के कितने भेद हैं - **पञ्चदश(15)**
- माध्यन्दिनशतपथस्य कस्मिन् काण्डे अग्निरहस्यं वर्णितमस्ति - **दशमे काण्डे**
- मैत्रायणी शाखा से सम्बन्धित वेद है - **कृष्णयजुर्वेद**
- कृष्णयजुर्वेदस्य कति शाखाः सम्प्रति उपलभ्यन्ते - **02**
- तैत्तिरीयशाखायां कति अष्टकाः खण्डाः वा सन्ति - **05**
- तैत्तिरीयसंहितायां कति काण्डानि सन्ति - **सप्त**
- तैत्तिरीयसंहितायां कति प्रपाठकाः सन्ति - **चतुश्चत्वारिंशत् (44)**
- तैत्तिरीयप्रातिशाख्ये कत्यध्यायाः सन्ति - **चतुर्विंशतिः(24)**
- काण्वशाखा किस वेद की है - **यजुर्वेद की**
- काण्वसंहितायां कति मन्त्राः प्राप्यन्ते - **2086**
- तैत्तिरीयसंहितायां कति अनुवाकाः स्वीक्रियन्ते - **631**
- कृष्णयजुर्वेदे कति काण्डानि सन्ति - **सप्त (7)**

- मैत्रायणी उपनिषद् कुल कितने अध्यायों में विभक्त है - **7 (सप्त)**
- 'कठशाखा' सम्बन्धित है - **यजुर्वेद से**
- 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे दृक्पथमुपयाति - **शुक्लयजुर्वेदे**
- मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं वर्तते - **कृष्णयजुर्वेदे**
- कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते - **मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात्**
- तित्तिररूपेण शिष्याः कं वेदं स्वीकृतवन्तः - **कृष्णयजुर्वेदम्**
- काण्वशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते - **महाराष्ट्रे**
- कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है - **तैत्तिरीय शाखा**
- कृष्णयजुर्वेद में है - **मन्त्र और ब्राह्मण**
- तैत्तिरीयसंहितायाः अध्यायानां प्रश्नानां वा अपरमभिधानं किमस्ति - **प्रपाठकः**
- कृष्णयजुर्वेदस्य का शाखा सम्प्रत्यपि सम्पूर्णतया न प्राप्यते - **कठकापिष्ठलसंहिता**
- ब्रह्मसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति - **कृष्णयजुर्वेदः**
- तैत्तिरीयसंहिता सम्बन्धित है - **कृष्णयजुर्वेद से**
- प्राजापत्यकाण्डं कस्यां संहितायां विद्यते - **तैत्तिरीयसंहितायाम्**
- कृष्णयजुर्वेदः केन सम्प्रदायेन सम्बध्यते - **ब्रह्मसम्प्रदायेन**
- मन्त्रब्राह्मणवाक्ययोर्मिश्रणं बाहुल्येन कुत्र प्राप्यते - **कृष्णयजुर्वेदे**
- काण्वसंहिता कस्मिन् वेदे अन्तर्भावो भवेत् - **यजुसि**
- मैत्रायणी-संहिता कस्य वेदस्य वर्तते - **कृष्णयजुर्वेदस्य**
- मन्त्रैः सह ब्राह्मणस्य नियोजनमस्ति - **कृष्णयजुर्वेदे**
- कृष्णयजुर्वेदेन सह सम्बद्धमस्ति - **बौधायनगृह्यसूत्रम्**
- तैत्तिरीयसंहितायाः तृतीयकाण्डस्य किं नाम - **आग्नेयकाण्डम्**
- तैत्तिरीयसंहितायाः नामान्तरमस्ति - **कृष्णयजुर्वेदः**
- कौन सी संहिता ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, धर्मसूत्रादि से सर्वाङ्गपूर्ण है - **तैत्तिरीय-संहिता**
- कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है - **तैत्तिरीय शाखा**
- 'आपस्तम्बगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद - **कृष्णयजुर्वेद**
- 'मन्त्र तथा ब्राह्मण' की सम्मिलित संज्ञा क्या है - **वेद**
- वाजपेययाग का अनुष्ठान करने वाला होता है - **सम्राट्**
- अश्वमेध यज्ञ में अश्व के साथ सोती है - **महिषी**

- अग्निष्टोम याग में ऋत्विज होते हैं - **षोडश**
- दर्शपूर्णमासयागस्य का दक्षिणा - **अन्वाहार्यम्**
- इष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति - **पञ्च**
- पौर्णमासेष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति - **पञ्च**
- 'पञ्च महायज्ञाः' किमर्थम् अनुष्ठीयन्ते - **पञ्चसूनादोषनाशाय**
- अग्निष्टोमयागो वर्तते - **सोमयज्ञः**
- 'दर्शयागः' कदानुष्ठीयते - **प्रतिपदि**
- 'अग्निहोत्रम्' अनुष्ठीयते– - **प्रतिदिनम्**
- आध्यात्मिकव्याख्यापद्धतौ वेदे प्रयुक्तस्य 'अग्नि' शब्दस्य अयमर्थः - **परमात्मा**
- महामखाः कति- - **पञ्च**
- अग्निर्नित्यो भवति - **गार्हपत्ये**
- वेदाभ्यासेन व्यवह्रियते - **ब्रह्मयज्ञः**
- दर्शेष्टिः कस्मिन् दिवसे भवति - **शुक्लपक्षप्रतिपदि**
- पूर्णमासेष्टिः कस्मिन् दिवसे भवति - **कृष्णपक्षप्रतिपदि**
- दर्शेष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- दर्शपूर्णमासयज्ञे 'दर्श'–शब्दस्य अर्थोऽस्ति - **अमावस्या**
- कः ब्रह्मयज्ञः - **अध्ययनम्**
- दर्शपूर्णमासयज्ञे प्रथमा इष्टिका - **पौर्णमासेष्टिः**
- पाकयज्ञाः भवन्ति - **सप्त**
- यज्ञ सम्बन्धी विधि-विधानों का पता चलता है - **यजुर्वेद में**
- 'अध्वरः' इति शब्दस्य कोऽर्थः - **यज्ञः**
- होतुः किं कर्म भवति - **आह्वानम्**
- 'पुरोडाश' इति शब्दस्य कोऽर्थः - **द्रव्यम्**
- 'व्रीहि' इति शब्दस्य कोऽर्थः - **द्रव्यम्**
- ब्रह्मा यागे किं वदति - **अनुज्ञाम्**
- गार्हपत्याग्निः कस्यां दिशि प्रकल्प्यते - **पश्चिमायाम्**
- आह्वनीयाग्निः कस्यां दिशि भवति - **पूर्वस्याम्**
- दक्षिणाग्निः कस्यां दिशि भवति - **दक्षिणस्याम्**
- अग्निहोत्रहोमस्य कालः को विद्यते - **सायं प्रातः**
- सोमयज्ञस्य प्रधानहविः किं भवति - **सोमः**
- दीक्षा कस्य यागस्य अङ्गं विद्यते - **सोमयागस्य**
- दीक्षासंस्कारः कस्य भवति - **यजमानस्य**
- महायज्ञाः कति भवन्ति - **पञ्च**

- ऋतवः कति परिगणिताः सन्ति - **षट्**
- दर्शपूर्णमास्ययागः कस्य प्रकृतिर्विद्यते - **इष्टियागस्य**
- दर्शे कति प्रधानयागाः भवन्ति - **त्रयः**
- पौर्णमासे कति प्रधानयागाः भवन्ति - **पञ्च**
- दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते - **पञ्च**
- दर्शपूर्णमासयागे कति अनुयाजाः भवन्ति - **त्रयः**
- हविर्यज्ञसंस्थाः कति भवन्ति - **सप्त**
- हविर्यागानां प्रकाराः सन्ति - **सप्त**
- पाकयज्ञसंस्थाः कति भवन्ति - **सप्त**
- सोमयज्ञसंस्थाः कति भवन्ति - **दश**
- रथन्तर है, एक - **साम**
- 'वैराज' है, एक - **साम**
- याग के जो दो रूप हैं, वे हैं - **द्रव्य एवं देवता**
- सभी इष्टियों की प्रकृति है - **दर्शपूर्णमासेष्टि**
- दर्शमासयागः कदा विधीयते - **प्रतिपदायाम्**
- दर्शयागस्य आधानकालः - **अमावस्या**
- प्रयाज कितने हैं - **पञ्च**
- पवमानेष्टयः सन्ति - **तिस्रः**
- वैदिकधर्म आधारित था - **यज्ञ पर**
- सामवेद का दूसरा नाम है - **गानवेद**
- उत्तरार्चिक किस वेद से सम्बद्ध है - **सामवेद से**
- सङ्गीत का प्राचीनतम ग्रन्थ है - **सामवेद**
- 'उद्गाता' का सम्बन्ध किस वेद से है? - **सामवेद से**
- सामवेदः सम्प्राप्तः - **रवेः (सूर्य से)**
- सामवेद संहिता का उपवेद कौन है - **गान्धर्ववेद**
- सामवेदस्य शाखाः सन्ति - **3 (तीन)**
- सहस्रशाखो वेदः - **सामवेदः**
- 'राणायनीयशाखा' कस्य वेदस्य - **सामवेदस्य**
- 'जैमिनिशाखा' किस वेद से सम्बन्धित है - **सामवेद से**
- 'कौथुम-शाखा' से सम्बद्ध वेद है - **सामवेद**
- सामवेदः केषां प्रसूतिः - **ब्राह्मणानाम्**
- उद्गातृगणे कति ऋत्विजो भवन्ति - **चत्वारः**
- गानस्य प्राधान्यमस्ति - **सामवेदे**
- कौन-सा वेद सङ्गीतशास्त्र से सम्बन्धित है - **सामवेद**

- सामवेदे गानं कतिधा भवति - **5 (पाँच)**
- ऋक्तन्त्रं कस्य वेदस्य कृते - **सामवेदस्य**
- सामवेदस्य प्रमुख–प्रतिपाद्यविषयोऽस्ति - **गानम्**
- सामवेदस्य पूर्वार्चिकस्य अपरा संज्ञा का अस्ति - **छन्दसंहिता**
- सामवेद में 'साम' का अर्थ है - **गायन**
- 'रथन्तर' जिसका प्रकार है, वह है - **सामगान**
- 'साम्नः' व्यवहारिकोऽर्थोऽस्ति - **गायनम्**
- स्तोमस्य प्रधानता - **सामवेदे**
- 'तत्त्वमसि' श्रुतिः - **सामवेदे**
- कः सामवेदस्य मन्त्राणां गायनं करोति - **उद्गाता**
- 'संहितोपनिषद् ब्राह्मणं' कस्मिन् वेदे विद्यते - **सामवेदे**
- ऋग्वेदात् उद्धृतानाम् ऋचां संख्या सामवेदे - **1504**
- सामाख्या कुत्र भवति - **गीतिषु**
- 'गीतिषु सामाख्या' इति कस्मिन् ग्रन्थे उक्तमस्ति - **जैमिनीयसूत्रे**
- अङ्गुलीषु स्वरसञ्चालनं क्रियते - **सामवेदे**
- 'उपद्रव' जिसकी विधा है, वह है - **सामगान**
- 'दैवतब्राह्मण' से सम्बन्धित वेद का नाम है - **सामवेद**
- 'मशकसूत्र' से सम्बन्धित वेद है - **सामवेद**
- सामवेदस्य कति ब्राह्मणानि सन्ति - **08 (आठ)**
- साममन्त्राणां गायने कति स्वराणां प्रयोगो भवति - **सप्त**
- माधव ने जिस वेद की व्याख्या की है, वह है - **सामवेद**
- सत्यव्रतसामश्रमी कस्य वेदस्य प्रकाण्डविद्वान् आसीत् - **सामवेदस्य**
- पतञ्जलिमतानुसारं सामवेदस्य शाखाः सन्ति - **1000**
- 'जैमिनीयशाखा' कस्य वेदस्य - **सामवेदस्य**
- उत्तरार्चिके प्रपाठकस्य संख्या - **9 (नव)**
- ऋक्तन्त्रं सामवेदस्य कस्यां शाखायामन्तर्भवति - **कौथुमशाखायाम्**
- पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिक-भेदेन विभक्तो वेदः - **सामवेदः**
- सामवेदस्य भागाः कति - **2**
- सामवेदस्य मन्त्राणां (ऋचाणां) संख्या - **1549**
- सामवेदे कति ऋचः स्वतन्त्ररूपेण सन्ति - **75**
- सामसंहिता कति भागेषु विभक्ताऽस्ति - **भागद्वये**
- पूर्वार्चिक में प्रपाठकों की संख्या - **10(दश)**
- उत्तरार्चिक में कितने भाग (प्रपाठक) हैं - **9 (नव)**
- सामवेदीयपूर्वार्चिके कियन्तः मन्त्राः विलसन्ति - **650**

- सामवेदीयशिक्षाग्रन्थाः - **3 (तीन)**
- जैमिनीयशाखायां मन्त्रसंख्या - **1687**
- जैमिनीयगानसंख्या - **3681**
- ''सङ्गीत के अनुकूल जो शाब्दिक परिवर्तन होता है, उसे कहते हैं।'' - **सामविकार**
- सामविकाराः परिगणिताः सन्ति - **षट्**
- कः ऋषिः अथर्वसंहितायाः द्रष्टा अस्ति - **अथर्वः**
- 'ब्रह्मवेद' का अर्थ है - **अथर्वः**
- किस संहिता को 'ब्रह्मवेद' कहा गया है - **अथर्ववेद को**
- 'अथर्वाङ्गिरस' नाम्ना कः वेदः ज्ञायते - **अथर्ववेदः**
- 'ब्रह्मा' किस वेद से सम्बद्ध ऋत्विक् है - **अथर्ववेद**
- वेदों में सबसे अर्वाचीन वेद है - **अथर्ववेद**
- 'भैषज्यवेद' यह किसका नामान्तर है - **अथर्ववेदस्य**
- भैषज्यसूक्तानि (भैषज्यमन्त्राः) वर्तन्ते - **अथर्ववेदे**
- वैतानश्रौतसूत्रमस्ति - **अथर्ववेदीयम्**
- इस समय प्रचलित अथर्ववेद किस शाखा का है - **शौनकशाखा का**
- 'जाजलशाखा' जिस वेद की शाखा है, वह है - **अथर्ववेद**
- 'पैप्पलादशाखा' जिस वेद की है, वह है - **अथर्ववेद**
- कौन सा वेद वेदत्रयी का भाग नहीं है - **अथर्ववेद**
- कालसूक्तं युज्यते.......... - **अथर्ववेदे**
- अभिचारसूक्तानि दृश्यन्ते - **अथर्ववेदे**
- पृथिवीसूक्तम् - **अथर्ववेदे**
- 'पृथ्वीसूक्तम्' कस्य वेदस्य अस्ति - **अथर्ववेदस्य**
- पृथिवी की पूजा इसमें है - **अथर्ववेद में**
- चार वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है - **अथर्ववेद में**
- आयुर्वेद अर्थात् 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है - **अथर्ववेद में**
- 'व्रात्य' का वर्णन किस वेद में पाया जाता है - **अथर्ववेद में**
- अथर्ववेद में स्कम्भ के रूप में कौन वर्णित है - **ब्रह्म**
- पैप्पलादशाखा जिस लिपि में प्राप्त हुई थी, उसका नाम है - **शारदा लिपि**
- 'स्कम्भ' का वर्णन कहाँ प्राप्त होता है - **अथर्ववेद में**

- अथर्ववेद का गृह्यसूत्र कौन है - **वैखानस गृह्यसूत्र**
- अथर्ववेद से सम्बद्ध कौन सी शिक्षा है - **माण्डूकी शिक्षा**
- प्रचुर आयुर्वेदिक सामग्री किस वेद में है - **अथर्ववेद में**
- अभिचारक्रियाणां वर्णनं मुख्यतया कस्मिन् वेदे प्राप्यते - **अथर्ववेदे**
- अथर्ववेद में पाया जाता है– - **विज्ञानकाण्ड**
- औषधि वनस्पतियों के विषय में सूचना किस वेद में मिलती है - **अथर्ववेद में**
- 'कौशिकगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद है - **अथर्ववेद**
- लौकिकविषयस्य सर्वाधिकं वर्णनं कस्मिन् वेदे विद्यते - **अथर्ववेदे**
- शौनक व पिप्पलादशाखा का सम्बन्ध किस वेद से है - **अथर्ववेद से**
- चरणव्यूहानुसारम् अथर्ववेदस्य कति शाखाः - **नव**
- अथर्ववेद संहिता की कितनी शाखायें प्राप्त हैं - **नव**
- पातञ्जलमहाभाष्यानुसारम् अथर्ववेदस्य शाखाः सन्ति - **नव**
- अथर्ववेद कितने काण्डों में विभाजित है - **विंशतिः(20)**
- राष्ट्राभिवर्धनसूक्तं अथर्ववेदस्य कस्यां शाखायां विद्यते - **शौनकशाखायाम्**
- अथर्वसंहिता कति खण्डेषु विभक्ताऽस्ति - **20**
- अथर्ववेदे कति प्रपाठकाः सन्ति - **34**
- अथर्ववेदे कति अनुवाकाः सन्ति - **111**
- अथर्ववेदे कति सूक्तानि सन्ति - **731**
- अथर्ववेदे कति मन्त्राः सन्ति - **5987**
- अथर्ववेदस्य विभाजनं प्राप्यते - **काण्डेषु**
- विलुप्ता 'मौद'–शाखा कस्य वेदस्य वर्तते - **अथर्ववेदस्य**
- 'सुमन्तु' – ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान् - **अथर्ववेदम्**
- 'आग्नीध्र' – नाम्ना ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते - **ब्रह्मगणस्य**

❑❑

2. ब्राह्मणग्रन्थ

- 'नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् **- ब्राह्मणम्**
- प्रतिष्ठानं विधिश्चैव.......... तदिहोच्यते' इति पूरयत **- ब्राह्मणम्**
- ग्रन्थवाचकः ब्राह्मणलक्षणं कतिधा प्रतिपाद्यते **- दश**
- कति लक्षणात्मकः ब्राह्मणग्रन्थो भवति **- दश**
- विधिवाक्यम् वर्तते **- ब्राह्मणः**
- ब्राह्मणं नाम **- यज्ञविधिप्रकाशनम्**
- ब्राह्मणग्रन्थों का विषय नहीं है **- छन्दविवेचन**
- वह कौन सा वेद है, जिसके दो ब्राह्मण लगभग समान नाम वाले हैं **- शुक्लयजुर्वेद**
- ऋग्वेद के कितने ब्राह्मणग्रन्थ हैं **- 2**
- सामवेद-सम्बद्धानि कति ब्राह्मणानि सन्ति **- अष्ट**
- सायणभाष्यमतेन सामवेदीयानां ब्राह्मणानां संख्या **- अष्ट**
- 'चरैवेति-चरैवेति' उपदेशः कुत्र लभ्यते **- शुनःशेपाख्याने**
- विधिभागरूपेण स्वीक्रियते **- ब्राह्मणग्रन्थः**
- 'हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः' जिसको परिभाषित करता है, वह ग्रन्थ है **- ब्राह्मण**
- ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यविषयस्य कति प्रकाराः **- दश**
- ब्राह्मणग्रन्थाः कस्य विस्तृतवर्णनं कुर्वन्ति **- यज्ञानुष्ठानस्य**
- ऐतरेयब्राह्मणे कति अध्यायाः सन्ति **- चत्वारिंशत्**
- ऐतरेय ब्राह्मण में अध्यायों की संख्या कितनी है **- चत्वारिंशत्**
- ऐतरेयब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है **- ऋग्वेद से**
- ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम् **- ऐतरेयब्राह्मणम्**
- 'चरैवेति चरैवेति' इति वाक्यांशोऽस्मिन् ग्रन्थे अस्ति **- ऐतरेयब्राह्मणे**
- 'हरिश्चन्द्रोपाख्यानं' कस्मिन् ब्राह्मणे उपलभ्यते **- ऐतरेयब्राह्मणे**
- 'शुनःशेप आख्यान' किस ब्राह्मण में है **- ऐतरेय ब्राह्मण में**
- 'शुनःशेपाख्यान' सर्वप्रथम कहाँ प्राप्त होता है **- ऐतरेय ब्राह्मण में**
- 'अग्निर्वैदेवानामवमः' का उल्लेख जिसमें है, वह है **- ऋग्वेदस्य**
- 'शांखायनब्राह्मण' कस्य वेदस्य **- ऋग्वेदस्य**
- शांखायनब्राह्मणे कियन्तोऽध्यायाः विद्यन्ते **- 30**
- शांखायनब्राह्मणस्य अपरं नाम किम् अस्ति **- कौषीतकि**
- शतपथब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है **- शुक्लयजुर्वेद से**
- शतपथ-ब्राह्मण में काण्डों की संख्या है **- चतुर्दश (14)**
- माध्यन्दिनशतपथब्राह्मण में काण्ड हैं **- चतुर्दश (14)**
- शुक्लयजुर्वेद के शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं **- 100**

- माध्यन्दिन शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं **- 100**
- शुक्लयजुर्वेद की काण्वशाखा का ब्राह्मण है **- शतपथब्राह्मणम्**
- शतपथ ब्राह्मण कितने हैं **- 2 (दो)**
- 'बृहदारण्यकोपनिषद्' किस ब्राह्मण में है **- शतपथ ब्राह्मण में**
- जिस ग्रन्थ में 'पुरुषमेध' का उल्लेख हुआ है, वह है **- शतपथब्राह्मण**
- 'शतपथब्राह्मण' के किस काण्ड में दर्शयाग वर्णित है **- प्रथमकाण्ड में**
- 'शतं पन्थानो यत्र.......' इत्युक्त्या यस्य ग्रन्थस्य परिचयो भवति सोऽस्ति **- 'शतपथ' ब्राह्मण**
- शतपथब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेह माधव से सम्बन्धित ऋषि थे **- ऋषि गौतम राहुगण**
- शतपथब्राह्मणं कया संहितया संयुक्तमस्ति **- माध्यन्दिनसंहितया**
- शतपथ ब्राह्मण के त्रयोदश काण्ड में किस यज्ञ का विधान किया गया **- अश्वमेध यज्ञ का**
- 'मनुमत्स्यकथा' किस ब्राह्मणग्रन्थ में उपलब्ध होती है **- शतपथब्राह्मण में**
- माध्यन्दिनशतपथे कति प्रपाठकाः सन्ति **- 68 (अष्टषष्टिः)**
- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते **- शतपथब्राह्मणे**
- "स्वाध्यायोऽध्येतव्यः" इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते **- शतपथब्राह्मणे**
- 'शतपथब्राह्मणस्य' आंग्लानुवादः कृतो वर्तते **- जे. एग्लिंगमहोदयेन**
- ताण्ड्य ब्राह्मण किस वेद से सम्बन्धित है **- सामवेद से**
- 'प्रौढब्राह्मण' सम्बन्धित है **- सामवेद**
- सामवेदीयं ब्राह्मणम् **- ताण्ड्यम्**
- ताण्ड्यब्राह्मणस्य मुख्यविषयः **- सामविधानं सोमयागविधानं च**
- पञ्चविंशब्राह्मणं कस्य ब्राह्मणस्य अपरं नाम अस्ति **- ताण्ड्यस्य**
- अद्भुतब्राह्मण से सम्बन्धित वेद है **- सामवेद**
- षड्विंश ब्राह्मण किस वेद से सम्बद्ध है **- सामवेद से**
- आर्षेयब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धम् **- सामवेदेन**
- देवताध्यायब्राह्मणम् कस्य वेदस्य **- सामवेदस्य**
- 'संहितोपनिषद्ब्राह्मण' से सम्बद्ध वेद है **-सामवेद**
- 'जैमिनीयब्राह्मणं' केन वेदेन सम्पृक्तम् **- सामवेदेन**

- पञ्चविंशब्राह्मणं कस्य वेदस्य **- सामवेदीयम्**
- अथर्ववेद का ब्राह्मणग्रन्थ है **- गोपथ**
- गोपथब्राह्मणं सम्बद्धमस्ति **- अथर्ववेद से**
- गोपथ ब्राह्मण के अनुसार 'सर्पवेद' जिसका उपवेद है, वह है **-अथर्ववेद**



3. आरण्यक

- सायणमतानुसारम् अरण्ये पठनीयाः सन्ति **- आरण्यकाः**
- को नाम आरण्यकस्य मुख्यविषयः **- ज्ञानम्**
- आरण्यकं केन आश्रमेण सम्बद्धम् **- वानप्रस्थाश्रमेण**
- सामवेदीय आरण्यकों की संख्या है **- दो**
- माध्यन्दिनशतपथस्य कः काण्डः आरण्यकनाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति **- चतुर्दशः**
- 'आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा' इति उक्तम् **- कृष्णद्वैपायनेन**
- के ग्रन्थाः वनेषु रचिताः **- आरण्यकाः**
- ऐतरेय आरण्यक सम्बन्धित है **- ऋग्वेद से**
- 'बृहदारण्यकं' कया शाखया संयुक्तमस्ति **- काण्वशाखया**
- . 'बृहदारण्यकम्' किस वेद का है **- यजुर्वेद का**
- तैत्तिरीय-आरण्यक किस वेद से सम्बद्ध है **- कृष्णयजुर्वेद से**
- पञ्चमहायज्ञ इसमें होता है **- तैत्तिरीयारण्यक**
- 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' कस्मिन् प्रपाठके तैत्तिरीयोपनिषद् विद्यते **- सप्तमे**
- तैत्तिरीयारण्यके कति काण्डानि (प्रपाठकाः) सन्ति **- दश**
- तैत्तिरीयारण्यकस्य प्रपाठकसंख्या का विद्यते **- दश**
- कृष्णयजुर्वेदस्य आरण्यकम् अस्ति **- तैत्तिरीयारण्यकम्**
- यजुर्वेदेन सम्बद्धस्य आरण्यकस्य किं नाम अस्ति **- तैत्तिरीयारण्यकम्**
- तैत्तिरीयारण्यकं कस्य ब्राह्मणस्य शेषांशरूपेणास्ति **- तैत्तिरीयस्य**
- 'तैत्तिरीयारण्यकस्य' प्रथम-प्रपाठकः केन मन्त्रेण आरभ्यते **- भद्रं कर्णेभिः**
- 'तैत्तिरीयारण्यके' पञ्चयज्ञानां वर्णनं कस्मिन् प्रपाठके विद्यते **- द्वितीये**
- 'महानारायणीय उपनिषद्' कस्मिन्नारण्यके अस्ति **- तैत्तिरीये**
- मैत्रायणी आरण्यक में कितने प्रपाठक हैं **- 7(सात)**
- सामवेदस्य आरण्यकम् अस्ति **- तलवकारः**
- 'तलवकार आरण्यक' सम्बन्धित है **- सामवेद से**
- तलवकारारण्यकस्य नामान्तरम् **- जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मणम्**
- तलवकारारण्यके अध्यायाः **- 4 (चार)**
- 'छान्दोग्य आरण्यक' किस वेद से सम्बन्धित है **- सामवेद से**

- कस्य वेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते - **अथर्ववेदस्य**



4. उपनिषद्

- 'उपनिषद्' शब्द का अर्थ है - **आत्मविद्या**
- ज्ञानकाण्ड इनका विषय है - **उपनिषद्**
- उपनिषदों का प्रथम भाषान्तर फारसी भाषा में कब हुआ **-17 वीं सदी में**
- जिसके द्वारा ब्रह्म की समीपता निश्चित रूप से प्राप्त हो, उसे कहते हैं - **उपनिषद्**
- भगवान् आद्यशङ्कराचार्यः कियतीनामुपनिषदां भाष्यं कृतवान् - **10**
- उपनिषद् शब्दे कः धातुरस्ति - **सद्**
- उपनिषदा प्रतिपाद्यते - **ज्ञानकाण्डम्**
- उपनिषद् पुस्तकें हैं **-वैदिक दर्शन पर**
- कौन प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित है **-उपनिषद्**
- उपनिषदों में क्या वर्णित है - **ब्रह्मविद्या**
- वेदानाम् अन्तिमभागं .... इत्युच्यते - **उपनिषद्**
- वैदिकसाहित्यस्य कः भागः वेदान्तनाम्ना कथ्यते **-उपनिषद्**
- उपनिषद् इति पदे कः प्रत्ययो अस्ति - **क्विप्**
- उपनिषदनुसारं कया मृत्युः तीर्यते - **अविद्यया**
- उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य क्या रहा है - **कर्मकाण्ड**
- उत्तरवैदिककाल में धार्मिक क्रियाओं में मुख्य था - **कर्मकाण्ड**
- महानारायणोपनिषद् कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते **-तैत्तिरीयारण्यके**
- मुख्योपनिषदः सन्ति **– एकादश**
- सांख्य-योग शैवदर्शन प्रतिपादक उपनिषद् ग्रन्थ है **-श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक साहित्य है **-उपनिषत्साहित्यम्**
- कौषीतकि-उपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है **-ऋग्वेद से**
- ईशावास्योपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है **-शुक्लयजुर्वेद से**
- 'ईशावास्योपनिषद्' किस वेद में है **-शुक्लयजुर्वेद में**
- ईशावास्योपनिषद् है **-काण्वसंहितायाम्**
- माध्यन्दिन शुक्लयजुर्वेद का अन्तिम अध्याय क्या कहलाता है - **ईशोपनिषद्**
- विद्यया किम् अश्नुते - **अमृतम्**
- 'न कर्म लिप्यते नरे' इत्यत्र कस्य कर्मणः वर्णनमस्ति **-अनासक्तकर्म**
- माध्यन्दिनशाखायाः कस्मिन्नध्याये 'ईशावास्योपनिषद्' अस्ति **-चत्वारिंशे**

- ईशावास्योपनिषदनुसारं कया रीत्या अमृतत्त्वस्य प्राप्तिर्जायते– **-विद्यया**
- केन प्रकारेण जिजीविषेत् **-कर्म कुर्वन्**
- ईशावास्यदिशा कथं मृत्युं तरति **-विनाशेन**
- का 'संहितोपनिषदि' गण्यते **- ईशोपनिषद्**
- 'ईशावास्योपनिषद्' के अनुसार पूर्ण क्या है **- परब्रह्म**
- मनुष्य को शास्त्रनियत कर्म का पालन करते हुये कितनी आयु की कल्पना करनी चाहिए **-सौ वर्ष**
- अमृत की प्राप्ति में हेतु कौन है **-विद्या**
- अमृतत्व की प्राप्ति किससे होती है **-विद्या से**
- विद्या एवं अविद्या को एक साथ प्राप्त करने वाला प्राप्त करता है **-अमृत को**
- ईशावास्योपनिषद् में प्रयुक्त 'सुपथा' शब्द का अर्थ है **-उत्तरायण**
- 'ईशोपनिषद्' क्या कहलाता है **- वेदान्त**
- यह समस्त जगत् किससे व्याप्त है **-ईश्वर से**
- अविद्या का अर्थ है **-कर्मानुष्ठान**
- अज्ञानरूप घोर अन्धकार में कौन नहीं प्रवेश करता है **-परमेश्वर का उपासक**
- सत्यस्वरूप परमात्मा का मुख कैसे पात्र से ढका है **-सुवर्णमय**
- काण्व-संहिता का भाग है **-ईशावास्योपनिषद्**
- 'ईशावास्योपनिषद्' किस विषय से सम्बन्धित है **-ज्ञानकाण्ड और कर्मनिष्ठा**
- शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है **- ईशावास्योपनिषद्**
- शुक्लयजुर्वेद सम्बद्ध उपनिषद् हैं **- उनविंशतिः (19)**
- ईशावास्योपनिषदि किं वर्णनमस्ति **– ब्रह्मचिन्तनम्**
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' से सम्बन्धित ग्रन्थ है **-ईशावास्योपनिषद्**
- 'ईशावास्योपनिषदि' कति मन्त्राः सन्ति **- 18**
- ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेदस्य कतमोऽध्यायो वर्तते **- 40**
- 'बृहदारण्यक' उपनिषद् सम्बद्ध है **- शुक्लयजुर्वेद से**
- बृहदारण्यकोपनिषदस्ति **- शतपथब्राह्मणे**
- बृहदारण्यकोपनिषद् है **- शुक्लयजुर्वेद का**
- 'श्रीमन्थ-विद्या' का उपदेश है **- बृहदारण्यकोपनिषद् में**
- 'मैत्रेयी-याज्ञवल्क्य-संवादः' कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति उक्तं कुत्र **- बृहदारण्यकोपनिषदि**
- शुनःशेपस्य पितुर्नामास्ति **- अजीगर्तः**
- नचिकेतसे अग्नेः उपदेष्टाऽभवत् **- यमः**
- कठोपनिषदनुसारं महतः परं किमस्ति **- अव्यक्तम्**

- 'रथ-रूपकं' कुत्र विद्यते अथवा रथरूपकमुपलभ्यते - **कठोपनिषदि**
- एतेषु 'सारथिः' कः उच्यते - **बुद्धिः**
- कठोपनिषद् सम्बद्ध है - **कृष्णयजुर्वेद**
- कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- 'कठोपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- कस्मिन् वरे यमस्त्रिणाचिकेतसम् अग्निम् अदात् - **द्वितीयवरे**
- कठोपनिषदि नचिकेता द्वितीयवररूपेण किं लब्धवान् - **अग्निविद्याम्**
- यम-नचिकेता संवाद से सम्बद्ध उपनिषद् है - **कठोपनिषद्**
- नचिकेता और यम के बीच सुप्रसिद्ध संवाद किस उपनिषद् में उल्लिखित है - **कठोपनिषद्**
- यमनचिकेतसोः संवादः कस्यामुपनिषदि वर्तते - **कठोपनिषदि**
- आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम के संवाद किस उपनिषद् में प्राप्त होता है - **कठोपनिषद् में**
- कठोपनिषद् में नचिकेता के पिता ने कौन सा यज्ञ किया था - **सर्वमेध यज्ञ**
- कठोपनिषद् में कितने अध्याय हैं - **2**
- कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा किस प्रकार से प्राप्तव्य है - **परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा**
- कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति किसका वरण करता है - **श्रेय का**
- कठोपनिषद् में 'सृङ्का' का अर्थ है - **अकुत्सितकर्ममयीगति**
- कठशाखायाः उपनिषदः किं नाम अस्ति - **कठोपनिषद्**
- कठोपनिषद् कस्याः शाखायाः प्रातिनिध्यं करोति - **कठशाखायाः**
- 'नचिकेतोपाख्यानं' कस्मिन्नुपनिषदि प्राप्यते - **कठोपनिषदि**
- नचिकेतसः पिता कस्मै तं प्रादात् - **मृत्यवे**
- कठोपनिषदनुसारं प्राणेन सम्भवति - **अदितिः**
- मन से अधिक गति वाला कौन है - **परमेश्वर**
- कठोपनिषदि नचिकेतसा किं प्राप्तम् - **वरत्रयम्**
- यमेन श्रेयप्रेयविवेचनं कस्याम् उपनिषदि विद्यते - **कठोपनिषदि**
- ''इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः'' इत्यंशो वर्तते - **कठोपनिषदि**
- उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इति कस्मिन् उपनिषदि विद्यते -**कठोपनिषदि**
- नचिकेता कस्मात् वरत्रयं लब्धवान् - **यमात्**
- विद्यया कं लोकं प्राप्यते - **देवलोकम्**
- 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' इत्ययं श्लोकांशः अस्ति - **कठोपनिषदि**
- 'तैत्तिरीय उपनिषद्' का वेद है - **यजुर्वेद**
- ''रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति''

इति वाक्यं कस्यामुपनिषदि अस्ति - **तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'तैत्तिरीयोपनिषद्' कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते - **तैत्तिरीयारण्यके**
- तैत्तिरीयोपनिषदि केन वेदेन सम्बद्धा - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- तैत्तिरीयोपनिषदि कत्यनुवाकाः सन्ति - **द्वादश**
- शिक्षावल्ली प्राप्यते - **तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव' इत्यादि वाक्य किस उपनिषद् से उद्धृत है - **तैत्तिरीयोपनिषद्**
- 'अथ शीक्षां व्याख्यास्यामः' इति उक्तिः कुतः उद्धृता - **तैत्तिरीयोपनिषदः**
- 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- दस उपनिषदों के अन्तर्गत किस उपनिषद् की गणना नहीं की गई है - **श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- 'नारद-सनत्कुमारसंवाद' आता है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- 'उद्दालक-श्वेतकेतु-संवाद' किस उपनिषद् में है - **छान्दोग्य में**
- 'छान्दोग्योपनिषद्' किस वेद से सम्बन्धित है - **सामवेद से**
- 'सत्यकाम-जाबालि कथा' किस उपनिषद् में है - **छान्दोग्य में**
- छान्दोग्योपनिषदः अध्यायानां संख्या - **8**
- श्वेतकेतुकथां छान्दोग्योपनिषदः कस्मिन् अध्याये विद्यते - **षष्ठे**
- सत्यकामस्य जाबालेः कथा छान्दोग्योपनिषदि कस्मिन् अध्याये विद्यते - **चतुर्थे**
- किस ग्रन्थ में सर्वप्रथम देवकी के पुत्र कृष्ण का वर्णन किया गया है - **छान्दोग्य में**
- कौन सा उपनिषद् सामवेद का अंश है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- छान्दोग्योपनिषदि कयोः भूतयोः सृष्टिः नोक्ता - **अप्पृथिव्योः**
- आरुणेः शिष्यः आसीत् - **श्वेतकेतुः**
- उपनिषद् ब्राह्मणम् - **छान्दोग्योपनिषद्**
- सामवेद से सम्बद्ध उपनिषद् कौन है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं विद्यते - **छान्दोग्योपनिषदि**
- 'तलवकारोपनिषद्' का सम्बन्ध है - **सामवेदेन**
- 'केनोपनिषद्' केन वेदेन सम्बद्धा - **सामवेदेन**
- 'यक्ष और देवता' का संवाद है - **केनोपनिषद् में**
- 'तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा' अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते - **केनोपनिषद्**
- 'प्रतिबोधविदितं मतम् अमृतत्वं हि विन्दते' इति पद्यांशः अस्ति - **छान्दोग्ये**
- 'उमा हेमवती कथा' किस उपनिषद् में वर्णित है - **केनोपनिषद् में**
- जानुश्रुतेरुपाख्यानं कुत्र वर्तते - **छान्दोग्योपनिषदि**

- सामवेदोपनिषद् कौन है - **केनोपनिषद्**
- केनोपनिषद् केन ब्राह्मणग्रन्थेन सम्बद्धा - **तलवकारब्राह्मणेन**
- यक्षरूपधारिणः परब्रह्मणः आख्यायिका उपलभ्यते - **केनोपनिषदि**
- केनोपनिषदः सम्बन्धः अस्ति - **सामवेदस्य तवलकारशाखया**
- 'प्राणाग्निहोत्र-विद्या' किस उपनिषद् में है - **प्रश्नोपनिषद्**
- प्रश्नोपनिषद् - **अथर्ववेदीया**
- मुण्डकोपनिषद् से सम्बन्धित वेद है - **अथर्ववेद**
- ओंकारस्य व्याख्या विशेषरूपेण कस्मिन् उपनिषदि भवति? - **मुण्डकोपनिषदि**
- अथर्ववेदीया उपनिषत् अस्ति - **माण्डूक्योपनिषद्**
- सबसे पहले चार आश्रमों का वर्णन आया है, वह उपनिषद् है - **जाबालोपनिषद्**
- वाजश्रवसः पुत्रस्य नाम अस्ति - **नचिकेता**
- इन्द्र-विरोचनस्य कथा कस्यामुपनिषदि प्राप्यते - **छान्दोग्ये**
- 'भक्ति' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ मिलता है - **उपनिषद् में**

❑❑

5. वेदाङ्ग

- वेदाङ्गानां संख्या भवति - **षड्**
- उपाङ्गानि कति सन्ति– **-चत्वारि (4)**
- शब्दप्रक्रियाशास्त्र का मूल कौन सा वेदाङ्ग है **-व्याकरण**
- 'प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बद्ध है **-शिक्षा से**
- वेदाङ्ग शिक्षा का सम्बन्ध है **-उच्चारणम्**
- वेदपुरुष का शिक्षा है - **घ्राण**
- ऋग्वेदस्य शिक्षा का - **पाणिनीया**
- 'शिक्षाग्रन्थेषु' प्रतिपाद्यते - **उच्चारणधर्मः**
- वेदस्य नासिकात्वेनोपमीयते - **शिक्षा**
- शिक्षाङ्गस्य विषयाः कियन्तः उपदिष्टा - **षट्**
- 'माण्डव्यशिक्षा' सम्बद्ध है - **शुक्लयजुर्वेद**
- 'शिक्षा' वेदाङ्ग का प्रतिपाद्य विषय क्या है **-उच्चारण**
- पाणिनीय-शिक्षायां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि सन्ति **-अष्ट**
- प्रातिशाख्यं नाम - **शिक्षा**
- शिक्षायाम् उद्देश्यम् **-वर्णस्वरादिविधानम्**
- 'बलम्' इत्यनेन किं गृह्यते **-स्थानप्रयत्नौ**
- 'भारद्वाजशिक्षा' केन सम्बद्धा विद्यते **-कृष्णयजुर्वेदेन**

- शिक्षायाः प्रतिपाद्यो विषयः को विद्यते -**उच्चारणविधिः**
- याज्ञवल्क्यशिक्षायां वर्ण्यविषयः कः -**वर्णोच्चारणविधिः**
- शुक्लयजुर्वेदेन सम्बद्धा शिक्षा का अस्ति -**याज्ञवल्क्यशिक्षा**
- शिक्षाग्रन्थेषु कः शिक्षाग्रन्थः यजुर्वेदेन सम्बद्धो नास्ति -**नारदीयशिक्षा**
- कस्य वेदाङ्गस्य प्रतिपादनं वेदपुरुषस्य प्राणरूपेणास्ति -**शिक्षायाः**
- शिक्षावेदाङ्गे कस्य विषयस्य वर्णनमस्ति -**वर्णानाम्**
- कस्मिन् वेदाङ्गे मुख्यतया उच्चारण–प्रक्रियायाः वर्णनमस्ति -**शिक्षायाम्**
- याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति -**शुक्लयजुर्वेदेन**
- याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्तयः -**चतस्रः**
- वाजसनेयिसंहिताया सम्बद्धः शिक्षाग्रन्थः कोऽस्ति -**माण्डव्यशिक्षा**
- वासिष्ठीशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति -**शुक्लयजुर्वेदेन**
- पाणिनीयशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति -**ऋग्वेदेन**
- वर्णस्वराद्युच्चारण प्रकार नहीं है **- कल्पे**
- सामवेदस्य शिक्षा भवति -**गौतमी**
- शिक्षाग्रन्थाः वेदानां निरूपकाः सन्ति **- उच्चारणम्**
- नारदीयशिक्षा सम्बद्धा वर्तते **- सामवेदेन**
- माण्डूकीशिक्षा कस्य वेदस्य -**अथर्ववेदस्य**
- पाणिनीयशिक्षानुसारं लिखितपाठकः कः भवति -**अधमः**
- वृत्तिसमवायार्थः अनुबन्धकरणार्थः इष्टबुध्यर्थश्च केषाम् उपदेशः भवति -**वर्णानाम्**
- मैत्रेयी शिक्षामवाप **- याज्ञवल्क्यात्**
- 'अक्षरं न क्षरति' इति कुत्र उक्तमस्ति **- निरुक्ते**
- प्रथमः भावविकारः कः अस्ति **- जायते**
- 'आचार्यश्चिद् इदं ब्रूयात्' इत्यत्र 'चित्' निपातस्य अर्थः कः -**पूजा**
- औदुम्बरायणाचार्यमते वचनं कीदृशम् -**इन्द्रियनित्यम्**
- 'ऋक्प्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बन्धित है -**शिक्षा से**
- शिक्षावेदाङ्गस्य सम्बन्धोऽस्ति -**मन्त्रोच्चारणेन**
- ऋग्वेद का गृह्यसूत्र है -**आश्वलायनगृह्यसूत्रम्**
- 'आश्वलायन-गृह्यसूत्र' किससे सम्बद्ध है -**ऋग्वेदेन**
- गौतमधर्मसूत्र के अनुसार संस्कार होता है -**चत्वारिंशत्**
- दारिल वृत्ति है -**कौशिकगृह्यसूत्रे**
- शुक्लयजुर्वेद का गृह्यसूत्र है -**पारस्करगृह्यसूत्रम्**
- सामवेदीय श्रौतसूत्र है -**लाट्यायनश्रौतसूत्रम्**
- आश्वलायन-गृह्यसूत्र में संस्कार हैं **- एकादश**

- कत्यङ्गुलखातावेदिर्भवति **-त्र्यङ्गुला**
- वेदीनिर्माण की प्रक्रिया यहाँ उपलब्ध है **-शुल्बसूत्र में**
- 'गृह्यसूत्र' किसके भाग हैं **-कल्प के**
- कल्पसूत्र का विषय है **यज्ञ-वेदी-निर्माण**
- श्रौतसूत्रों का वर्ण्य विषय है **वैदिकयज्ञ**
- 'वेदाङ्ग' है **कल्प**
- 'धर्मसूत्रम्' आयाति **कल्पे**
- 'श्रौतसूत्रं' किं वेदाङ्गं विषयीकरोति **कल्पम्**
- कः कल्पसूत्रविषयः **-यागप्रयोगक्रमप्रतिपादनम्**
- कल्पग्रन्थेषु किं गण्यते **-श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र**
- कात्यायनश्रौतसूत्र किससे सम्बद्ध है **-शुक्लयजुर्वेद से**
- कल्प वेदाङ्ग से सम्बद्ध है **-बौधायनशुल्बसूत्र**
- 'पारस्करगृह्यसूत्र' की गणना किस वेदाङ्ग में की जाती है **- कल्प में**
- शुल्बसूत्रकार 'कात्यायन' किस वेद से सम्बद्ध है **-यजुर्वेद से**
- 'गौतमधर्मसूत्र' किस वेद से सम्बद्ध है **- सामवेद से**
- कल्पः वेदस्य **- हस्तौ**
- 'वशिष्ठ-धर्मसूत्र' किस वेद से सम्बद्ध है **- ऋग्वेद से**
- 'अथर्ववेद' का गृह्यसूत्र है **-कौशिकगृह्यसूत्र**
- 'धर्मसूत्र' किस वेदाङ्ग में गिना जाता है **-कल्प में**
- 'कल्प वेदाङ्ग' से सम्बद्ध है **-कात्यायनश्रौतसूत्र**
- 'बौधायनधर्मसूत्र' में प्रश्नों (अध्यायों) की संख्या है **-चार (4)**
- 'तृतीय-शिष्टागमः' का उल्लेख है, वह ग्रन्थ है **-बौधायनधर्मसूत्र**
- 'पारस्करगृह्यसूत्र' जिस वेद का है, वह वेद है **-शुक्लयजुर्वेद**
- शुल्बसूत्रों की जिसमें गणना होती है, वह है **-कल्पः**
- श्रौतसूत्राणां प्रतिपाद्यो विषयः **- वैदिकयागविधानम्**
- प्राचीनतमं धर्मसूत्रम् **- गौतमकृतम्**
- 'गौतमधर्मसूत्रस्य' मूलग्रन्थो वेदः **– सामवेदः**
- 'रेखागणित' मिलता है **-शुल्बसूत्र में**
- शुल्बसूत्राणां प्रतिपाद्यो विषयः **– वेदिनिर्माणम्**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रं' कया शाखया सम्बद्धम् **-तैत्तिरीयशाखया**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रे' कति प्रश्नाः सन्ति **-त्रिंशत्**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रे' द्वितीयप्रश्नस्य प्रतिपाद्यो विषयः कः **- अग्न्याधेयम्**
- 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' अष्टादशे प्रश्ने को यागो वर्ण्यते **- अतिरात्रः**

- 'बौधायनश्रौतसूत्रस्य' त्रिंशत्तमे प्रश्ने किं वर्ण्यते - **प्रवरः**
- 'आपस्तम्बश्रौतसूत्रं' केन वेदेन सह सम्बद्धम् - **कृष्णयजुर्वेदेन**
- कल्पे सूत्रग्रन्थाः कतिविधाः भवन्ति -**चतुर्विधाः**
- श्रौतकर्म कस्मिन् अग्नौ क्रियते - **वैतानिकाग्नौ**
- स्मार्तकर्म कस्मिन् अग्नौ क्रियते - **लौकिकाग्नौ**
- पुष्पसूत्रं कस्मिन् वेदेऽन्तर्भावः भवति - **सामवेदः**
- शुक्लयजुर्वेदस्य श्रौतसूत्राणि कति - **एकम्**
- यजुर्वेदसम्बद्धं श्रौतसूत्रम् -**हिरण्यकेशीयम्**
- अथर्ववेदीयं श्रौतसूत्रं किम् **वैतानम्**
- शुल्बसूत्रे शुल्बशब्दस्यार्थः कोऽस्ति -**परिमाण**
- कात्यायनश्रौतसूत्रस्य प्रथमाध्यायस्य विषयः कः -**परिभाषा**
- षोडशसंस्कारः कस्य विषयः -**गृह्यसूत्रम्**
- धर्मसूत्रेषु कस्य प्राचीनत्वं स्वीकरोति -**गौतमीयम्**
- यजुर्वेदस्य श्रौतसूत्रं किमस्ति - **कात्यायनश्रौतसूत्रम्**
- कृष्णयजुर्वेदस्य कति गृह्यसूत्राणि - **नौ**
- आपस्तम्बश्रौतसूत्रे कति प्रश्नाः सन्ति -**चतुर्विंशति**
- कल्पान्तर्गतो वर्तते -**गृह्यसूत्रम्**
- बौधायनशुल्बसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धं वर्तते -**यजुर्वेदेन**
- कल्पसूत्रान्तर्गतं न वर्तते -**ब्रह्मसूत्रम्**
- मुख्यतया कर्मकाण्डं कतमद् वेदाङ्गं प्रतिपादयति - **कल्पः**
- 'कल्पसूत्रम्' इति पारिभाषिकी संज्ञा अस्ति -**श्रौत-गृह्य-धर्मशुल्बसूत्राणाम्**
- 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन सम्बद्धम् -**सामवेदेन**
- कल्पग्रन्थेषु कः गण्यते -**कात्यायनश्रौतसूत्रम्**
- कौशिकगृह्यसूत्रं केन सम्बद्धम् -**अथर्ववेदेन**
- ऋग्वेदस्य शुल्बसूत्रस्य नाम किम् - **न कोऽपि**
- 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति -**यजुर्वेदेन**
- 'वाधूलश्रौतसूत्रं' केन सम्बद्धं विद्यते -**कृष्णयजुर्वेदेन**
- शुक्लयजुर्वेद का श्रौतसूत्र है -**कात्यायनश्रौतसूत्रम्**
- 'वैतानश्रौतसूत्र' से सम्बन्धित है -**अथर्ववेद से**
- षट् वेदाङ्ग में प्रधान है -**व्याकरणम्**
- व्याकरण को वेद का .... कहते हैं – **मुख**
- वेदाङ्गेषु 'व्याकरणम्' उपमीयते – **मुखेन**
- वेदशरीरे व्याकरणशास्त्रस्य स्थानमस्ति – **मुख**

- "ऊहः खल्वपि" इति कस्य प्रयोजनम् अस्ति - **व्याकरणवेदाङ्गस्य**
- पदानां प्रकृतेः प्रत्ययस्य च उपदेशकं वेदाङ्गम् अस्ति - **व्याकरणम्**
- वेदपुरुष का 'मुख' किसे कहते हैं - **व्याकरणम्**
- वेदाङ्गेषु किं शास्त्रं शब्दशास्त्रं कथ्यते - **व्याकरणम्**
- 'वेदाङ्गेषु' कस्य मुख्यत्वम् -**व्याकरणस्य**
- वैदिकवाङ्मये ध्वनिविज्ञानस्य प्राचीनं नाम अस्ति -**शिक्षा**
- निरुक्त का प्रतिपाद्य विषय है – **पञ्चविधम्**
- निरुक्ते एकस्य पदस्य बह्वर्थमादाय किं काण्डं प्रवर्तते -**नैगमम्**
- निघण्टु-शब्देनोच्यते - **वैदिकशब्दकोशः**
- निरुक्तानुसारं द्वितीयो भावविकारः कः - **अस्ति**
- अग्रणीर्भवति इति निरुक्त्या क उच्यते - **अग्निः**
- 'निरुक्त' किसका अङ्ग है -**वेद का**
- परिशिष्टभाग को छोड़कर निरुक्त में कितने अध्याय हैं – **12**
- निरुक्तेऽस्ति - **वैदिकशब्दानां निर्वचनम्**
- निरुक्तशब्दे को धातुरस्ति -**वच्**
- श्रौतस्थानीयं वेदाङ्गं निरूपितमस्ति - **निरुक्तम्**
- वेदपुरुषस्य' श्रोत्रं किमस्ति - **निरुक्तम्**
- यास्कमते पदभेदाः सन्ति - **चत्वारः**
- 'नैगमकाण्डं' कुत्र वर्तते - **निरुक्ते**
- आख्यातस्य लक्षणं कुत्र वर्तते - **निरुक्ते**
- देवतानां स्थानानि वर्णितानि सन्ति -**निरुक्ते**
- वेदाङ्गेषु निरुक्तं भवति -**श्रोत्रम्**
- नैघण्टुकं काण्डं वर्तते - **निघण्टुग्रन्थे**
- अर्थप्रधानं वर्तते - **निरुक्तम्**
- निरुक्तानुसारं पञ्चमो भावविकारः कः - **अपक्षीयते**
- 'समुद्द्रवन्त्यस्मादापः' इत्यनेन को निर्दिश्यते -**समुद्रः**
- यास्कीय–निरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यते -**त्रीणि**
- निरुक्तग्रन्थे काण्डसंख्या वर्तते -**त्रीणि**
- निरुक्तानुसारं तृतीयो भावविकारः कः - **विपरिणमते**
- 'अक्नोपनः' कः भवति - **अग्निः**
- व्याकरण का कात्स्न्र्य है -**निरुक्तम्**
- निघण्टु में कितने काण्ड हैं -**3 (तीन)**

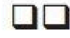
- "इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः" का पाठ जिसमें है, वह ग्रन्थ है - **निरुक्त**
- वेदाङ्गेषु किं व्याकरणस्य पूरकं भवति - **निरुक्तम्**
- निरुक्ते 'षड्भावविकाराः' कस्य सिद्धान्तः - **वार्ष्यायणेः**
- निरुक्तकारः 'समुद्र'-पदस्य कतिविधं निर्वचनं करोति - **पञ्चविधम्**
- निरुक्ते कीदृशो विधिः स्वीकृतः – **निर्वचनम्**
- निरुक्तमस्ति– **-निर्वचनविज्ञानम्**
- यास्कानुसारेण 'निरुक्तस्य' मूलग्रन्थः **- निघण्टुः**
- 'निघण्टु'-ग्रन्थे विद्यमानाः काण्डाः **- 3 (तीन)**
- निरुक्ते विषयान् प्रतिपादयति **-यास्कः**
- निघण्टुग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति **-5 (पाँच)**
- निरुक्तस्य वर्ण्यविषयः कः - **निर्वचनम्**
- कौत्सानुसारेण मन्त्राः कीदृशाः - **अनर्थकाः**
- यास्कमते आख्यातलक्षणं किं - **भावप्रधानः**
- यास्कानुसारं 'नाम' कीदृशं भवति - **सत्त्वप्रधानः**
- यास्कमते 'नाम्नः' लक्षणं किम् - **सत्त्वप्रधानः**
- 'विश्वान् नरान् नयति' कस्य निर्वचनम् अस्ति - **वैश्वानरः**
- निरुक्तं कस्य ग्रन्थस्य व्याख्यारूपेणास्ति - **निघण्टोः**
- निघण्टुग्रन्थः कीदृशोऽस्ति **-शब्दसंकलनात्मकः**
- कस्मिन् वेदाङ्गे निर्वचनं प्राप्यते निरुक्ते - **चतुर्दश**
- सामान्यतया निरुक्ताध्यायानां संख्या कति मन्यते - **चतुर्दश**
- यास्करचितस्य निरुक्तस्य आधारग्रन्थः कोऽस्ति - **निघण्टुः**
- निरुक्तानुसारं चत्वारि 'शृङ्गा' इत्यस्य कोऽभिप्रायः - **चत्वारो वेदाः**
- 'निरुक्तं' किमस्ति - **वेदाङ्गम्**
- निरुक्तेऽस्ति - **वैदिकशब्दानां निर्वचनम्**
- 'आचारं ग्राह्यति' कस्य निर्वचनम् **-आचार्यस्य**
- भाव-काल-कारक-संख्याश्च इति चत्वारः अर्थाः भवन्ति - **आख्यातस्य**
- वैदिकशब्दानां सविस्तरं विवेचनं कुत्र उपलभ्यते - **निरुक्ते**
- अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत् - **निरुक्तम्**
- 'निघण्टु' इति वैदिककोशस्य भाष्यरूपेण अस्ति - **निरुक्तम्**
- 'उनत्तीति' निरुक्त्या अभिधीयते **- उदक्**
- उच्छतीति निरुक्त्या उच्यते **-उषाः**
- यास्कमतेन कति भावविकाराः **-षट्**

- यास्कीय-निरुक्तानुसारम् कस्य पदत्वेन स्वीकारः नास्ति - **प्रत्ययस्य**
- यजुर्यजतेः इति निरुक्तिः केन प्रदत्ता अस्ति - **यास्केन**
- निरुक्तानुसारं चतुर्थो भावविकारः कः -**वर्धते**
- वेदशरीरे निरुक्तशास्त्रस्य स्थानमस्ति - **श्रोत्रवत्**
- दुर्गाचार्य की व्याख्या से सम्बन्धित ग्रन्थ है - **निरुक्त**
- 'समाम्नायः समाम्नातः' जिस ग्रन्थ का पहला वाक्य है, वह है - **निरुक्त**
- 'अध्वरं युनक्ति, अध्वरस्य नेता' इति वाक्यं कुत्र प्राप्यते - **निरुक्ते**
- निघण्टोः शब्दराशेः निर्वचनाय वेदाङ्गोऽस्ति - **निरुक्तम्**
- 'सत्त्वप्रधानम्' इति मन्यते - **नाम**
- ''तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम्'' इत्यनेन लक्षितम् -**निरुक्तम्**
- यास्कस्य उक्तिः अस्ति - **तदिदं व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम्**
- 'यद् दूरङ्गता भवति' इति निरुक्त्या किम् उपलक्ष्यते -**गौः**
- निरुक्तशास्त्रे 'अर्थनित्यः परीक्षेत' इति प्राप्यते - **द्वितीयाध्याये**
- भावप्रधानं भवति - **आख्यातम्**
- निघण्टोः चतुर्थाध्यायः केन नाम्ना ज्ञायते - **नैगमनाम्ना**
- निघण्टोः पञ्चमाध्यायाः केन नाम्ना ज्ञायते - **दैवतनाम्ना**
- 'चित्' इति निपातो वर्तते - **कुत्सार्थे**
- पादपूरणार्थकः निपातः अस्ति - **इत्**
- 'वा' इति निपातो वर्तते - **विचारणार्थे**
- षड्भावविकाराणां चर्चामकरोत् - **वार्ष्यायणिः**
- यास्कः अस्ति - **निरुक्तकारः**
- यास्क का सम्बन्ध है - **निरुक्त से**
- निर्वचनसिद्धान्त-प्रतिपादकं वेदाङ्गं विद्यते - **निरुक्तम्**
- निरुक्तशास्त्रसम्मताः देवताः सन्ति - **तिस्रः**
- वेदाङ्ग है - **छन्दस्**
- वेदाङ्ग 'छन्दस्' के प्रणेता हैं - **पिङ्गल**
- किस वेदाङ्ग को पाद कहा गया है - **छन्द को**
- वेदाङ्ग में 'छन्दस्' कहलाता है - **पाद**
- पिङ्गलच्छन्दःसूत्रे वर्ण्यविषयः कः - **छन्दः**
- परम्परानुसारं कः देवः छन्दशास्त्रस्य प्रवर्तको मन्यते - **पिङ्गलः**
- किं शास्त्रं वृत्तशास्त्रं कथ्यते - **छन्दः**
- वैदिकमन्त्रोच्चारणप्रयोजनार्थं कस्य वेदाङ्गस्य अध्ययनम् अनिवार्यम् - **छन्दसः**
- प्रसिद्धानि वैदिकछन्दांसि कति सन्ति - **सप्त**

- गायत्री छन्द का सर्वाधिक प्रयोग किस वेद में हुआ है - **ऋग्वेद में**
- गायत्रीछन्द में अक्षर होते हैं - **24 (चतुर्विंशतिः)**
- 'अग्निमीळे-----' इति सूक्तस्य छन्दः किम् **-गायत्री**
- अस्यवामीयसूक्तस्य छन्दः किम् **-गायत्री**
- गायत्रीच्छन्दः वर्तते **-प्रथमसूक्तस्य**
- वरुणसूक्ते छन्दः वर्तते **-गायत्री**
- त्रिपादविराड्गायत्री-छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि भवन्ति **- एकादश**
- गायत्री-छन्दसि कति पादाः भवन्ति - **त्रयः पादाः**
- वेदे 'गायत्री' एकम् **-छन्दः**
- गायत्री कस्याभिधानम् **- छन्दसः**
- उष्णिक्वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति **- 28**
- अनुष्टुप्-छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि – **अष्ट**
- अनुष्टुप्-छन्दसि कति पादाः भवन्ति – **चत्वारः**
- कौन सा वेदाङ्ग पद्य रचना से जुड़ा हैं **- छन्द**
- अनुष्टुप् छन्द में अक्षरों की संख्या कितनी है **- 32**
- द्वात्रिंशत् अक्षराणि भवन्ति **-अनुष्टुप्-छन्दसि**
- बृहती छन्दसः अक्षरसंख्या **- 36**
- त्रिष्टुप्-छन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति **-44**
- वैदिकछन्दः **-त्रिष्टुप्**
- इन्द्रसूक्ते प्रयुक्तं छन्दो वर्तते **-त्रिष्टुप्**
- विष्णु (1.154) सूक्ते किं छन्दः प्रयुक्तः – **त्रिष्टुप्**
- हिरण्यगर्भ-सूक्तस्य किं छन्दः - **त्रिष्टुप्**
- सरमा-पणि-सूक्तस्य छन्दो वर्तते **- त्रिष्टुप्**
- जगती-छन्दसि प्रतिपादं कति अक्षराणि भवन्ति - **द्वादश**
- जगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति **-48**
- अतिजगती-वृत्ते कति वर्णाः भवन्ति - **52**
- वैदिकछन्दसि कस्मिन्नपि पादे एकाक्षरन्यूनता अधिकतां कथयति - **निचृत्/भुरिक्**
- निपातस्य लक्षणमस्ति **-उच्चावचेष्वर्थेषु**
- 'इन्द्रियनित्यम्' वचनमस्ति – **औदुम्बरायणस्य**
- यज्ञयागादिविधानानि प्राप्यन्ते वेदाङ्गे **–कल्पे**
- वेद का नेत्र है - **ज्योतिषम्**
- किस वेदाङ्ग को 'चक्षु' कहा जाता है - **ज्योतिषम्**

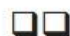
- वेदाङ्गेषु ज्योतिषमुपमीयते **-चक्षुषा**
- यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्य उपयोगः **-ज्योतिषस्य**
- वेद का 'चक्षु' कहा जाने वाला वेदाङ्ग कौन है **- ज्योतिष**
- कालविधानशास्त्रं किं कथ्यते **- ज्योतिषम्**
- ज्योतिषशास्त्रस्य स्कन्धाः सन्ति **- त्रयः**
- चन्द्रस्योच्चराशिः अस्ति **- वृषः**
- अष्टोत्तरीदशायां वर्षसंख्या भवति **-108**
- मुहूर्तचिन्तामणेः कर्ताऽस्ति **- रामदैवज्ञः**
- चन्द्रग्रहणं कदा भवति **-पूर्णिमायां शराभावे (पूर्णिमायां प्रतिपत्सन्धौ)**
- सौरवर्षे दिनानि भवन्ति **-365**
- गणेशः कस्य तिथेः स्वामी भवति **– चतुर्थ्याः**
- नक्षत्राणि कति स्वीकृतानि **- सप्तविंशतिः (27)**
- बुधस्योच्चराशिरस्ति **-कन्या**
- नियतसमये संस्कारो भवति **-नामकरणम्**
- महायुगानां सौरवर्षात्मकं कियन्मितम् **- 432000**
- दिव्यमहोरात्रम्भवति **-सौरवर्षात्मकम्**
- सूर्यस्य उच्चराशिः अस्ति **-मेषः**
- विंशोत्तरी-दशायां वर्षाणि भवन्ति **- 120**
- गुरुः पश्यति **-पञ्चमं नवमञ्च स्थानम्**
- दिनरात्रिमाने समाने भवति **-विषुवद्दिने**
- कस्य कक्षा ग्रहेषु सर्वोपरि वर्तते **- शनैश्चरस्य**
- बुधोऽस्य स्वामी वर्तते **-मिथुनस्य**
- रविदशावर्षाणि **-6**
- अस्य कोऽपि ग्रहः शत्रुर्न भवति **-चन्द्रस्य**
- विवाहमुहूर्ते कतिविधाः दोषाः भवन्ति **– 10**
- दिनमानं वर्धते **-उत्तरायणे**
- कस्य कक्षा भूमेः निकटमस्ति **—चन्द्रस्य**
- सूर्यग्रहणं भवति **- अमायां शराभावे**
- सूर्यस्य संक्रमणे उत्तरगोलः भवति **- मेषे**
- पापग्रहः अस्ति **- रविः**
- अधिमासो भवति **- असंक्रान्तिमासः**
- एकस्मिन् कल्पे महायुगानि भवन्ति **– 1000**
- भूभ्रमणसिद्धान्त अनेन प्रतिपादितः **- आर्यभट्टेन**

- मलमासः भवति प्रति **-तृतीयवर्षे**
- जन्मकुण्डल्यां निरीक्ष्यते विवाहविषयः केन भावेन **-सप्तमेन**
- क्षयमासो भवति **- द्विसंक्रान्तिमासः**
- भूमेः दूरतमा कक्षा वर्तते अस्य **- शनैश्चरस्य**
- राशियों की संख्या होती है **- द्वादश (12)**



6. वेदों का रचनाकाल

- नित्याः खलु वेदा इति केषाम् अभिमतम् **- प्राचीनभारतीयपरम्परायाः**
- वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः स्वीकरोति **– जैमिनिः**
- वेदकालविषये भारतीयपरम्परागतविचारं कः परिपोषयति **- सायणः**
- किस विद्वान् के अनुसार ऋग्वेद का आरम्भकाल 6000 ई० पू० है **-बालगङ्गाधरतिलक**
- 'उत्तर ध्रुव' को वेदों का रचना स्थान माना जाता है **- बालगङ्गाधर तिलक**
- वेदकालस्य निर्धारणे भारतीयज्योतिषपरम्परा केन परिपालिता **- बालगङ्गाधरतिलकः**
- ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य कः वेदानां कालनिर्धारणमकरोत् **- बालगङ्गाधरतिलकः**
- नक्षत्रसम्पातादिना वेदकालं कः प्रतिपादयति **- बालगङ्गाधरतिलकः**
- लोकमान्यबालगङ्गाधरतिलकमते वैदिकरचनाकालः कः **- 6000 – 4500 BC**
- लोकमान्यतिलकमते वेदस्य कालः **- पञ्चसहस्त्रवर्षेभ्यः पूर्वम्**
- 'वेदा अपौरुषेयाः सन्ति'-इति मतम् अस्ति **-दयानन्दस्य**
- छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः कः प्रतिपादयति **– मैक्समूलरः**
- मैक्समूलर के अनुसार वेद का समय है **- 1200 वि० पू०**
- मैक्समूलरमतानुसारं वेदस्य मन्त्र रचना कदा अभवत् **- 1000 ई० पू०**
- प्रथमः वेदकालनिर्णायकोऽस्ति **- मैक्समूलरः**
- सूत्रसाहित्यस्य रचनाकालः पी० वी० काणे-मतानुसारम् **- ई० पू० 500 तः 300 पर्यन्तम्**
- विन्टरनित्स के अनुसार ऋग्वेद का समय है **- 2500 BC**
- वेदस्य अपौरुषेयत्वं कः न स्वीकरोति **–विन्टरनित्सः**
- वेबरमहाभागः यजुर्वेदीयानां शतपथब्राह्मणग्रन्थानाम् आलोचनात्मकं संस्करणं कदा अप्रकाशयत् **- 1855 ई०**
- दीनानाथ चुलेटमहोदयानुसारं वेदस्य रचना कदा अभवत् **- 3 लक्षवर्षपूर्वम्**



7. वैदिक-व्याकरण

- वेदस्य मुख्याः स्वराः **-3**
- संख्यया स्वराङ्कनं भवति **- सामवेदे**
- माध्यन्दिनीय-संहितायामुदात्तस्वरस्य अङ्कनं भवति **- किमपि न**
- मन्त्रेषु अनुदात्तस्वराङ्कनं क्रियते **- अधः**
- स्वरितात् परो अनुदात्तः किम् उच्यते **- प्रचयः**
- उदात्तादिस्वराः कति भवन्ति **- त्रयः**
- स्वराः इत्यनेन के गृह्यन्ते **- उदात्तादयः**
- वैदिकमन्त्रस्य उच्चारणे स्वराणां मुख्यभेदः **-3 तीन**
- ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण स्वराणां .... सन्ति **- त्रिविधभेदाः**
- स्वरित के कितने भेद होते हैं **- अष्टौ**
- समाहारो भवति **- स्वरितः**
- ऋग्वेदीय-प्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञः कः **- अनुनासिकः**
- "यज्ञस्य देवम्" इत्यत्र 'देवम्' पदस्य स्वरोऽस्ति **- देवम्**
- ऋग्वेद में व्ळ् उपलब्ध होता है **- दो स्वरों के मध्य में**
- "तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः" इति कथनं वर्त्तते **- ऋक्प्रातिशाख्ये**
- ऋग्वेदे प्रमुखप्रयुक्तस्वरसंख्याः कियत्यः **- 3**
- वेदाध्ययने विकृतिपाठः कतिधा विद्यते **- 8**
- कौन सा लकार केवल वेदों में पाया जाता है **- लेट् लकार**
- लेट् लकारः कुत्र प्राप्यते **- वेदे**
- 'गमत्' किस लकार से सम्बद्ध है **- लेट् लकार**
- 'तारिषत्' पद किस लकार से सम्बद्ध है **- लेट् लकार**
- को लकारः छन्दसि (वेदे) प्रसिद्धः **- लेट् लकार**
- लुङ्-लङ्-लिट्लकाराणां बह्वर्थकः प्रयोगो दृश्यते **- वैदिकसंस्कृते**
- लेट्लकार प्रयुक्त हुआ है **- वैदिक संस्कृत में**
- प्रायः वेदेषु एव लभ्यते **- लेट्लकारः**
- 'पाहि' इति पदं कस्मिन् लकारे विद्यते **- लोट्लकारे**
- प्लुतसंज्ञा भवति **- स्वरस्य**
- आमन्त्रितज ओकारो भवति **- प्रगृह्यः**
- अस्ति बाह्यप्रयत्नः **- नादः**
- कौन सा प्रत्यय केवल वेदों में प्रयुक्त है **- अध्यै**
- 'जीवसे' मे प्रत्यय है **- असे**

- तुमर्थक प्रत्ययों का प्रचुर प्रयोग हुआ है **- वेदों में**
- प्लुतमात्रोच्चारणकालः **-मात्रा तीन**
- व्यञ्जनोच्चारणकालः **-अर्ध मात्रा**
- ह्रस्वोच्चारणकालः **-एक मात्रा**
- दीर्घमात्रोच्चारणकालः **-दो मात्रा**
- ऋग्वेद में 'देवासः' रूप किस विभक्ति का है **- प्रथमा विभक्ति बहुवचन**
- 'दाशुषे' में विभक्ति है **- चतुर्थी**
- वैदिकव्याकरणे कियन्तः अध्यायाः सन्ति **- 8 (आठ)**
- ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि **- चत्वारि**
- समानाक्षराणि कियन्ति **- अष्टौ**
- प्रसिद्ध व्याकरण संख्या है **- 9 (नव)**
- तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति सन्धयो भवन्ति **- षट्**
- .तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति स्वराः भवन्ति **- षोडश**
- तैत्तिरीयप्रातिशाख्यानुसारं कति ऊष्माणो भवन्ति **-षट्**
- ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः **– श**
- ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः **- ख**
- ऋक्प्रातिशाख्यानुसारम् अघोषवर्णः कः **- त**
- अष्टविकृतपाठेषु कः पाठः सर्वाधिककठिनः विलक्षणश्चास्ति **- घनः**
- घनपाठे प्रथमपदस्य कतिवारमावृत्तिर्भवति **- पञ्चवारम्**
- वेदानां रक्षार्थं कति विकृतिपाठाः मन्यन्ते **- अष्ट**
- संहिताध्ययनानन्तरं कः पाठः विधीयते **- पदपाठः**
- 'निर्भुज संहितापाठ' है **- आर्षपाठ**
- पदपाठ इत्यस्य परमप्रयोजनम् अस्ति **- वेदपाठरक्षणम्**
- अर्थ समझते हुये वैदिक मन्त्रों के सस्वर पाठ को कहा जाता है **- पारायण विधि**
- कः पाठः अष्टविधः **- विकृतिपाठः**
- 'साम' इति शब्देन किं गृह्यते **- साम्यम्**
- शुक्लयजुःप्रातिशाख्यस्य कस्मिन् अध्याये संज्ञापरिभाषयोः वर्णनम् अस्ति **- प्रथमे**
- ''शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्''
इति कस्यां शिक्षायां विलसति **- पाणिनीयशिक्षा**
- ''स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्''
इत्यंशः कुत्रास्ति **-पाणिनीयशिक्षा**
- 'पत्सुतः शी' पदस्य अभिप्रेतार्थः **—वृत्रः**
- 'तत्त्वा यामि' मन्त्रे 'यामि' पदस्य आशयः **— याचे**

❑❑

४. वैदिक-सूक्तियाँ

- 'स्वाध्यायोऽध्येतव्यः' इति वचनं कस्य **-श्रुतेः**
- 'अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
  होतारं रत्नधातमम्।।' इति मन्त्रः कस्य वेदस्य प्रथमो मन्त्रोऽस्ति। **- ऋग्वेदस्य**
- "ओ३म् क्रतो स्मर" इति प्राप्यते **-यजुर्वेदे**
- "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" प्राप्यते **- ऋग्वेदे**
- 'स नः पितेव सूनवे' किस सूक्त से सम्बद्ध है **- अग्निसूक्तेन**
- तिस्रोदेव्यः इति कस्यां संहितायां प्राप्यते **- ऋग्वेदस्य**
- "विद्ययामृतमश्नुते" इति वाक्यांशः वाजसनेयि–संहितायाः
  कस्मिन्नध्याये अस्ति **- चत्वारिंशे**
- "वसोः पवित्रमसि शतधारम्" इति मन्त्रः शुक्ल–
  कस्मिन्नध्याये प्राप्यते **- प्रथमे**
- "अहं ब्रह्मास्मि" कस्मिन् वेदान्तर्गतो भवति **-यजुर्वेदे**
- "असुर्या नाम ते लोकाः" इत्युक्तिः कस्य वेदस्य **-यजुर्वेदस्य**
- "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः"-इति सूक्तिः केन वेदेन सम्बद्धा **- यजुर्वेदेन**
- "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः" कहाँ की पंक्ति है **- यजुर्वेद की**
- "आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन" वर्तते **- तैत्तिरीये**
- 'विश्वं भवत्येकनीडम्' इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते **- वेदे**
- 'स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्" इति वचनं कस्यामुपनिषदि विराजते- **तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' वर्तते **- तैत्तिरीयोपनिषदि**
- "आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे" इति मन्त्रः अस्ति **- वाजसनेयसंहितायाः**
- "विद्ययाऽमृतमश्नुते" यह सूक्ति प्राप्त होती है **- शुक्लयजुर्वेदे**
- "मा गृधः कस्यस्विद्धनम्" यह सूक्ति मिलती है **- शुक्लयजुर्वेदे**
- 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्' – इति वाक्यं कुत्र वर्तते **- यजुर्वेदे**
- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है **- अथर्ववेदस्य पृथिवीसूक्ते**
- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' इति कस्य वचनम् अस्ति **- अथर्ववेदस्य**
- "ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह" इति कुतः उद्धृतः **- अथर्ववेदात्**
- "सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः" मन्त्रांशोऽयं कुत्रास्ति **- अथर्ववेदे**
- 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' कुत्र इयम् उक्तिः **- ईशावास्योपनिषदि**
- "तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः" कुत्र इयम् उक्तिः **- ईशावास्योपनिषदि**

- "विद्ययाऽमृतमश्नुते" वाक्य किससे सम्बद्ध है - **ईशावास्योपनिषदि**
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' किस उपनिषद् में है - **ईशावास्योपनिषदि**
- 'खं ब्रह्म' एतद् वाक्यं कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः" यह पंक्ति किस उपनिषद् में मिलती है -**ईशावास्योपनिषद् में**
- "मा गृधः कस्यस्विद्धनम्" यह वाक्य है - **ईशावास्योपनिषद्**
- "अन्धं तमः प्रविशन्ति" इति वचनं कस्यामुपनिषदि वर्तते - **ईशोपनिषदि**
- 'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि' - इत्यस्य कुत्रोपदेशः - **ईशोपनिषदि**
- "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः"–किस उपनिषद् से है- **ईशावास्योपनिषद्**
- 'न कर्म लिप्यते नरे' यह वेदवाक्य कहाँ उल्लिखित है - **ईशावास्योपनिषदि**
- "तमसो मा ज्योतिर्गमय" इति कुत्र विद्यते - **बृहदारण्यके**
- "उत्तब्धं वागेव गीथोच्च गीथा चेति स उद्गीथः" कुत्रेयमुक्तिः - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- "पूर्णमदः पूर्णमिदम्" पाया जाता है - **बृहदारण्यकोपनिषद् में**
- "अहं ब्रह्मास्मि" इति कुत्र उक्तम् - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- "विज्ञानमानन्दं ब्रह्म" इति वाक्यं वर्तते - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः" इति कुत्रोक्तम् - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'अमूर्तं च स्थितं च यच्च सच्च त्यच्च' कुत्र इयम् उक्तिः - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- "आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः" इति कस्य वचनम् - **बृहदारण्यकोपनिषदः**
- 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति समुक्तम् - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'वाचं धेनुमुपासीत' इति कुत्र उपदिश्यते - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- 'असतो मा सद्गमय' यह उक्ति किस उपनिषद् में है - **बृहदारण्यकोपनिषदि**
- "असद् वा इदमग्र आसीत्" अयं विचारः कुत्र निर्दिष्टः - **तैत्तिरीय**
- 'युवा स्यात् साधु युवा' इति कुत्र उपदिश्यते - **तैत्तिरीयोपनिषदि**
- "श्रुतं मे गोपाय" के उल्लेख वाला ग्रन्थ है - **तैत्तिरीयोपनिषद्**
- "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते" इति कुत्र उक्तम् - **तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह उद्धरण कहाँ पर है - **तैत्तिरीयोपनिषदि**
- 'यतो वाचो निवर्तन्ते' इति कस्य वाक्यम् - **तैत्तिरीयोपनिषद्**
- 'अन्नाद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते' इयमुक्तिः कुत्रास्ति - **तैत्तिरीयोपनिषद्**
- "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत" इति कुत्र उपदिश्यते - **कठोपनिषदि**
- 'मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे' कुत्र इयम् उक्तिः - **कठोपनिषदि**
- "येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके"

यह किसका कथन है - **नचिकेता का**

- "श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः" यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है - **कठोपनिषद् में**
- 'योगो हि प्रभवाप्ययौ' कुत्र इयम् उक्तिः -**कठोपनिषदि**
- "सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः" इति केनोक्तम् - **नचिकेतसा**
- "इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः" इति कुत्रत्या उक्तिरियम्- **कठोपनिषद्**
- "आत्मानं रथिनं विद्धि" उपलब्ध है -**कठोपनिषद् में**
- 'स्वर्गे लोके न भयं किञ्चिनास्ति, न तत्र त्वं न जरया बिभेति' किस उपनिषद् से सम्बद्ध है - **कठोपनिषद् से**
- "मृत्यवे त्वा ददामीति" किसने कहा -**उद्दालक ने**
- "ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।" यह शान्तिपाठ किस उपनिषद् में प्राप्त होता है -**कठोपनिषद् में**
- 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा' इयमुक्तिः कुत्रास्ति - **कठोपनिषदि**
- "न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः" उद्धृतोऽस्ति - **कठोपनिषदि**
- "अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः" इयमुक्तिः कुत्रास्ति - **कठोपनिषदि**
- "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" यह महावाक्य किस ग्रन्थ में है - **छान्दोग्योपनिषद् में**
- "तरति शोकमात्मवित्" इति उक्तम् - **छान्दोग्योपनिषदि**
- 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं कस्यां उपनिषदि प्राप्यते - **छान्दोग्योपनिषदि**
- "प्रज्ञा प्रतिष्ठा प्रज्ञानं ब्रह्म" वाला उपनिषद् है - **छान्दोग्योपनिषद्**
- "ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि" इति वाक्यमस्ति - **छान्दोग्योपनिषदि**
- "विद्यया विन्दतेऽमृतम्" इति कुत्रोपदिष्टम् - **केनोपनिषदि**
- 'अतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति' कुत्र इयम् उक्तिः - **केनोपनिषदि**
- 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्' कुत्र इयम् उक्तिः - **केनोपनिषदि**
- 'आत्मना विन्दते वीर्यम्' अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते - **केनोपनिषदि**
- 'आदित्यो ह वै प्राणोरयिरेव चन्द्रमाः' से सम्बन्धित ग्रन्थ है - **केनोपनिषदि**
- 'सत्यमेव जयते' शब्द कहाँ से लिया गया है - **मुण्डकोपनिषद् से**
- "भिद्यते हृदयग्रन्थिः" कुत्रास्ति - **मुण्डकोपनिषद्**
- "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते - **मुण्डकोपनिषदि**
- "क्षीयन्ते चास्य कर्माणि" इति कस्य वाक्यम् - **मुण्डकोपनिषद्**
- रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए सबसे उपयुक्त अंश कौन है स्वस्ति नो............ - **बृहस्पतिर्दधातु**

- ''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू'...... कृतः'' इत्यत्र वर्णव्यवस्थामधिकृत्य रिक्तस्थानं प्रपूरयत - **राजन्यः**
- ''तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्'' इति कस्य सूक्तस्य ऋचांशोऽस्ति - **पुरुषसूक्तस्य**
- पुरुषसूक्तेन सम्बद्धा उक्तिः अस्ति– 'स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्' - **मुण्डकोपनिषद्**
- 'कामस्तदग्रे' इति कस्य सूक्तस्य मन्त्रांशोऽस्ति - **नासदीयः**
- 'य आत्मदा बलदा' ये सम्बन्धित सूक्त है - **हिरण्यगर्भसूक्त**
- ''अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्'' मन्त्रोऽयं कस्मिन्–सूक्ते वर्तते - **वाक्सूक्ते**
- ''यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः'' यह किस मन्त्र का है - **विष्णुसूक्त का**
- ''यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं'' इत्यनेन मन्त्रांशेन सम्बद्धं सूक्तम् अस्ति- **शिवसङ्कल्पसूक्तम्**
- ''हृतप्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम्'' इति श्लोकांशः सूचकः अस्ति - **मनसः**
- ''ब्रह्मा सर्वविद्यः सर्वं वेदितुमर्हति'' का जहाँ उल्लेख है, वह ग्रन्थ है - **निरुक्त**
- 'अनर्थकाः हि मन्त्राः' इति कस्य वचनम् – **कौत्सस्य**
- ''अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्र उक्तं तन्निरुक्तम्'' इति कस्य उक्तिः- **सायणाचार्यस्य**
- 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्' इति कस्य वचनम् -**पाणिनेः**
- ''अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः। पुराणधर्मशास्त्रञ्च विद्या ह्येताश्चतुर्दश'' इति कस्य वचनमस्ति - **हारीतस्य**
- ''उपजीव्यस्य यजुर्वेदस्य प्रथमतो व्याख्यानं युक्तम्'' इति कः कथितवान् - **सायणः**
- 'कपिष्ठलो' इति कुत्र प्राप्यते -**अष्टाध्याय्याम्**
- ''साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः'' इति केन उक्तमस्ति - **यास्केन**
- ''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'' वचनमिदं कस्योक्तिः - **पतञ्जलिः**
- 'शेषे ब्राह्मणशब्दः' कस्य वचनम् - **जैमिनिः**
- 'सर्वः शेषो व्यञ्जनान्येव' इति कुतः उद्धृतम् - **ऋक्प्रातिशाख्यतः**
- 'संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्' मन्त्रांशोऽयं वर्तते - **पृथिवीसूक्ते**
- ''सर्वज्ञानमयो हि सः'' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है – **मनुस्मृति में**
- ''येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्'' कया इदम् उच्यते - **मैत्रेय्या**
- ''वृषायमाणोऽवृणीत सोमम्'' से सम्बन्धित सूक्त है - **इन्द्र**
- ''न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति'' कस्य इयम् उक्तिः - **याज्ञवल्क्यस्य**
- ''केवलाघो भवति केवलादी'' से सम्बन्धित ग्रन्थ है - **ऋग्वेद**
- ''मन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं ....'' इति उक्तम् - **प्रजापतिना**

- "इतिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्" एतया पंक्त्या सम्बद्धा उपनिषद् **- छान्दोग्योपनिषद्**
- 'इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः"
  से सम्बन्धित सूक्त है **- विश्वामित्रनदीसंवाद**
- "कस्य नूनं कतमस्यामृतानाम्" जिस सूक्त में पठित है, वह है **- सूर्यसूक्त**
- किं सत्यमस्ति पिङ्गलः **- छन्दशास्त्रकारः**
- "आत्रायं पुरुषः स्वयं ज्योतिरिति" वाक्य है **- बृहदारण्यकोपनिषद् में**
- "महान् प्रभुर्वै पुरुषः" का जिसमें पाठ है, वह ग्रन्थ है **- श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- 'तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवातानां परमं च दैवतम्"
  इत्यादि मन्त्र किस उपनिषद् से उद्धृत है **- श्वेताश्वतरोपनिषद्**
- 'भक्तिलक्ष्मीसमृद्धानां किमन्यदुपयाचितम्' यह उक्ति किसकी है **- उत्पलाचार्यस्य**
- 'कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति' इति प्रश्नः केन पृष्टः **- शौनकेन**
- "भगवन् कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्त"–इत्यस्य प्रश्नस्य कर्ता कः **- कबन्धी**



9. वैदिक-देवता

- निरुक्तानुसारं मुख्यतः कति देवताः **- तिस्रः**
- देवतानाम् आकारः कतिविधः **- त्रिविधः**
- यास्क ने देवताओं को कितने भागों में बाँटा है **- तीन**
- यास्कमतानुसारं प्रकारदृष्ट्या कति देवताः **- त्रिस्रः**
- निरुक्तमते देवतानां स्थानं न विद्यते **- स्वर्गः**
- ऋग्वेद में देवताओं की संख्या है **- 33**
- ऋचाओं के द्वारा आह्वान किया जाता है **- देवों का**
- अन्तरिक्षस्थानीय देवता है **– इन्द्र**
- वृत्र का नाश किस देवता ने किया **-इन्द्र ने**
- वृत्रहन्ता कौन है **-इन्द्र**
- इन्द्र का कार्य है **- वर्षा**
- 'मरुत्वान्' यह विशेषण किसका है **– इन्द्र का**
- देवता इन्द्रोऽस्ति **- अन्तरिक्षस्थानीया**
- 'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान' अनेन मन्त्रभागेन कः परामृश्यते **- इन्द्रः**
- 'रसानुप्रदानः वृत्रवधः' इत्यस्ति **- इन्द्रकर्म**
- 'दस्योर्हन्ता' को देवः **- इन्द्रः**

- ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त किस देवता के हैं -इन्द्र
- ऋग्वेदे प्रधानतया स्तुतो देवः -इन्द्र
- ''यः सोमपा निचितो'' में 'यः' पद किसके लिए आया है - इन्द्र के लिये
- 'मघवा' विशेषण किस देवता के लिए है - इन्द्र
- 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते' में 'यस्मात्' का क्या अभिप्राय है - इन्द्र
- 'यः सूर्यं य उषसं जजान' इसमें किस देव की स्तुति की गयी है - इन्द्र
- 'द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते'–यहाँ 'अस्मै' पद किसको व्यक्त करता है - इन्द्र
- इन्द्र को ऋग्वेद में किस नाम से पुकारा गया है - पुरन्दर
- 'वज्रबाहु' के रूप में कौन देवता प्रसिद्ध है - इन्द्र
- वृत्रासुर का वध करने वाले देवता थे - इन्द्र
- ऋग्वेद में कौन देवता चमत्कार युक्त कार्यों का सम्पादन करते हैं - इन्द्र
- सोमपा किस देवता की उपाधि है - इन्द्रः
- अग्निहोत्रे अग्निना सह देवता का विद्यते -प्रजापतिः
- 'शतक्रतुः' विशेषणोपेतः कः अस्ति -इन्द्रः
- वैदिकसंहितासु सर्वाधिकपराक्रमी देवः वर्णितः -इन्द्रः
- पापाचारिणो दस्योर्नाशकः वैदिकः देवः - इन्द्रः
- 'वज्रहस्तः' इति विशेषणं कस्य देवस्य -इन्द्रस्य
- इन्द्र का प्रधान अस्त्र है - वज्र
- इन्द्र के साथ स्तुत्य देवता कौन हैं - सोम
- ऋग्वेद संहिता में मन्त्रों का एक चौथाई भाग किस देवता को समर्पित है - इन्द्र को
- 'हिरण्यबाहुः' इसका क्या अर्थ है - इन्द्रः
- 'शचीपति' किसका नाम है - इन्द्र का
- ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त में 'पुरोहित' विशेषण किस देवता से सम्बद्ध है - अग्नि से
- ऋग्वेद के प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त का देवता है - अग्नि

  ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में कौन सा देवता वर्णित है - अग्नि

  ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में किस देवता की स्तुति है - अग्नि
- 'कविक्रतुः' किसका विशेषण है - अग्नि का
- 'पुरोहित' किसका विशेषण है - अग्नि का
- अग्नि का सम्बन्ध किस ऋतु से है - बसन्त से
- यास्कमते अग्निर्भवति - पृथिवीस्थानः

- ‘गृहपतिः’ इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम् - **अग्नि**
- ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते - **अग्निः**
- देवताओं में से किसे अक्सर अतिथि की उपाधि देकर सम्बोधित किया जाता है -**अग्नि को**
- ‘स नः पितेव सूनवे’ किस सूक्त से सम्बद्ध है -**अग्नि**
- पृथिवीलोक के प्रधान देवता कौन हैं - **अग्नि**
- ‘होता’ देव कौन हैं - **अग्नि**
- ‘स देवाँ एह वक्षति’ में ‘स’ किसको बतलाता है - **अग्नि**
- अग्नि किस लोक के देवता हैं? -**पृथिवीलोक के**
- ऋग्वेदानुसारेण ‘होता’ इति विशेषणम् अस्ति - **अग्नेः**
- ‘घृतलोम’ इति शब्दः कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति - **अग्नेः**
- ‘जातवेदाः’ कः अस्ति -**अग्निः**
- ‘दमूनाः’ इति कस्य विशेषणम् अस्ति -**अग्निः**
- यास्कमते अग्नेः निर्वचनं किं न हि - **अग्रे नयति**
- पौनः पुन्येन संस्तुत देवता है - **अग्नि**
- ‘रत्नधातमम्’ इति कस्य विशेषणम् - **अग्नेः**
- अग्नि का प्रधान कर्म क्या है - **हविष्य का वहन**
- अग्नि के साथ स्तुत्य देवता है - **इन्द्र**
- शाकपूणि के वैश्वानर किसे कहा गया है - **अग्नि**
- ‘हव्यवाह’ जिसका नाम है, वह है - **अग्नि**
- ऋग्वेद की प्रथम ऋचा किस देवता के प्रति है - **अग्नि**
- द्युस्थान देवता हैं - **विष्णुः**
- विष्णु का परमपद है - **द्युस्थान (आकाश)**
- ‘यस्य त्री-पूर्णा मधुना पदानि’ इसका सम्बन्ध है - **विष्णुसूक्त से**
- ‘मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः’ यह मन्त्रांश सम्बन्धित है - **अग्नेः**
- ‘उरुक्रम’ विशेषण किस देवता का है - **विष्णु**
- “त्रीणि पदानि” कस्य देवस्य प्रसिद्धानि - **विष्णोः**
- विष्णोः त्रीणि पदानि केन पूर्णानि भवन्ति -**मधुना**
- ‘त्रेधा निदधे पदम्’ इति केन सह सम्बध्यते -**विष्णुसूक्तेन**
- श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण स्तूयते - **विष्णुः**
- ‘उरुगाय’ का अर्थ है - **बहुत लोगों द्वारा स्तुत्य**

- तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो अत्र देवयवो मदन्ति'
  इस मन्त्र में किस देवता की स्तुति की गयी है **-विष्णु**
- कौन सा देवता 'त्रिविक्रम' नाम से जाना जाता है **-विष्णु**
- 'विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः' यह किस देवता को व्यक्त करता है **- विष्णु**
- विष्णोः निवासस्थानं कुत्रास्ति **- द्युलोकः**
- 'उरुगाय' किसका विशेषण है **- विष्णु का**
- स्वर्ग का देवता कौन है **- विष्णु**
- द्युस्थानीय देवता हैं **- सूर्य**
- प्रातः और सायं का देवता है **- सविता**
- 'ऋताधिपति' किसकी उपाधि है **- सविता की**
- का द्युस्थानदेवता **- सविता**
- सवितृदेवस्य नामोल्लेखः प्रायः भूतः अस्ति **- 170 बारम्**
- गायत्री-मन्त्रस्य उपास्य देवता वर्तते **–सविता**
- याज्ञवल्क्यः यजुषां प्राप्त्यर्थं कस्य देवस्य आराधनां कृतवान् **- सूर्यस्य**
- कः देवः वाजिरूपेण वाजसनेयिसंहितायाः उपदेशं कृतवान् **- सूर्यः**
- 'आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च' अनेन सम्बन्धः **- सविता**
- कस्य देवस्य अनुग्रहेण महामुनिः याज्ञवल्क्यः शुक्लयजुषः
  उपलब्धिं कृतवान् **- भास्करस्य**
- सूर्य किस लोक से सम्बद्ध हैं **- द्युलोक से**
- ''कस्यनूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारुदेवस्य नाम''
- यह मन्त्र ऋग्वेद के किस सूक्त से सम्बद्ध है **-सूर्यः**
- ऋग्वेद के नवममण्डल से सम्बद्ध देवता है **- सोम**
- सोम का निवासस्थान है **- पृथिवीलोक में**
- ऋग्वेदस्य नवममण्डलस्य देवतानाम् अस्ति **- पवमानसोमः**
- ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले सोमस्य स्तुतिः दृक्पथमुपयाति **- नवममण्डले**
- पवमानः कस्याः देवतायाः नाम अस्ति **-सोमः**
- 'हेति' शस्त्र से किसका सम्बन्ध है **- रुद्र का**
- 'दस्रा' इति उपाधिमान् कः अस्ति **- अश्विन्**
- 'सोमादपि मधूनि अधिकं रुचिं कः स्थापयति **- अश्विन्**
- 'दिव्यभिषक्' इति उपाधिमान् कः अस्ति **-अश्विन्**
- ऋजास्वं प्रति नेत्रं कः प्रदत्तवान् **- अश्विन्**

- यास्कमते कस्याः देवतायाः कालः अर्धरात्रीतः सूर्योदयपर्यन्तम् - **अश्विन्**
- 'नासत्यौ' इति कस्य नाम अस्ति - **अश्विनोः**
- यह द्युलोक का देवता है - **वरुण**
- वरुणदेवः - **द्युस्थानः**
- 'असुर' विशेषण किसका है - **वरुण का**
- 'जलोदर व्याधि' का कारण है - **वरुण**
- ऋग्वेदे नैतिकाध्यक्षरूपेण को देवः श्रेष्ठो वर्तते - **वरुणः**
- वरुण किस वर्ण का देवता है - **क्षत्रियवर्ण का**
- शुनःशेपाख्याने प्राधान्येन स्तुतः देवः कः - **वरुणः**
- जल का अधिष्ठातृ देव कौन है - **वरुण**
- कस्य देवस्य चाराः प्रसिद्धाः - **वरुणस्य**
- वेदोक्तऋतस्य का देवता - **वरुणः**
- वरुणस्य विशेषणम् अस्ति– - **उरुचक्षाः**
- 'धृतव्रतः' कस्य विशेषणम् अस्ति - **वरुणस्य**
- अन्तरिक्षस्थानीय देवता कौन हैं - **वायु**
- 'भिषक्तं त्वा भिषणां शृणोमि' इसका किस देवता से सम्बन्ध है - **रुद्र से**
- 'जलाषः' इति कस्य विशेषणम् - **रुद्रस्य**
- कपर्दी कः देवः - **रुद्रः**
- 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति - **रुद्रस्य**
- ''मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु'' इस मन्त्र के देवता हैं - **रुद्र**
- शुक्लयजुर्वेदे पिनाकः धनुषः सम्बद्धः कः अस्ति - **रुद्रः**
- अन्तरिक्षस्थानीया देवता का - **रुद्रः**
- ज्ञान के देवता हैं - **बृहस्पति**
- 'ब्रह्मणस्पतिः' इति विशेषणवान् कोऽस्ति - **बृहस्पतिः**
- पुरुषसूक्तस्य देवता का - **पुरुषः**
- 'स जातो अत्यरिच्यत' में 'सः' पद का अर्थ है - **पुरुष**
- 'हिरण्यगर्भ' इति पदेन अभिधीयते – **प्रजापतिः**
- कस्याहुतिः मनसा दीयते - **प्रजापतिः**
- 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' यह उक्ति किस देवता के लिए है - **प्रजापति**
- 'भूतस्य जातः पतिः' इति कस्य देवस्य परिचयोऽस्ति - **हिरण्यगर्भस्य**
- ऋग्वैदिकहिरण्यगर्भसूक्तस्य का देवता - **प्रजापतिः**

- 'पुराणी देवी' किसका विशेषण है **- उषस् का**
- 'ऋतावरी' यह विशेषण किसका है **- उषस् का**
- ऋग्वैदिक स्त्री देवता है **- उषा**
- चन्द्ररथा का वर्तते **- उषा**
- 'मघोनी' कौन देवता है **- उषा**
- यास्कमते 'उषा' शब्दस्य निर्वचनं किम् **- उच्छति**
- 'अवस्यूमेव चिन्वती' का वर्णनीय विषय है **- उषा**
- 'सुदृशीकसन्दृक्' विशेषण है **- उषा का**
- वाक्सूक्तस्य (ऋग्वेदे 10-125) का देवता **- वागाम्भृणी (परमात्मा)**
- नासदीयसूक्त का देवता है **- परमात्मा**
- प्रथमवेदे 'असुर' शब्दः कस्मै प्रयुक्तः **- देवता**
- का देवता सूर्यस्य पत्नी माता च कथ्यते **- उषा**
- एशिया माइनर के बोगजकोई अभिलेख में निम्नलिखित वैदिक देवताओं का उल्लेख है **-इन्द्र, नासत्या, मित्र, वरुण**
- वैदिककाल में निम्न में से किसकी उपासना नहीं की गयी है **-लक्ष्मी की**
- वैदिक देवता नहीं है **-कृष्ण**
- रुद्रो देवता अस्ति **- अन्तरिक्षस्थानीयाः**

❑❑

10. वैदिक ऋषि और भाष्यकार

- माध्यन्दिनसंहिता के भाष्यकर्त्ता कौन हैं **– उव्वट**
- काण्वसंहिता के भाष्यकार कौन हैं **- हलायुध**
- माध्यन्दिनसंहिता के भाष्यकार नहीं हैं **- सायण**
- काण्वसंहिता के भाष्यकार हैं **- सायणः**
- महीधर किस वेद के भाष्यकार हैं **- शुक्लयजुर्वेद के**
- वेंकटमाधव किस वेद के भाष्यकार हैं **- ऋग्वेद के**
- चारों वेदों के भाष्यकार हैं **-सायणाचार्य**
- शतपथब्राह्मणस्य भाष्यकारः कः **- हरिस्वामी**
- कात्यायनश्रौतसूत्र के भाष्यकार हैं **-कर्काचार्यः**
- आश्वलायनश्रौतसूत्रस्य भाष्यकारः कः **- नारायणः**
- ऋग्वेदस्य प्रसिद्धभाष्यकारः कोऽस्ति **- सायणाचार्यः**

- ऋग्वेदस्य प्राचीनतमं भाष्यं कस्य **- सायणस्य**
- पूर्वमीमांसादर्शनस्य भाष्यकारः कः **- शबरस्वामी**
- ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु भाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते **- स्कन्दस्वामिनः**
- ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो अस्ति **- स्कन्दस्वामिनः**
- उव्वटोऽस्ति भाष्यकारः **- शुक्लयजुर्वेदस्य**
- महर्षिदयानन्दः कस्य भाष्यकारः अस्ति **- यजुर्वेदस्य**
- यज्ञविधिमधिकृत्य मन्त्रव्याख्यानं क्रियते **- सायणेन**
- एषु प्राचीनवेदभाष्यकारो न वर्तते **- अरविन्दः**
- वैदिकग्रन्थों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण किस काल में सक्रिय थे **- विजयनगरराज्यकाल में**
- उव्वट ने किस वेद पर भाष्य लिखा है **- यजुर्वेद पर**
- कौन ऋग्वेद के भाष्यकार हैं **- स्कन्दस्वामी**
- सायण ने सर्वप्रथम किस वेद पर भाष्य लिखा **- यजुर्वेद**
- गुणविष्णु ने जिस पर भाष्य लिखा है, वह ग्रन्थ है **- छान्दोग्यब्राह्मण**
- धूर्तस्वामी भाष्यकारः अस्ति **- आपस्तम्बश्रौतसूत्रस्य**
- स्कन्दस्वामिना भाष्यं प्रणीतम् **- शाकलसंहितायाः**
- 'ऋग्वेदभाष्य' के लेखक हैं **- वेङ्कटमाधव**
- एषु प्राचीनव्याख्याकारो वर्तते **- सायणः**
- सायण ने वेदों पर अपनी टीका किस भाषा में लिखी **- संस्कृत में**
- सायणाचार्य अभवत् **- वेदभाष्यकारः**
- ऋग्वेदस्य आदिमं भाष्यं कस्य **- सायणस्य**
- वेदस्य आधुनिकव्याख्याता कः **- सातवलेकरः**
- महीधरकृतभाष्यस्य अपरं नाम किम् अस्ति **- वेददीपः**
- शुक्लयजुर्वेदोपरि महीधरभाष्यस्य किं नाम अस्ति **- वेददीपः**
- वेदव्याख्यातुः वेङ्कटमाधवस्य समयः ई **-1100 तमवत्सरात् प्राक्**
- माध्यन्दिनसंहितायां कस्य भाष्यं प्राप्यते **- उव्वटस्य**
- शुक्लयजुर्वेदभाष्यस्य मङ्गलाचरणे महीधरः कं स्मरति **- उव्वटम्**
- यजुर्वेदस्य कस्यां संहितायां सायणाचार्यस्य भाष्यमस्ति **- तैत्तिरीयसंहितायाम्**
- ऋग्वेदसंहिताया आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते **- आर० टी० एच० ग्रीफिथः**
- सायणाचार्यः कस्यां संहितायां भाष्यं नैव रचितवान् **- बाष्कलसंहितायाम्**

- ➢ वाजसनेयिप्रातिशाख्ये उपलब्धस्य भाष्यस्य किं नाम अस्ति - **मातृमोदः**
- ➢ शुक्लयजुर्वेद के भाष्यकार हैं - **उव्वट**
- ➢ वेद के व्याख्याकार के रूप में सर्वाधिक प्रख्यात भारतीय आचार्य हैं - **सायण**
- ➢ ऋग्वेदव्याख्यानकारो भवति - **मध्वाचार्यः**
- ➢ उव्वटमहीधरयोः भाष्यमस्ति - **शुक्लयजुर्वेदस्य**
- ➢ 'पदक्रमसदन'–नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते - **तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य**
- ➢ शुक्लयजुर्वेदस्य काण्वशाखायाः भाष्यकारोऽस्ति - **सायणः**
- ➢ शुक्लयजुर्वेदस्य माध्यन्दिनशाखायाः हिन्दीभाषया आदिभाष्यकारोऽस्ति - **महर्षिदयानन्दः**
- ➢ शुक्लयजुर्वेदस्य संस्कृत-हिन्दी–भाषायां कृतं भाष्यं प्राप्यते - **महर्षिदयानन्दसरस्वतेः**
- ➢ स्वामीकरपात्रीजी का भाष्य है - **शुक्लयजुर्वेद पर**
- ➢ आत्मानन्द ने जिस पर भाष्य लिखा, वह है - **अस्यवामीयसूक्त**
- ➢ 'उव्वट' ने व्याख्या की है जिस वेद शाखा की, वह है - **माध्यन्दिन**
- ➢ महीधर क्या हैं -**भाष्यकार**
- ➢ 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम् - **हलायुधेन**
- ➢ वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः -**भट्टोजिदीक्षितः**
- ➢ कः अग्निसूक्तस्य ऋषिः - **मधुच्छन्दाः**
- ➢ ऋग्वेद के पदपाठकार हैं - **शाकल्य**
- ➢ हिरण्यगर्भसूक्तस्य ऋषिः कः - **हिरण्यगर्भः**
- ➢ ऋषिः कः आसीत् - **मन्त्रद्रष्टा**
- ➢ ऋग्वेद के प्रथमसूक्त के ऋषि कौन हैं - **मधुच्छन्दा**
- ➢ अक्षसूक्त के ऋषि कौन हैं - **कवषऐलूष**
- ➢ वंशमण्डल का ऋषि कौन है - **वामदेव**
- ➢ पुरुषसूक्तस्य (10.90) ऋषिः अस्ति - **नारायणः**
- ➢ ऋग्वेद का प्रथम अध्येता कौन है - **पैल**
- ➢ ऋग्वेदसंहिता के द्वितीय मण्डल के ऋषि कौन हैं - **गृत्समद**
- ➢ ऋग्वेदस्य द्वितीयमण्डलान्तर्गतस्य इन्द्रसूक्तस्य ऋषिः कः - **गृत्समदः**
- ➢ "स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव" अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते - **मधुच्छन्दाः**
- ➢ "सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ...." अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति - **नारायणः**
- ➢ 'दीर्घतमा' कस्य सूक्तस्य ऋषिः विद्यते - **विष्णुसूक्तस्य**
- ➢ तैत्तिरीयसंहिता केन प्रवर्तिता - **तित्तिरिण**
- ➢ सोमयागे कति ऋत्विजो भवन्ति **षोड**

- गायत्रीमन्त्र की रचना किसने की थी - **विश्वामित्र**
- सुदास के विरुद्ध ऋग्वेद में उल्लिखित दस राजाओं का युद्ध किसके नेतृत्व में लड़ा गया था -**विश्वामित्र**
- सामवेदस्य प्रकाण्डविद्वान् कः आसीत् -**सायणः**
- वेदव्यासमहामुनिः यजुर्वेदं कस्मै समर्पितवान् - **वैशम्पायनाय**
- निम्नलिखित पुरोहितों में से कौन यज्ञ के सम्पादन का निरीक्षण करता था -**ब्रह्मा**
- ऋषयः मन्त्राणां के सन्ति - **द्रष्टारः**
- याज्ञवल्क्यः कस्य सभायामासीत् - **जनकस्य**
- सर्वप्रथम वेदों का निर्वचन किया है - **यास्क ने**
- वेदों के पुनरुत्थान का श्रेय किसे है - **स्वामीदयानन्दसरस्वती**
- कौन सी वह ब्रह्मवादिनी थी, जिसने कुछ वेद मन्त्रों की रचना की थी - **सूर्या सावित्री**
- उपनिषदों के समय में वह विदुषी महिला कौन थी जो दार्शनिकों की सभा में उच्च ज्ञान पर सम्भाषण कर सकती थी - **गार्गी**
- मन्त्रदर्शनं के अकुर्वन् - **ऋषयः**
- ऋग्वैदिकस्य वरुणसूक्तस्य ऋषिरस्ति - **शुनःशेपः**
- वरुणसूक्तस्य ऋषिरस्ति - **वसिष्ठः**
- ऋग्वेदीय सप्तममण्डल के ऋषि हैं - **वसिष्ठः**
- "ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः"–अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति - **नारायणः**
- वाजसनेय कौन हैं - **याज्ञवल्क्यः**
- विश्वामित्र जिस मण्डल के ऋषि हैं, वह है - **तीसरा**
- "उप त्वाग्ने दिवे-दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्" अस्य मन्त्रस्य ऋषिः वर्तते -**मधुच्छन्दाः**
- चतुर्थ मण्डल के ऋषि हैं - **वामदेव**
- विष्णुसूक्तस्य ऋषिः अस्ति - **दीर्घतमाः**
- निरुक्तस्य व्याख्याकारः वर्तते - **दुर्गाचार्यः**
- सायणस्य व्याख्यापद्धतिरस्ति -**याज्ञिकी**
- ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्तते - **भरद्वाजः**
- सायणाचार्यस्य गुरुः कः आसीत् - **विद्यातीर्थः**

- सायण का भ्राता किसे कहा गया है - **भोगनाथः**
- सायणस्य अनुजस्य नाम किम् - **भोगनाथः**
- नचिकेतसः पितुर्नाम - **वाजस्त्रवा**
- आपदेवस्य गुरुः कः - **अनन्तः**
- उव्वटाचार्यस्य स्थानं कस्मिन् पुरे वर्तते - **आनन्दपुरे**
- आचार्यसायणस्य मातुः नाम किम् - **श्रीमती**
- सायणस्य अग्रजस्य किं नाम आसीत् - **माधवः**
- सायणस्य को भ्राता - **माधवः**
- योगिनः याज्ञवल्क्यस्य गुरुः कः आसीत् - **वैशम्पायनः**
- याज्ञवल्क्यस्य पितुः वाजसनेः अपरं नाम किमस्ति - **देवरातः**
- उव्वटस्य पितुः नाम किमासीत् - **वज्रटः**
- यजुषां वमनकर्ता याज्ञवल्क्यः कस्य शिष्यः आसीत् - **वैशम्पायनस्य**
- 'शतपथानुसारं याज्ञवल्क्स्य गुरोः नाम किमस्ति - **आरुणिः**
- सायणः अस्ति - **वेदभाष्यकर्ता**
- महर्षिः वेदव्यासः कम् ऋग्वेदं समर्पितवान् - **पैलम्**
- "यजुर्यजतेः" इति निर्वचनं कस्यास्ति - **यास्कस्य**
- "एकशतमध्वर्युशाखा" इति केन कथितमस्ति - **पतञ्जलिना**
- "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्" इति कः उक्तवानस्ति - **आपस्तम्बः**
- "अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्" कस्य वचनमस्ति - **यास्कस्य**
- "रजः शब्दो लोकवाची" इसके वक्ता हैं - **मैक्समूलर**
- "सम्पूर्णमृषिवाक्यन्तु सूक्तमित्यभिधीयते" वाक्यमिदं कस्य - **शौनकस्य**
- "यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्"
  -अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषि कः - **गृत्समदः**
- इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो
  वेदयति स वेदः–इति लक्षणं कस्य - **सायणस्य**
- 'शून्य' का आविष्कार किया था - **आर्यभट्ट ने**
- प्राचीन भारत का पहला प्रसिद्ध ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता कौन था - **आर्यभट्ट**
- स्वामिदयानन्दसरस्वतीमहोदयस्य जन्म अस्मिन् वर्षे आसीत् - **ई0 1824 तमे वर्षे**
- प्राचीन भारत के आयुर्वेद शास्त्र से सम्बन्ध नहीं है - **भास्कराचार्य का**
- वास्तुशास्त्रस्य प्राचीनतमः आचार्यः अस्ति - **वराहमिहिरः**
- मिथिला में गार्गी वाचक्नवी ने किस ऋषि से

शास्त्रार्थ किया था - **याज्ञवल्क्य**
- "पुरुषार्थानां वेदयिता वेद उच्यते"। इस परिभाषा के कर्ता हैं - **भट्टभास्करः**
- कुल्लूकभट्टस्य समयः - **त्रयोदशशतकम्**
- 'लीलावती' इति गणितग्रन्थस्य कः रचयिता - **भास्कराचार्यः**
- बृहत्संहिता की रचना किसने की थी - **वराहमिहिर ने**



11. वैदिकग्रन्थ और ग्रन्थकार

- 'वैदिक-देवशास्त्र' (Vedic Mythology) के लेखक हैं -**मैक्डॉनल**
- 'वैदिकव्याकरण' के आधुनिक लेखक हैं - **लुई रेनू**
- निरुक्तकार कौन हैं - **यास्क**
- निरुक्त के लेखक हैं - **यास्क**
- 'वेदाङ्गज्योतिष' के रचयिता हैं - **लगध**
- "Vedic Concordance" (वैदिक वाक्यकोश) के लेखक हैं - **लगध**
- "Orion" (ऑरिआन) किसकी रचना है - **बालगङ्गाधरतिलक**
- ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य प्रणेता कः - **शौनकः**
- कस्य ग्रन्थस्य प्रणेताचार्यः सायणः - **ऋग्वेदभाष्यभूमिका**
- यज्ञतत्त्वप्रकाशग्रन्थस्य कर्ता कः - **चिन्नस्वामी**
- 'वैदिकविज्ञान और भारतीय संस्कृति' इति ग्रन्थस्य कर्ता कः - **गिरधरशर्माचतुर्वेदी**
- 'वाजसनेयि-प्रातिशाख्य' के रचयिता कौन हैं - **कात्यायन**
- 'बृहद्देवता' किसकी रचना है - **शौनक की**
- 'जैमिनीय-न्यायमाला' किसने लिखी है - **माधव ने**
- शतपथब्राह्मणस्य कर्ता अस्ति - **याज्ञवल्क्यः**
- चरणव्यूहग्रन्थः केन रचितः - **शौनकः**
- 'निघण्टु' के रचयिता हैं - **यास्कः**
- ऋक्तन्त्रस्य रचयिता - **शाकटायनः**
- भट्टोजिदीक्षितमतानुसारम् ऋक्तन्त्रस्य प्रणेता कः - **औद्व्रजिः**
- 'धर्मसूत्र' के प्रवर्तक हैं - **गौतमः**
- ऋक्प्रातिशाख्यस्य वर्ण्यविषयः कः – **वर्णस्वरादिविवेचनम्**
- 'सर्वानुक्रमणी' इति ग्रन्थस्य रचयितुः नाम किमस्ति - **कात्यायनः**
- चुलेटस्य ग्रन्थस्य किं नाम अस्ति - **वेदकालनिर्णयः**
- 'निरुक्तश्लोकवार्त्तिक' के कर्त्ता हैं - **दुर्गाचार्यः**

- वैदिकव्याकरणस्य रचनां कः कृतवान् **-मैक्डॉनल**
- 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' के रचयिता हैं **- सायणः**
- गुप्तकाल का प्रसिद्ध खगोलशास्त्री कौन था **-आर्यभट्ट**
- कौन विदुषी महिला वैदिकमन्त्रों की रचयिता नहीं थी **- गार्गी**
- कौन-सा वेद अंशतः गद्य में है **- यजुर्वेद**
- किस विदुषी ने वैदिक मन्त्रों की रचना की थी **- विश्ववारा घोषा**
- ऋग्वेद में कौन से वैदिक देवता सहस्र स्तम्भों वाले भवन में निवास करते हुए वर्णित हैं **- इन्द्र व अग्नि**
- वैदिक साहित्य में सभा और समिति को किस देवता की दो पुत्रियाँ कहा गया है **- प्रजापति**
- तन्त्रयुक्तियों का विवरण है **-गौतमधर्मसूत्र**
- गोविन्दस्वामी के भाष्य वाला ग्रन्थ है **- ऐतरेयब्राह्मण**
- ''पीटर-पीटर्सन'' की रचना है **- ऋग्वेद से स्तोत्र**
- 'On the Vedas' के रचनाकार हैं **- योगिराज अरविन्द**
- 'ऐतरेय ब्राह्मण' के अंग्रेजी अनुवादक हैं **- ए० बी० कीथ**
- ''गीतिषु सामाख्या'' इस सूत्र के रचनाकार हैं **- जैमिनिः**
- 'वेदभाष्यभूमिकासंग्रह'– के रचयिता हैं **- आचार्य सायण**
- 'श्रीसातवलेकर' द्वारा रचित वेदभाष्य का नाम है **- सुबोधभाष्यम्**
- 'वेददीपभाष्य' के कर्ता हैं **- महीधरः**
- 'तैत्तिरीयप्रातिशाख्य' सम्बद्ध है **- कृष्णयजुर्वेद से**
- 'मशकश्रौतसूत्र' सम्बद्ध है **- सामवेद से**
- शुक्लयजुषः श्रौतसूत्रकर्ता **- कात्यायनः**
- निघण्टुग्रन्थस्य संग्रहः कृतः केन **- प्रजापतिकश्यपेन**
- 'जैमिनीयन्यायमाला' ग्रन्थस्य व्याख्याग्रन्थः कः **- विस्तरः**
- कातीयेष्टिदीपकस्य कर्ता कः **- नित्यानन्दः**
- 'निरुक्तालोचनम्' इति ग्रन्थस्य कः लेखकः **- सत्यव्रतसामश्रमी**
- 'ऐतरेयालोचनम्' इति ग्रन्थस्य कः लेखकः **- सत्यव्रतसामश्रमी**
- शुक्लयजुः प्रातिशाख्यस्य टीकाकारः कोऽस्ति **- उव्वटः**
- दुर्गाचार्यमतेन निघण्टुग्रन्थरचयिता **- अर्वाचीनः**
- ऋक्तन्त्रं नाम प्रातिशाख्यग्रन्थः **- सामवेदस्य**
- शुक्लयजुर्वेदस्य प्रातिशाख्यं केन रचितमस्ति **- कात्यायनेन**
- "The Orion" इति पुस्तकं केन रचितमस्ति **- तिलकेन**

- वैदिकव्याकरणस्य व्याख्याकारः कः - **भारद्वाजः**
- ऋक्तन्त्रं नाम किम् अस्ति - **प्रातिशाख्यम्**
- सायणभाष्यसहितं ऋग्वेदं सर्वप्रथमं यः सम्पादयामास सोऽस्ति पाश्चात्यविद्वान्- **मैक्समूलरः**
- ऋग्वेदभाष्यभूमिकायां पुराणस्य लक्षणानि कति प्रतिपादितानि - **पाँच**
- वैदिकस्वरमीमांसायाः कर्ता कोऽस्ति - **युधिष्ठिरमीमांसकः**
- विदेघ माधव का अपने पुरोहित गोतम राहूगण के साथ पूर्व दिशा की ओर जाने का कथानक किसमें उल्लिखित है - **शतपथ ब्राह्मण**
- वैदिककाल में किस जानवर को 'अघन्या' माना जाता - **गाय**
- प्राचीनकाले वेदाध्ययनं कुत्र भवति स्म - **गुरुकुलेषु**
- चरणव्यूहग्रन्थस्य विषयः कः - **वेदशाखापर्यालोचनम्**
- ऋग्वेदभाष्यभूमिकायां विद्यास्थानानि कति प्रतिपादितानि **-14**
- चातुर्मास्यं कदा प्रभृति प्रारभ्यते **-फाल्गुनपूर्णिमातः**
- अग्न्याधाने ब्राह्मणस्य कः कालः - **वसन्तः**
- ब्राह्मणस्य अग्न्याधाने किं नक्षत्रम् - **कृत्तिका**
- राज्ञः कः अग्न्याधानकालः - **ग्रीष्मः**
- वैश्यस्य कः अग्न्याधानकालः - **शरदः**
- बहुदेववादिनः के आसन् - **वैदिकार्याः**
- वैदिक समाज में किसका अस्तित्व था - **प्रकृति-पूजा**
- संस्कारों का वर्णन किस मूल-पाठ में है - **धर्मसूत्र**
- वैदिक काल की सबसे सामान्य शासनव्यवस्था क्या थी - **प्रजातन्त्र**
- सौत्रामणि स्तोत्र है - **सामवेदे**
- 'शुनःशेप-आख्याने' कस्य उल्लेखो नास्ति - **अजीगर्तस्य**
- वैदिकसाहित्यस्य एषु ग्रन्थेषु यज्ञवेदिविधानं वर्णितम् - **शुल्बसूत्रेषु**
- विधेयाः के - **अर्थवादाः**
- विज्ञानमयस्य शिरः किमुच्यते - **श्रद्धा**
- 'यास्केन' कतिविधः व्याख्याविधिः स्वीकृतः - **त्रिविधः**
- राजा सुदास जिसके विषय में ऋग्वेद में वर्णन है कि उसने दस राजाओं को पराजित किया, किस जन से सम्बद्ध था - **तृत्सु**

❑❑

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. **अथर्ववेद -** आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली नौवाँ संस्करण-2015
2. **अथर्ववेद संहिता -** सम्पादक-पं. रामस्वरूपशर्मा गौड, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण-2011
3. **ऋग्वेद (4 भाग) -** आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली आठवाँ संस्करण-2015
4. **ऋग्वेद -** महर्षि दयानन्द, सम्पादक - श्री सत्यवीर शास्त्री, डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स, दिल्ली-2009
5. **ऋग्वेद संहिता** (सायणभाष्य एवं हिन्दी अनुवाद) - अनुवादक पं. रामगोविन्द त्रिवेदी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण 2011 (1-9 भाग सम्पूर्ण)
6. **ऋक्सूक्तसंग्रह -** डॉ. हरिदत्त शास्त्री एवं डॉ. कृष्ण कुमार, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
7. **ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् -** डॉ. वीरेन्द्र कुमार वर्मा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली संस्करण 2011
8. **निरुक्तम् -** डॉ. उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-2016
9. **निरुक्तम् -** आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-2014
10. **निरुक्त -** छज्जूराम शास्त्री, मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-2012
11. **यजुर्वेद -** आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली नौवाँ संस्करण-2015
12. **वैदिक साहित्य का इतिहास -** डॉ. गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, विक्रमी संवत्-2066
13. **वैदिक साहित्य का इतिहास -** डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण - 2011-12
14. **वैदिक साहित्य एवं संस्कृति -** डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, षष्ठ संस्करण - 2015 ई.
15. **वैदिक साहित्य और संस्कृति -** आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान, एन 1/75, नगवा, लंका, वाराणसी, सप्तम संस्करण - 2015
16. **वैदिक वाङ्मय का इतिहास -** मूल लेखक - सी.वी. वैद्य, अनुवादक एवं सम्पादक - विपिन कुमार, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली संस्करण-2011
17. **वैदिकसूक्तसङ्ग्रहः -** डॉ. विजयशङ्कर पाण्डेय, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद प्रकाशनवर्ष-2010
18. **शुक्लयजुर्वेद संहिता** (हिन्दी टीका सहित) - पं. रामकृष्ण शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण - 2015
19. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास**, 2 खण्ड - पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय एवं प्रो. ब्रज बिहारी चौबे, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वितीय संस्करण - 2012
20. **संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास -** डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, 2, कटरा रोड, इलाहाबाद - 211002, संस्करण - 2017

